

296 Samson

Sub - Book on Tanti - Yahi - Manti /
Bhagwati 'Bagla Hathi'

100
11/9/53

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला.

11/6/198

प्रधान सम्पादक - फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ११४

सांख्यायनमुनिप्रणीत

सांख्यायनतन्त्रम्

Printed by



Dr. B. KARWALA

21, Shanti Niketan,
Amshakti Nagar,
Bombay-400 011

सम्पादको

गोस्वामिशीलकमोनारायण-दीक्षित

वरिष्ठ-शोधसहायक,

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

To
Bharatiya Vidya
Bharati: Sabha

501T

SA-1

55984

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

१९७० ई०

प्रथमावृत्ति १०००

मूल्य

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

प्राप्तान्यत अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिवृद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम ए., डी. लिट्.

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर



ग्रन्थाङ्क ११४

सांख्यायनमुनिप्रणीतं

सांख्यायनतन्त्रम्

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानसूत्र

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९७० ई०

वि० सं० २०२६

भारतराष्ट्रीय सङ्गठन १९६१

मुद्रक—हरिप्रसाद वारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

प्रधानसम्पादकीय वक्तव्य

प्रस्तुत ग्रन्थ का सम्पादन श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ने ५ हस्तलेखों के आधार पर किया है और पाठान्तरो को पाद-टिप्पणियों में दे दिया है। विद्वान् सम्पादक ने पुस्तक के पाठ को शुद्धतम रूप में प्रस्तुत करने के अतिरिक्त न केवल विद्वानों के लिए अपि तु साधकों के लिए भी उपयोगी एवं आवश्यक सामग्री को भूमिका तथा परिशिष्टों के रूप में दे दिया है। यह ग्रन्थ यद्यपि आकार में छोटा है, परन्तु 'वगला' की साधना के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सम्पादक ने मन्त्रोद्धार को स्पष्ट करने का जो प्रयत्न किया है वह स्तुत्य है और इससे प्रकट है कि श्रीगोस्वामीजी को तन्त्र के व्यवहारपक्ष का कितना ज्ञान अपनी पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिला है। इसीप्रकार पुस्तक की भूमिका के अन्तर्गत सम्पादक ने आगम निगमादि के विषय में जो सामग्री प्रस्तुत की है वह भी बड़ी उपयोगी है और मैं इस सबके लिए विद्वान् सम्पादक को बधाई देता हूँ। तन्त्रशास्त्र के अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, परन्तु व्यवहार-पक्ष की उपेक्षा करने से वे प्रायः दुर्बोध बन गए हैं। मेरी इच्छा थी कि वह कभी इस ग्रन्थ में नहीं रहती। श्रीगोस्वामीजी तन्त्र-व्यवहार में भी पारङ्गत हैं, अतः इस कमी को दूर करना उनके लिए कठिन नहीं था और उन्होंने किसी सीमा तक इसको दूर किया भी है। परन्तु फिर भी ग्रन्थ के आकार के बढ़ने के भय से बहुत सी सामग्री नहीं दी गई। आशा है वह सब दूसरे रूप में तन्त्र-शास्त्र के व्यवहारपक्ष को उपस्थित करते हुए अन्यत्र दी जा सकेगी।

ग्रन्थ का मुद्रण प्रारम्भ हो गया था, परन्तु सम्पादक महोदय की अनेक व्यक्तितगत कठिनाइयों अथवा प्रतिष्ठान या प्रसंग में उपस्थित अनेक विघ्न-बाधाओं के कारण, ग्रन्थ के प्रकाशन में आशाशीत विलम्ब हुआ जिसके लिए मैं प्रतिष्ठान की ओर से क्षमाप्रार्थी हूँ।

अन्त में, मैं प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष म० विनयसागर तथा साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्रीहरिप्रसाद पारीक को धन्यवाद अर्पित करता हूँ जिन्होंने रुचि एवं लगन के साथ इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने में सहयोग दिया है।

—फतहसिंह

भूमिका

भारतवर्ष एक धर्मप्रधान देश है। यहाँ अनादिकाल से निगम एव आगम-सम्मत धर्म की ही स्थिति प्रधान रूप में प्रचलित रही है। मन्त्रब्राह्मणात्मक वेदों को निगम अथवा छन्द नाम से वामन, भट्टोजी दीक्षित आदि महापण्डितों ने अभिहित किया है—नितरामत्यन्त निश्चयेन वा गच्छन्ति अवगच्छन्ति (जानन्ति) धर्ममनेनेति निगमश्छन्द' अर्थात् 'रिन्तर अथवा निश्चयपूर्वक जिसके द्वारा धर्म को जानते हैं उसे निगम अर्थात् छन्द कहते हैं। परा और अपरा-नामक विद्याओं की स्थिति भी इसी में निहित है अतः इसी निगम को धर्मशास्त्र के आचार्य मनु ने विद्या एव धर्म का स्थान माना है 'वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्यय' अर्थात् 'वदविहित कार्य ही धर्म एव तदितर कार्य अधर्म है। याज्ञवल्क्य ने भी पुराण, न्याय, मीमांसा एव धर्मशास्त्रस्वरूप अङ्गों से युक्त वद को धर्म एव चौदह विद्याओं का स्थान बतलाया है—

'पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिता ।

वेदा स्थानानि विद्याना धर्मस्य च चतुर्दश ।'

त्रिकालदर्शी महर्षिगो ने सम्पूर्ण शब्दराशि को आगम-निगम-भेद से दो भागों में विभक्त किया है। वयो कि प्रकृतिसिद्ध नित्यशब्दब्रह्म इन्हीं दो भागों में विभक्त है। यद्यपि अथो वागेवेद सर्वम'^१ वाचीमा विश्वा भुवनान्यपिता'^२ आदि श्रौतसिद्धान्तों के अनुसार वाकत्व से प्रादुर्भूत होने वाले शब्दप्रपञ्च से कोई स्थान खाली नहीं है तथापि स्वर्गनाम से प्रसिद्ध १४ प्रकार के भूतसर्ग के साथ प्रधानरूप से अग्निवाक् और इन्द्रवाक् का ही सम्बन्ध है। पृथिवी अग्निमयी है और शुलोकोपलक्षित सूर्य इन्द्रमय है^३। पार्थिव एव सौर अग्नि अग्नाद (अन्न खानेवाले) हैं और मध्यपतित चान्द्र सीम इन अग्नियों का अन्न बन रहा है^४। अन्न जब अन्नाद के उदर में चला जाता है तो केवल अग्नाद-सत्ता ही

१ 'द्वे विद्ये वदित्ये परा पंचापरा च । (१) परा—उपनिषद्विद्या । (२) अपरा—ऋग्वेदादि ।

२ ऐतरेयारण्यक० ३।१।६ ।

३ तैत्तिरीय ब्राह्मण २।८।५।४ ।

४ यद्यपि निगर्मा पृथिवी तथा द्यौरिन्द्रेण गर्भिणी जलपथब्राह्मण १४।१।७।२०

५ 'एष वै सोमो राजा देवानामन्नं यज्ज्वहमा'

॥ १।६।४।३

रह जाती है, अन्न की स्वतन्त्रता हट जाती है' । इसीलिये त्रैलोक्य के लिये 'द्यावापृथिवी' का व्यवहार ही होता है । अन्न प्रधानतः पृथिवीलोक एवं सूर्य-लोक ही रह जाते हैं । दोनों अग्निमय हैं । पार्थिवाग्नि गायत्राग्नि है और सौर अग्नि सावित्राग्नि है । ये दोनों अग्नियाँ 'वाक्' कहलाती हैं' । वैज्ञानिक परिभाषा के अनुसार पृथिवी की वाक् अनुष्टुप् और सूर्य की वाक् बृहती कहलाती है । अनुष्टुप् वाक् से वचतप आदिरूपा वर्णवाक् का तथा बृहती-वाक् से अ आ इ आदिरूपा स्वरवाक् का प्रादुर्भाव होता है । 'स्वरोऽक्षरम्' के अनुसार स्वर अक्षर है, अविनाशी है । वर्ण 'क्षर' है, विनाशशील है । जिस प्रकार अर्थसृष्टि में भौतिक क्षरकूट की प्रतिष्ठा अक्षरतत्त्व है उसी प्रकार 'शाब्दे ब्रह्मणि निष्णात पर ब्रह्माधिगच्छति' के अनुसार अर्थब्रह्म की समान धारा में प्रवाहित होने वाले शब्दब्रह्म में भी क्षररूप वर्ण की प्रतिष्ठा अक्षररूप स्वरतत्त्व ही है । अर्थब्रह्म में जैसे अक्षररूप सूर्यसत्ता को छोड़कर क्षररूपा पृथिवी अपने रूप में प्रतिष्ठित नहीं रह सकती है इसी प्रकार सूर्यवाङ्मूलक स्वरतत्त्व के बिना पृथिवीमूलिका वर्णशाशि भी स्व-स्वरूप में प्रतिष्ठित नहीं रह सकती है । स्वरमूलक इस सूर्यविद्या का ही नाम त्रयीविद्या' है । सूर्य नहीं तप रहा है, त्रयीविद्या तप रही है, 'संपात्रय्येव विद्या तपति' और त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः' का भी यही रहस्य है । यह वेदतत्त्व नित्यतत्त्व है, स्वयं प्रादुर्भूत है, स्वयं ब्रह्म के मुख से उद्गीर्ण है । इसीलिये महर्षियों ने इसे निगम' एवं श्रुति की सजा दी है ।

शनि, मङ्गल, शुक्र, बुध, पृथिवी आदि सूर्य के उपग्रह हैं । सूर्य का ही प्रवर्ग्यभाग शनि आदिरूप में परिणत हो कर सूर्य के चारों ओर घूम रहा है । सूर्यविद्या का अक्षभूत पृथिवीलोक सूर्य के चारों ओर घूम रहा है । पृथिवी-विद्या सूर्यविद्या से आई है । इसी रहस्य को समझने के लिये महर्षियों ने पृथिवीविद्या का नाम 'आगम' रखा है । सूर्यविद्या की तरह पृथिवीविद्या स्वयं निर्गत नहीं है अपि तु निगम से आई है 'निगमादागत आगम' । ऊपर कहा जा चुका है कि पृथिवी की वाक् वर्णवाक् स्वर से भिन्न है । अतः आगमशास्त्रोक्त प्रयोगों का उदात्तादिस्वरो से विशेष सम्बन्ध नहीं माना जाता है । वहाँ केवल

१ 'द्वय वा इदम - अन्ता ज्ञेयाद्यर्थः । तदुदोमय समानच्छति अन्तैवास्यापते नाद्यम् । सर्वं य सोऽस्ताग्निरेव स ।' शतपथब्राह्मण १०।६।३।१

२ 'तस्य वा एतस्यान्तेवर्गिबोधनिपत् । , १०।१।१।१

३ शतपथब्राह्मणम् १०।१।२।२ ।

आदेश' को 'आगम' कहते हैं जिस प्रकार चारो वेदों में प्रकट आदेश निगम कहा जाता है। आगमवादी इस ऊर्ध्वमुख को परमेश्वर अर्थात् शिव का पञ्चममुख कहते हैं और वह ऊर्ध्वस्रोत द्वारा ब्रह्मविद्या चार वेदों में ही समाप्त नहीं होती परन्तु देश, काल और निमित्तों के परिवर्तन से युगानुसार सिद्धजनों द्वारा प्रकट होती है। इसीलिये माण्डूक्योपनिषद् को आगमप्रकरण ही कहते हैं।

आगम का लक्षण वाचस्पतिमिश्र ने इस प्रकार किया है कि जिससे भोग और मोक्ष दोनों का स्वरूप समझा जा सके वह आगम है। प्राचीन वेद-साहित्य कर्मकाण्ड द्वारा केवल स्वर्गादि योगसाधनों का स्वरूप समझाता है अथवा ज्ञानकाण्ड द्वारा केवल मोक्ष का स्वरूप और उसके साधन बतलाता है, परन्तु पञ्चम आगम साहित्य भोग और मोक्ष की एकवाक्यता करके क्रमपूर्वक ध्यवहारसुख और परमार्थसुख दोनों दे सकता है।

तन्त्र-आगम

तन्त्र वह विज्ञान है जो ऐसे साधनों और योगों का निर्देश करता है जिनके द्वारा मनोबल की उन्नति की जा सकती है। इन साधनों एवं प्रयोगों का उद्देश्य निस्सदेह मोक्ष की प्राप्ति है। परन्तु एक जन्म में सब लोग इस स्थिति पर नहीं पहुँच सकते, अभ्यास करते-करते उनके अन्दर कुछ विशिष्ट शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं जिन्हें सिद्धि कहते हैं। सिद्धियाँ कुछ अलौकिक शक्तियाँ हैं जिनका प्रयोग वे ही कर सकते हैं जिन्होंने इन्हें प्राप्त किया है। अन्य कोई भी व्यक्ति इनका उपयोग नहीं कर सकता। पातञ्जल योगसूत्र में अग्निमा, गरिमा, लघिमा आदि आठ सिद्धियाँ मानी हैं। परन्तु उसके पीछे के ग्रन्थों ने चौतीस सिद्धियाँ मानी हैं। हिन्दू और बौद्ध तन्त्रों के विभिन्न आगमों के द्वारा निर्दिष्ट विधि एवं साधनों का अनुसरण करने से इनमें से कुछ अथवा अधिक सिद्धियों का प्राप्त कर लेना सम्भव है। तन्त्रों का यह उद्देश्य है कि जगत् के भौतिक साधनों की उन्नति द्वारा जो कुछ सम्भव हो सकता है, उसे एक ही व्यक्ति अपनी मानसिक शक्ति के विकास द्वारा सिद्ध कर सकता है।

तन्त्रों के प्रति सामान्यतया यह भ्रान्ति फैली हुई है कि तन्त्र वेदों से भिन्न है और इनमें अनार्यों के से आचरण एवं व्यवहारों का दर्शन होना है। वस्तुतः यह भ्रान्तिमात्र है। तन्त्र वेदवाह्य न होकर वेद-सम्मत है। हाँ, इतना अवश्य है कि तन्त्र वेदों की तरह किसी भी वर्ण के लिये अग्राह्य नहीं है। तन्त्रों में सर्वसाधारणजनों के लिये साधन का मार्ग प्रस्तुत किया गया है। वेद की क्रियाएँ सामान्यजनों के लिये अधिक परिश्रमसाध्य, ध्ययसाध्य एवं प्रतिबन्ध-

साध्य होने से उन क्रियाओं को यथाविधि सम्पन्न करना सहजसाध्य नहीं है । इसीलिये परमकारुणिक भगवान् शिव ने सहजसाधनगम्य तन्त्रों का प्रकीर्ण करण 'आगम' नाम से किया है ।

तन्त्र की व्युत्पत्ति एवं परिभाषा

भारतीय कोशकारों के अनुसार 'तन्त्र' शब्द का प्रयोग आगम, सिद्धान्त, शिवमुखोक्तशास्त्र आदि के अर्थों में हुआ है, वामन, भट्टोजी दोक्षित आदि महावैयाकरण पण्डितों ने 'तन्त्र' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की है—'तनोति सर्वशास्त्राणां सिद्धान्तान् यत्तत्तन्त्रम्' अर्थात् जो समस्त शास्त्रों के सिद्धान्त अथवा निर्णयों का विस्तार करे उसे 'तन्त्र' कहते हैं ।

प्राचीन शास्त्रों में यद्यपि तन्त्र-शब्द का प्रयोग अनेक विषयों के शास्त्रों के लिये हुआ है जैसे—'कपिलतन्त्र, वासिष्ठतन्त्र, जैमिनितन्त्र, पूर्वतन्त्र, उत्तरतन्त्र आदि' । तथापि इस शब्द का अधिकतर प्रचलन आगमशास्त्र, निगमशास्त्र अथवा शिवमुखोद्गीर्ण शास्त्र के लिये ही हुआ है—

आगतं शिववक्त्रेभ्यो गतञ्च गिरिजामुखम् ।

गतञ्च वायुदेवस्य तस्मादागममुच्यते ॥

(सिंहसिद्धान्तसिन्धु ५०-४२६)

×

×

×

आगतं शिववक्त्राच्च गतञ्च गिरिजामुखे ।

तेनागमानि तन्त्राणि कथितानि वराहने ॥१२७॥

यानि कानि च शास्त्राणि कथितान्यागमस्य च ।

तानि तानि प्रकथ्यन्ते बीलाचरणहेतवे ॥१२८॥

(समयाचारतन्त्र)

निर्गतं गिरिजावक्त्राद् गतं च गिरिजामुखी ।

गतं च वायुदेवस्य तस्मादागम उच्यते ॥

आज्ञावस्तु समन्ताच्च गम्यत इत्यागमः स्मृतः ।

तनुते प्रापते नित्यं तन्त्रमित्यं विदुषुधाः ॥

[श्रीसत्कारिशर्मालिखित भूमिका (दुर्गासप्तशती जी०
सम्भाषसंस्कृत सीरीजी वाराणसी)]

तन्त्र की परिभाषा शास्त्रों में इस प्रकार प्राप्त है—

अस्य वामस्य सूक्तं तु जपेन्नान्यत्र वा जते ।

बह्वहस्यादिकं बध्वा विष्णुलोकं स गच्छति ॥

अर्थात् इस वामसूक्त के पाठमात्र से ही विष्णुलोक की प्राप्ति अर्थात् 'तद्विष्णोः परम पदम्' के अनुसार विष्णुपदप्राप्तिरूपी मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

निरुक्त (निघण्टु) में वामशब्द का अर्थ 'प्रशस्य' लिखा है—

'अस्ते मा. अनेमा, अनेद्यः, अनवद्यः, अनभिशस्ताः, उवध्यः, सुनीयः, पाकः, वामः, वयुनमिति दश प्रशस्यनामानि ।

यहाँ वामनाम प्रशस्य का अर्थ है और प्रशस्य प्रज्ञावान् ही होते हैं—य एव हि प्रज्ञावन्तस्त एव हि प्रशस्या भवन्ति' । इससे स्पष्ट है कि प्रज्ञावान् प्रशस्य योगी का नाम ही 'वाम' है और उस योगी के मार्ग का ही नाम 'वाम-मार्ग' है । इस मार्ग में जितेन्द्रिय के लिये ही अधिकार की व्यवस्था है, न कि इन्द्रियलोलुप प्राणियों के लिये जैसा कि भगवान् शङ्कर का कथन है—

परद्रव्येषु योज्यञ्च परस्त्रीषु नवसक्तः ।

परापवादे यो मूकः सर्वदा विजितेन्द्रियः ।

तस्यैव ब्राह्मणस्यात्र वामे स्वादधिकारिता ।

(मेरुतन्त्र)

अर्थात् परद्रव्य, परदारा और परापवाद से विमुक्त, सयमी ब्राह्मण ही वाममार्ग का अधिकारी होता है ।

अथ सर्वोत्तमो धर्मः शिबोक्तः सर्वसिद्धिदः ।

जितेन्द्रियस्य मुक्तो नान्यस्यानन्तकन्तुनिः ।

(पुराण्यार्षभ)

इसी प्रकार मेरुतन्त्र आदि आगमग्रन्थों में पञ्चमकारों की व्याख्या इस प्रकार की गई है—

मद्य मातञ्च मनञ्च मुद्रा मैयुनयेव च ।

मकारपञ्चकः प्रादुर्धोनिना मुक्तिदायकम् ॥

अर्थात्—मद्य, मास, मीन, मुद्रा और मैयुन ये पाँच आध्यात्मिक मकार ही योगियों को मोक्ष देने वाले हैं ।

ध्योमपद्भुजनिध्मन्दसुधापानरतो भवेत् ।

मद्यपानमिदं प्रोक्तमितरे मद्यपायिनः ॥

प्रहारन्ध्र-सहस्रदल से जो संचित होता है उसे सुधा (अमृत) कहते हैं जिसे

कुलकुण्डलिनो द्वारा योगिजन प्राप्त करते हैं इसी का नाम मद्यपान है। इसके अतिरिक्त पीने वाला मद्यप कहलाता है।

अर्थात्—ब्रह्मरन्ध्र के सहस्रारकमलरूपी पात्र से जो ब्रह्माण्ड को तृप्त करने वाली सुधा-धारा बहती है वही पीने योग्य मद्य (मदिरा) है।

पुण्यापुण्येषु हत्वा ज्ञानखङ्गेन योगयित्।

परे सय नयेच्चित्त मासाशी स निगद्यते ॥

अर्थात्—पुण्य-पापरूपी पशु को ज्ञानरूपी खड्ग से मार कर जो योगी मन को ब्रह्म में लीन करता है, वही मासाशी (मासाहारी) है।

और भी—

कामक्रोधी पशू तुल्यो बलि दत्त्वा जप चरेत्।

×

×

×

कामक्रोधसुलोभमोहपशुर्लोहितत्वा विवेकाक्षिना।

भास निर्विषय परात्मसुखद भुञ्जन्ति तेषा बुधा ॥

अर्थात्—विवेकी पुरुष काम, क्रोध, लोभ और मोहरूपी पशुओं को विवेकरूपी तलवार से काट कर दूसरे प्राणियों को भी सुख देने वाले निर्विषयरूप भास का भक्षण करते हैं।

मानसादीन्द्रियगण सयभ्यात्मनि योजयेत्।

स भीमाशी भवेद्देवि इतरे प्राणिहंसका ॥

मन आदि सारी इन्द्रियों को वश में करके आत्मा में लगाने वाली को ही भीमाशी (मत्स्याहारी) कहते हैं इससे इतर जीवहंसक हैं।

आसातृष्णाजुषुप्तामयविषमदृणामानसज्जाप्रकोपा

ब्रह्मगनावष्टमुद्रा परसृष्टिजन पञ्चमान सप्त-स्तात्।

नित्य सम्भावयेत्तानवहितमनसा दिव्यभावानुरागी,

मोक्षो ब्रह्माण्डनाभे पशुहतिविमुखो रुद्रतुल्यो महात्मा ॥

अर्थात्—आशा-तृष्णादि आठ मुद्राओं को ब्रह्मरूपी अग्नि में अच्छी तरह पकाता हुआ दिव्य भाव का अनुरागी जो योगी पशु-हिंसा से पराङ्मुख होकर सावधान मन से भक्षण करे, वह महात्मा पुरुष ससार में रुद्रतुल्य होता है।

या नाडी सूक्ष्मरूपा परमपदगता सेवनीया सुदुष्णा,

सा कान्ताऽऽलिङ्गनार्हा न मनुजमणो सुन्दरी वारयामित्।

कुर्याच्चन्द्रार्कयोगे युगपवनगते मंथुन नैव योनी,
योगोन्द्रो विश्ववन्द्यः सुसमयभवने तां परिध्वज्य नित्यम् ॥

अर्थात्—परमानन्द को प्राप्त हुई सूक्ष्मरूपवाली सुषुम्णा नाडी है, वही आलिङ्गन करने योग्य उपभोग्या कान्ता है, न कि मनुष्यरूपा सुन्दरी वेश्या । सुषुम्णा का सहस्रचक्रान्तर्गत परब्रह्म के साथ संयोग का ही नाम मंथुन है, स्त्री-सम्भोग का नहीं ।

और भी—

एवान् देव्याः पदान्मोजे पञ्चम परिकीर्तितम् ।

अर्थात्—श्रीदेवी के श्रीचरणों का चिन्तन ही पञ्चम अर्थात् मंथुन है ।

सारयायनतन्त्र

प्रस्तुत 'सारयायनतन्त्र' तन्त्रशास्त्र का ही सारयायनमुनिप्रोक्त^१ एक लघुग्रन्थ है । यद्यपि इसकी परिगणना शिवमुखोद्गीर्णं नानागमो म यणित ६४ तन्त्रों में तो नहीं की गई है, फिर भी यह मुनिप्रणीत होने के कारण उपतन्त्रों में अवश्य ही परिगणनीय है जैसा कि वाराहोत्तव^२ के निम्न पद्यों से स्पष्ट है—

बौद्धोक्ता-युपतन्त्राणि कापितोरत्नानि यानि च ।
अद्भुतानि च एतानि जैमिन्मुक्तानि यानि च ॥
वसिष्ठ ऋषिरश्वेव नारदो गण एव च ।
कुल ह्यो नारद सिद्धो यत्नवत्स्वयो भृगुस्तथा ॥
शुनो बृहस्पतिश्चैव अन्ये ये मुनिरत्नमा ।
एभि प्रणीताम्यन्यानि उपतन्त्राणि यानि च ॥
न सखाताणि तान्यत्र धर्मेन्द्रिय-हृत्तन्त्रि ।
सारात्तारतराण्येव सख्यातानि विरोधत ॥

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि 'जगत् के भीति' साधनों की उत्पत्ति के द्वारा जो कुछ संभव हो सकता है उसे एक ही ध्येय अथवा मानसिक शक्ति के विवास द्वारा सिद्ध कर सकता है । इस मानसिक शक्ति को बढ़ाने का उत्तम साधन है—वाणी द्वारा अथवा मन ही मन मन्त्रों का उच्चारण करना । आगम-ग्रन्थों में ऋषि महर्षियों द्वारा मुदीर्घरात

१. पद्यत्रो नारदो विद्या सारयायनमुनि प्रति ।
उपदेशपमेणुं च उक्तवान्नेरुतन्दरे ॥१५॥
तत्र देवोक्तोद्गीर्णं तन्त्राणामयं भुवि ।
[सायनतन्त्र प्रथम पटल]
२. सारयायन-तन्त्र—विरोधपटल, पृष्ठ - ५८५ ।

तक अनुभूत एव सुपरीक्षित कुछ ऐसे शब्दों एव शब्दसमूहों का निर्देश किया गया है जिन्हें 'वोजमन्त्र', 'हृदयमन्त्र' अथवा 'मालामन्त्र' कहा गया है । इन मन्त्रों का निश्चित सख्या में जप करने से (उच्चारण करने से) निश्चित ही अपने उद्देश्यों (मनोरथों) की प्राप्ति होती है जैसा कि निम्नोक्ति से स्पष्ट है—
'एक. शब्द' सुप्रयुक्त स्वर्गे लोके च कामघुम्भवति ।

प्रस्तुत ग्रन्थ इसी का एक ज्वलन्त उदाहरण है जिसमें नारदोपासिता श्री-वगलामुखीदेवी की पञ्चाङ्गोपासना-विधि के साथ ऐसे विशिष्ट १५ मन्त्रों के प्रयोग-विधान बतलाये गये हैं जिनके द्वारा साधक (उपासक) मनुष्य अत्यन्त विस्मयोत्पादक अलौकिक शक्तियों (सिद्धियों) को अर्जित कर अपनी समस्त अभिलाषाओं को प्राप्त कर सकता है ।

श्रीवगलामुखी

श्रीवगलामुखी आगमग्रन्थों में वर्णित दश महाविद्याओं में अन्यतम है, जिसे इस तन्त्र में गङ्गास्नस्तम्भिनीविद्या, स्तब्धमाया, प्रवृत्तिरोधिनी, वगला, मन्त्रजीवनविद्या, प्राणिप्राणापहारिका एव षट्कर्मधारविद्या के नाम से अभिहित किया गया है—

गङ्गास्नस्तम्भिनी विद्या स्तब्धमायामनुस्तवा ।

प्रवृत्तिरोधिनी विद्या वगला च कुमारक ॥१॥

मन्त्रजीवनविद्या च प्राणिप्राणापहारिका ।

षट्कर्मधारविद्या च ये ते पर्यायवाचकाः ॥१०॥

(प्रथम पटल)

ऐसा प्रतीत होता है कि निगमशास्त्रोक्त वल्गा^१ ही आगमशास्त्रों की वगलामुखी है क्योंकि संस्कृतभाषा में जैसे 'हिंस' शब्द वर्णव्यत्यय होने के कारण 'सिंह' और लौकिक भाषा में 'मतलब' मतबल बन जाता है वैसे ही निगम की

१. विशयणीधिका मन्त्रा मालामन्त्रा इति स्मृताः ।

दशाक्षराधिका मन्त्रास्तदध्विजीवसंज्ञिताः । (सिंहसिद्धान्तसिन्धु पृष्ठ २६५)

२. काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी ।

शैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा ॥

वगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका ।

एता दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्त्तिताः ॥ (प्राणतोषिणी, पृष्ठ-७१७)

३. यदा वं कृत्यामुत्खनन्ति अथ सालसा मोषा भवति । तयो एवं एतच्चक्ष्मा अत्र वरिचद् द्विपन् भ्रातृव्यः कृत्या वल्गा निखनन्ति तानेवंतदुस्करति ॥ (शतपथब्राह्मण-३।५।४।३)

ख. ग्रन्थाङ्क-५५८५; लिपिकाल-१६वीं शताब्दी (विजय), पत्र-संख्या ५१; माप-३४'५ + १३' से. मो.; पक्कि-६, अक्षर ३६;
दशा-सुन्दर, सुवाच्य एवं अपेक्षाकृत शुद्ध प्रति ।

ग. ग्रन्थाङ्क-१८३६५; लिपिकाल-सं० १७६६ (विजय) पत्रसंख्या ४२;
माप-२३' × १२'५ से. मो., पक्कि-१२; अक्षर ३३,
दशा-कुछ जीर्ण, सुवाच्य किन्तु अशुद्ध ।

घ. ग्रन्थाङ्क-१८३६३, लिपिकाल-१६वीं शताब्दी (विजय) पत्र सं-या-१२४,
पक्कि-६, अक्षर-१६,
दशा-ठीक-ठीक है, सुवाच्य किन्तु अशुद्ध प्रति है ।

रा० श्रीरामकृपालु शर्मासंग्रह ग्रन्थाङ्क-माप-२३' × १०'८, लिपिकाल-१०
१६२६ (विजय) पत्रसं-या-४६, पक्कि-२ अक्षर-४६, दशा-जीर्ण,
सुवाच्य एवं अशुद्ध प्रति है ।

आनार-प्रदर्शन

मैं राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के निदेशक समादरणीय
डॉ० फतहसिंहजी का विशेष आभारी हूँ जिनके सत्परामर्श एवं सत्प्रेरणा से
इस अतिविलम्बित ग्रन्थ का संपादन-कार्य पूर्ण कर सका । जयपुर-निवासी
प० श्रीरामकृपालुजी शर्मा का भी मैं विशेष आभार मानता हूँ जिन्होंने अपने
संग्रह में से कुछ कर इस ग्रन्थ की प्रति हम प्रेषित की । साथ ही मैं प्रतिष्ठान
के सहयोगी विद्वत्पुस्तकालय-सहायक श्रीमती गणेशी धान्य एवं प्रति-
लिपिकर्ता श्रीमनेशकुमारसिंह को भी साधुवादों से सज्जित करता हूँ जिन्होंने
पद्यानुक्रम बना कर मुझे सहयोग दिया । अन्त में साधक विद्वानों से सतत
प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ में दृष्टि-दोष एवं चित्तव्यापत्यपराध नहीं कोई
नुटि रह गई हो उसका वे समाधान करते दृष्टे 'समादधतु सञ्जना' के अनुसार,
मुझे क्षमा कर ।

कातिक शुक्ल एकादशी
विजय संवत् २०२६

विदुषामाश्रयो
गोस्वामी लक्ष्मीनारायणदीक्षित

विषयानुक्रमः

प्रमाणं	विषय	पृष्ठ	श्लोक
१	प्रथमः पटलः	पृष्ठ १-३	
(१)	पीताम्बरादेयोध्यानम्	१	१
(२)	मायावि-राक्षसाञ्जेतुकामस्य कालिकेयस्य शिवप्रति जपोपायजिज्ञासा	१	२-६
(३)	कालिकेय प्रति जपार्थे शिवनिगदित ब्रह्मास्त्रविद्या- वगलामनुप्रशंसनम्	१-२	७-१४
(४)	नारदस्य सांख्यायनमुनये ब्रह्मास्त्रविद्योपदेशः, सङ्क्षिप्तायां सूक्तौ प्रकाशकपञ्च	२	१५-१५
(५)	ब्रह्मास्त्रविद्यामन्त्रोपासनाफल, मन्त्रसम्बन्धे कुलगुरुमुखाद् दीक्षाग्रहणावश्यकत्वञ्च	२-३	१७-१८
२	द्वितीयः पटलः	पृष्ठ ३-५	
(१)	द्विभुजापीताम्बराध्यानम्	३	१
(२)	दीक्षाविधिजिज्ञासा	४	२
(३)	पुस्तकलिखितमन्त्रजपे हानिसम्भवात् कुलगुरुमुखाद्दीक्षाग्रहणप्रतिपादनम्	४	३-६
(४)	सङ्क्षिप्तलक्षणानि	४	७-११
(५)	कारणत्रयेण विद्योपलब्धिः, विद्याया राजसादिभेदत्रयञ्च	५	१२-१७
(६)	शिष्यलक्षणानि	५	१८-२२
३	तृतीयः पटलः	पृष्ठ ६-८	
(१)	वाङ्मुखस्तम्भिनीवगलामुखोध्यानम्	६	१
(२)	अभियेकविधिजिज्ञासा	६	२
(३)	मन्त्राभियेकने कालनिर्णयः	६	३-६
(४)	शिष्यस्नापन, मायजीजपस्यावश्यकत्वञ्च	६	६-७
(५)	कलशमन्त्रकस्यापनविधिः	७	८-१७
(६)	आत्विग्यवरणविधिः कलशमार्जनविधिरञ्च	७-८	१८-२४
(७)	विद्यामन्त्रोपदेशविधिः	८	२५-२८

प्रमाण	विषय	पृष्ठ	सूक्त
--------	------	-------	-------

४. चतुर्थः पटलः -११

(१) प्रेतासनावगतामुखीध्यानम्	६	१
(२) ब्रह्मास्त्रमन्त्रसन्ध्याजिज्ञासा	६	२
(३) मन्त्रसन्ध्याविधिः	६-१०	३-१६
(४) त्रिकालोपस्थानम्	१०-११	१७-२५
(५) मन्त्रसन्ध्याोपस्थानयोरनिवार्यत्वम्	११	२६-२८

५. पञ्चमः पटलः पृष्ठ ११-१३

(१) श्रीवगतादेशीध्यानम्	११	१
(२) एकाक्षरीमहामन्त्रजिज्ञासा	११	२
(३) एकाक्षरीश्रीजमन्त्रोद्धार	१२	३-६
(४) ऋष्यादिकरपङ्क्त्युत्थासविधिः	१२	७-१०
(५) पञ्जरन्यासविधिः	१२-१३	११-१५
(६) मातृकान्यासविधिः	१३	१६-१८
(७) वगतामुखीध्यान तञ्जपविधिश्च	१३	१९-२४

६. षष्ठः पटलः पृष्ठ १४-१६

(१) स्तम्भनकारिणीवगतामुखीध्यानम्	१४	१
(२) एकाक्षरीमहामन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	१४	२
(३) होमे कामनाभेदेन कुण्डनेवा	१४	३-६
(४) होमे कामनाभेदेन स्थण्डिलनेवा	१४	१०-११
(५) होमे सहयाभेदेन कुण्ड-स्थण्डिलमानानि	१५	१२-१५
(६) शान्त्यादिषट्कर्माणि तत्संस्थानानि च	१५	१६-२०
(७) कर्मभेदेन होमद्रव्याणि तत्संस्थावृत्तिनिर्धारण च	१६	२०-२७

७. सप्तमः पटलः पृष्ठ १६-१८

(१) श्रीवगताध्यानम् (पीताम्बरधरादेशीध्यानम्)	१६	१
(२) षट्त्रिंशदक्षरीवगताविद्यामन्त्रजिज्ञासा	१६	२
(३) षट्त्रिंशदक्षरीविद्यामन्त्रोद्धार	१६-१७	३-७
(४) न्यासविद्याक्रम	१७	८-९
(५) वगतामुखीध्यान तदावश्यवत्पञ्च	१७	१०-१२
(६) ऋष्यादिकपनम्	१७	१३-१४

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(७)	सञ्चरूपपूर्वकं जपसंख्यानिर्धारः	१७	१५
(८)	तर्पण-होमद्रव्याणि तत्प्रकारश्च	१७	१६-१७
(९)	पुरश्चरणलक्षणं तत्प्रकरणेऽसिद्धिश्च	१७ -	१८-१९
(१०)	कर्मभेदेन सख्यायुतहोमद्रव्याणि	१८	२०-२६

घ. अष्टमः पटलः पृष्ठ १८-२१

(१)	शिवा (वगतावेवौ) ध्यानम्	१८	१
(२)	वगतामन्त्रराजप्रयोगजिज्ञासा	१८	२
(३)	कर्मभेदेन होमद्रव्ययोगा, नामाद्रव्ययोजन- प्रकारा मन्त्रयोजनाविधिश्च	१८-२०	३-२६
(४)	द्रव्यतर्पणेन परकृतकर्मनिरासः.	२०-२१	२७-२९

ङ. नवमः पटलः पृष्ठ २१-२३

(१)	वगतामुल्लोध्यानम्	२१	१
(२)	वगतामनोः प्रयोगमूलमन्त्रजिज्ञासा	२१	२
(३)	यन्त्रोद्धारः	२१	३-६
(४)	यन्त्रे मन्त्रलेखनविधिः	२१-२२	६-९
(५)	कर्मभेदेन नानापूर्वमन्त्रपूजाविधिः	२२-२३	९-२७

च. दशमः पटलः पृष्ठ २३-२६

(१)	पीताम्बरावगताध्यानम्	२३	१
(२)	मन्त्रलेखनप्रयोगजिज्ञासा	२४	२
(३)	लेपने कर्मभेदेन चन्दनादिद्रव्यनिरूपणम्	२४-२६	३-२८

छ. एकादशः पटलः पृष्ठ २६-२९

(१)	वगतावेवोध्यानम्	२६	१
(२)	यन्त्रराजतर्पणप्रयोगजिज्ञासा	२६	२
(३)	कर्मभेदेन मुद्रावितर्पणद्रव्यनिरूपणम्	२६-२९	३-२८

ज. द्वादशः पटलः पृष्ठ २९-३१

(१)	चिन्मयीवगताध्यानम्	२९	१
(२)	वगतागायत्रीजिज्ञासा	२९	२

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(३)	शायत्रोन्मत्तोद्धारः	२६	३-४
(४)	ऋष्यादिकल्पनान्ते पुरन्दर्ष्याभ्यास-ध्यानादिनिरूपणम्	२६	६-६
(५)	कर्मभेदेन शायत्रोन्मत्त्रप्रयोगाः	३०-३१	१०-२६

१३. त्रयोदशः पटलः पृष्ठ ३१-३४

(१)	वृत्ताम्बाध्यानम्	३१	१
(२)	यन्त्रपूजाजिज्ञासा	३१	२
(३)	यन्त्रपूजाविधिः	३२	३-१३
(४)	शास्त्रपामारी पूजाविचारः	३३	१४-१६
(५)	पूजा-कारणद्वयविचारः	३३	१७-१८
(६)	मन्त्रसिद्धिफलकथनम्	३३-३४	१९-२७

१४. चतुर्दशः पटलः पृष्ठ ३४-३७

(१)	वृत्ताध्यानम्	३४	१
(२)	वृत्ताध्यायविधिजिज्ञासा	३४	२
(३)	वेदभेदात् सृष्टिरिति तत्कारणपूजावयवम्	३४	२-४
(४)	सृष्टिप्रभेदं सौम्याद्याध्यायविधिः	३५-३६	५-१७
(५)	प्रयोगारी तत्त्वज्ञानी सौम्याद्याध्यायं विना शीरसाद्यमानम्	३६	१८-२४
(६)	सौम्याद्याध्यायने ह्यवस्था'ह्युजा'ह्यवस्थानि साध्यायनं मृत्तुदुर्गाता मन्त्रानुक्रमता १	३६-३७	२५-३१

१५. पञ्चदशः पटलः पृष्ठ ३७-४०

(१)	सत्त्वमहासायवर्कविशेषाध्यानम्	३७	१
(२)	पञ्चवर्कविशेषजिज्ञासा	३७	२
(३)	पञ्चवर्कविशेषवयवम्	३७	३-६
(४)	वर्ग १ १३'३८'३९'४०' ४१' ४२' ४३' ४४' ४५'	३८	७-१६
(५)	वर्ग १ ४६'४७'४८' ४९' ५०' ५१' ५२' ५३' ५४'	३९-४०	१७-३१

१६. षोडशः पटलः पृष्ठ ४०-४३

(१)	सत्त्वमहासायवर्कविशेषाध्यानम्	४०	१
(२)	षोडशवर्कविशेषजिज्ञासा	४०	२
(३)	षोडशवर्कविशेषवयवम्	४०-४१	३-१६
(४)	वर्ग १ ५४'५५'५६' ५७' ५८' ५९' ६०' ६१' ६२'	४१-४२	१७-२६

क्रमाङ्कः	विषयः	पृष्ठ	श्लोक
(५)	बृहद्भानुमुह्यस्त्रविद्योद्धारस्तत्प्रयोगविधिश्च	४२-४३	२५-३७
(६)	प्रयोगान्ते सोभाभ्यार्चाऽवश्यकत्वम्	४३	३८-४०

१७. सप्तदशः पटलः पृष्ठ ४३-४६

(१)	वगलाम्बिकाध्यानम्	४३	१
(२)	शताक्षरीमहामन्त्रजितासा	४३	२
(३)	शताक्षरीमन्त्रोद्धारः	४४	३-१०
(४)	श्रद्धादि-न्यासविद्या-ध्यानानि	४४-४५	११-१५
(५)	जपसंख्या-तर्पणद्वयार्चिकपनम्	४५	१६-१७
(६)	कर्मभेदाद्ब्रह्मद्वयानि तदाहुतिसंख्या-समय-कथनञ्च	४५-४६	१८-२८

१८. अष्टादशः पटलः पृष्ठ ४६-४९

(१)	जिह्वास्तमनकारिणोवगलाम्बानम्	४६	१
(२)	शताक्षरीहवनप्रयोगजितासा	४६	२
(३)	विषमञ्चराविविधधरोगविनाशनार्थं नानाद्रव्याहुति- प्रयोगाः	४६-४७	३-८
(४)	यथीकरणाद्यनीप्सितकामनाभेदादनेकविधद्रव्यरहुति- प्रयोगा	४७	९-१६
(५)	बहुभूयादिरोगशमनप्रयोगा.	४७-४८	१७-१९
(६)	वश्याकर्षणप्रयोगाः	४८	२०-२५
(७)	शानुरोगकृत्प्रयोगाः	४८	२५-२७
(८)	मारणप्रयोगाः	४९	२८-३४

१९. एकोनविंशः पटलः पृष्ठ ४९-५३

(१)	चतुर्भुजाधगलाम्बानम्	४९	१
(२)	शताक्षरीमन्त्रप्रयोगोपसहारजितासा	४९	२
(३)	रिपुमारणादिप्रसङ्गे भुक्तिकादिविविधप्रयोगा- स्तद्विरासविधिश्च	४९-५०	३-१५
(४)	पुत्तलिकाद्यभिचारिप्रयोगा	५१-५३	१६-३४
(५)	प्रयोगोपसहारविधि	५३	३५-४३

२०. विंशः पटलः पृष्ठ ५४-५७

(१)	वगलादेवीध्यानम्	५४	१
-----	-----------------	----	---

श्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(२)	परविद्याभेदनोपायप्रश्न	५४	२
(३)	परविद्याभेदिनीमन्त्रोद्धारस्तवृद्ध्यादिकथनञ्च	५४	३-११
(४)	तन्व्यास ध्यान-पुरश्चर्याकथनम्	५५	१२-१८
(५)	परविद्याभेदिनीमन्त्रस्य नानाप्रयोगा	५५-५६	१९-२६
(६)	सिद्ध मन्त्र माहात्म्यवर्णनम्	१६-५७	२६-३४

२१. एकविंश पटल. पृष्ठ ५७-५९

(१)	परविद्यामक्षिणीवगताध्यानम्	५७	१
(२)	परविद्याकथनादिमहदाश्चर्यकरा नानाप्रयोगा	५७-५९	२-२४
(३)	प्रयोगोपसंहारा	५९	२५

२२. द्वाविंश पटल पृष्ठ ५९-६१

(१)	वगतामुल्लोध्यानम्	५९	१
(२)	वगतास्त्रविद्याप्रश्न	५९	२
(३)	वगतास्त्रविद्याया क्रम	५९	३-४
(४)	वगतास्त्रविद्यामन्त्रोद्धार	५९-६०	४-८
(५)	तवृद्ध्यादि-न्यास-ध्यान पुरश्चर्याविधि	६०	९-१८
(६)	शत्रुक्षयकृदादिनानाप्रयोगा	६१	१८-३०

२३. त्रयोविंश पटल पृष्ठ ६२-६४

(१)	श्रीवगतादेवीध्यानम्	६२	१
(२)	वगतास्त्रमहामन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	६२	२
(३)	वाक्तिद्धिप्रदप्रयोग	६२	३-४
(४)	स्वाधिनाशनप्रयोग	६२	५
(५)	जिह्वा श्रीप्र प्राण पाद जठराग्नि वात्रस्तम्भन प्रयोगा	६२	६-११
(६)	शत्रुभार्याया वमसावप्रयोग	६२-६३	१२-१३
(७)	रिपुस्त्रीणा वन्ध्याकरणप्रयोगस्तन्नाशनप्रयोगश्च	६३	१४-१६
(८)	रिपुसम्भोविनाशकायनेके प्रयोगा	६३-६४	१७-२७

२४. चतुर्विंश पटल पृष्ठ ६४-६६

(१)	सस्तम्भरूपावगताम्बाध्यानम्	६४	१
(२)	वगतामन्त्रमात्तिकालक्षणजिज्ञासा	६४	२

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(४)	हरिद्रामातानिर्माणविधि.	६४-६५	३-६
(४)	मातासंस्कारविधि.	६५	१०-१४
(५)	माताया भूमौ पतने पुनस्तत्संस्कारः	६५	१५-१६
(६)	क्षान्त्यादिकर्मभेदान् मातालक्षणानि	६५-६६	१७-१८
(७)	पुस्तिकानिर्माणविधिः	६६	२०-२३
(८)	प्राणप्रतिष्ठाचर्चनविधिः	६६	२४-२७

२५. पञ्चविंशः पटलः पृष्ठ ६६-७१

(१)	वगलादेवीध्यानम्	६७	१
(२)	चतुरक्षरीमहामन्त्रजिज्ञासा	६७	२
(३)	चतुरक्षरीमहामन्त्रोद्धारः	६७	३-७
(४)	चतुराक्षरी-न्यासविधायकधनम्	६७	७-१०
(५)	चतुरक्षरी-श्रद्धाविकषणम्	६७	११
(६)	वगलाचतुरक्षरीमन्त्रध्यान पुरश्चर्याविधानञ्च	६८-६९	१२-२१
(७)	योगिनीलक्षणम्	६८	२२
(८)	लौकिक्यादिविधिवृत्ता तत्तत्क्षणानि च	६८	२३-२६
(९)	योगिनी मता निगुणा चतुर्थी पूजा	६९	२७
(१०)	चतुर्विधचर्याया गौडादिदेशभेदात् सृष्ट्यादिनामसङ्केत- स्तद्वर्णविधिस्तत्फलानि च	६९-७०	२८-४४
(११)	भारीनिरादिकरणे हानिः	७०-७१	४५ ४६

२६. षड्विंशः पटलः पृष्ठ ७१-७३

(१)	वगलादेवीध्यानम्	७१	१
(२)	वगलाचतुरक्षरीमन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	७१	२
(३)	नानाद्रव्ययोगेन तर्पणप्रयोगविधिः	७१-७३	३-१०

२७. सप्तविंशः पटलः पृष्ठ ७३-७६

(१)	परब्रह्माधिदेवतावगलाध्यानम्	७३	१
(२)	वगलाचतुरक्षरीमन्त्रहोमप्रयोगजिज्ञासा	७३	२
(३)	कर्मभेदात् कुण्डभेदा. स्थानभेदा होमद्रव्ययोगाश्च	७४-७६	३-२६

२८. अष्टाविंशः पटलः पृष्ठ ७६-७८

(१)	स्तम्भनाम्नस्वरूपिणीवगलाध्यानम्	७६	१
-----	---------------------------------	----	---

वमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(२)	स्तम्भविज्ञायाः प्रयोगजिज्ञासा	७६	२
(३)	वगलाहृदयमन्त्रप्रशस्तिवर्णनम्	७६-७७	३-१३
(४)	वगलाहृदयमन्त्रोद्धारस्तज्जपेन बन्ध्यादोष- कृत्रिमरोगादिनाशनफलञ्च	७७-७८	१४-२४

२९. ऊनत्रिंशः पटलः पृष्ठ ७८-८०

(१)	वगलाध्यानम्	७८	१
(२)	वगलाहृदयमन्त्र-प्रयोगजिज्ञासा	७८	२
(३)	वगलाहृदय-मन्त्रोद्धार	७८	३
(४)	स्वर्णादिनिमित्ते यन्त्रे वगलाहृदयमन्त्रतेजमश्मः	७९	४-७
(५)	यन्त्रपूजाविधि	७९	८-९
(६)	यन्त्रपूजायाः कर्मभेदान्नानाकुसुमप्रयोगा	७९-८०	९-२२

३०. त्रिंशः पटलः पृष्ठ ८१-८३

(१)	वगलाध्यानम्	८१	१
(२)	वगलाष्टाक्षरमन्त्रजिज्ञासा	८१	२
(३)	वगलाष्टाक्षरमन्त्रोद्धारस्तब्ध्यादिन्यासविद्याकथनञ्च	८१	३-६
(४)	मन्त्रभेदेन वगलाध्यान तन्मन्त्रपुरद्वयार्था च	८१-८२	७-१२
(५)	कर्मभेदाद् विष्वादिविधिवृक्षमूलेषु जपविधानेन नानाकार्यसिद्धयः.	८२-८३	१३-१९

३१. एकत्रिंशः पटलः पृष्ठ ८३-८६

(१)	भक्तचित्तामणिवगलाध्यानम्	८३	१
(२)	वगलाष्टाक्षरमन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	८३	२
(३)	पुस्तलीप्रयोग	८४	३-४
(४)	नानाद्रव्ययोगेन जिह्वास्तम्भादिभूते भस्मचूर्ण- भक्षणायनेके प्रयोगाः.	८४	६-१
(५)	पशुपश्याद्यङ्गाव्ययाना स्थानविशेषेषु निक्षेपाद्- रिपुमारणादिप्रयोगाः.	८४-८५	१२-१
(६)	नानावस्तुसंयोगजधूपवासनादिप्रयोगाः.	८५-८६	१८-३

३२. द्वित्रिंशः पटलः पृष्ठ ८७-९०

(१)	प्रेतासनस्यावगलाध्यानम्	८७	१
-----	-------------------------	----	---

क्रमांक	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(२)	वगलास्त्रोपसंहारविद्याजिज्ञासा	८७	२
(३)	ब्रह्मास्त्रस्तस्मिन्नीकालीविद्यामन्त्रोद्धार	८७	३-६
(४)	विद्यामन्त्रपुरदत्तव्याविधि	८७-८८	१०-१६
(५)	वगलास्त्रोपसंहारक्रम (जिह्वास्तम्भनाद्यभिचार- शान्तिप्रयोगा)	८८-९०	१७-४०

३३. त्रयस्त्रिंश. पटल पृष्ठ ९०-९४

(१)	श्रीवगलावेधोप्यानम्	९०	१
(२)	वगलास्त्रोपसंहारयन्त्रजिज्ञासा	९०	२
(३)	कपिलानन्दनोत्तेनोपलिप्ते कवनीपत्रे समन्वय- लेखनक्रम	९१	३-५
(४)	यन्त्रस्याष्टदशेषु साक्ष्यमालामनोलेखननिर्देश	९१	५
(५)	साक्ष्यमालामनोद्वार	९१	६-६
(६)	यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा पूजाविधि	९२	१०-१२
(७)	अभिचारशान्तिकरो यन्त्रधारणप्रयोग	९२	१३-१७
(८)	विविधव्याधिविनाशनकरस्ताम्बूलचवणप्रयोग	९२	१८-२१
(९)	मार्जनं तोयपानादभिचारशान्ति	९३	२२
(१०)	धारणयन्त्रस्योद्धारस्तःप्राणप्रतिष्ठापूजाविधीच	९३	२३-२८
(११)	विविधकृत्रिमरोगविनाशनार्थं तद्यन्त्रधारण- मार्जनं प्राशनं पानप्रयोगा	९३-९४	२९-३८

३४. चतुस्त्रिंश पटल पृष्ठ ९४-९८

(१)	वगलाध्यानम्	९४	१
(२)	समस्तकम सर्वोपद्रवादिनाशनजिज्ञासायां कृत्वावेष्टावश्यंस्तम्भनप्रयोगकथनम्	९४-९५	२-१०
(३)	तत्र ज्वालाभुष्यादिपञ्चास्त्रप्रयोगविधि, त्रैलोक्यविजयास्त्रप्रयोगस्तत्फलकथनञ्च	९५-९७	११-३३
(४)	तद्वदनं तपणप्रयोगा	९७-९८	३४-३८

३५. पञ्चत्रिंश पटल पृष्ठ ९८-१००

(१)	वगलाध्यानम्	९८	१
(२)	योजनेदजिज्ञासा (वगलामन्त्रनिर्णयजिज्ञासा)	९८	२
(३)	पट्त्रिंशदक्षरीविद्याया ऋष्याविविचारे साक्ष्याधनं प्रह्वयाभलं जयद्रवयामलं हारिद्रसहितमतानि	९८	३-८

प्रमाण	विषयः	पृष्ठ	स्तोत्र
(४)	पत्नी साध्यायनमतस्यैव प्राधान्यम्	६८	८
(५)	विद्यामन्त्रजपात्पूर्व मृत्युञ्जयमन्त्रजप- स्तदकरणेऽसिद्धिश्च	६८	९
(६)	साध्यायनोक्तबोजसप्तायां स्थिरभायाबीजोद्धारः	६९	१०-११
(७)	पीतवासांमते स्थिरबोजसप्त तदुद्धारश्च	६९	१३-१५
(८)	रेफुक्ताया स्थिरभायाविद्याया जपेनैव सर्वसिद्धि	६९	१६-१७
(९)	सद्युयोदा-महायोदादिन्यासांस्त एव विद्याजप प्रतिपादनम्	६९	१८-१९
(१०)	पीतवासांमते वगलाध्याननिरूपणम्	१००	२०-२१
(११)	साध्यायनमते पश्चिमाम्नायोत्तराम्नायभेदेन वगलाध्याननिर्देश	१००	२२

३६. षट्त्रिंश. षटल पृष्ठ १००-१०२

(१)	वगलाध्यानम्	१००	१
(२)	साररूपा सर्वकर्मणनाशनोपायजितासा	१००	२
(३)	मन्त्र-कवच-मन्त्रात्मक सर्वकर्मणनिर्वाशनो नाम प्रथमो योग	१००	३-६
(४)	धुद्रकर्मणनिर्वाशनो नाम द्वितीयो योग	१००-१०१	६-८
(५)	कवच स्तोत्र-मन्त्रात्मक शूरकर्मणनिर्वाशो नाम योग	१०१	९-१०
(६)	पायश्री-कवच मन्त्र-स्तोत्रात्मक सर्वकर्मण- नाशनो नाम योग	१०१	११-१२
(७)	तारा-काली-छिन्नमस्तामन्त्रात्मक सर्वबोध- निवारणो नाम योग	१०१	१२-१३
(४)	कवच-आणात्मक सर्वबोधनिवारणो नाम योग	१०१	१४-१५
(६)	रणस्तम्भ-प्राणरक्षा-विद्यमरुताकारक शताक्षरीमन्त्र-कवच-हृदयात्मको योग	१०१	१६-१७
(७)	कवच-चतुरक्षरीमन्त्रात्मक कवचचन्द्रवर्णात्मको योग	१०२	१८
(८)	एकाक्षरी-वेदाक्षरी षट्त्रिंशदक्षरी कवचात्मको- महाब्रह्मास्त्रयोग	१०२	१९-२५

३५. पञ्चत्रिंश. षटल पृष्ठ १०२-१०५

(१)	पीताम्बराध्यानम्	१०२	१
-----	------------------	-----	---

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(२)	रहस्यजिज्ञासा	१०२	२
(३)	ब्रह्मास्त्रयोगफलप्रशंसनम्	१०३	३-१६
(४)	होमयोग-प्रयोगकथनम् (प्रयोगोपसंहार)	१०४-१०५	१७ ३४
(क)	परिशिष्टम्	पृष्ठ १०५-११६	
	श्रुत्यादिग्यासम्मानादियुताः साध्यायनतन्त्रगता मन्त्राः	१०५-११६	
(ख)	परिशिष्टम्	पृष्ठ ११६-११८	
	वज्रपञ्जरकवचस्तोत्रम्	११६-११८	
(ग)	परिशिष्टम्	पृष्ठ ११८-१२२	
	वगलामुखीत्रैलोक्यविजय नाम कवचम्	११८-१२२	
(घ)	परिशिष्टम्	पृष्ठ १२२-१२८	
	श्रीपीताम्बरारत्नावलीस्तोत्रम् साध्यायनतन्त्रस्थानाम्पद्यानामनुक्रमः	१२२-१२८ १-१८	



शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
१६-	१२	चान्य	चान्ये
१८	११	तलतंलेन	तिलतंलेन
२१	७	द्यातोदरी	द्यालोदरी
२१	२६	विविखेत्	वित्तिखेत्
२४	१३	०वाक्पतिस्तुवा	०वाक्पतिस्तु वा
२७	२८	ऋपिसस्यया	ऋपिसस्यया
२७	२६	सक्षमीवान्	सक्षमीवान्
३१	१७	दाभिघातेन	गदाभिघातेन
३५	१७	सस्मरेत् १६'	सस्मरेत् ११' १०
३८	६	सकार	सकार
३८	७	ह्र	ह्र
३८	१६	गदा	गदा
४१	२०	मनुः ४५	मनुः १५
४३	३	तन्त्रराज०	मन्त्रराज०
४५	१	०जिह्वाभेदानार्थ	०जिह्वाभेदानार्थ
५०	२०	जिह्वास्तम्भ	जिह्वास्तम्भ
५२	५	सदाहः	स दाहः
५२	७	०मूर्द्धनि	०मूर्द्धनि
५२	२३	३. घ. पुस्तके	३. घ. पुस्तके
६१	३	जिह्वास्तम्भन०	जिह्वास्तम्भन०
६४	१५	सक्षण	सक्षण
६४	२५	विशेषो	विशेषो
६४	२६	तु	तु
६७	२१	वन्धस्यता	विन्धस्यता
६७	२६	छन्दो व	छन्दोऽन
६८	१३	श्रावणं देवताम्	हृदिदावणं देवताम्
६८	२४	॥२॥	॥२२॥
७२	२	अभ्युत	अभ्युत
७४	२	॥६॥	॥३॥
७५	१६	ध्यानपूर्वकम्	ध्यानपूर्वकम्
७६	१३	चतुर्पञ्चम्	च तपणम्
८३	२५	तत्तत्फल०	तत्तत्फल०
८४	२	मण्डलात्तद्०	मण्डलात्तद्०

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
८५	२२	॥२२॥	॥२३॥
८७	३०	२२. ०तद्दशाधाय च	२२. रा० ०तद्दशाधाय च
८८	१६	॥१७॥	॥१८॥
८९	३१	१६. रा. तु यन्मास	१६. रा. श्लोकाद मित नास्ति
९०	२५	८. रा. यत्तद्दश०	८. रा. यत्तद्दश०
९१	२३	परम्	परम्
९२	१२	कृत्स्नमैः	कृत्स्नमैः
९२	१६	निश्चितम्	निश्चितम्
९२	२६	विद्योपोऽय	विद्योपोऽय
९३	१०	क्षवि सिद्धेद्	क्ष विनिद्धेद्
९३	१०	ययपाक्रमम्	य यपाक्रमम्
९३	२१	नाजंयेद्	नाधंयेद्
९३	२६-३०	१५ १६. १७	१५. १५. १६.
९६	१६	योगो य	योगोऽय
९७	शीर्षं	त्रयस्त्रिंशः	चतुस्त्रिंशः
९८	"	"	पञ्चद्विंशः
१००	६	षट्त्रिंशः	षट्त्रिंशः
१०१	शीर्षं	द्वात्रिंशः	षट्त्रिंशः
१०३	"	चतुस्त्रिंशः	पञ्चद्विंशः
१०४	५	मध्यभागे	मध्यभागे
१०७	२०	ॐ बीज	ॐ बीज
११०	७	ज्वालामुख्यसः०	ज्वालामुख्यसः०
११०	१०	श्रृङ्गादि०	श्रृङ्गादि०
११०	१६	श्रीबहद्भानुमुख्यसः०	श्रीबहद्भानुमुख्यसः०
११०	२६	ग्राह्याणि	ग्राह्याणि
११०	२६	ह्रीं ह्रीं ह्रीं वगला०	ह्रीं ह्रीं ह्रीं वगला०
११२	७	ह्रं फट् स्वाहा	ह्रं फट् स्वाहा
११२	६	परविद्याभक्षिणी	परविद्याभक्षिणी
११३	२६	कीलकाय	कीलकाय
११५	६	०वगलास्त्रोपसहार०	वगलास्त्रोपसहार०
११५	१८	ॐ सिंहाय	ॐ कू सिंहाय
११७	१६	विघ्नर्ना०	विघ्नर्ना०
११८	२१	मन्त्ररूप	मन्त्ररूपं
११८	२२	ज्ञेय	ज्ञेय

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
१२०	१	फ वं	फ व
१२२	१४	नगात्मने	नगात्मजे
१२३	७	बीज	बीज
१२३	२४	०स्थितिष्वसने	स्थितिष्वसने
१२४	१५	०सस्तम्भन	सस्तम्भनम्
१२५	८	वान्त	वात
१२५	१०	०सुदुर्लभ	सुदुर्लभ
१२५	२५	०मतीन्द्रिय	मतीन्द्रिय
१२५	२६	१ त्वपि पाठ.	इत्यपि पाठ.
१२६	७	ह्य	ह्य
१२६	८	गोप्यतम	गोप्यतम



सांख्यायनतन्त्रम्

॥ धीः ॥

सांख्यायनतन्त्रम्

—०००००—

॥ अथ प्रथमः पटलः ॥

धीश्रवाय नमः ॥^१ पीताम्बराय नमः ॥^२

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेद्या

सिंहासनोपरिगता परिपोतवर्णाम् ।

पीताम्बराभरणमास्यविभूषिताङ्गी^३

देवी भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥१॥

क्रीञ्चभेद उवाच—^४

कैलाश (स) शिखरासीन गौरीवामाङ्गसंस्थितम्^५ ।

भारतीपतिवःत्मीकि-^६क्षेपसयुतमोक्षवरम् ॥२॥

घण्टदिकृपातकोशाष्ट-^७विघ्नेशाष्टकसेवितम् ।

भैरवाष्टवृत्^८ देव मातृमण्डलवेष्टितम् ॥३॥

महापाणुपताक्रान्त^९ प्रमथरावृत प्रभुम् ।

नत्वा स्तुत्वा कुमारश्च^{१०} इदं वचनमब्रवीत् ॥४॥

चापचर्यासुनिपुण्युद्धचर्यामयङ्करैः ।

नानामायाविना चैव^{११} जेतुमिच्छामि^{१२} रक्षसाम्^{१३} ॥५॥

तस्योपायं च तद्विद्यां वद मे करुणाकर ।

पुनोऽहं तव सिष्योऽहं कृपापात्रोऽहमेव च ॥६॥

इश्वर उवाच—^{१४}

साधु साधु महाप्राज्ञ क्रीञ्चभेदन^{१५} कोविद ।

ब्रह्मास्त्रेण विना शत्रुसंहारो^{१६} न भवेत्कलौ ॥७॥

१ ख घ धीगणेशाय नमः ; ग. धीशक्तौ जयतः । २ क. पीताम्बराय नमः ; घ. नास्ति । ३ ग. ० विभूषिताङ्गी । ४ ख घ क्रीञ्चभेदन उवाच : ग. क्रीञ्चभेदनोवाच । ५ घ. ० वामाङ्गसंस्थितम् । ६ ख. ० वाल्मीकी० ; ग. ० वाल्मिकी ; घ. वाल्मीक । ७. ख. घ. घण्टदिकृपातकोशाष्ट० । ८ ख. ग. भैरवाष्टकवृत् ; घ. भैरवाष्टवृत् । ९ ग. महापञ्चपदाक्रान्तम् ; घ. महापाणुपताक्रान्त । १० घ कुमारोपि । ११ ख नानामाया-विनश्चैव ; घ नानामायाविन जेतु । १२ घ. जेतुमिच्छामि । १३ ख घ राक्षसान् ; ग राक्षसा । १४ ग इश्वरोवाच । १५ घ. भेदेन । १६ क. ग घ शत्रुसंहार ।

तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि त्रिषु लोकेषु दुर्लभाम् ।
 पुत्रो देयः शिरो देयं न देया यस्य कस्यचित् ॥८॥
 ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी विद्या स्तब्धमायामनुस्तया ।
 प्रवृत्तिरोधिनी विद्या बगला च कुमारक ॥९॥
 मन्त्रजीवनविद्या च प्राणिप्राणापहारिका ।
 पट्कर्माधारविद्या^१ च ये ते^२ पर्यायवाचकाः ॥१०॥
 पट्प्रयोगास्त्रयो विद्या ये विद्यागमभूषिताः ।^३
 तिरस्कृताखिला विद्या त्रिशक्तिमयमेव^४ च ॥११॥
 स्तम्भनेन विना शान्तिर्वश्यञ्चैव तु तद्विना ।
 मोहनाकर्षणञ्चैव विद्वेषोच्चाटनस्तया^५ ॥१२॥
 मारण भ्रान्तिरुद्वेगकारण^६ च कुमारक ।
 विद्या च बगलानाम्नो मुनिगुह्य सुपावनम् ॥१३॥
 विना च स्तम्भिनीविद्या^७ न विद्या च प्रभासते ।
 तस्मादेव^८ महाविद्या^९ कमलासनजीवनम्^{१०} ॥१४॥
 पद्मजो नारदो विद्या^{११} साध्यायनमुनिं प्रति ।
 उपदेशक्रमेणैव उक्तवान्मेरुकन्दरे ॥१५॥
 तेन देवीकटाक्षेण कृतवानागम भुवि ।
 मूलमन्त्रोपविद्याश्च^{१२} अङ्गमन्त्राश्च विस्तरात् ॥१६॥
 प्रयोग चोपसंहार^{१३} तदाराधनतद्गुणम्^{१४} ।
 विस्तरेणोक्तवानस्मि वक्ष्ये तत्सर्वमादरात् ॥१७॥
 स्वमन्त्राक्षरणी^{१५} विद्या स्वमन्त्रफलदायका^{१६} ।
 स्वकीर्तिरक्षिणी विद्या शत्रुसंहारकारिका^{१७} ॥१८॥
 परविद्याछेदन^{१८} च परमन्त्रविदारणम्^{१९} ।
 परमन्त्रप्रयोगेषु सदा विध्वंसकारकम्^{२०} ॥१९॥

१. ग. पट्कर्माहार० । २. अ. घ. एते । ३. ख. पट्प्रयोगाध्याय विद्या पट्विद्यागम-
 भूषिताः । ४. ॥ त्रिरात्रिमयमेव । घ. त्रिशक्तिं खलु मेव । ५. ग. तद्वेषोच्चाटन० ।
 ६. घ. भ्रान्तिमु० । " - " चिन्हान्तर्यतोऽन्तः घ. पुस्तके नास्ति । ७. ख. तस्मादेता । ८.
 ख. ० विद्या । ९. ० स जीवनी । १०. ग. घ. ० विद्या च । ११. ग. चोपहार । १२. घ.
 ० लक्षणम् । १३. ख. स्वमन्त्ररक्षणी, घ. स्वविचाररक्षणी । १४. ख. ० दायिका,
 ग. ० दायका । घ. ० दायिनी । १५. ग. ० कारक ; घ. ० कारिणी । १६. ख.
 घ. ० छेदनी । १७. ख. घ. ० विदारिणी । १८. ख. ० वारिका ; घ. ० कारिणी ।

परानुष्ठानहरण^१ परकीर्त्तिविनाशनम्^२ ।
 परापजयकृद्^३ विद्या परेषा भ्रमकारणम्^४ ॥२०॥
 ये वा विजयमिच्छन्ति^५ ये वा जेतु क्षय^६ क्लो ।
 ये वा क्रूरमृगेन्द्राणां^७ क्षयमिच्छन्ति मानवाः ॥२१॥
 ये (य इ)च्छन्त्याकर्षणान्त्यादि^८ वश्य सम्मोहनादिकम् ।
 विद्वेषोच्चाटन प्रीति तेनोपास्यस्त्वय मनु^९ ॥२२॥
 सत्सम्प्रदायविधिना^{१०} सद्गुरोर्मुखतस्तथा ।
 उपदेशक्रमेणैव गृहीत्वा साधयेन्मनुम् ॥२३॥
 कुलाचारसमायुक्तः^{११} कुलमार्गेण पुत्रक ।
 दीक्षा कुलगुरोर्योगात् गृहीतव्या सुबुद्धिना^{१२} ॥२४॥
 साधयेत्कुलमार्गेण तेन मन्त्र प्रयोजयेत् ।
 उपसंहारण^{१३} तेन कर्तव्यं कुलयोगिना ॥२५॥
 सौभाग्यचर्यासमायुक्त^{१४} सदा तर्पणपूर्वकम् ।
 सदा पूजासमायुक्त^{१५} चिन्तित भवति ध्रुवम् ॥२६॥
 ऋषिसिद्धामरैश्चैव विद्याधरमहोरगैः ।
 यक्षगन्धर्वनागैश्च पिशाचब्रह्मराक्षसैः^{१६} ॥२७॥
 पञ्चैन्द्रियैश्च सञ्चार सद्यो नाशकरो^{१७} मनु^{१८} ।
 पिण्डजाण्डजजीवैश्च किम्पुनः क्रीञ्चभेदन^{१९} ॥२८॥
 इति धर्षविद्यागमे साध्यायनतन्त्रे प्रथम पटलम्^{२०} ॥१॥

॥ अथ द्वितीयः पटलः ॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवी वामेन शनून् परिपीडयन्तीम्^{२१} ।
 गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्या द्विभुजा नमामि ॥१॥

१. ख. ०हारिणी । २. ख. ०विनाशनी । ३. घ परापजयिनी । ४. ख. ०कारणी ;
 य घ ०कारकम् । ५. य विसय० । ६. ख. ग. जेतुक्षय । ७. घ. क्रूरमृगैश्च ।
 ८. ख. घ. इच्छन्ति क्षान्तिकर्माणि ; ग. येच्छन्ति क्षान्तिकर्माणि । ९. क. ग. ०मिदमनु ;
 घ. मिदमनु । १०. घ. तत्संप्रदाय० । ११. क. ख. समायुक्तो ; १२. घ. सुबुद्धिमान् ।
 १३. घ. उपसंहारण । १४. य ०समायुक्तो । १५. य समायुक्तः । १६. य पीताम्बरा ।
 १७. क. ग. घ. नाशकर । १८. य मुनिः ; घ. मनु । १९. य. ०भेदन. ; घ. भेदेन ।
 २०. ख. ग. प्रथमपटलम् ; घ. मन्त्रवर्णनं नाम प्रथमः पटलः । २१. य. परिपीडयति ।

श्रीचभेद उवाच^१—

नमस्ते पार्वतीनाथ नमः पञ्चगङ्गकुण ।

वद दोक्षाविधिं तात तत्सर्वं स्तम्भनादयः^२ ॥२॥

इक्ष्वर उवाच^३—

पुस्तके लिखितान्मन्त्रानवलोक्य जपेत्तु यः^४ ।

स जीवन्नेव चण्डालो भूतः^५ श्वानो भविष्यति ॥३॥

दोक्षामार्गं विना मन्त्रं शंखं शाक्तञ्च^६ वैष्णवम् ।

यो जपेत्त दहत्यागु देवता च जुगुप्सति ॥४॥

दोक्षाविधिं विना मन्त्रं यो जपेत्कोटिकोटय ।

न स सिद्धिमवाप्नोति सिन्धुसंकतवर्षवत्^७ ॥५॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दोक्षा कुलगुरोर्मुखात् ।

उपदेशक्रमणैव मन्त्रसङ्ग्रहणं चरेत् ॥६॥

वेदवेदाङ्गपारशं वेदान्तायंसुनिश्चितम् ।

वैदिकाचारसमुक्तं कुर्याद् गुरुमतन्द्भित^८ ॥७॥

गर्भकोलागमासक्तं^९ नानाकोलपरायणम् ।

षष्ठपादाविनिर्मुक्तं कुर्याद् गुरुमतन्द्भित^{१०} ॥८॥

पुरश्चरणकृत्सिद्धमन्त्रागमविद्यारदम् ।

उद्धतुं चैव सहितं^{११} समर्थं सत्यवादिनम् ॥९॥

प्रस्थानज्ञानपारीष^{१२} नीतिशास्त्रार्थकोविदम् ।

श्रीविद्यामयमन्त्रं कुर्याद् गुरुमतन्द्भित^{१३} ॥१०॥

चक्रज्जासमायुक्तं (वतो) व्यासविद्याविद्यारदम् (द) ।

गुरुर्यत्नाच्च^{१४} वत्तव्यं^{१५} सततं सिद्धिकाशिनिः^{१६} ॥११॥

१. स. घ. श्रीचभेदना०, ग श्रीचभेदशोवाच । २. छ. स्तम्भनादिकम्, व स्तम्भनादिकम् । ३. घ इक्ष्वरोवाच । ४. छ जपेत्तु यः, ग जपेत्तु ये, घ जपेत्तु यः । ५. ग प भूत । ६. घ वा शाक्त । ७. प विषो० । ८. घ गुरुवेदा-समासक्त । ९. ग मन्तद्भित । १०. द्रोकोटय स पुस्तक नास्ति, घ पुस्तके विशेषतो-ऽवलोकयतेऽन्ये दोष — 'परां पदा भयं लब्ध्वा जुगुप्सा वेति पञ्चरम् । कुलं धीनं च मानं च षष्ठपादा[न]विब्रजयन्' ॥ ११. छ. प्रास्थान० ; घ स्वस्थान० । १२. ग. मतं द्भितम् । १३. क प गुरु०, ग गुरु० । १४. ग कृतव्या ; क घ कृतव्या । १५. घ सिद्धिकाशिनि ।

गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा ।
 अथवा विद्यया विद्या चतुर्थं नोपलभ्यते ॥१२॥
 शुश्रूषया गुरु सम्यक् तोषयेच्छिष्य मन्वहम्^१ ।
 प्रसन्नचेतसा दत्त मन्त्रमुत्तममर्भक^२ ॥१३॥
 स्वल्पं वा बहुलं चाय शिष्यद्रव्य गुरुः स्वयम् ।
 गृहीत्वा मन्त्रमादत्ते विक्रीत तदुदाहृतम् ॥१४॥
 राजस चैव तद्विद्याद्^३ भोगद भुवि पुत्रक ।
 विद्याप्रतिनिधिं विद्या[द्] यद्दत्त^४ तामस भतम्^५ ॥१५॥
 मोक्षार्थं च गुरुं यत्नात् शुश्रूषेणं च तोषयेत् ।
 शुश्रूषेणं च यत्नव्य^६ तद्विद्यात्^७ सर्वसिद्धिदम्^८ ॥१६॥
 नो देयं (या)^९ विद्यया विद्या वित्तकाक्षी तथैव च ।
 सच्छिष्याय प्रदातव्य^{१०} धनदेहाद्यवञ्चकः ॥१७॥
 दुरालापसमायुक्त दुर्गुणेन समन्वितम् ।
 सर्वथा वज्रयेच्छिष्य स्वगुरोर्वाभिमानिनम्^{११} ॥१८॥
 अष्टपाशसमायुक्त अष्टाचारसमन्वितम् ।
 सर्वथा वज्रयेच्छिष्य गुरुसेवाविषयिजितम्^{१२} ॥१९॥^{१३}
 निर्मत्सर निरालम्ब नोतिशास्त्रविशारदम् ।
 नित्यानित्यविवेक च शिष्यत्वेनोपकल्पयेत् ॥२०॥
 श्रद्धाभक्तिसमोपेत धनदेहाद्यवञ्चितम्^{१४} ।
 अष्टपाशविनिर्मुक्त शिष्यत्वेनोपकल्पयेत् ॥२१॥
 गुरुशिष्याबुभो मोहादपरीक्ष्य^{१५} परस्परम् ।
 उपदेश ददन् गृह्णन् प्राप्नुयात्तो पिशाचताम् ॥२२॥
 इति षड्विद्यागमे साध्यापनतन्त्रे द्वितीयः पटलम्^{१६} ॥

१. ख. तोषयेच्छिष्यमन्वहम्; ग तोषयेच्छिष्यमन्वहम्; घ सतोष्यामोष्ट-
 सिद्धिदम् । २. ख. मर्भकः । ३. क. ख. ग. तद्विद्या । ४. घ. तद्वत् । ५. घ. भूतम् ।
 ६. ग. यत्नव्य; घ. य लब्ध्वा । ७. क. ग. तद्विद्या; घ सा विद्या । ८. घ.
 सर्वसिद्धिदा । ९. ग. नोपदेश । १०. घ. प्रदातव्या । ११. घ गुरुसेवाभिमानिनम् ।
 १२. ग. घ. गुरुसेवाभिमानिनम् । १३. घ पुस्तके विशेषोऽयं श्लोकः—

‘कामुक काञ्चनासक्त कर्णालयवर्जितम् ।

सर्वथा वज्रयेच्छिष्य गुरुसेवाभिमानिनम्’ ॥

१४. ख. घ. अवञ्चकम् । १५. ख. अपरीक्ष्य; ग. अपरीक्ष्य । १६. ख. घ.
 द्वितीयः पटलः ।

॥ अथ तृतीयः पटलः ॥

१. चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थला^१

ससत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुविम्बाननाम् ॥

गदाहतविपक्षका कलितलोलजिह्वाञ्चला^२

स्मरामि बगलामुखी विमुखवाङ्मुखस्तम्भिनोम्^३ ॥१॥

श्रीञ्चभेद उवाच—^४

पूजाधारण्य-त्रज^५ सर्वमन्त्रविशारद ।

अभिपेकविधिं तात वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच^६—

आश्विने कार्तिके चैव^७ चैत्रमासे^८ कुमारक ।

कुयु^९स्तमभिपेक^{१०} च मानवाः^{११} सिद्धिकाक्षिणः^{१२} ॥३॥

रवी गुरो भृगावब्जवासरे^{१३} च कुमारक ।

मन्त्राभिपेक कर्त्तव्य सतत सिद्धिकाक्षिभिः ॥४॥

रोहिणोश्रवणे चैव पुष्ये^{१४} चैव विशाखयोः ।

मन्त्राभिपेक कर्त्तव्य सद्यः^{१५} सिद्धिकर भुवि ॥५॥

एव शुद्धदिने^{१६} सम्यक् पूर्वैर्ह्नि^{१७} समुपोषितम् ।

स्नापयेत्पञ्चगव्येन ततश्चामलकेन तु ॥६॥

तत शिष्य समानीय^{१८} देवतासन्निधौ पुनः ।

अयुत प्रजपेन्मन्त्रं गायत्रीजपमाचरेत्^{१९} ॥७॥

देवस्येदानभागे तु गोमयनोपलेपितम्^{२०} ।

रङ्गवल्या लिखेद्यन्त्रं रक्तपीतसितासितं ॥८॥

१ ग. पुस्तके 'चलत्कनककुण्डली' इत्यस्मादद्वैतेनपदाशो नास्ति । घ चलत्कनक-
कुण्डला ससत्० । २ घ. कलितवैरि० । ३ ख. घ. विमुखवाङ्मन । ४ ख. घ.
श्रीञ्चभेदन उवाच, ग. श्रीञ्चभेदनोवाच । ५ क पुस्तके 'पूजा' स्थाने 'पूज्य' एव
च ॥ पुस्तके 'यन्त्रज' स्थाने 'यन्त्रज' इति शब्दो स्तः । ६ ग. पुस्तके 'श्रीञ्चभेदनोवाच'
तथा च 'ईश्वरोवाच' इत्येवाय प्रयोग सर्वत्र दृश्यते; अतोऽग्रे एतच्छब्दयो रेप एव पाठांतर
कहनीयो विद्वदभिरिति ७ ख. चैत्रे । ८ ख. चैत्राखे तु । ९ ख ग. कर्त्तव्यमभिपेक,
घ कर्त्तव्य चाभिपेक । १० ख. ग मानवाः । ११ ख. ग सिद्धिकाक्षिभिः । १२
ग भृगा[वि]दी०; घ भृगो इड० । १३ ग. स्वर्षी । घ सर्प । १४ ग. सर्व ।
१५ ग सिद्धिदिने । १६ ग पूर्वैर्ह्नि, घ. पूर्वैर्ह्नि । १७ ग घ समानीत्वा ।
१८ घ. गायत्री वदमातरम् । १९ व. ग. लेपिताम्, ख. लेपदेत् ।

षोडशाङ्गुलमान^१ तु लिखेद् विन्दुमन्यधी ।
 ततो(तदु)परि लिखेद् वृत्त^२मष्टपत्र तु शोभनम् ॥१॥
 प्रियङ्गुशालिगोधूमचरणकाटकमाषकं^३ ।
 कुलत्थमुद्गनीवारं^४ क्रमान्मध्यादि विन्यसेत् ॥१०॥
 प्रस्थ चैव चतुर्विंश प्रत्येक घान्यमेव च ।
 भद्राण स्थूलकलश मध्ये संस्थाप्य बुद्धिमान् ॥११॥
 अष्टपत्र^५ न्यसेत्पुत्र कलशाष्टकमादरात् ।
 क्षालित^६वासित^७ शुद्ध कलश च समपंयत्^८ ॥१२॥
 षोडशैरुपचारैश्च धूपाद्यनव^९विन्यसेत् ।
 आपोवानेन पूर्येत नदीजलमकल्मषम् ॥१३॥
 नि क्षिपेन्नवभाण्डेषु नवरत्नान् कुमारक ।
 कस्तूरीचन्दनोपेतान्^{१०}नवभाण्डेषु नि क्षिपेत् ॥१४॥
 मध्ये देवी सभावाह्य चिन्मयी बगलामुखीम् ।
 प्राणस्थापनमार्गेण केरलोक्तविधानतः ॥१५॥
 वाणी चैव रमा गौरी शची स्वाहा रतिस्तया ।
 दुर्गा छाया^{११} समभ्यर्च्य पूर्वाष्टकपत्रयो^{१२} ॥१६॥
 भर्चयेत्पूवत्पुत्र केरलोक्तविधानतः ।
 नवीननवसंस्थाकवस्त्रणव तु वेष्टयत् ॥१७॥
 सुगन्धपत्रपुष्पादीन्^{१३} विन्यसेत्कलशान्तरे ।
 तत्र शिष्य^{१४} समानीत्वा(य)श्रुतिस्मरणमाचरेत् ॥१८॥
 वेदवेदागपारीणमष्टी^{१५} ब्राह्मणमादरात् ।
 प्रार्थयद्युग्मसयुक्त^{१६}मद्यद्वस्त्रभूषणं ॥१९॥
 शाकुनादिषु भन्त्रेषु प्रथम कलशमाजनम्^{१७} ।
 लक्ष्मीसूक्तेन श्रीयुजत^{१८} द्वितीय कलश-तथा^{१९} ॥२०॥

१ छ ०माने । २ छ ०पय । ३ ग घ षण्णकाटकमाषको । ४ घ
 ०नीवारा । ५ छ भद्र पत्र । ६ क चासित । ७ ख ग घ समचयत् । ८ घ
 धूपाद्यं परि । ९ घ ०चन्दनोपेत । १० घ पुस्तके वाण्यादिशब्दा द्वितीया ता दृश्य ते ।
 ११ घ पूर्वाष्टकसिद्धम् । सुगन्धि पुत्र० , घ सुगन्धि पुत्र पुष्पादि । १३
 ग शिष्या । १४ घ ०पारीणमष्टी । १५ घ ०द्वयसयुक्त० १६ घ कुम्भ
 माजनम् । १७ घ धीयुजत । १८ घ कुम्भमाजनम् ।

पौरुषेणैव सूक्तेन तृतीय कलश तथा^१ ।
 नारायणानुवाकेन^२ चतुर्थं रुद्रसूक्तकैः^३ ॥२१॥
 पञ्चब्रह्ममयैर्मन्त्रैः^४ पञ्चम कलश तथा ।
 षष्ठ चाम्भस्यवारेण^५ ब्रह्मपत्न्या च^६ सप्तमम् ॥२२॥
 अष्टम कठवत्त्या^७ च मार्जयेन्मन्त्रकोविदः^८ ।
 मध्यम^९ पूर्वेकलश^{१०} मूलमन्त्रेण^{११} मार्जयेत् ॥२३॥
 एवञ्च मार्जनं कृत्वा नवीनैर्वस्त्रभूषणैः ।
 प्रलकृत्वा तु शिष्य^{१२} तमानीय^{१३} मण्डपान्तरे ॥२४॥
 वामोरुपरि विन्यस्य मूर्द्ध्नि चाध्याय सादरात् ।
 एकैकं च पुरश्चर्यामूलमन्त्र कुमारक ॥२५॥
 स हिरण्योदके पूर्वं दद्याच्छिष्याय पुत्रक ।
 स्वहृत्कमलमध्यस्था विद्या ज्योतिर्मयी पुनः ॥२६॥
 शिष्यस्य हृदयं चैव प्रविशन्तीति भावयेत् ।^{१४}
 तद्वच्छिष्यस्तु^{१५} सभाष्य गुरु यस्तेन तोषयेत् ॥२७॥
 एव मन्त्राभिषेकञ्च^{१६} कुमादि ब्रह्मास्त्रविधया ।
 सद्यः^{१७} सिद्धिर्भवेत्पुत्र पुरश्चर्या विना^{१८} भुवि ॥२८॥
 इति बह्विधायामे^{१९} साध्यायनतन्त्रे तृतीय पटलम्^{२०} ॥३॥

१. य कुम्भमार्जनम् । २. ए. अनुवाक्येन; ग अनुवाकेन, य पाशाक्षी तासित ।
 ३. ह ग कलश तथा; य. कुम्भमार्जनम् । ४. य. ब्रह्ममयी० । ५. ए. चाम्भस्य
 वारेण; य चाम्भस्य वारेण । ६. ए. ग. ब्रह्मवत्त्या च; य ब्रह्मवत्त्या तु । ७.
 ए. ग कठवत्त्या; य नुगुवत्त्या । ८. य घषवा कठनेन च । ९. य. मध्यस्थ ।
 १०. ग य पूर्वेकलश । ११. य मूलमन्त्रेण । १२. य तद्वच्छिष्य । १३. य
 तमानीया । १४. य. पुरश्चरेऽय विन्य पाठ —

‘उत्प्रेमयोग उत्र ज्ञत्वा तमयाया पदे’पदे ।

बृहत्कमलमध्यस्था विद्या ज्योतिर्मयी पुनः ॥

विद्याकृते भवेत् पुत्र साध्याय परिवर्ष्टयेत् ।^१

१५. य तद्वच्छिष्य तु । १६. य मन्त्राभिषेकञ्च । १७. य. सद्यः । १८. य
 पुरश्चर्यादिना । १९. स. योगमरहस्य । २०. य. त्रीध विधिर्ज्योतिषपटल ।

॥ अथ चतुर्थः पटलः ॥

योग्योदधिमध्येचारुविलसद्गतोज्ज्वले मण्डपे,

श्रीसिंहासनमौलिपातितरिपुप्रेतासनाध्यासिनीम् ।

स्वर्णाभा करपोडितारिरसना भ्राम्यद्गदा बिभ्रती,

स्वप्ने^१ पश्यति तस्य याति विलय सद्योऽम्ब^२ सर्वापदः ॥१॥

कोञ्जनेद(न) उवाच—

‘गङ्गाधर नमस्तेऽस्तु गीरोपति^३ नमो नमः ।

प्रह्लास्यमन्त्रसध्या च वद मे कवणाकर ॥२॥

हिवर उवाच—

मन्त्रमध्यापयेत्^४ सम्यक् शिष्यस्य गुरुरादरात् ।

सदारब्ध^५ तु तन्मन्त्र^६ मन्त्रसध्या समाचरेत्^७ ॥३॥

तन्मन्त्रसध्या वक्ष्यामि शरजमन्त्रं समासतः ।

मन्त्रसध्याविहीनस्य सर्वं तन्निष्फलं भवेत् ॥४॥

पञ्चाङ्गविधिना स्नात्वा मन्त्रस्नानमनन्तरम्^८ ।

ततः स्नायादङ्गमन्त्रैर्मूलेनैव तु मार्जयेत् ॥५॥

धीतवस्त्रं परीधाय स्वगृह्योक्तविधानतः ।

नित्यकर्म समाप्याथ मन्त्रसध्या समाचरेत् ॥६॥

अङ्कुशेनैव मुद्रायाः^९ सूर्यमण्डलग जलम् ।

आनयेत्तोयमध्ये तु ध्यानयोगेन बुद्धियान् ॥७॥

आवाहिनी स्थापनी च सन्निधानमतः^{१०} परम् ।

सन्निरोधनमुद्रा च सम्मुखी प्रार्थनी तथा ॥८॥

एता मुद्राश्च ततो^{११} दर्शयेत्साधकोत्तमः ।

शोधयेदङ्कुशेनादौ^{१२} चामूतीकरण^{१३} ततः^{१४} ॥९॥

तज्जलं वामचुलुके गृहीत्वा साधकोत्तमः ।

मूलेनैव त्रिधामन्त्र्य अष्टपत्राम्बुजं लिखेत् ॥१०॥

१. घ. यस्त्वा । २. ग. सद्योप । ३. ख. ग. घ. गीरोप्रिय । ४. घ. मन्त्रसध्यापयेत् ।

५. ख. घ. सदारम्भ । ६. ख. घ. तन्मन्त्रः । ७. घ. समाचर । ८. घ. मतः

परम् । ९. ख. मुद्रायाः अङ्कुशेनैव । १०. क. सन्निध्यानमतः । ग. सन्निधापनीतः ।

११. ख. सतत । घ. ततोये । १२. घ. नादा । १३. घ. चामूती० । १४. घ. तथा ।

मध्ये एकाक्षरीमन्त्रं वगलानाम्नि पुत्रक ।

वेदसस्यामन्त्रवर्णान्^१ सप्तपत्रं^२ क्रमात्लिखेत् ॥११॥

ग्रन्थपत्रे चाष्टवर्णान्^३ लिखेन्मनु तया ।

पुनरेकाक्षरं मन्त्रं त्रिसप्तमभिमन्त्रयेत्^४ ॥१२॥

तेन मूलेन सम्मार्ज्यं मार्जनक्रमतोर्भक ।

तन्मार्जनविधिं वक्ष्ये ऐहिकामुष्मिकेषु च^५ ॥१३॥

त्रिधा मूढं नि द्विधा बाह्योत्पिषा हृन्नाभिदेशयोः ।

द्विधा पादेषु सम्मार्ज्यं सौम्यकर्मस्वयं^६ क्रमः^७ ॥१४॥

एवञ्च मार्जेन कृत्वा गायत्र्या वगलाह्वया ।

ग्रन्थपत्रञ्च निष्क्षिप्य हृदि सभाव्य देवताम् ॥१५॥

मूलेन मग्नित तोय त्रिवारञ्च त्रिधा क्षिपेत्^८ ।

एवमेव त्रिकालञ्च मन्त्रसंख्या समाचरेत् ॥१६॥

उपस्थानं त्रिकालस्य वक्ष्येऽहं कौञ्चभदन ।

उपस्थानं विना सन्ध्या निष्फला^९ नात्र संशयः ॥१७॥

गम्भीरा च मदीमत्ता स्वर्णकान्तिसमप्रभाम् ।

चतुर्भुजा त्रिनयना कमलासनसंस्थिताम् ॥१८॥

मुद्गर दक्षिणे पादा वामे जिह्वा च विभ्रतीम्^{१०} ।

पीताम्बरधरा सौम्या दृढपीनपयोधराम् ॥१९॥

हेमकुण्डलभूषाङ्गी पीतचन्द्राब्जसंखराम् ।

पीतभूषणभूषाङ्गी स्वर्णसिंहासने स्थिताम् ॥२०॥^{११}

एव ध्यात्वा तु देवेशी^{१२} प्रातः सन्ध्या समाचरेत् ।

उपस्थानं प्रवक्ष्यामि मध्याह्नस्य^{१३} कुमारक ॥२१॥

दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमन दारिद्र्यविद्रावणम्,

भूभृत्स्तम्भनकारण मृगदृशा चेत समाकर्षणम् ।

१. घ. देवसस्या । २. क घ सप्तपत्रैः । ३. घ ग्रन्थपत्रे पद्याणि । ४. ख. त्रि-
सप्त० । ५. ख. वा । ६. ख ग. ० कर्मस्वयं । घ. मार्गस्वयं । ७. घ. क्रमात् । ८. घ
पुस्तके विशेषः पाठः

“पादादिमूढं निपयन्त क्रूरकर्मेषु मार्जयेत्” ।

९. ख. घ पिबेत् । ग. पुनः । १०. घ निष्फला । ११. क. विभ्रकम् । ग.
घ. वज्रकम् । १२. घ. पुस्तकेऽयमशो विशेषः—

“रत्नसिंहासना वन्दे दधीं त्रैलोक्यसुन्दरीम्” ।

१३. ग. देवेशि । घ. देवेश । १४. घ. मध्याह्ने च ।

सोभाग्यैकनिकेतन मम दृशोः कारुण्यपूर्णक्षण^१,

विघ्नोघ वगले हर प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥२२॥

एव मध्यदिनोपास्थि^२ कुरु^३ कर्म सुपुत्रक^४ ।

‘उपस्थान प्रवक्ष्यामि’^५ सायाह्नस्य कुमारक ॥२३॥

मातर्भञ्जय मद्रिपक्षवदन जिह्वाञ्चलां कीलय

ग्राह्यो मुद्रय^६ मुद्रयाशु धिपणामघ्नचोर्गति स्तम्भय ।

शत्रूश्चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौराङ्गि पीताम्बरे^७,

विघ्नोघ वगले हर प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥२४॥

सायमोपास्थि^८ कर्तव्यमेवमेव^९ कुमारक ।

विघ्नग्रहविनाशाय^{१०} एव ध्यायेज्जगन्मयीम्^{११} ॥२५॥

मन्त्रसन्ध्या विना मन्त्र कोटिकोटि जपन्ति ये^{१२} ।

न भवेन्मौनसिद्धाद्यै^{१३} मन्त्रसिद्धि कुमारक ॥२६॥

त्रिकालमाचरेत्सन्ध्यामुपस्थान सत्यं च ।

रहस्यं च जपेन्नित्यं सिद्धिः षण्मासतो भवेत् ॥२७॥

पूर्वोक्तविधिषत्सन्ध्या कृत्वा चाष्टोत्तर जपेत् ।

य य वापि स्मरन्^{१४} पुत्रं त त प्राप्नोति निश्चितम् ॥२८॥

सन्ध्यामन्त्रेषु सर्वेषु^{१५} अङ्गमेव कुमारक ।

न प्रसिद्धघत्यङ्गहीन^{१६} तस्मात्सन्ध्या समाचरेत् ॥२९॥

इति पञ्चविद्यापथे सध्यापनतने चतुर्थः पटलम्^{१७} ॥३०॥

॥ अथ पञ्चमः पटलः ॥

पीतवर्णा मदाघूर्णा समपीनपयोधराम् ।

चिन्तयेद् वगलां देवीं स्तम्भनास्त्राधिदेवताम् ॥३१॥

कौचभरत उवाच—

नमस्तेस्तु जगन्नाथ भस्मोद्भूतविग्रह ।

एकाक्षरीमहामन्त्रं वगलाख्यं महाप्रभो^{१८} ॥३२॥

१. स. कारुण्यपूर्वक्षण । २. घ. ०पास्ति । ३. घ. कुरु । ४. घ. पुस्तके विरोधः पाठ —

“उपस्थानं चैवमेतत्कर्तव्यं विधिवत्तर.” ।

५. ‘—’ चिह्नगतोऽप्यो नैवास्ति घ. पुस्तके ।

६. ग. पुस्तके नास्ति । ७. घ. पीताम्बरो । ८. घ. ०मोपास्ति । ९. घ. ०मन्त्री मेव । १०. घ. ०विनाशे च । ११. घ. ध्याये ० । १२. घ. जपेन तु । १३. घ. ०मौनसिद्धाद्यै । १४. घ. स्मरेत् । १५. घ. सर्वेषु । १६. स. न च सिद्धघत्यङ्गहीना । १७. घ. ०सन्ध्याविधिनाम चतुर्थः पटलः । १८. घ. वद प्रभो ।

ईश्वर उवाच—

तत्तदेकाक्षरीबीजं तत्तन्मन्त्रेषु जीवनम् ।

उत्तमं बीजमुक्तं^१ च मन्त्रसर्वार्थसाधनम्^२ ॥३॥

नानामन्त्रेषु मन्त्रं वा बीजादयं^३ सर्वसिद्धिदम् ।

निर्वीजमेव निर्वीर्यं शिवस्य वचनं यथा^४ ॥४॥^५

तद्वीजोद्धारमनघं^६ सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।

पूजनं^७ च प्रयोगं च वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥५॥

सान्त् रात्तसमायुक्तं^८ चतुर्यस्वरसयुतम् ।

रेफाक्रान्तं बिन्दुयुक्तं ब्रह्मास्त्रंकाक्षरं(रो) मनु^९ ॥६॥

ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय(न्दोऽस्य)गायत्री समुदाहृतम् ।

देवता बगला नाम^{१०} शक्तिश्चन्मयरूपिणी ॥७॥

सौ बीजं ह्रीं च शक्तिश्च ईं कोलकमुदाहृतम् ।

न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि मन्त्रसिद्धिकरं^{११} नृणाम् ॥८॥

भूशुद्धिं भूतशुद्धिञ्च मातृकाद्वितयं न्यसेत् ।

पञ्चाक्षरेण^{१२} विन्यस्य तद्विधिं शृणु पुत्रक ॥९॥

नेत्रबाणं पुनः पञ्च नव पञ्चदशाक्षरम् ।

विन्यसेदगुलीभिश्च षडङ्गेषु तथैव च ॥१०॥

वक्ष्येऽहं पञ्जरं न्यासं मन्त्रसिद्धिकरं नृणाम् ।

बगला पूर्वतो रक्षदाग्नय्या च गदाधरो ॥११॥

पीताम्बरा^{१३} दक्षिणे च स्तम्भिनो चैव नैऋते^{१४} ।

जिह्वाकीलिन्यतो रक्षेत्^{१५} पश्चिमे सर्वतोमयी^{१६} ॥१२॥

वायव्ये च मदोन्मत्ता कीवरे^{१७} च त्रिशूलिनी ।

ब्रह्मास्त्रदेवतंशान्ये^{१८} पाताले स्तम्भमातरः^{१९} ॥१३॥

१. प. बीजयुक्तं । २. घ. मन्त्र सर्वार्थसाधनम् । ३. घ. बीजाज्यं । ४. घ. तथा ।
५. घ. अयमपि विशेष — 'एकाक्षरी बगला उद्धारः' । ६. छ. मनघ । ७. ग. योजनं ।
८. ख. मनुम् । ९. ख. प. नाम्नी । १०. ख. सिद्धिकरी । ११. ख. घ. मन्त्रा-
क्षरेण । १२. घ. पीताम्बरी । १३. घ. नैऋते । १४. घ. जिह्वा कीलयतो रक्षो ।
१५. ख. सर्ववि-मयी । १६. ख. सर्वतोमयी । १७. घ. कीवर्षा । १८.
ख. घ. देवतेशान्ये । १९. घ. पातालस्तम्भमातृकः ।

ऊर्ध्वं रक्षेन्महादेवी जिह्वास्तम्भनकारिणी ।
 एव दश दिशो रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा ॥१४॥
 एव न्यासविधिं कृत्वा यत्किञ्चिज्जपमाचरेत् ।
 तस्य सस्मरणादेव^१ शत्रूणां स्तम्भन भवेत् ॥१५॥
 सर्वं^२ न्यासविधिं कृत्वा बगलामातृका न्यसेत् ।
 तन्मातृकाविधिं वक्ष्ये सारास्तारतर तथा ॥१६॥
 तारञ्च मातृकावर्णं^३ बगलाबीजमेव च ।
 नमोज्जेन च विन्यस्य मातृकास्थानतोभ्यध ॥१७॥
 ध्यानेन^४ मन्त्रसिद्धिः स्याद् ध्यानं सर्वार्थसाधनम्^५ ।
 ध्यानं विना भवेन्मूक, सिद्धमन्त्रोऽपि पुत्रक ॥१८॥

वादी मूकति रङ्गति क्षितिपतिर्वैश्वानर, शोतति,
 श्रोषो शातति दुर्जन, सुजनति क्षिप्रानुम, खञ्जति ॥
 गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यत्रिणा^१ यन्त्रित^२,
 श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्य नम ॥१९॥

एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं^३ तत्त्वलक्षं सुबुद्धिमान् ।
 गुडोदकेन सन्तप्यं तद्दशाक्ष कुमारक ॥२०॥
 त्रिकोणकृण्डे जुहुमाद्यस्तन्मिन्नोन्नते शुभे ।
 ह्यारिकुसुमेनैव सरक्तेनाज्यसयुतम्^४ ॥२१॥
 ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात् तत्त्वसंख्यां तु युगमकम् ।
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत्पुत्र नान्यथा शिवभाषितम्^५ ॥२२॥
 वाममार्गक्रमेणैव वामामभ्यर्च्यं पुष्पिणीम् ।
 मन्त्रसिद्धिकरं चैतत्^६ सर्वदा रिपुनाशनम् ॥२३॥
 परमन्त्रप्रयोगेषु नानाकृत्स्निमचेष्टकैः ।
 सद्यः स्तम्भनविद्या च^७ बगला च न शशयः ॥२४॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे पञ्चमः पटलः^८ ॥४॥

१. य. ०देव । २. ग. य. सर्वं । ३. ख. मातृकावर्णः । य. मातृकावर्णः । ४. य. न्यासेन । ५. य. ०साधकम् । ६. य. त्वद्यत्रिणा । य. त्वद्यत्रिणो । ७. य. यन्त्रितो । ८. य. जपे-मूलम् । ९. ख. सरक्तेन्याज्यः । ग. सरक्तेनाहः । १०. य. शिव-भाषणम् । ११. य. चैव । १२. ख. स्तम्भनकृद्धिदा । य. स्तम्भनविद्यादि । १३. ग. ०एकाक्षरमन्त्रकथनं नाथ पञ्चमः पटलः ।

॥ अथ पठः पटलः ॥

पाठीनेत्रां^१ परिपूर्णवथा^२ पञ्चेन्द्रियस्तम्भनचित्तरूपाम् ।

पीताम्बरादघां पिशितासना^३ सदा भजामि सस्तम्भनकारिणी सदा ॥१॥

श्रीञ्चभेदन उवाच—

नमस्ते योगिससेव्य नमः कारुणिकोत्तम ।

एकाक्षरीमहामन्त्रप्रयोग^४ वद शङ्कर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

उत्तमं कुण्डहोमञ्च स्थण्डिलञ्चैव मध्यमम्^५ ।

स्थण्डिलेन विना होम निष्फल भवति ध्रुवम् ॥३॥

पट्कोण चाष्टकोणञ्च चतुष्कोण कुमारक ।

त्रिविध स्थण्डिल चैव वक्ष्येऽहं कुरु आदरात् ॥४॥

लक्ष्मी (.) शान्तिस्तथा पुष्टिविघ्नाविघ्ननिवारणः^६ ।

चतुरस्रे हुनेरकुण्डे तन्त्रवित् परिशोधिते ॥५॥

वक्षीकरणसम्मोहे वाणिज्ये द्रव्यसंग्रहे ।

कीर्तिकामस्तु जुहुयाद्भगाकारे च कुण्डके^७ ॥६॥

दशेन्द्रियस्तम्भने तु दिव्यगन्धस्तथैव च ।

त्रिकोणबुण्डे जुहुयाद् गुरुमार्गेण बुद्धिमान् ॥७॥

विद्वेषणे तु जुहुयाद्वत्तुले कुण्डमध्यमे^८ ।

उच्चाटने तु जुहुयात् पट्कोणास्ये तु^९ कुण्डके ॥८॥

मारणे चाष्टकोणे तु कतत्तत्कर्मानुसारत^{१०} ।

तत्तद्द्रव्येण जुहुयात्तत्तद्ग्रन्थोक्तमेव च ॥९॥

वक्ष्येऽहं स्थण्डिलैर्होम^{११} पट्कर्मसु^{१२} कुमारक ।

जुहुयाच्छान्तिवश्यपु स्थण्डिले चतुरस्रके ॥१०॥

विद्वेषणे स्तम्भने च जुहुयादष्टकोणके ।

मारणोच्चाटने पुत्र पट्कोणेषु विधीयते ॥११॥

१ ग. पाठिन नेत्रां । घ. भासेन नेत्रां । २. घ. ०गात्रा । ३. ख. ग. पिशितासना । घ. पिशिनी । ४. ग. घ. ०महामन्त्र० । ५. घ. स्थण्डिल मध्यमे तथा । ६. ग. घ. विद्या विघ्न० । ७. क. कुण्डले । घ. घ. कुण्डमध्यमे । ८. घ. च । ९. ग. तत्तत्कामा ११. ख. घ. स्थण्डिले होम । १२ ख. ग. पट्कर्मसु ।

प्रादेश शतहोमे च^१ अरत्तिश्च सहस्रके ।
 हस्त चायुतहोमेपु^२ द्विहस्त लक्षहोमके ॥१२॥
 गुणहस्त कोटिहोमे^३ कुण्ड निम्नोन्नत सुत^४ ।
 स्थण्डिलस्य च^५ वक्ष्यामि तान्त्रिकोक्तस्य लक्षणम् ॥१३॥
 अरत्तिर्हस्तमात्र च द्विरत्तिश्च द्विहस्तयोः^६ ।
 घातं सहस्रमयुतं लक्षहोमेष्वय क्रमः ॥१४॥
 सर्वत्रैवोन्नतं पुत्र प्रादेश स्थण्डिलक्रमम्^७ ।
 लक्षणं^८ स्थण्डिलैः^९ कुण्डैः^{१०} न ज्ञात्वा निष्फलं हुतम् ॥१५॥
 शान्तिवक्ष्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटन तथा ।
 मारणान्तानि शसन्ति षट्कर्माणि मनीषिणः ॥१६॥
 नानारोगैः कृत्त्रिमैश्च नानाचेटकमेव च ।
 विषभूतप्रयोगेषु निरासः^{११} शान्तिरुच्यते^{१२} ॥१७॥
 वक्ष्य जनानां सर्वेषां वात्सल्य हृद्गत स्मृतम् ।
 स्तम्भन रोधन पुत्र सर्वकर्मसु निष्फलम्^{१३} ॥१८॥
 मंत्रस्य^{१४} कलहोत्पत्तिविद्वेषणमुदाहृतम्^{१५} ।
 चलबुद्धिभ्रमेणोक्तमुच्चाटनमिदम्भुवि ॥१९॥
 प्राणिनां प्राणहरण मारण समुदाहृतम् ।
 प्रत्येकमेवा वक्ष्यामि होमयोग सुनिश्चितम् ॥२०॥
 दूर्वाहोम त्रिमध्वकं जुहुयादयुतत्रयम् ।
 रोगहन्ता^{१६} ग्रहादिभ्यः सद्यः शान्तिकर भवेत् ॥२१॥
 सुमन्तः^{१७} कुसुमराज्य^{१८} कृत बाणायुत तथा ।
 जुहुयात्त्रिंशि काले च वक्ष्य सम्मोहन^{१९} भवेत् ॥२२॥
 विभीतकसमिद्धिर्वा करञ्जैर्बीजमेव च ।
 नेत्रायुत हुनेत्पुत्र स्तम्भन परम मतम्^{२०} ॥२३॥

१. घ. तु । २. घ. चायुतहोमे तु । ३. घ. कोटिहोमं । ४. घ. तथा । ५. ग.
 प्र । ६. ख. द्विहस्तकम् । ७. घ. स्थण्डिल क्रमात् । ८. ख. लक्षणैः । ९. ख.
 स्थण्डिल । १०. घ. स्थण्डिले । ११. ख. कुण्ड । १२. क. घ. निरासः । १३. क. अनुच्यते ।
 १४. घ. निश्चितम् । १५. ख. मित्रस्य । १६. ख. विद्वेष च मुदा० । १७. ख.
 रोगकृत्वा । १८. ख. स्वमन्त । १९. घ. बाणव । २०. घ. राज्यैः । २१. घ. मोहनक ।
 २२. घ. परम् ।

निम्बार्कपत्रहोमेन निम्बतैलेन मिश्रितम् ।
 नेत्रायुतेन विद्वेष भवेत्पापाणयोरपि ॥२४॥
 उलूककाकयोः पत्रैर्वाणायुतमसण्डिभिः ।
 जुहुयाच्च ततो रात्रौ भवेदुच्चाटनं सुत ॥२५॥
 तिलतैलसमायुक्तं^१ घाल्मलीकुसुमं^२ तथा ।
 लक्षमेकं हुनेद्वात्रौ प्रेताग्नीं प्रेतकानने ॥२६॥
 नमः प्रेतमुखे^३ भोमे^४ प्रेतकाष्ठेन^५ बुद्धिमान् ।
 मूकण्डुसदृशं^६ चैव मारणं भवति ध्रुवम् ॥२७॥
 इति षड्विंश्यायने साध्यायनतन्त्रे षष्ठं पटलम्^७ ॥६॥

॥ अथ सप्तमः पटलः ॥

पीताम्बरधरा देवी पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ।
 वामे जिह्वा गदा चाम्य धारयन्ती भजाम्यहम् ॥१॥
 श्रीऽध्वभेदेन उवाच—
 महापाप्मपताक्रान्तं नमः पद्मगभूषणम्^८ ।
 पट्त्रिंशदक्षरीं विद्यां^९ वगलापाशमेव च^{१०} ॥२॥

ईश्वर उवाच—
 मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि पुरश्चरणलक्षणम् ।
 प्रयोगं चोपसंहारं शान्तिं तच्छृणु पुत्रक^{११} ॥३॥
 तारं च वगलात्रीजं वगलापदमुच्चरेत् ।
 मुखीति पदमुच्चार्य सर्वशब्दं ततोच्चरेत् ॥४॥
 दुष्टानां पदमुच्चार्य वाचं^{१२} मुखं पदं^{१३} वदेत् ।
 स्तम्भयेति पदं चोक्त्वा जिह्वां कीलय उच्चरेत्^{१४} ॥५॥
 बुद्धिशब्दं ततोच्चार्य विनाशय^{१५} ततो^{१६} वदेत् ।
 स्थिरमायां^{१७} ततोच्चार्यं प्रणवं च ततोच्चरेत् ॥६॥

१. घ. तिलतैलेन समुक्तं । २. ग. घाल्मली० । ३. घ. प्रेतमुख । ४. क. भो मे ।
 घ. भोमेः । ५. घ. प्रेतकाष्ठे च । ६. ख. मूकण्ड० । घ. मूकण्डसदृशे । ७ घ.
 ० एकाक्षरीषट्प्रयोगकथनं नाम षष्ठः पटलः ॥ ८. ख. ० भूषणम् । ९. ख. ग. पट्त्रिंशदक्षरी-
 विद्या । १०. ख. वगला ता च मे वद । ग. वगलायाश्च मे वद । घ. वगलायाश्च
 देवता । ११. घ. साम्प्रतं शृणु पुत्रक । १२. ख. वाचे । १३. ग. पदे । १४. घ.
 कीलयमुच्चरेत् । १५. ग. विनाशयेति । घ. विनाशाय । १६. घ. पद । १७. घ.
 स्तब्धमायां ।

वह्निजामा समुच्चार्य्य एव मन्त्र समुद्धरेत् ।
 षट्त्रिंशदक्षर मन्त्रं मन्त्रराजमिदं भुवि ॥७॥
 न्यासविद्या प्रवक्ष्यामि सदा सिद्धिकरी पराम् ।
 बगलामातृका चादौ कामतार्त्तयिवाग्भवम् ॥८॥
 श्रीमायामातृका चैव बगलापञ्जर न्यसेत् ।
 लघुपोढा च विन्यस्य सर्वमन्त्रध्वज क्रमः ॥९॥
 ध्यान यत्नात्प्रवक्ष्यामि ध्यानं सर्वार्थसिद्धिदम्^१ ।
 आदौ मध्ये तथा चान्ते ध्यानं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥१०॥
 चतुर्भुजा त्रिनयना कमलासनसंस्थिताम् ।
 त्रिशूल पानपात्र च गदा जिह्वा च बिभ्रतीम् ॥११॥
 बिम्बोष्ठी कम्बुकण्ठी च समपीनपयोधराम् ।
 पीताम्बरा मदाधूनीं ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम् ॥१२॥
 नारदो ऋषिरेवात्र बृहतीच्छत्त एव च ।
 देवता बगला नाम स्तम्भनास्तम्बचिन्मयीम्^२ ॥१३॥
 सौ बीजं चैव ह्यं शक्ति. इ^३ कीलकमुदाहृतम् ।
 शत्रूणां स्तम्भनार्थञ्च जपेऽह^४ विधिपूर्वकम् ॥१४॥
 सङ्कल्पपूर्वकं मन्त्रं कीलचक्रक्रमेण च ।
 पृथ्वीलक्ष जपेन्मन्त्रं न्यासध्यानसमन्वितम् ॥१५॥
 तर्पयेत्तद्दशाशच हेतुमिश्रेण^५ वारिणा ।
 जुहुयाद्वित्त्वकुसुमं^६ तद्दशाशं च बुद्धिमान् ॥१६॥
 ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात्तद्दशाशं घृतप्लुतम् ।
 तर्पयेत्^७ तर्पयामीति स्वाहान्तं होममाचरेत् ॥१७॥
 पूजा त्रिकालिकी नित्यं जपस्तर्पणमेव^८ च ।
 होमो^९ ब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते ॥१८॥
 पुरश्चर्या^{१०} विना मन्त्रं न प्रसिद्धयति^{११} भूतले ।
 एव स्वाधीनमन्त्रेण^{१२} षट्प्रयोगान् समाचरेत् ॥१९॥

१. स. सर्वकामार्थसिद्धिदम् । २. स. स्तम्भनास्त्रे च चिन्मयी । ३. घ. स्तम्भनास्त्र
 च चिन्मयी । ४. ग. रं । ५. घ. जपेत् । ६. घ. हेतुमिश्रितः । ७. घ. वित्त्वकुसुमं ।
 ८. घ. तर्पणे । ९. घ. जपतर्पणं । १०. घ. होमः । ११. घ. पुरश्चर्या । १२.
 घ. सा सिद्धयति । १३. घ. साधितमन्त्रेण ।

शान्त्याद्य (न्त्यर्थे) जुहुयाच्छालिसक्तुराज्यसमन्वितम्^१ ।

गुणायुत हुते^२ धीमान् कुण्डे पूर्वोक्तमादरात् ॥२०॥

वशीकरणकार्येषु विल्वपत्र घृतप्लुतम्^३ ।

गुणायुत चामलकप्रमाण क्रौञ्चभेदन^४ ॥२१॥

स्तम्भनेपु^५ हुनेद्धीमान् तालक घृतसम्प्लुतम् ।

वदरीफलमात्र तु गुणायुतमनन्यधीः ॥२२॥

विद्वेषणे च जुहुयात्पत्रैर्निम्बाकंसयुतं^६ ।

रात्रौ वेदायुत धीमान् सद्यो विद्वेषण परम्^७ ॥२३॥

राजीलवणसयुक्तं वाणायुतमनन्यधीः ।

तस्य^८ चोच्चाटन^९ क्षीघ्र ध्रुवकूर्मादियोरपि^{१०} ॥२४॥

तलतलेन सयुक्तं मापहोम गुणायुतम् ।

प्रेताग्नौ प्रेतकाष्ठ^{११} च जुहुयात्प्रेतकानने ॥२५॥

भौमवारे निशा^{१२} नग्नो जुहुयात्प्रेत उत्सुके^{१३} ।

सद्यो मारणमाप्नोति मृकण्डुसदृशोऽपि च^{१४} ॥२६॥

॥ इति पद्मविद्यागने साध्यापनतन्त्रे सप्तम पटलम्^{१५} ॥

॥ अष्टाष्टमः पटलः ॥

विम्बोष्ठी चारुवदना समपीनपयोधराम् ।

पानपात्र वैरिजिह्वा धारयन्ती शिवा भजे ॥१॥

कौञ्चभेदन उवाच—

तमः कौलागमाचार्य वेदवेदाङ्गपारग ।

वग्लामनराजस्य प्रयोग वद शङ्कर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

राजीलवणमादाय मूलमन्त्रेण पुत्रक ।

ग्रस्तं कृत्वा साध्यनाम जुहुयादयुत निशि ॥३॥

१. ख. शान्त्युमाज्य० । २. ख. ग घ हुनेद् । ३. ख. घृतप्लुते । ४ घ पुस्तके पद्यमिदं नास्ति । ५. ख. स्तम्भने गु । घ. स्तम्भने तु । ६. ख. घ ० निम्बाकं सभवं । ७ ख. ग. घ. भवेत् । ८. घ. सद्य । ९. ग उच्चाटन । घ. मुच्चाटन । १० ख ध्रुव कूर्मा० । घ. ध्रुवकर्मा० । ११. ख. प्रेतकाष्ठे । १२. ख. निशा । ग. घ निशा । १३. ख. गोत्सुके । घ. दिह्मुत्से । १४. घ. वा । १५. घ. मन्त्र राजकथन नाम सप्तम. पटलः ।

नानारोगहर चैव नानाभूतनिकृन्तनम् ।
 नानाकृत्त्रिमनाशञ्च भवेत्सत्य न सशयः ॥४॥
 हरिद्राखण्डहोमेन अयुतेन कुमारक ।
 वशीकरणसम्मोह भवेच्छङ्कुरभाषणम् ॥५॥
 तालकेन हुनेद्रात्री नेत्रायुतमनन्यघोः ।
 नानास्तम्भनमार्गेषु सत्यमेतन्न सशयः ॥६॥
 खरस्य^१ रक्तमादाय जातिकर्मविरोधिनाम् ।
 निम्बाकंपत्रमादाय प्रत्येक नाम चालिखेत् ॥७॥
 प्रेताग्नौ प्रेतकाण्डे च नग्ने च^२ प्रेतदिङ्मुखे^३ ।
 हुनेत्प्रेतवने धोमानयुत द्वेपकारकम् ॥८॥
 अनायस्य चितौ रात्रौ शत्रुप्रकृतिं लिखेत् ।
 हृदये नाम आलिख्य^४ मारयेति ललाटके ॥९॥
 दहयुग्मं लिखेद् बाहो ऊर्वोस्तस्य^५ कुरुद्वयम् ।
 एव च विलिखेत्सम्यक् सशत्रोर्वणमादरात्^६ ॥१०॥
 ताडयेद् हृदये^७ मन्त्री शतमष्टोत्तर जपेत् ।
 तद्भस्म सग्रहे^८ धोमान् गोपयेन्नगराद्वहि^९ ॥११॥
 पुनर्भो^{१०} मनिशाकाले मन्त्रयेन्मूलमन्त्रतः ।
 अष्टोत्तरसहस्रं च शत्रुमूर्ध्नि^{११} विनिक्षिपेत्^{१२} ॥१२॥
 स शत्रुः सप्तरात्रेण म्रियते नात्र सशयः ।
 उष्ट्राकूट रिपुं ध्यात्वाग्रस्य दण्डेन^{१३} मन्त्रयेत्^{१४} ॥१३॥
 निक्षिपेत्सप्तरात्रं तु सप्तधा मन्त्रित^{१५} तथा ।
 उच्चाटन भवेत्सत्य शिवस्य वचन यथा^{१६} ॥१४॥
 प्रेतभस्म रवौ^{१७} ग्राह्यं वगलामत्रराजतः ।
 सहस्रं मन्त्रयेच्छत्रो^{१८} रात्रौ^{१९} नग्ने न^{२०} भीमके ॥१५॥

१. ग. घ. वाराह । २. ख. नग्नेन । घ. नग्ने वा । ३. ख. घ. प्रेत-
 दिङ्मुख । ४. ग. घ. मानिष्य । ५. ख. ऊर्वोर्भस्म । घ. ऊर्वोर्भस्म । ६. ख.
 स्वशत्रोः । घ. शत्रोर्वणसमादरात् । ७. ग. घ. गदया । ८. ख. ग. घ. सग्रहेद् ।
 ९. घ. रोपयेत् । १०. घ. शत्रोन्मूर्धनि । ११. घ. निक्षिपेत् । १२. ख. प्रत्य-
 दण्डेन । घ. प्रत्य कृत्वा तु । १३. घ. मन्त्रितम् । १४. ख. मन्त्रिते । १५. घ.
 तथा । १६. क. वशी । १७. ख. भस्म । घ. रात्रौ । १८. घ. मन्त्रो । १९.
 ख. नग्नेन । ग. घ. नग्नेन ।

शत सहस्रमयुत कार्यलाघवगौरवात् ।

तरापण्यासव^१ पीत्वा^२ प्रयोग शान्तिमाप्नुयात् ॥२८॥

न कर्तव्यं मुमुक्षुश्च^३ परपीडा कदाचन ।

प्राणं कण्ठगतं कुर्यात् पश्चात् सस्कारमाचरेत् ॥२९॥

इति षड्विधागमे सांख्यायनतन्त्रे अष्टम पटलम्^४ ॥८॥

॥ अथ नवम पटलः ॥

पीताम्बरालङ्कृतपीतवर्णां शातोदरी^५ शर्वमुखामृताचिताम्^६ ।

पीनस्तनालङ्कृतपीतपुष्पा सदा स्मरेय बगलामुखी हृदि ॥१॥

कौबभेदन उवाच—

नमोऽस्तु मन्त्रागमकोविदाय श्रीनीलकण्ठाय नमो नमस्ते ।

एतन्मनोर्यन्त्रमखण्डतेजसे^७ प्रयोगमूलं वद चन्द्रचूड ॥२॥

ईश्वर उवाच—

यन्त्रप्रयोग यमशासने^८ कसौ यन्त्रप्रयोग यमिना च दुर्लभम् ।

यन्त्रप्रयोग यतयस्तु कुर्वता^९ यज्ञादि^{१०} गोविप्रयतश्च^{११} रक्षणे ॥३॥

बिन्दु^{१२} त्रिकोण वृत्त च अष्टकोण ततोपरि ।

ततोपरि लिखेत्पुत्र पट्कोण वृत्तमादरात् ॥४॥

ततोपरि लिखेत्सम्यक् भूपुरद्वयमादरात्^{१३} ।

विन्दुमध्ये लिखे^{१४} त्रिकोणत्रितये^{१५} त्रितय^{१६} त्रिधा ॥५॥

अष्टकोणेपु^{१७} विलिखेद गायत्री बगलाह्वयाम् ।

पट्कोणेपु^{१८} सुसलिल्य^{१९} विद्या पट्त्रिंशदक्षरीम् ॥६॥

वृत्तेपु^{२०} विलिखेत्पुत्र पञ्चाशद्वर्णमादरात् ।

भूपुरेपु च सलिल्य प्राणस्थापनकं मनुम्^{२१} ॥७॥

१ ख तत्तर्पणाम् । २ ख सपीत्वा । ३ ख मुमुक्षुश्च । ४ अष्टम पटलः ।

५ ख शा तोदरी । ६ ख य शर्वमुखामरा० । ७ क, ख ग येतन्मनोपत्रमखण्ड-

तेजः । ८ घ यमशासन । ९ घ कुर्वन् । १० ख घ यज्ञादि । ११ घ यतश्च ।

१२ ख घ बिन्दु । ग बिन्दुः । १३ ख, घ घ पुस्तकेष्वयमशो विशेष —

“विन्दुमध्ये लिखेद्बीजं बगलायाश्च पुनर्कं ।

साध्यं तद्वीजगर्भे (मध्यं घ) स्य कुर्यात् सम्यक् सुबुद्धिमान् ॥

१४ क ख, ग सजीव विविखेत् । १५ घ त्रितयेपु । १६ घ त्रिधा । १७ घ, अष्ट-

पत्रेपु । १८ घ, पट्कोणके । १९ ख घ, सुसलिल्य । २० घ वृत्ते तु । २१ घ मनु ।

रजते स्वर्णपट्टे वा प्रादेश चतुरस्रके ।
 लेखिन्या स्वर्णमय्या^१ च लिखेद्भार्गववासरे ॥८॥
 पूजायत्रमिदं पुत्र पूजनात् सर्वसिद्धिदम् ।
 पूजाविधिं प्रवक्ष्यामि मुनिगुह्य सुपावनम् ॥९॥
 मूलमन्त्रेण सम्पूज्य उपचारंश्च षोडशं ।
 शुद्धप्रदेशजा दूर्वा निर्मला च सुकोमलाम् ॥१०॥
 सग्रहेक्षालयेत् सम्यक् यत्रराजेन पुत्रक ।
 मन्त्रान्ते च नम^२ पूर्व^३ नि क्षिपेद् दूर्वमादरात्^४ ॥११॥
 एव भूतसहस्रं च पूजयेच्च दिने दिने ।
 मण्डलाद्वधाधय^५ सर्वे^६ मुच्यन्ते कृत्त्रिमादय ॥१२॥
 भूतप्रतपिशाचाद्या कूरा खेचरभूचरा ।
 पूजनान्नाशमाप्नोति शिवस्य वचनं यथा ॥१३॥
 अचयेत्पूर्ववद्यन्त्रमुपचारंश्च षोडशं ।
 सग्रहेद्रक्तकुसुम^७ ह्यारिं च सुनिर्मलम् ॥१४॥
 तेन पूजा प्रकर्त्तव्या^८ पूर्ववन्मण्डलं सुधौ ।
 सम्मोहनं च वक्ष्येच्च द्रव्यलाभं भवेद्ध्रुवम् ॥१५॥
 बिभीतकोद्भव पुष्पमाहरेद्भूमिवासरे ।
 पूजयेत्पूर्ववत्पुत्र नानास्तम्भनकर्मणि ॥१६॥
 निम्बार्ककुसुमेनाथ^९ यत्र वापि^{१०} कुमारक ।
 पूर्ववत्पूजयेन्मन्त्री^{११} सद्यो विद्वपणं भवेत् ॥१७॥
 धत्तूरकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेत्सुत ।
 उच्चाटनं भवेत्सत्यं नान्यथा शिवभाषणम् ॥१८॥
 विपतिदुकपुष्पेण पूर्ववत्सम्यगर्चयेत् ।
 सद्यो विनाशमाप्नोति^{१२} मृकण्डुसहस्रो^{१३} रिपु ॥१९॥

१. ल. स्वर्णमय्या । २. य. पुन । ३. ल. पूर्वा । ४. घ. क्षिपेद्दूर्वा समादरात् । ५. घ. ० दामया । ६. ल. सर्वा । ७. क. सग्रहे प्रकुसुम । ८. घ. प्रकर्त्तव्य । ९. घ. ० चाथ । १०. घ. पुत्रलाय । ११. घ. ० पूजयन् । १२. ल. विनाशमायाति । घ. नाशमवाप्नोति । १३. घ. मृकण्ड० ।

शमन्तकुसुमेनैव^१ पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
 पूर्ववज्जायते^२ लोके वेदशास्त्रार्थकोविदः ॥२०॥
 पलाशकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
 सद्यो मन्दो भवेद्द्वाम्नी लभेत्सर्वज्ञतां सुतं ॥२१॥
 पूर्ववत्पूजयेत् पुत्रं भ्रशोककुसुमेन च ।
 ईप्सिता^३ लभते^४ कन्या सा तु पुत्रवती भवेत् ॥२२॥
 तुलसीमञ्जरीभिश्च पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
 ज्ञानभक्तिश्च वराम्य लभते^५ तरलैरपि^६ ॥२३॥
 नन्दावर्त्तेन^७ सम्पूज्य वातरोग व्यपोहति ।
 मल्लिकाकुसुमेनैव पूजयेज्ज्वरशान्तये ॥२४॥
 कुसुमैश्चम्पकैरर्च्यं^८ शीतज्वरनिवारणम् ।
 भर्चयेज्जातिकुमुमैर्महोरगं^९ विनश्यति ॥२५॥
 वन्यैश्च मल्लिकापुष्पेनि क्षोपं^{१०} लभते ध्रुवम् ।
 केतकीकुसुमेनार्च्यं द्रव्यवान् जायते ध्रुवम् ॥२६॥
 एव च पूजयेद्यन्त्रं न जपेन च होमतः ।
 प्रयोगसिद्धिर्भवति वगलायाः प्रसादतः ॥२७॥

इति दशविधायमे सांख्यायनतन्त्रे नवमः पटलः^{११} ॥२८॥

॥ अथ दशमः पटलः ॥

कम्बुकण्ठीसुताम्रोष्ठी^{१२} मदविह्वललोचनाम् ।
 भजेद्बृहद् बगला देवी पीताम्बरधरा शुभाम् ॥२९॥

श्रीऋषेदेन उवाच—

अष्टमूर्त्ते महामूर्त्ते नमस्ते चन्द्रशेखर ।
 यद प्रयोग मन्त्रस्य^{१३} लेपनक्रममादरात्^{१४} ॥३०॥

ईश्वर उवाच—

पूर्वोक्तं यन्त्रमालिख्य^{१५} प्राणस्थापनपूर्वकम् ।
 भर्चयेदुपचारेण^{१६} चन्दनेन विलेपयेत् ॥३१॥

१. य. शमन्तः । २. य. पुत्रवाञ्छा । घ. पुत्र चा० । ३. य. ईप्सितां च । ४. य. लभते । ५. ग. लभ्यते । ६. य. च परैरपि । ७. ख. नन्दावर्त्तेन । नन्दावर्त्तश्च । घ. नन्दावर्त्तेन । ८. य. ० रर्चेत् । ९. ग. महारोगं । १०. य. निक्षिप्त । ११. य. ० यत्रप्रयोग नाम नवमः पटलः । १२. ख. ग. कम्बुकण्ठी । १३. य. मन्त्रस्य । १४. य. लेपनं । १५. य. ० मालिख्य । १६. य. ० उपचारैश्च ।

बाणायुत जपेद्धीमान् नित्यपूजासमन्वितम् ।
 राज्यसिद्धिर्भवेत्सत्यमयत्नेन^१ कुमारक ॥४॥
 कस्तूरीलेपनं कुर्यात्सम्यगचित्तयन्त्रके ।
 नित्यं बाणसहस्रं च^२ न्यासध्यानसमन्वितम् ॥५॥
 मण्डलद्वययोगेन रोगकृत्याग्रहादयः ।
 तत्क्षणान्नाशमायान्ति^३ तम, सूर्योदये^४ यथा^५ ॥६॥
 पूर्तिं चार्द्धं पल^६ नित्यं लेपयेद्यन्त्रमादरात् ।
 जपं कुर्यात्पूर्ववच्च मासं वा मण्डलं तु वा ॥७॥
 वशीकरं तु सम्मोहं द्रव्यसंग्रहमेव च ।
 भवत्येव न सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ॥८॥
 हरिद्रातालकं चैव प्रकंक्षीरेण महितम्^७ ।
 त्रिकालं लेपयेन्नित्यं त्रिसहस्रं जपेद्दिने ॥९॥
 महास्तभनमाप्नोति^८ कर्णाक्षिवाक्पतिस्तुवा^९ ।
 मण्डलान्नगर^{१०} ग्रामं रणसम्मोहमेव च^{११} ॥१०॥
 सर्पपास्त्रिकदूर्बलं च^{१२} दुग्धैर्वज्रार्कसम्भवं^{१३} ।
 क्षारेण^{१४} मर्दयेत्सम्यक् यन्त्रलेपनमाचरेत् ॥११॥
 कृत्वाधंमण्डलं चैव षट्सहस्रं दिने दिने ।
 विद्वेषणं भवेत्सिद्धं शिवस्य वचनं यथा ॥१२॥
 घटूरं तिन्दुक^{१५} बीजं तालकेन समन्वितम् ।
 निम्बपत्रद्वयेनैव मर्दयेत्लेपयेत्त्रिधा ॥१३॥
 एव मासप्रयोगेण नगरं ग्राममेव च ।
 रणे^{१६} वा राजगेहे^{१७} वा शीघ्रमुच्चाटनं भवेत् ॥१४॥
 प्रेताग्रं प्रेतभस्म^{१८} च प्रेताङ्गारं समं समम् ।
 प्रकंवज्जमय^{१९} क्षीरं खत्वेनैव^{२०} तु मर्दयेत् ॥१५॥

१. क. ०मयनेन । २. घ. तु । ३. घ. ०माप्नोति । ४. घ. सूर्योदय । ५. घ. तथा । ६. ख. भूचिन्तार्थं पल । ७. घ. मह्येत् । ८. घ. पश्यात् । ९. ख. कर्णाक्षिवाक्पतिस्तु । घ. कर्णाक्षी वाङ्मतिस्तु । १०. घ. नगरे । ११. घ. वा । १२. ख. सर्पपास्त्रिकदूर्बलं च । ग. सर्पपास्त्रिकदूर्बलं । घ. सर्पपास्त्रिकदूर्बलं । १३. ग. क्षीरेण । घ. सत्त्वेन । १४. घ. तिन्दुक । १५. घ. रणं । १६. घ. राजगेह । १७. ख. प्रेतभूति । १८. ग. प्रकंवज्जमयो । घ. प्रकंवज्जमय । १९. क. खत्वेनैव ।

त्रिकालं लेपनं कुर्यात् प्रीतये होमयुक्तिना^१ ।
 नित्यं^२ ऋतुसहस्रं^३ तु मन्त्रराजमिमं^४ जपेत् ॥१६॥
 पक्षान्मारणमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।
 अथवा निम्बतैलेन तद्वत्कृत्वा तु मारणम् ॥१७॥
 तिलतैलेन संयुक्तं मर्दयेद् गरमादरात्^५ ।
 यन्त्रस्य लेपनं कुर्यात् त्रिकालं मूलविद्यया ॥१८॥
 सन्तपेद्दीपशिखया पक्षमेकं कुमारक ।
 मारणं च भवेन्नित्यं नात्र कार्या विचारणा ॥१९॥
 वज्रीक्षीरं^६ त्रिकालं तु पूर्ववत्लेखनेषु^७ च ।
 तापज्वरस्य पीडाया पण्मासाद्रिपुमारणम् ॥२०॥
 पूर्ववत्लेपनं चैव जपसन्तर्पणं^८ तथा ।
 त्रिसप्तदिनमाग्नेन मारणं चोरगौरवः^९ ॥२१॥
 घट्टूरद्रवसंयुक्तं मर्दयेत्सर्वपं तथा ।
 जपलेपनयोः^{१०} पुत्र गुल्मरोगी भवेद्विपुः ॥२२॥
 निम्बपत्रद्रवं चैव विषकण्टकजं^{११} तथा ।
 विषतिन्दुकजं चैव त्रिविधं च समं समम् ॥२३॥
 त्रिकाललेपनं^{१२} कुर्यात् षट्सहस्रं^{१३} मनुं जपेत् ।
 पक्षेण^{१४} द्वादशाहेन^{१५} मारणं च समं समम्^{१६} ॥२४॥
 त्रिकाल लेपनं कुर्यात् षट्सहस्रं मनुं जपेत्^{१७} ।
 मर्दयेदारनालेन मारिष त्रिफलां तथा ॥२५॥
 त्रिकालं लेपनं कुर्यात्^{१८} त्रिकालं जपमाचरेत् ।
 करपादादिदाहेन^{१९} मण्डलाच्छत्रुमारणम्^{२०} ॥२६॥

१. घ. सन्तपेद्दीपशिखया । २. घ. नित्ये । ३. घ. ऋतु० । ४. घ. ०मिद ।
 ५. घ. ०रतवमा० । ६. घ. वज्रीक्षीरं । ७. घ. ०लेपनेन च । ८. घ. जपः० । ९.
 घ. चोरिगौरवः । १०. घ. चोरगौरवः । ११. घ. यत्रलेपनयोः । १२. घ. जपलेपनया । १३. घ.
 ०कण्टकके । १४. घ. घ. त्रिकाले० । १५. क. सहस्रं । १६. घ. पक्षाद्वा । १७. घ.
 द्वादशाहे वा । १८. घ. घ. न सद्यः । १९. पादद्वये पुस्तकान्तरेषु नास्ति । २०.
 घ. कृत्वा । २१. क. करपादपि० । घ. करपादावि । घ. करपाददहेनैव । २२. क.
 ०मारणम् ।

गोमयैर्लेपन^१ दत्त्वा गुल्मरोगी भवेद्विपुः ।
 गोमूत्रं छागमूत्रं च मिश्रितं पूर्ववत्तथा ॥२७॥
 पित्तरोगी^२ भवेच्छत्रुरर्द्धमण्डलमात्रतः ।
 लेपनं छागरक्तेन भ्रान्तान्पति^३ भवेद् ध्रुवम् ॥२८॥
 मत्कुणस्य च रक्तेन उन्मादी जायते रिपुः ॥

॥ इतिषट्विंशत्यध्याये साध्यायनतन्त्रे दशमं पटलम् ॥१०॥

॥ अर्थकादशः पटलः ॥

नमस्ते वगलादेवोमासवप्रियभामिनीम्^४ ।
 भे(भ)जेऽहं स्तम्भनाथं च गदा जिह्वा च बिभ्रतीम्^५ ॥१॥

श्रीऋक्षभेदेन उवाच—

नमस्ते मौलिसत्सेव्य^६ नमः पद्मगभूषण^७ ।
 तर्पणेन^८ प्रयोगं च वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

पूजयेद्यन्त्रराजं च उपचारैश्च षोडशैः ।
 तद्यन्त्रोपरि सःतर्प्यं तर्पणस्य विधिं शृणु ॥३॥
 गुडोदकैस्तर्पणं च कुर्यात्पचायुतं तथा ।
 शान्तिवृत्त्य भवेच्छीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥४॥
 द्रवेण^९ तर्पणं कुर्यात् पूर्वसस्यासु पुत्रक ।
 पक्ष्य सम्मोहनं चैव भवेत्तर्पणयोगतः ॥५॥
 मोहिनीद्वयसमिश्र^{१०} जलेनेव तु तर्पणम् ।
 नेत्रायुतप्रमाणेन जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥६॥
 गतिगर्भ^{११} च वाक्पाणि^{१२} गात्रं श्रोत्रं तथाक्षिबम् ।
 क्षुधा तृष्णा च निद्रा^{१३} च रतभनं च भवेद् ध्रुवम् ॥७॥
 निम्बाकंपत्रजद्रावैर्मिश्रितं नूयवारिणा ।
 पञ्चायुतं तर्पणेन सद्यो विद्वेषणं भवेत् ॥८॥

१. गोमये. २. प. पित्तरोगी. ३. छ. भ्रा. तचिरातो. ४. भ्रा. भ्रा. तचिरातो. ५. भ्रा. भ्रा. तचिरातो. ६. वगलादेवो वामवप्रियमोहिनी. ७. प. बिभ्रती. ८. प. मोहिनी. ९. प. भूषणे. १०. प. तर्पणस्य. ११. छ. प. प. द्रवेण. १२. प. मोहिनीद्वयसमिश्र. १३. प. गतिस्तर्भ. १४. प. गति गर्भ. १५. प. प. वाक्पाणि. १६. प. तृष्णा क्षुधा च निद्रा.

वज्रार्कक्षीरमिश्रं च 'कान्ता च' तर्पणेन च ।
 उच्चाटन^१ भवेच्छशोरयुतप्रयमादरात् ॥१॥
 प्रेतान्नं प्रेतमस्म^२ च प्रेताङ्गारं च पुत्रक ।
 समं समं गरं^३ ग्राह्यं जीवेनैव^४ तु मिथितम् ॥१०॥
 नेत्रायुतं तर्पणेन साक्षाद् रिपुविनाशनम् ।
 ह्यारिपत्रजद्रावेमिथित^५ मारणं भवेत् ॥११॥
 कर्पूरमिथितं तोय^६ पचाशच्छतमादरात् ।
 नित्यं च तर्पयेद् धीमान् मासमेकमतन्द्रितः ॥१२॥
 पुराणञ्चरमत्युग्रं^७ पित्तरोगं विनश्यति ।
 चन्दनाम्भस्तर्पणेन तापं कृत्रिमज्ज हरेत् ॥१३॥
 कस्तूरीमिथितं तोये राज्यलाभो भवेद् ध्रुवम् ।^८
 पैस्तु^९ तर्पणमन्त्रेषु^{१०} अयुतं रविसंख्यया^{११} ॥१४॥
 कुबेरसदृशः श्रीमान् जायते नात्र सशयः ।
 माण्डवीद्रव्येण सम्मिश्र^{१२} पूजितं^{१३} शुद्धवारिणा ॥१५॥
 रत्नायुत^{१४} तर्पणेन लक्ष्मीर्वा^{१५} जायते ध्रुवम् ।
 गोक्षीरतर्पणेनैव ईप्सिता सिद्धिमाप्नुयात् ॥१६॥
 तन्त्रेण तर्पणं चैव^{१६} पित्तरोगं व्यपोहति ।
 भारनालेन संतप्यं जलदोषं च^{१७} क्षाम्यति ॥१७॥
 हृग्दिग्दाम्भस्तर्पणेन स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ।
 शमतकुसुमेनैव^{१८} मिथितं जलतर्पणम् ॥१८॥
 पुत्रवान् जायते मर्त्यो^{१९} अयुतेन न सशयः ।
 कदलीफलगोक्षीरं शर्करा च समं समम् ॥१९॥

१. '—' ख. करामः । घ. कौशामः । २. क. उच्चाटनो । ३. ख. प्रेतभूमि ।
 ४. घ. च स० । ५. ख. मानेनैव । ६. घ. मयूरपत्रजैः द्वादि० । ७. क. तोये । ८.
 ग. घ. ० मृत्युम् । ९. घ. पुस्तकेऽयं विशेषः पाठः—

“गोक्षीद्रव्यस्तर्पणेन द्रव्यलाभो भवेद् ध्रुवम् ।”

१०. ख. ग. पैष्ट्या । घ. पैष्टी । ११. ख. तर्पणमन्त्रेण । ग. तर्पणमन्त्रेषु । घ. तर्पण-
 मान्त्रेण । १२. घ. श्रुतिसंख्यया । १३. घ. समिध । १४. घ. पूजितः । १५. ख.
 तत्त्वायुत । घ. तत्त्वायुतं । १६. ख. ग. घ. लक्ष्मीवान् । १७. ख. घ. तर्पणेनैव । १८.
 ख. प्र । १९. घ. स्वमन्त्र० । २०. घ. मृत्यो ।

पलाष्टक च प्रत्येक मिश्रित जलतर्पणम् ।
 मनसिद्धिर्विना^१ सिद्धिर्भञ्जितैराग्यमेव च ॥२०॥
 भ्रमज्ञानं व्यपोहति नान्यथा शिवभाषणम् ।
 द्यावरक्तेन समिश्र चाचित तैलतर्पणात्^२ ॥२१॥
 मूकाश्च कुरुते प्राज्ञान्^३ रिपुसन्धाननेकशः^४ ।
 जलेन मिश्रितं पुत्रं द्योषितं विद्वराहजम्^५ ॥२२॥
 वेदायुत तर्पणेन उन्मादी जायते रिपुः ।
 काकरक्तेन सम्मिश्र तर्पणं शुद्धवारिणा^६ ॥२३॥
 जातिभ्रष्टो भवेच्छत्रुः स भवेन्निन्दको^७ भुवि ।
 उलूकरक्तसमिश्र वारिणा तर्पणं तथा ॥२४॥^८
 व्रणेन म्रियते द्युश्चरयुतद्वयसमवतः^९ ।^{१०}
 श्वानरक्तेन समिश्र वारिणा तर्पणं तथा ॥२५॥
 श्वानवज्ज्वलते^{११} शत्रुम्रियते नात्र संशयः ।
 मार्जाररक्तसमिश्र^{१२} तर्पणं वारिणा तथा ॥२६॥
 क्षयरोगी भवेच्छत्रुः पद्माक्षैर्म्रियते रिपुः ।^{१३}
 उष्टरोद्योषित^{१४} मिश्र तोये^{१५} सन्तर्पयेत् सह^{१६} ॥२७॥

१. घ. ०ज्ञान । २. घ. तेन तर्पणम् । ३. घ. यत्नाद् । ४. घ. ०सन्धाननेकशः ।
 ५. घ. विद्वराहजम् । ६. घ. मिष्टवारिणा । ७. घ. सन्ततिनिन्दिता । ८. ग घ
 पुस्तकद्वये विशेषोऽयं पाठः—

‘नेत्रायुत’ भवेच्छत्रुर्नेत्ररोगी न संशयः ।

क्षयरक्तेन समिश्र वारिणा तर्पणं तथा ॥

९. ख. ०द्वयसमवतः । ग. ०द्वययोगतः ।

१०. घ. पुस्तके पादद्वयस्थानेऽयमधो दृश्यते—

तूलावज्ज्वलते शत्रुरयुतं ज्वरयोमतः ।^{११}

११. ख. जायते । घ. घ. जल्पते । १२. घ. ०समुपतः । १३. ख. पुस्तकेऽस्मात्परमयो
 विशेषः—

‘भुजगद्योषितेनैव तर्पयेद्व्यस्रकं ।

निद्रि सहस्रमानेन सिद्ध रिपुर्विनाशनम्’ ॥

१४. घ. उष्ट्रस्य द्योषितः । १५. ख. तोयः । घ. तोयः । १६. घ. सतर्प्यं बुद्धिमान् ।

१ घ. नेत्रायुताद् । २ घ. नेत्रनाशो ।

मासेन शत्रुमरणं मूकद्वुसदृशोऽपि वा ।

जपसख्या यत्र नोक्ता लक्षमेक कुमारक ॥२८॥

दिनसख्या यत्र नोक्ता पक्षमेव^१ न सहायः ॥

इति पद्विंशत्यमे सांख्यायनतन्त्रे एकादश पटलम्^२ ॥११॥

॥ अथ द्वादशः पटलः ॥

कौलागमकसवेद्या सदा कौलागमाम्बिकाम् ।

भजेऽहं सर्वसिद्धिर्घ्नं बगला चिन्मयी हृदि^३ ॥१॥

श्रीवभेदन उवाच—

नमस्ते सर्वसर्वेश गवितासुरभञ्जन ।

गायत्री बगलाख्या च वद मे कृष्णाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि मन्त्रमाहात्म्यमेव च ।

पुरश्चर्याप्रयोगं च वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥३॥

ब्रह्मास्त्रायपदं चोक्त्वा 'विग्रहेति पदं ततः'^४ ।

स्तम्भनेति पदं चोक्त्वा बाणाय तदनन्तरम् ॥४॥

धीमहीति पदं व्योक्त्वा ततः^५ शब्दं ततो(दो)च्यते^६ ।

बगलापदमुच्चार्य उद्धरेच्च प्रचोदयात् ॥५॥

गायत्री बगलानाम्नी सर्वसिद्धिप्रदा भुवि ।

ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय(स्य) गायत्री समुदाहृतम्^७ ॥६॥

देवता बगलानाम्नी चिन्मयी^८ शक्तिरूपिणी ।

ॐ बीजं 'चैव शक्तिह्री'^९ कीलकं विग्रहे पदम् ॥७॥

अतुल्लंशं पुरश्चर्या तद्दशांशं च तर्पणम् ।

तद्दशांशं हुनेदाज्यं तावद्ब्राह्मणभोजनम् ॥८॥

न्यासध्यानादिकं सर्वं कुर्यात् 'तन्मन्त्रतो जपेत्'^{१०} ।

प्रयोगालयं वक्ष्यामि गायत्रीबगलाह्वये^{११} ॥९॥

१. घ. पक्षसख्या । २. घ. ०एकादश. पटलः । ३. ग. बगलास्य कृष्णाकरम् । ४. क. पुन । ५. '—' ख. विग्रहेति पदं तथा । घ. विग्रहेति ततः, पङ्क्तम् । ६. ग. ततः । घ. ततो । ७. ग. घ. ततोच्यते । ८. ख. यमुदाहृतम् । घ. बगला । ९. '—' ग. शक्तिह्रीं चैव । १०. '—' घ. तन्मन्त्रराजवत् । ११. ख. ०बगलाह्वया । घ. गायत्र्या बगलाह्वया ।

तारादि प्रजपेन्मन्त्र मोक्षार्थः^१ च कुमारक ।
 दान्त्यर्थं^२ च^३ जपेत्पुत्र दारदाबीजपूर्वकम्^४ ॥१०॥
 सम्मोहनार्थं^५ प्रजपेत् कामराजपुरस्सरम् ।
 स्तम्भनार्थं^६ प्रजपेच्छक्तिदाहकपूर्वकम्^७ ॥११॥
 वाराह शक्तिवाराह स्तब्धमायापुरस्सरम् ।
 प्रजपेन्मन्त्रमेतद्धि मारणं भवति ध्रुवम् ॥१२॥
 दाम्भवादि जपेन्मन्त्र विद्यासिद्धिर्भविष्यति ।
 बालादि प्रजपेन्मन्त्र 'कन्यका क्षिप्रमाप्नुयात्'^८ ॥१३॥
 वाराहीबीजमध्यस्था^९ गायत्री लक्षजापनात् ।
 भूलाभ(भो) जायते तस्य अनायासेन^{१०} पुत्रक ॥१४॥
 श्रीबीजादि जपेत् पुत्र गायत्री^{११} बगलाह्वयाम्^{१२} ।
 कुबेरसदृश^{१३} श्रीमान् जायते नात्र संशयः ॥१५॥
 तार्क्ष्यबीजादि मन्त्र प्रजपेद् ध्यानपूर्वकम् ।
 नानाविषप्रयोगाश्च ग्रहरोगादिनाशनम्^{१४} ॥१६॥
 भैरवी^{१५} बीजमाद्य च प्रजपेच्च कुमारक ।
 भूतप्रेतपिशाचाद्यास्तत्प्रयोगाद् व्यपोहति ॥१७॥
 जपेदमृतबीजानि^{१६} गायत्री बगलाह्वयाम् ।
 तापञ्जरमहाताप^{१७} क्षमयेत्^{१८} क्रौञ्चभेदन ॥१८॥
 जपेच्च वायुबीजादि गायत्री बगलाह्वयाम् ।
 क्षिप्रमुच्चाटनं चैव भवेच्छङ्करभाषणम् ॥१९॥
 अग्निबीजादिगायत्री प्रजपेद् बगलाह्वयाम् ।
 महता(दा)तापसयुक्तः^{१९} पक्षाच्छत्रमु^{२०}तो भवेत् ॥२०॥

१. घ. मोक्षार्थः । २. घ. प्र । ३. घ. तारावाराहपूर्वकम् । ४. ख. ग. घ.

पुस्तकेष्वपि पाठ —

स्तम्भनार्थं जपेत्पुत्र बगलाबीजपूर्वकम् ॥

विद्वेषणार्थं प्रजपेद् कारद्वयपूर्वकम् ।

उच्चाटनार्थं (घ. उच्चाटने) जपेत्पुत्र शक्तिवाराहपूर्वकम् ।

५. घ. कन्याकाक्षी भवाम्पुयात् । ६. घ. वाराहीमध्यबीजस्था । ७. घ. अनायासेन ।
 ८. क. ग. घ. गायत्री । ९. ख. बगलाह्वया । १०. घ. गलरोगादि० । ११. ख. घ.
 भैरव । १२. ख. घ. बीजादि । १३. ख. तापञ्जर महाताप । घ. महावात । १४.
 घ. नाशयेत् । १५. घ. संयुक्त ।

मायादि प्रजपेत् पुत्र गायत्री बगलाह्वयाम् ।^१
 इष्टसिद्धिर्भवेत् क्षिप्र शिवस्य वचन यथा ।^२ ॥२१॥
 मन्त्रराजस्य गायत्री पादाद्यवयव^३ तथा ।^४
 गायत्री च विना मन्त्र न सिद्धयति कस्तो युगे ॥२२॥
 पुरश्चरणकाले तु गायत्री प्रजपेन्नरः ।
 मूलविद्या^५ दशांश च मन्त्रसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥२३॥
 त्यक्त्वा सन्मन्त्रगायत्री यो जपेन्मन्त्रमादरात् ।
 कोटिकोटिजपेनैव 'तस्य सिद्धिर्न जायते'^६ ॥२४॥
 जपसंख्या यत्र नोक्ता लक्षमेक कुमारक ।
 दिनसंख्या यत्र नोक्ता पक्षमेक न सशयः ॥२५॥
 गायत्री बगलानाम्नी बगलायाश्च जीवनम् ।
 मन्त्रादौ चाथ मन्त्रान्ते जपेद्^७ ध्यानपुरस्सरम् ॥२६॥
 इति पद्मविद्यामने साध्यायनतन्त्रे द्वादश पटलम्^८ ॥१२॥

॥ अथ त्रयोदशः पटलः ॥

निधाय पाद हृदि गमपाणिना,
 जिह्वा समुत्पाटनकोपसमुताम् ।
 गदाभिघातेन च फालदेशे^९,
 शम्बी भजेऽहं बगला हृदन्त्रे ॥

कीञ्चभेदन उवाच—

श्रीकण्ठ श्रीगराधार^{१०} शार्दूलाम्बरभूषण^{११} ।
 शान्तवद्^{१२} वद मे पूजां बगलायाश्च शङ्कर ॥२॥

१. भतः पर ख. ग. घ. पुस्तकेषु विशेषः पाठः—

“राजा वा राजपुत्रो वा मरणान्तं यदीमवेत् ।

महाभाया (ग. मायामाया) दिगायत्रीं प्रजपेद् बगलाह्वयाम् ।”

२. घ. तथा । ३. घ. पादाद्यवयव । ४. घ. पुस्तकेऽप्य विप्लवः—

मन्त्रसिद्धिर्भवेत् क्षिप्र शिवस्य वचन यथा

५. ख. घ. मूलविद्या । ६. ‘-’ घ. न च सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् । ७. ख. ग. जपे । घ. जप ।

८. घ. ० द्वादशः पटलः । ९. ख. बालदेशे । घ. फालदेशं । १०. घ. धीमराधार ।

११. घ. ० भूषणम् । १२. घ. शान्तवद् ।

ईश्वर उवाच-

विन्दुमध्ये च सम्पूज्य स्पर्शतिहासनोपरि ।

चिन्मयो वगलादेवी सर्वसिद्धिप्रदायिकाम् ॥३॥

चतुर्भुजा च द्विभुजा गदा जिह्वा च बिभ्रतीम् ।

पीतवर्णा महापूर्णाभिर्चयेन्मूलविद्यया ॥४॥

त्रिकोणे पूजयेत् पुन्र 'वाणीं गोरीं रमां' १ क्रमात् ।

तत्तद्भोजेन सम्पूज्य तदावाहनपूर्वकम् ॥५॥

पञ्चास्त्र २ पञ्चकोणेषु वक्ष्ये तत्पूजनं क्रमात् ।

पूर्वकोणे तु सम्पूज्य अस्त्र च वगलामुखीम् ॥६॥

द्वितीयकोणे संपूज्य अस्त्रराज कुमारकं ।

उत्कामुखीति विख्यात तन्मन्त्रेणैव पूजयेत् ॥७॥

तृतीयकोणे सम्पूज्य अस्त्रराजं कुमारकं ।

'नाम्नी ज्वालामुखी चैव तन्मन्त्रेणैव पूजयेत्' ३ ॥८॥

'चतुर्थकोणे सम्पूज्य अस्त्रराज कुमारक' ४ ।

जातवेदमुखीनाम्नी तन्मन्त्रेणैव पूजयेत् ॥९॥

पञ्चमेषु च कोणेषु अस्त्रराजं कुमारकं ।

बृहद्भानुमुखी स्याता त्रिषु लोकेषु दुर्लभा ॥१०॥ ५

पञ्चकोणेष्वेवमेतत्पञ्चास्त्र ६ सम्यगर्चयेत् ।

मूलमन्त्रेण तेनैव पूजायन्त्रं कुमारक ॥११॥

तदुपरि समभ्यर्च्य दिवपालाष्टकमादरात् ।

तद्वाहनं च तच्छक्तिदशायुतपुरस्सरम् ६ ॥१२॥

तदुपरि समभ्यर्च्य मातृकाष्टकमेव च । ७

तदुपरि समभ्यर्च्य विघ्नेशाष्टकमेव च ॥१३॥

१. ख. घ. मदापूर्णा० । घ. महापूर्णा । २. घ. वाणीगोरीरमाः । ३. घ. तत्-
द्वाहनपूर्वकम् । ४. घ. पञ्चास्त्रान् । ५. '—' चिह्ननगोऽशो घ. पुस्तके नास्ति । ६.
'—' चिह्नना-तर्गतोऽशो नावलोक्यते घ. पुस्तके । ७. घ. पश्चिमिद नास्ति । ८. घ. पञ्च-
मेषु च कोणेष्वेवमेव पञ्चास्त्र । ९. ख. तच्छक्तिदशायुच० । घ. तच्छक्तिस्तदायुषः ।
१०. घ. पुस्तके विशेषः—

“तदुपरि समभ्यर्च्य भैरवाष्टकमेव च ।”

‘पूजायत्र क्रमेणैव’^१ एवमेव कुमारक ।
 शालग्रामशिलाया वा वह्निमण्डलमध्यमे ॥१४॥
 कन्यका^२ चाथवा पुत्र पूजयेद् बगलाम्बिकाम्^३ ।
 उत्तम^४ युवतोपूजा मध्यम^५ वह्निमण्डले^६ ॥१५॥
 मधम^७ च शिलापूजा क्रम एष^८ शिवोदितः^९ ।
 तमोऽस्तेनैव नाम्ना च पूजयेच्च कुमारक ॥१६॥
 एव च पूजयेत् सम्यक् पुरवचरणके विधौ ।
 द्रव्य यन्निविध^{१०} प्रोक्तं पूजार्था च विशेषतः ॥१७॥
 गोडी माध्वी च पैष्टो च गोडी चैवोत्तमोत्तमा^{११} ।
 छागकुक्कुटमत्स्य^{१२} च बगलाप्रीतिकारकम् ॥१८॥
 त्रिकाल पूजयेद्देवीं त्रिकाल च^{१३} जपेन्मनुम् ।
 यस्य दर्शनमात्रेण पण्डितैर्वाग्विदा वरं ॥१९॥
 तस्य^{१४} प्रज्ञा पलानीय^{१५} तम सूर्योदये^{१६} यथा^{१७} ।
 तेजोभेदमनेक च सर्वशत्रो^{१८} कुमारक ॥२०॥
 वह्नी यद्वत् प्रविशति^{१९} तद्वद्वादय^{२०} चातुरी^{२१} ।
 बगला मन्त्रसिद्धस्य^{२२} हृदये च प्रविश्यति^{२३} ॥२१॥
 प्रतिवादि^{२४} भवेरस्तम्भो^{२५} बृहस्पतिसमोऽपि च ।
 प्रज्ञाकर्षणशक्तिश्च बगला भूतले स्मरेत्^{२६} ॥२२॥
 विद्यामाकर्षणार्थ^{२७} च स एव च^{२८} न सशयः^{२९} ।
 ब्रह्मचारी गृही वापि वानप्रस्थोऽथवा यतिः ॥२३॥

१. ‘—’ पूजायत्रक्रमेणैव । २. स्त्र. कन्याया । ३. य बगलाम्बुलीम् । ४. च
 उत्तमा । ५. य मध्यमा । ६. य. वह्निमण्डलम् । ७. य. मधमा । ८. य एष ।
 ९. य. शिवोदितः । १०. च निविधः । ११. क ग ०त्तमा ।
 १२. मांस । १३. य. प्र । १४. य. तस्य । १५. य. पलायते । १६. य. सूर्योदयः ।
 १७. य. तथा । १८. य. शत्रो । १९. य. प्रविश्यति । २०. स्त्र. तद्वद्वापद ।
 २१. य. चातुरम् । २२. य. ०मन्त्रसिद्धिः स्याद् । २३. ‘—’ य. हृदादेव प्रदशनात् ।
 २४. य. प्रतिवादी । २५. स्त्र. य. भवेत् स्तम्भो । २६. स्त्र. स्मृताः । २७. य.
 यज्ञाभाकर्षणार्थः । २८. य. तु । २९. स्त्र. य. पुस्तकद्वयेप्रथकोऽयमणो दृश्यते—

‘उत्सृज्य बगलामन्त्रमुपवास (य. मुपासक) मनन्यधी.’

यत्किंचित् कुरुते (य. क्रियते) कर्म पृथ्वी (य. शिला) बोजमिवांकुरं. (य. ०वांकुर)”

बगलामन्त्रसिद्धस्तु^१ सर्वं पूज्यो यतीश्वर^२ ।
 बगलामन्त्रसिद्धश्च^३ यत्र तिष्ठति भूतले ॥२४॥
 पञ्चक्रोशप्रमाणेन विद्वानेव च भासते ।
 न भासत चान्यविद्या न स्मरन्न परामुखी^४ ॥२५॥
 प्रयोगं चैव न भवेद् बगलार्चापरि^५ पुरा^६ ।
 ग्रसने^७ सर्वविद्यानां बगला यैव^८ भूतले ॥२६॥
 बगलाया विना मन्त्रं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
 तत्सम्प्रदायविधिना^९ साधयेद् बगलामुखीम् ॥२७॥
 एव च बगलामन्त्रं मन्त्रराजमिदं भुवि ॥

इति पद्मविद्यागम साक्षात्पनतम् त्रये त्रयोदश पटलम्^{१०} ॥११॥

॥ अथः चतुर्दशः पटल ॥

सुधाब्धौ रत्नपद्मं मूले कल्पतरोस्तथा ।
 ब्रह्मादिभिः परिवृता बगला भावयद्^{११} हृदि ॥१॥

कीलकभट्टन उवाच—

वीर^{१२} विद्रूपं विश्वं चिदानन्दस्वरूपिणे^{१३} ।
 बगलार्चाविधिं चैव वद मे कल्याणकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

'सृष्टिं स्थितिं च सहार'^{१४} पूजा च त्रिविधा कलौ ।
 केरले सृष्टिरूपा च गर्भकोलागमक्रमात् ॥३॥
 अर्चनं गोडदेशे^{१५} च^{१६} स्थितिमार्गं^{१७} कुमारक ।
 साक्षात्पद्मदेगे तु^{१८} सहाराचनमेव^{१९} च ॥४॥
 गुप्तं कोलागमं नाम^{२०} गोडदेशार्चनादिभिः^{२१} ।
 कामरूपागमं नाम सहारक्रमपूजनम् ॥५॥

१ प ०सिद्धिस्तु । २ '—' य सर्वं पूज्यो भूतीश्वरः । ३ प ०सिद्धिश्च ।
 ४ य तस्य वचनात् पराङ्मुखी । ५ य ०चरितः । ६ य परा । ७ य प्रस्ते ।
 ८ य एव । ९ य तत्सम्प्रदायः । १० य ०त्रयोदश पटल । ११ य
 चिन्तयद् । १२ य चिद । १३ य स्वरूपक । १४ '—' य सृष्टिस्थितिविच सहार ।
 १५ य गोडदेश । १६ य स्व । १७ य स्थितिमार्गः । १८ '—' य प
 कामरूपागमदेगे तु । १९ य सहारक्रममेव । २० य नाम्ना । २१ य गोडदेशचन
 विधिः ।

लाटाचनं^१ चावलम्ब्य सांख्यायनमुनिस्तथा ।
उक्तवानागमं^२ चैव सृष्ट्यर्थं^३ ऋणु पुत्रक ॥६॥
सर्वाङ्गसुन्दरी इयामा सर्वावयवशोभिनीम् ।
नवोढा पुष्पिणी चैव प्रार्थयेद्विप्रकन्यकाम् ॥७॥
कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्या शीर्षमास्या कुमारक ।
अथवा भोमवारे च निशा^४ भृगुजवासरे^५ ॥८॥
‘सुवासिनो च’^६ तंसेन कुर्यादभ्यगनं^७ तथा ।
तूलिकातल्पमानीस्वा^८ भास्तीर्योदङ्मुखेपु^९ च ॥९॥
तस्योपरि ततस्तीर्यं^{१०} समन्तैर्जातिचम्पकैः ।
कपूरं चैव कस्तूरीमिश्रित चन्दन तथा ॥१०॥
सर्वाङ्गे लेपन कुर्यात्सिद्धमीसूक्तेन बुद्धिमान् ।
पद्म्यङ्कोपरि तत्कन्या चन्दनेन विलेपिताम् ॥११॥
ध्रुवाद्यैरिति^{११} मन्त्रेण कुर्याद्वक्षिणतोमुखीम् ।
तन्मुखेत्यर्चनं^{१२} कुर्यात् श्रीसूक्तेन कुमारक ॥१२॥
पादौ प्रसार्यं^{१३} तत्कन्या^{१४} गुप्तेनार्चनमाचरेत् ।
न्यस्त्वा षोढाद्वय चाक्षौ वगसापञ्चर त्यसेत् ॥१३॥
कन्या चैव न्यसेदेव तत्तदङ्गानि^{१५} सस्मरेत्^{१६}
गन्धद्वारेति^{१७} मन्त्रेण कुर्यात् कस्तूरिलेपनम् ॥१४॥
मूलमन्त्रेण चाभ्यर्च्यं^{१८} पुष्पमाला समर्चयेत्^{१९} ।
निवेदयेद् द्रव्यगुणैश्च तत्रैव जपमाचरेत् ॥१५॥
शत वाऽथ सहस्रं वा मन्त्रराजमिदं सुत ।
पुरश्चरणमध्ये तु प्रतिभार्गववासरे ॥१६॥

१. ग. लाटाचनं । घ. शोभायर्थं । २. घ. उक्तमार्गक्रमे । ३. घ. सृष्ट्यर्थं ।
४. छ. ग. घ. निशाया । ५. छ. ग. घ. भृगुवासरे । ६. घ. सुवासितेन । ७. ग.
०दभ्यगना । ८. घ. ०मानोय । ९. घ. ०मुखेन । १०. छ.
घ. समास्तीर्यं । ११. घ. ध्रुवा द्यौरिति । १२. घ. तन्मुखे छयन । १३. घ.
प्रस्तार्यं । १४. छ. तौ कन्या । १५. घ. तत्र चांगानि । १६. छ. घ. सस्पृष्टे ।
१७. छ. घ. पुस्तकद्वये विलेपः पाठः—

घनजपपुरं चैव धर्चयेन् (घ. धार्चयेन्) मूलविद्याया ।

१८. घ. गन्धद्वारेण । १९. घ. तत्सर्वं । २०. छ. घ. समर्चयेत् ।

अथवा पोर्णमास्या वा सोभाग्यार्चनमाचरेत् ।
 प्रयोगसिद्धिदं शस्त^१ मन्त्रसिद्धिकरं परम् ॥१७॥
 एतत्पूजां विना पुत्रं प्रयोगं न भवेत् कलौ ।
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेन प्रयोगादि च मूलत्वे ॥१८॥
 सोभाग्याचीं विना पुत्रं न भवेज्जपकोटिभिः ।
 अभिमानाष्टकं त्यक्त्वा त्यक्त्वा चैवेपणात्रयम् ॥१९॥
 त्यक्त्वा पञ्चेन्द्रियासक्तिं सोभाग्यार्चनमाचरेत् ।
 सुखदुःखं समे^२ कृत्वा साभालाभौ जयाजयौ ॥२०॥
 क्षीतोष्णे^३ समतां कृत्वा सोभाग्यार्चनमाचरेत् ।
 पोढाद्वयं च न ज्ञात्वा य^४ करोत्यर्चनं भुवि ॥२१॥
 स पतितो भवेत् पुंसां रौरवं नृकं व्रजेत् ।
 बाह्याभ्यन्तरत^५ पुत्रं अभेदज्ञानयोर्विना ॥२२॥
 सोभाग्यार्चनकर्तुं णामनन्तं^६ शापमाप्नुयात् ।
 सकल्पं च विकल्पं च त्यक्त्वा विभ्रान्तमानस^७ ॥२३॥
 कुर्यात् सोभाग्यसम्पूजां च नो चेद् भ्रष्टो भवेन्नरः ।
 जितेन्द्रिय^८ सुखं त्यक्त्वा कुर्यात् सोभाग्यपूजनम् ॥२४॥
 सुखापेक्षेण यत् कुर्याद् देवताशापमाप्नुयात् ।
 स्वस्यादेशविधिं^९ चैव न ज्ञात्वा क्रीड्वभेदन ॥२५॥
 यं करोत्यर्चनं चैव ॥ विप्रः पतितो भवेत् ।^{१०}
 स्वपत्नीं भ्रातृपत्नीं वा गुरुभार्यामथवापि वा ॥२६॥
 प्रचयत पट्टसोपेता^{११} साख्यायनमतं त्विदम् ।
 दोषालयस्या रजकी कुलालगृहकन्यकाम् ॥२७॥

१. यं पुंसि । २. यं समो । ३. यं क्षीतोष्णं । ४. यं बाह्याभ्यन्तरतः । ५. यं बाह्याभ्यन्तरयोः । ६. यं कर्तुं णां देवता । ७. यं विभ्रान्तमानसः । ८. यं जितेन्द्रियः । ९. यं स्वस्वदेशविधिः । १०. यं भूतं परं स यं पुस्तकद्वयं विज्ञाप —

“कल्पते (करोति यं) चित्तसंशोभं ततः (यत्) कथायां कुमारकः ।

“आतचित्तो भवेत् सद्यो (यं सोऽपि) वाचस्पतिसमोऽपि वा” ॥

११. पुस्तकोऽस्मादप्यधिकोऽयमगो दूयते—

‘नोत्पादयत् कामनया वेदनं च क्षीरयोः ।

वेदना जनयद्यस्तु स नरः पतितो भवेत्’ ॥

१०. यं योवनोपेता ।

पुलिन्दकन्यकां चैव मृकण्डभुतमादिशेत् ।
 अर्चयेद् ऋषिपत्नीं च पूर्वोक्तां लक्षणान्विताम् ॥२८॥
 अर्चयेद् विधिमागेण पूजा दुर्वाससम्मता १ ।
 सर्वलक्षणसम्पन्नां पुष्पिणीमर्चयेत्ततः २ ॥
 मतङ्गमुनिनोक्तं च ३ सद्यः सिद्धिकरं भुवि ।
 इति ४ मागेमतं ५ पुत्र नास्ति सिद्धिर्गुरोर्विना ॥३०॥
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेनार्चयेद् ६ गुरुं नुजया ॥३१॥

॥ इति पद्मविद्यामये साख्यापनसम्बन्धे चतुर्दशः पटलः ॥१४॥

॥ अथ पञ्चदशः पटलः ॥

पीतवर्णां मदाधूर्णां दृढपीनपयोधराम् ।
 वन्देऽहं वगलां देवीं स्तम्भनास्त्रस्वरूपिणीम् ।

श्रीऋषभेन उवाच—

राजराज स वै श्रीमान् रजताग्रिनिकेतन ।
 पञ्चास्त्रविद्यां वद मे स्तम्भनाख्यान्सुपावनान् १ ॥२॥

ईश्वर उवाच—

आद्यास्त्रं वगलानाम्नी रणस्तम्भनकारणम् १ ।
 उल्कामुखी द्वितीय २ च स्तम्भनं भुवनत्रये ॥३॥
 ज्वालामुखी तृतीयास्त्रं स्तम्भनं त्रिषु ३ दैवतैः ।
 जातवेदमुखी चैव चतुर्थास्त्रं कुमारक ॥४॥
 ब्रह्माविष्णुमहेशानां स्तम्भनं नात्र संशयः ।
 बृहद्भानुमुखी चास्त्रं पञ्चमं तु कुमारक ॥५॥
 पद्मपञ्चकोटिचामुण्डा कालिकादिशतं ४ सुत ।
 सपादकोटि त्रिपुरा स्तम्भनास्त्रं च उत्तमम् ५ ॥६॥

१. घ. वंश्यपत्नी । २. घ. अर्चन । ३. घ. दुर्वाससमता । ४. घ. पुष्पिता ।
 ५. घ. मातङ्गमुनिना चोक्तं । ६. ख. ग. घ. सिद्धि । ७. घ. मागेमत । ८. ख.
 ० प्रयत्नेन वा । ग. घ. प्रयत्नेन अर्चयेद् । ९. ख. सुख । ग. स चे । घ. सख ।
 १०. ख. स्तम्भनाख्य सुपावनी । घ. स्तम्भनाख्यां सुपावनी । ११. घ. ० कारणीम् ।
 १२. घ. द्वितीया । १३. घ. ऋषि । १४. घ. कालिकोटिषव । १५. घ. पञ्चमम् ।

सत्कारेण विना मन्त्र साधकस्य प्रमादकृत् ।
 लोकालोकस्तम्भन च नाम्ना उत्कामुखी^१ तथा ॥१६॥
 मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि शरज-मन् सभासत ।
 तार च स्तब्धमाया च शक्तिवाराहमेव च ॥२०॥
 वगलामुखीपद चोक्त्वा बीजत्रय तु सर्वं च ।
 दुष्टानां पदमुच्चार्य पूर्वबीजत्रय वदेत् ॥२१॥
 वाच मुख पद चोक्त्वा पूर्वबीजत्रय^२ वदेत् ।
 स्तम्भयद्वितय चोक्त्वा 'बीजत्रय ततो'^३ वदेत् ॥२२॥
 जिह्वा कीलय उच्चार्य पुनर्बीजत्रय वदेत् ।
 वृद्धि विनाशयोच्चार्य पूर्वबीजत्रय^४ वदेत् ॥२३॥
 प्रणव वह्निजाया च उत्कामुख्या भय मनु ।^५
 पञ्चाशद्वृद्धं चैवाष्टबीजवृद्धं^६ सुपावनम् ॥२४॥
 ऋषिश्चाप्यग्निवाराहश्छन्दः^७ ककुभमव च ।
 उत्कामुखी देवता च जगत्स्तम्भनकारिणी ॥२५॥
 बीज च वगलाबीज शक्तिः^८ स्वाहासमन्वितम् ।
 कीलक शक्तिवाराह न्यास पूर्ववदाचरेत् ॥२६॥
 ध्यान यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदे^९ कुमारक ।
 विलयानलसकाशा^{१०} वीरवेपेण^{११} सस्थिताम् ॥२७॥
 वीराम्नायमहादेवी^{१२} स्तम्भनार्थं भजाम्यहम् ।
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्र मनुलक्ष कुमारक ॥२८॥
 प्रपञ्चस्तम्भन कृत्वा स्वविद्या च प्रकाशयेत् ।
 तालकेन हुनेत् पुत्र लक्षमेक हुताघने^{१३} ॥२९॥
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत् पुत्र त्रैलोक्ये कीर्तिमान् भवेत् ।
 तस्याज्ञया जगत्सर्वं स्थावर जङ्गमात्मकम् ॥३०॥
 कुमारक प्रवर्तन्ते^{१४} सर्वाश्चर्यकर भुवि ।
 'सिद्धि चतुर्विधा'^{१५} चैव एतन्मन्त्रस्य जापके ॥३१॥

१. च ओत्का मुखी । २. च पुनर्बीजत्रय । ३. च पुनर्बीजत्रय । ४. च पुनर्बीज । ५. च. स्तब्धमाया ध्रुव वह्निजायांतोत्कामुखीमनुः । ६. च. बीजयुक्त । ७. च. ऋषिश्च । यज्ञवाराहश्छन्दः । ८. च शक्ति । ९. च. मन्त्रभेद । १०. च विनया । ११. छ. वीरवेशेन । च वीरावेशेन । १२. च. विराण्मयी महादेवी । १३. क. ल. ग. क्षपाघन । १४. च. प्रवर्तत । १५. छ. च. सिद्धिश्चतुर्विधा ।

इच्छया वर्तते सर्वमाश्चर्यकरमादरात् ।
 नदी नदश्च^१ रतिमान्^२ नानापादपकुलम् ॥३२॥
 आगच्छेत्याज्ञया^३ तस्य पुनर्गच्छन्ति चादरात्^४ ।
 किन्न स्यात् पद्ययुक्तानि माहात्म्य पदग मनोः^५ ॥३३॥
 कामयेन्मन्त्रमेतद्धि^६ क्रीचभेदनकोविद ॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे पञ्चदशपटलः* ॥१५॥

॥ अथ षोडशः पटलः ॥

बन्धूककुसुमाभासा^७ बुद्धिनाशनतत्पराम् ।
 वन्देऽहं वगला देवी स्तम्भनास्त्राधिदेवताम् ॥१॥

बीजभेदन उवाच—

नमस्ते गिरिजानाय मन्त्रविद्यागमप्रभो ।
 मधुना चास्त्रविस्तारं वद मे करुणाकर ॥२॥

इतिर उवाच—

तारं च स्तब्धमायां च प्रासाद^८ं च ततः परम् ।
 पुनर्लित्य^९ स्तब्धमायां प्रणवं च ततः परम् ॥३॥
 वगलामुत्तिपदं चोत्त्वा सर्वदुष्टपदं वदेत् ।
 न(त?)वारं दीर्घसमुक्तं बिन्दुना भूषितं तथा ॥४॥
 बीजपञ्चवर्णमुच्चार्य याचं मुक्तं पदं वदेत् ।
 स्तम्भयद्वयमुच्चार्य पञ्चबीजानि बीजचरेत् ॥५॥
 जिह्वां वीलय उच्चार्य पञ्चबीजानि बीजचरेत् ।
 बुद्धिं विनाशय मुग^{१०} पञ्चबीजानि बीजचरेत् ॥६॥
 वदित्वायासमायुक्तं^{११} पष्टिवर्णमक^{१२} मनु^{१३} ॥७॥
 जातवेदमुगोमन्त्रं जगदाश्रयं^{१४} रक्तम् ॥८॥
 अक्षरपञ्चवर्णैर्न यदोऽयं मन्त्रनायकः ।
 त्रयिभिः कालाग्निरुद्रैस्तु पश्चिदष्टैः उदाहृतम् ॥९॥

१. प. नदाश्च । २. प. रतिनो । ३. प. आगच्छत्येव कथा । ४. प. सादरात् ।
 ५. ग. विप्र तस्यापद्ययुक्तानि० । प. पुनर्गच्छन्ति विदेयः—

वि सत्यं त्रययुक्तानां माहात्म्यं पद्यं मनो ।

यद्गोपयति पुण्यात्मा त्रैलोक्याकर्षणक्षमः ॥

६. प. गोपय-मय० । ७. प. ०५१३प्रयोग पञ्चदशपटलः । ८. प. प्रासाद । ९. क.
 ग. प्रस.र । १०. प. पुनर्लितेत् । ११. प. नाष्टद्वयं च । १२. क. ०५१३प्रयोगः ।
 १३. प. मनु । १४. य. मनुः । १५. पादद्वयं च. पुनर्गच्छन्ति विदेयः ।

जातवेदमुखी भद्रदेवता^१ समुदाहृता ।

ॐ बीज ह्रीं^२ च शक्तिश्च ह कीलकमुदाहृतम् ॥६॥

पूर्ववन्त्यासविद्या^३ च ध्यान वक्ष्यामि पुत्रक ।

जातवेदमुखी देवी देवता प्राणरूपिणी ॥१०॥

भजेऽहं स्तम्भनार्थं च स्तम्भनीं^४ विश्वरूपिणीम्^५ ।

एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं त्रिशस्तस्र सुपावनम् ॥११॥

चर्मघृग्वसनो भूत्वा चिन्तितार्थप्रदं ध्रुवम् ।

गन्धर्वदिचं च यक्षाश्च गरुडोरगपन्नगान् ॥१२॥

वेतालहाकिनीप्रेतशाकिनीब्रह्मराक्षसान् ।

ऋषिदेवगणाश्चैव सिद्धान्न्याश्च पुत्रक ॥१३॥

अधुना स्तम्भयत्येतत्^६ सत्यं शङ्करमापणम् ।

तार च स्तब्धमाया च वह्निबीजं च पंचकम् ॥१४॥

प्रस्फुरद्विषयं चैव बीजं चैव^७ त्रयोदश ।

ज्वालामुखी 'पदं चोक्त्वा'^८ वदेद्बीजं^९ त्रयोदश ॥१५॥

सर्वशब्दं ततोच्चार्यं दुष्टानां पदमुच्चरेत् ।

बीजं^{१०} त्रयोदशं चोक्त्वा वाचं मुखं पदं वदेत् ॥१६॥

स्तम्भयद्विषयं चोक्त्वा पुनर्बीजं^{११} त्रयोदश ।

जिह्वां कीलय चोच्चार्यं^{१२} पुनर्बीजं त्रयोदश ॥१७॥

बुद्धिं विनाशय चोक्त्वा^{१३} पुनर्बीजं त्रयोदश ।

वह्निजायासमायुक्तं ज्वालामुख्यमयं^{१४} मनुः^{१५} ॥१८॥

शतोत्तरं भवेद्विंशद्बीजवद्धो मनुस्त्वयम् ।

अत्रिश्च ऋषिरेवात्र^{१६} गायत्रीछन्द उच्यते^{१७} ॥१९॥

ज्वालामुखी देवता च स्तम्भनाय त्रिमूर्तिभिः ।

ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि न्यास पूर्ववदाचरेत् ॥२०॥

१. प. देवी देवता । २. ख. घ. ह्रीं । ३. घ. ०विद्याः । ४. घ. स्तम्भनी ।
 ५. घ. विश्वरूपिणी । ६. घ. मनुनां समवेत्येतत् । ७. घ. न्योत । ८. घ. च उच्चार्यं ।
 ९. क. बीज । १०. घ. बीजा । ११. ०बीजा । १२. घ. युग्मं च । १३. घ.
 नाशययम् च । १४. ख. ज्वालामुख्यास्त्वय । १५. घ. स्तब्धमामात्रिवृद्धिजाया
 ज्वालामुखीमनुः । १६. घ. ०रेवास्व । १७. घ. एव च ।

ध्यान विना भवेन् मूकः सिद्धमन्त्रोऽपि पुत्रक ।
 ज्वालापुञ्जसटोन्मुक्ता^१ कालानलसमप्रभाम् ॥२१॥
 चिन्मयी स्तभनी देवी भजेऽह विधिपूर्वकम् ।
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमर्कलक्ष सुबुद्धिमान् ॥२२॥
 तर्पणं च गवा क्षीरेस्तालकेन हुनेत् सदा ।
 तर्पणं च चतुर्लक्ष लक्षमेकं हुनेत्सदा^२ ॥२३॥
 सहस्रद्वितय चैव 'ब्राह्मणानां सुभोजयेत्'^३ ।
 त्रिमूर्ति स्तम्भयेन्मन्त्री पञ्चतत्त्वान्यपि क्षणात् ॥२४॥
 आश्चर्यं महामन्त्र नराणां दुर्लभं भुवि ।
 इदानीं मन्त्रराजं च बृहद्भानुमुखाह्वयम् ॥२५॥
 'धारणं स्तभवाण'^४ च आश्चर्यं च कलौ युगे ।
 तारं ह्रस्वं ह्रस्वं च उच्चार्यं ह्रस्वं ह्रस्वं ह्रस्वं च ततः परम् ॥२६॥
 ह्रस्वस्तयाप्युच्चरेत् पुन ह्रस्वा ह्रस्वी ह्रस्वं च ततः परम् ।
 ह्रस्वं ह्रस्वं ह्रस्वश्च ततश्चोक्त्वा^५ वगताभुक्षिपदं वदेत् ॥२७॥^६
 सर्वशब्दं ततोच्चार्यं दुष्टानां पदमुच्चरेत् ।
 वाचं मुखं पदं चोक्त्वा स्तम्भयद्वयमुच्चरेत् ॥२८॥
 घ्राद्यबीजं पुनश्चोक्त्वा^७ उद्धरेत् पुनराद्यवत् ।^८
 जिह्वा कौल्यं उच्चार्यं पूर्ववद् बीजमुद्धरेत् ॥२९॥
 बुद्धिं विनाशयोच्चार्यं^९ पूर्वबीजानि^{१०} चोच्चरेत्^{११} ।
 वह्निजायासमायुक्तो बृहद्भानुमुखोमनुः ॥३०॥^{१२}
 सविता च ऋषिः स्यातो^{१३} गायत्रीछन्द एव च ।
 देवता स्तम्भनार्थं च बृहद्भानुमुखो तया ॥३१॥

१. प. ज्वसपुसजटामुक्ता । २. प. ०मुत् । ३. प. ब्राह्मणान् सुभ भोजयेत् ।
 ४. प. एणस्तम्भनवाण । ५. प. ततस्तार । ६. घतः परमममसो दुश्यते प. पुस्तके—
 "घ्राद्यबीजं मनोः सख्या उद्धरेत् पुनरादरात्"
 ७. प. मनो. सख्या । ८. प. पुनरादरात् । ९. प. नाशय उच्चार्यं । १०. प.
 पूर्वबीजं । ११. प. समुच्चरेत् । १२. प. पुस्तके स्वयमसो विषय.—
 स्तम्भमाया तारकं च वह्निजाया-तकं मुत् ।
 बृहद्भानुमुखोमन्त्रं पदुत्तरघटाणुदे" ॥
 १३. प. ऋषिरवाच ।

बीजं च बगलाबीजं शक्तिर्माया कुमारक ।
 बीलकं प्रणवं चात्र विनियोगस्ततः^१ परम्^२ ॥३२॥
 पूर्ववन्त्यासविद्यां च तन्त्रराजवदाचरेत् ।
 ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥३३॥
 कालानलनिभां देवीं ज्वलत्पुञ्जशिरोरुहाम् ।
 कोटिबाहुसमायुक्तां वैरिजिह्वासमन्विताम्^३ ॥३४॥
 स्तम्भनास्थमयीं देवीं दूढपीनपयोधराम् ।
 मदिरामदसयुक्तां^४ बृहद्भानुमुखीं भजे^५ ॥३५॥
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमकंलक्ष कुमारक ।
 तर्पयेत्तद्दशाशं च गुह्योदकसमन्वितम् ॥३६॥
 तालकेन हुनेत्तस्य दशाशं संस्कृताग्निना ।
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् तद्दशांशं कुमारक ॥३७॥
 मन्त्रान्ते च प्रकर्त्तव्यं सौभाग्याचनमादरात् ।
 सौभाग्यार्चां विना पुत्र मन्त्रसिद्धिर्न जायते ॥३८॥
 पञ्चास्त्रमन्त्रसिद्धिर्हि दिवि देवेषु दुर्लभा^६ ।
 गोपयेत् सर्वदा पुत्र^७ 'गुप्ता वीर्यवती'^८ भवेत् ॥३९॥
 'न कर्त्तव्यः प्रयोगोऽस्य'^९ शपथादि^{१०} कदाचन ।
 यः करोति प्रयोगं च देवताशापमाप्नुयात् ॥४०॥

इति षड्विंशतमो साध्यायनतन्त्रे शोडशः पटलः ॥१६॥

॥ अथ सप्तदशः पटलः ॥

'जिह्वाग्रमादाय 'करेण देवी'^{११} 'वामेन शत्रून् परिपोडयन्तीम्'^{१२} ।

पीताम्बरा पीनपयोधरादृषां^{१३} सदा 'स्मरेऽहं बगलाम्बिका'^{१४} हृदि ॥१॥

कौञ्चभेदेन उवाच—

चन्द्रचूड नमस्तेऽस्तु इन्दिरापतिपूजित ।

शताक्षरीमहामन्त्रं बगलायाश्च मे वद ॥२॥

१. घ. विनियोगं च । २. घ. संस्मृतम् । ३. घ. लसज्जिह्वासमन्विताम् । ४. घ. मदिरामोदसयुक्तां । ५. घ. भजेत् । ६. घ. दुर्लभम् । ७. घ. पुत्रा । ८. घ. गोप्ता वीर्यापतिर् । ९. घ. न कर्त्तव्य प्रयोगश्च । १०. घ. शपथपि । ११. इति पूर्वमयमर्थो य. पुस्तके—'हरीहरेश्च समर्गः' । १२. घ. करद्वयेन । १३. घ. श्रुत्पाटयन्तिमरिशक्तिमुक्ताम् । १४. घ. पीठम् । १५. घ. स्मरेयं बगलाम्बिकां ।

ईदंवर उवाच—

मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि पुरश्चर्याविधिं तथा ।
 प्रयोगं चोपसंहारं वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥३॥
 स्तब्धमाया च वाग्बीजं माया मन्मथमेव च ।
 श्रीबीजं^१ शक्तिवाराहं^२ वगलामुखिं चोच्चरेत्^३ ॥४॥
 स्फुरद्वयं तथा चोक्त्वा सर्वशब्दं^४ ततोच्चरेत् ।
 दुष्टानां पदमुच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत् ॥५॥
 स्तम्भयद्वयमुच्चार्यं प्रस्फुरद्वयमुच्चरेत् ।
 विकटाङ्गीपदं चोक्त्वा घोररूपीपदं^५ वदेत् ॥६॥
 जिह्वां कीलय उच्चार्यं^६ महाशब्दं ततोच्चरेत् ।
 पश्चाद्भ्रमकरीं चैव बुद्धिं नाशय उच्चरेत् ॥७॥
 विरामयपदं^७ चोक्त्वा 'सर्वप्रज्ञामयीति च'^८ ।
 प्रज्ञां नाशय उच्चार्यं उन्मादीकुक्षं^९ युग्मकम् ॥८॥
 मनोपहारिणीं चोक्त्वा स्तम्भमायां^{१०} समुच्चरेत् ।
 शक्तिवाराहबीजं च लक्ष्मीबीजं^{११} ततः परम् ॥९॥
 कामराजं च हृल्लेखां वाग्भव तदनन्तरम् ।
 स्तब्धमायां ततोच्चार्यं बह्मिजायासमन्वितम् ॥१०॥
 शताक्षरोमहामन्त्रं वगलानाम् पावनम् ।
 ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोभ्यः गायत्री समुदाहृता ॥११॥
 देवतां वगलानाम्नी जगत्स्तम्भनकारिणी ।
 हृत्बीजं^{१२} शक्तिरित्येव वाग्भवं कीलकं तथा ॥१२॥
 पूर्वोक्तां न्यासविद्यां च वगलापञ्जरादयः ।
 न्यासानुक्तक्रमेणैव^{१३} जपादा पञ्च एव च^{१४} ॥१३॥
 पीताम्बरधरा सौम्या पीतभूषणभूषिताम् ।
 स्वर्णसिंहासनस्थां च मूले कल्पतरोरध^{१५} ॥१४॥

१ घ रमां च । २ हृत्बीजं वाग्बीजं । ३ घ, सर्वं शब्द । ४ घ, चोक्त्वा ।
 ५ घ, मुखं पद । ६ घ, मुच्चार्यं । ७ घ, विरामयपदं । ८ घ, सर्वप्रज्ञामयीत्यरे ।
 ९ घ, उन्माद कुक्षं । १० घ, स्तम्भमायां । ११ घ, रमाबीजं । १२ घ, न्यास-
 मुक्तक्रमेणैव । १३ घ, जपादावाचरेत् सुधीः । १४ घ, जपादावन्यमेव च । १५ घ, ०स्तदा ।

वैरिजिह्वाभेदानार्थं^१ क्षुरिका^२ विभ्रती शिवाम् ।
 पानपात्रं गदो पाशं धारयन्तीं भजाम्यहम् ॥१५॥
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमर्कलक्ष क्षपाशना ।
 तत्पुण्येदेतुमिधेन वारिणा वाय पुत्रक ॥१६॥
 'जातिपञ्चकसमिश्रजलेन' च कुमारक ।
 पूजायुतं^३ च सन्तर्प्य ह्यचितेन जलेन च ॥१७॥
 त्रिमध्वक्त पायसेन^४ ग्रथवा पायसाज्ययो ।
 चरुणा वा हुनेत् पुत्रं^५ सहस्रं तत्त्वसंख्याया ॥१८॥
 नानादेहजरोपाश्च कृत्रिमग्रहसंभवान् ।
 यावकाश्च^६ प्रयोगाश्च^७ 'तुल्यधातुसमुद्भवान्'^८ ॥१९॥
 सद्योनाशनमाद्यानि मन्त्रहोमेन साधकः ।
 'साज्यसक्तुघृताक्त'^९ च क्षमन्तकुसुमेन वा ॥२०॥
 षट्सहस्रं हुनेत् पुत्रं स्पण्डिले वाय कुण्डके ।
 वशीकरं च समोहं कोत्ति प्रज्ञा भवेद् ध्रुवम् ॥२१॥
 तालकेन हुनेत् पुत्रं सहस्रं वसुसंख्याया ।
 कुण्डं चैव भगाकारे राजतान्मो^{१०} कलौ निशा ॥२२॥
 स्तम्भेन च भवेत् पुत्रं तान्न कार्या विचारणा ।
 भ्रूवर्केश्च पिचुमर्द्देश्च^{११} समिधं^{१२} सग्रहेक्षरं ॥२३॥
 प्रत्येकं त्रिसहस्रं च प्रादेशसमिधा क्रमं^{१३} ।
 मन्त्रं सर्वं समुच्चार्य समिधाद्वयमेव च ॥२४॥
 हुनेद् ध्यानसमायुक्तं सद्यो विद्वषणं भवेत् ।
 विभीतकस्य समिधो ग्राह्यास्तु^{१४} त्रिसहस्रकम् ॥२५॥
 षट्कोणकुण्डे जूहुयात्त्रिधायां कृष्णपक्षके ।
 स्यावराश्च गिरीरुचैव नदीपादपसंकुलान्^{१५} ॥२६॥

१ घ. ० जेदनार्थं । २ घ क्षुरिका । ३ ख ग घ जाती(ति) वयक० । ४ घ, बाणायुत । ५ घ पायस च । ६ घ पुस्तकेऽस्मात्परमचिकीर्षो दृश्यते—

'पर्यायफलदायक । तपस्तेन हुनेत्पुत्रं' ।

७-८ घ पायकाश्च प्रयोगाश्च । ९ ख ग घ धत्प(स्थ)धातु० । १० ख, शाली सक्तु० । ग साज्यसक्तु० । घ शानिधक्तुघृताक्तां च । ११ घ रजकान्मो । १२ ख पिचुमर्द्देश्च । १३ घ समिधा । १४ ख ग प्रादेशसमिधं क्रम । घ प्रादेश-समिधाक्रमात् । १५ घ ग्राह्यास्तु । ग ग्राह्या । १६ घ नदीपादपसंकुलान् तथा ।

क्षणादुच्चाटनं कुर्याद् होमस्यास्य प्रभावतः ।

निम्बतलेन समुक्तं शात्मलीकुसुमं तथा ॥२७॥^१

जुहुयाद्देवतां^२ ध्यात्वा^३ मार्गणं भवति ध्रुवम् ।

पट्कर्मनिर्माणमिदं^४ सुसिद्धं

शताक्षरीमन्त्रमद्योषदुःखहम् ।

होमेन सस्तम्भनमाचरेद् बुधो-

विद्यासुसिद्धं मुनिगुह्यमादरात् ॥२८॥

॥ इति षड्विंशत्यध्याये सांख्यायनतन्त्रे सप्तदशं पटसम्^५ ॥२७॥

॥ अथ सप्तदशः पटसः ॥

नमस्ते जगतां^६ देवी जिह्वास्तम्भनकारिणीम् ।

भजेऽहं शत्रुनाशार्थं^७ साधकासत्त्वमानसाम्^८ ॥२९॥

कीञ्चमेवम उवाच—

सम्यग्ज्ञानं^९ महेशानं नित्यनित्यस्वरूपकं^{१०} ।

चन्द्रचूडं नमस्तेऽस्तु प्रयोगं वद मे प्रभो ॥३०॥

इतिर उवाच—

पट्सहस्रं हुनेत् पुनर्दूर्वाहोममतन्द्रितः ।

‘सम्यग् विपज्वर’^{११} हन्ति वगलायाः प्रसादतः ॥३१॥

बुधेन जुहुयात्तस्य तापज्वरहर^{१२} परम् ।

हुनेत् तावत् द्येवदूर्वा उवरं चातुषिकं हरेत् ॥३२॥

त्रिमध्वत^{१३} द्येवदूर्वा पट्सहस्रं हुनेत् त्रयात् ।

नानाविधं गर हन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥३३॥

रूपमिन्द्र गुह्यचोभिः शर्करागुह्यतन्त्रिणाम्^{१४} ।

जुहुयात् पट्सहस्रं तु नानामेहनिवारणम् ॥३४॥

१. य. पुस्तके दलोकोप्य नास्ति । २. य. जुहुयादपुनः । ३. य. ध्यायन् । ४. य. पट्कर्मणि मिदं । ५. य. सप्तदशम् । ६. य. सप्तदशः । ७. य. पटसः । ८. य. वगला । ९. य. शत्रुनाशार्थं । १०. य. साधकान् । ११. य. नित्यनित्यम् । १२. य. सप्ततापज्वर । १३. य. द्योतज्वरः । १४. य. त्रिमध्वता । १५. य. मिथितम् ।

सर्पपं लवणोपेतं पूर्ववज्जुह्यान्नरः ।
 नाशयेद् गुल्मरोगं च श्लोषधेन विना महत् ॥७॥
 षट्सहस्रं हुनेत् पुन शर्कराज्यसमन्वितम् ।
 'पित्तोद्रेकादिसर्वाश्च' रोगान्नाशयति ध्रुवम् ॥८॥
 शालिसक्तुं धृतोपेतं वशीकरणमुत्तमम् ।
 लाजाहोमं षट्सहस्र लभेद्वाञ्छितकन्यकाम् ॥९॥
 हरिद्राखडहोमं तु षट्सहस्रं सुबुद्धिमान् ।
 गर्भंस्तमो भवेन्नारी सापि वश्या भवेद् ध्रुवम् ॥१०॥
 केतकीदलहोमेन गणिका वश्यमाप्नुयात् ।
 हुनेत् पद्मदलेनैव नेत्ररोग विनश्यति ॥११॥
 मल्लिकाकुसुमेनैव अधिका च मतिर्भवेत् ।
 जातीफलेन जुहुयादुन्मत्तो जायते रिपुः ॥१२॥
 षट्सहस्रं देवकुसुमं शर्कराज्यसमन्वितम् ।
 बुद्धिगं चैव चाञ्चल्य सज्जानमुन्मत्तिस्तथा ॥१३॥
 मलीकेन क्षुद्रमतिर्दुर्बुद्धि सिद्धबुद्धिता ।
 तत्क्षणाग्न्याशमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ॥१४॥
 मास सपुटसयुक्तं द्रव्येण सममेव च ।
 अयुत जुहुयाद्वात्री सद्यो धनपतिर्भवेत् ॥१५॥
 मध्वाक्तं दद्यात्मासं च त्रिसहस्रं हुनेत् सुत ।
 'भूलाभ जायते' शीघ्रं ग्रामादिपतिरेव च ॥१६॥
 गोडोद्व्येण जुहुयात् सहस्रं बाणसख्यया ।
 बहुमूत्रादिरोगाश्च नाशयेत्तान् न संशयः ॥१७॥

१. ॥ रोगरोग । २. घ. र्वस्योद्भववाश्च पतयो । ३. नाशयेद् । ४. ख. ग.
 घ. शालिसक्तु । ५. घ. सितोपेत । ६. घ. लाजहोमात् । ७. घ. होमस्तु । ८.
 क. सहस्रं । ९. ख. वश्या । १०. घ. वादरात् । ११. ख. बाधिका धुममतिर्भवेत् ।
 १२. प. देवपुष्प । १३. ख. उदये । १४. वच्चाटकमतिस्तथा । १५. ख. मविवेक
 घ. मविवेको । १६. ख. मन्दबुद्धिता । घ. सिद्धिबुद्धिता । १७. घ. सूर्योदयो । १८.
 ख. तु कुक्कुटस्यैव । घ. कुक्कुटसमूत । १९. घ. त्रिमधुः सहितेन । २०. घ. द्यापि-
 क्षितं । २१. घ. सुनभ च भवेत् । २२. घ. ग्रामादि० । २३. क. ग. घ. नाशयति ।

माध्वीद्रव्येण जुहुयात् षट्सहस्रं क्रमेण च ।
 ज्वरपित्तादिरोमाश्च^१ सद्यो नाशनमाप्नुयात् ॥१८॥
 पेंष्टीद्रव्येण जुहुयात्त्रिंशत्सहस्रकम् ।
 सग्रहग्रहणोरोग सद्यो नाशनमाप्नुयात् ॥१९॥
 भस्मेन 'अन्वहो हुत्वा'^२ भस्मदानपतिर्भवेत्^३ ।
 घृतेन कान्तिमान् भूत्वा^४ नारीणामात्मदो^५ भवेत् ॥२०॥
 क्षीरेण भ्रमनाशश्च दध्ना तापननाशनम्^६ ।
 पञ्चगव्येन जुहुयात् पूर्ववत् पाप नाशयेत्^७ ॥२१॥
 गोमूत्रेण हुनेन्मन्त्री^८ षट्सहस्रं क्रमेण च^९ ।
 तालीमयेन^{१०} जुहुयात् स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ॥२२॥
 खजूं रजेन द्रव्येण पुंसामाकर्षणं भवेत् ।
 तिलतैलेन जुहुयात् सर्वाकर्षणमाप्नुयात् ॥२३॥
 एरण्डतैलेन जुहुयाद्^{११} वाचाकर्षणमाप्नुयात्^{१२} ।
 कुसुं भतैलहोमेन^{१३} काकगुद्धाननेकशः^{१४} ॥२४॥
 आकर्षणं भवेच्छीघ्रं खेचराः पक्षिजातयः^{१५} ।
 यवना^{१६} पानहोमेन अग्निमध्याद्रिपुः^{१७} स्वयम् ॥२५॥
 रोगी च जायते मासाच्छिवस्य वचनं यथा ।
 जुहुयादारनालेन पित्तरोगी भवेद्रिपुः ॥२६॥
 निम्बपत्रद्रवेणैव वातरोगी भवेद्रिपुः ।
 मोहिनीपत्रजद्रावैः^{१८} हस्तेप्सररोगी भवेद्रिपुः ॥२७॥

१. ग घ. ज्वरपित्तादि० । २. घ. हुत्वात्तकामी । ३. घ. ०दानपरो० । ४. घ.
 हुत्वा । ५. नारीणां मन्मथो । ६ घ. तापनिवारणम् । ७. घ. पापनाशये । ८. घ.
 हुनेद्धोमान् । ९. घ. पुस्तके विरोधः—

‘विदारं विवदो भावाद्रिपुर्भन्ति भविष्यति’ ।

१०. ख. तालीमयेन । घ. तालमयेन । ११. घ. एरण्डतैलहोमेन । १२. घ. गवाकर्षण० ।
 १३. ख. ग. घ. पुस्तकेष्वतः परमयमसो दृश्यते विरोधः—

‘पूर्ववद्धोममानतः । जलजानी च होमेन[घ. जलजाश्चैव यो भेदा]भवेदाकर्षणं सुत ।
 करजतैलहोमेन’ ।

१४. घ. काकगुद्धाननेकशः । १५. घ. पक्षिजा यत । १६. ख. यवना । घ.
 यावतासाप्र । १७. घ. अग्निमाघं रिपो । १८. ख. मोहिपत्रजद्रावैः ।

धर्कपत्रद्वयेणैव क्षयरोगी भवेद्विपुः ।^१

'वज्रीक्षीरेण सयुक्तमारनालेन' पुत्रक ॥२८॥

जुहुयात् पट्सहस्रं तु वगलाध्यानपूर्वकम् ।

नाडीव्रणसमामुक्तो^२ (:) यन्मासान्म्रियते रिपुः ॥२९॥

गर^३ च तिलतैलं च धारनालयुतेन च ।

'ग्रामे वा नगरे वाय^४ वगलाध्यानपूर्वकम् ॥३०॥

'स्फोटव्रणाश्च जायन्ते'^५ रिपोर्योजनमात्रतः^६ ।^७

तिलतैलेन सुयोज्य यावनासाम्रमेव^८ च ॥३१॥

जुहुयात् पूर्ववच्छत्रु^९ 'मण्डलाच्छत्रुशोषकः'^{१०} ।

कपूरमिलितं^{११} च तिलतैलं हुनेत् सुधीः^{१२} ॥३२॥

मारणं^{१३} मण्डलाच्छत्रो^{१४} नात्र कार्या विचारणा ॥३४॥

इति वद्विद्यायमे साक्ष्यायननाम्ने अष्टादश.पटलः ॥१८॥

॥ अर्थकोनविंशः पटलः ॥

चतुर्भुजां त्रिनयनां पीतवस्त्रधरां शुभाम्^{१५} ।

वन्देऽहं वगला देवीं क्षत्रुस्तमनकारिणीम् ॥१॥

१. सप्तविंशतिपद्योतशब्दस्याष्टाविंशतिपद्यपूर्वादेः^१स्य च स्थानेऽयमद्यो सम्पत्ते च. पुस्तके-

'पत्र' विभीतकोद्भूत तस्य स्वरसहोमतः

जातिभ्रष्टो भवेच्छत्रु नान्यथा शिवसापितम् ॥

तत्कारिपत्रजद्वार्यः कर्मभ्रष्टो भवेद्विपुः ।

निगु^२ध्रीपत्रवद्रावैर्वररोगी भवेद्विपुः ॥

कर्पाक्षपत्रजद्वार्वहोमेन कुमारकः ।

द्वद्वकोष्ठाश्च रोगस्य स्वभावेर्जवसिद्धपति ॥

हरीतकीश्च होमेन वलुरोगी भवेद्विपुः ।

२. च. वज्रीक्षीरेण समिधः । ३. च. नाडीव्रणपत्रो भूत्वा । ४. च. धपद । ५. च

पुस्तके विशेषः—

नगरे वाप ग्रामे वा धर्कक्षीर चारनाल पूर्ववजुहुयात् क्रमात् ।

भगवद्वरुणे भूत्वा यन्मासान् म्रियते रिपुः ॥

६. च. फोटकव्रहा रोगेन । ७. च. रिपुर्योः । ८. अतः परमशः ख. च. पुस्तके विशेष

'म्रियते नात्र सन्देहः शिवस्य वचनं यथा ।

क. ख. यावनासाम्रमेव १०. च. पूर्ववत्पुत्र । ११. ख. ग. द्विप्रसद्य । च. ०. धनुमारणम् । १२. च. ०. मिथितं । १३. च. सुत । १४. च. म्रियते । १५. च. अश्वत्थ । १६. च. शिवाम् ।

स्कन्द^१ उवाच—

नमस्ते योगिससेव्य नमः^२ कारुणिकोत्तम ।
प्रयोगं चोपसहारं वद मे सर्वमङ्गल ॥२॥

ईश्वर उवाच—

प्रेताङ्गारमघी^३ कृत्वा सितवस्त्रेण^४ बुद्धिमान् ।
शल्य^५ तदन्तरे भस्म वैरिनाम^६ च सलिखेत् ॥३॥
'एकाग्रं' वगला देवी^७ ' वेष्टयेत् सम्यगादरात् ।
'शताक्षरी च सवेष्टय ईशानादिपु^८ ' वेष्टयेत् ॥४॥
तद्वस्त्र^९ गुलिकीकृत्य^{१०} वेष्टयेत् प्रेतरञ्जुना ।
भीमवारे समानीय स्थापयेद् वृक्षकोटरे ॥५॥
वृक्षमूले जपेन्मन्त्रममुत्/ध्यानपूर्वकम् ।
पुत्रदारादिसंयुक्तः पक्षाच्छत्रुर्मु^{११}तो भवेत् ॥६॥
भूर्जपत्रे^{१२} लिखेन्नाम^{१३} वगलाबीजमध्यमम् ।
कोटरे स्थापयेत् पुत्र विभीतकतरोस्तथा ॥७॥
जिह्वास्तम्भ भवेच्छत्रोः पक्षमात्रेण पुत्रक ।
बृहस्पतिसमो वापि वाचस्पतिसमोऽपि वा ॥८॥
तालमध्ये लिखेन्नाम वगलाबीजमध्यमम्^{१४} ।
प्राणप्रतिष्ठा कृत्वाऽप्य^{१५} निर्दहेद्^{१६} दीपवह्निना ॥९॥
जपेत्तत्र सहस्रं क शताक्षरमनुं^{१७} तथा ।
जिह्वास्तम्भं भवेच्छीघ्रं^{१८} शेषभाषापतिः स्वयम् ॥१०॥
प्रेतमाण्डे लिखेन्नाम प्रेताङ्गारेण^{१९} साधकः ।
प्राणस्थापनक कृत्वा रवौ रात्रौ सुबुद्धिमान् ॥११॥
प्रेताग्नी प्रेतकाष्ठे तु^{२०} निर्दहेत् प्रेतकानने ।
नग्नः क्षमशानमध्ये तु जपेद् दक्षिणदिङ्मुखः ॥१२॥

१. प. श्रीचक्रभेदन । २. प. महा । ३. छ. ०मघी । ४. पति । ५. प. प्रेत-
वस्त्रे च । ६. छ. ग. घ. शल्य । ७. प. परि० । ८. प. एकाग्रं च वगला । ९. प.
मन्त्रसताक्षरीमिदं च ईशानादिपु । १०. क. प. तद्वस्त्र । ११. प. गुलिकीकृत्य । १२.
ग. घ. भूर्जपत्रे । १३. प. रिपुनाम । १४. छ. ग. घ. ०मध्यमम् । १५. प. पु ।
१६. ग. निर्दही । १७. प. शताक्षरमनु । १८. ०च्छत्रोः । १९. प्रेतांगारेण
२०. प. पु ।



सहस्र ध्यानपूर्वं तु प्रातयमि समासत १ ।
 एव कृत्वा तु २ सप्ताह ज्वरस्थो जायते भुवि ॥१३॥
 मासान्मृत्युवशो ३ भूत्वा विनश्यति न सक्षयः ।
 श्रीसूक्तमाजनेनैव तन्मन्त्रेणाभिमन्त्रितम् ॥१४॥
 शतमष्टोत्तर चैव ४ सहस्र वा कुमारक ।
 मन्त्रितोदकपानेन पुण्य सुखमवाप्नुयात् ॥१५॥
 चिताभस्म ५ चिताङ्गार चित्ताभ ६ च कुमारक ।
 मोहिनीपत्रजझावमंहयेत् सूक्ष्मतोज्ज्वल ॥१६॥
 सम सम रिपूच्छिष्ट मंहयेत् कल्पयेत् पुन ।
 'चतुरङ्ग' ७ पुत्तली ८ कुर्यात् सर्वाङ्गसमुत्तमम् ॥ ७॥
 हृदि तन्नाम चालिख्य सलाटे वगला लिखेत्
 सर्वाङ्गे चाग्निबीज च लिखेद् बिन्दु च निर्दहेत् ॥१८॥
 प्रेतबह्वी प्रेतकाष्ठे प्रेतमास सुपुत्रक ९ ।
 जपेत्तन्नामुत पुत्र रिपुगच्छेद्यमासये १० ॥१९॥
 स्नुही ११ क्षीरेण समुक्त 'मंहयेत् श्वेतसपप १२' ।
 चतुरङ्ग ७ पुत्तली ८ लिखेत् पूर्ववदाचरेत् ॥२०॥
 'स्थापयेच्चुल्ल' १३ 'घघीभागे' १४ यमघटकयोगत १५ ।
 तत्रोपरि दिवारात्री धर्म्नि सस्थाप्य बुद्धिमान् ॥२१॥ १६
 वगलाबीजमध्यस्थ साध्यनाम च सलिखेत् ।
 वेष्टयेद्गलामन्त्र ईशानादिशताक्षरम् १७ ॥२२॥
 प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु सहारक्रमतोऽर्चयेत् ।
 शताक्षर्यकक्षीरेस्तु स्नुहीक्षीरेण लपयेत् ॥२३॥ १८

१ घ समापयेत् । २ क. तु । ३ कक्षग. वशे । ४ घ वाष । ५ क चितिभस्म ।
 ६ घ प्रोताभ । ७ घ चतुर पुत्तली चैव । ८ घ च पुत्रक । ९ क. घ घ
 ० यमासयेत् । १० घ स्नुही । ११ घ. श्वेतसपप मंहयेत् । १२ घ ० चुल्ल ।
 १३. क घ पुत्तकस्थोऽयमशो विशेष —

अमुत च दिवारात्री एकाक्षरमनु जपेत्
 मसूरिकाज्वरा-क्षत्र पसान्मरणाप्नुयात् ।
 अरुपत्र लिखेन्नाम अक्षीरेण बुद्धिमान् ।

१४. घ ईशान्यादि० । १५ क. घ पुत्तकेषु निम्नाशो विशेष —
 सतपेद्दीपशिखया पुत्तली ता विशेषत ।
 अष्टोत्तरशतं कृत्वा शताक्षर्यादि कल्पयेत् ॥

एव कृते सप्तरात्रं स शत्रुश्च मृतो भवेत् ।
 मसूरिकाजरासक्तः पक्षाद् गच्छेद् यमालयम् ॥२४॥
 मन्त्रयेन्निम्बपत्रेण एकमेकं क्रमं क्रमम् ।
 चन्द्रप्रसादमन्त्रेण शीतलाविद्यया तथा ॥२५॥^१ ॥
 सपर्णा^२ क्षालयेत् क्षीरेः सदाहुः शान्तिमाप्नुयात् ।^३
 तिक्तकोशातकीजातिः^४ तापिच्छी सादरं तथा ॥२६॥
 घत्तूरकं च तन्मूढं^५ नि 'कारवेत्या फलाकृतिम्'^६ ।
 'षट्मनःशिलाबीजैश्च'^७ ति पादद्वयं तथा ॥२७॥
 वदरीमूलतो गत्वा प्राणस्थापनकं चरेत् ।
 मन्त्रमुच्चारयेत्पुनः तदन्तः शत्रुमुच्चरेत् ॥२८॥^८
 श्रोत्रालोगण्डभ्रूमध्ये जिह्वाभासास्पशेफसी^९ ।
 'दक्षिणाभिमुखो भूत्वा'^{१०} वगलासम्पुटद्वयम्^{११} ॥२९॥
 ब्रह्मस्थाने तालुदेशे कण्टकानकंसंस्थया ।
 'दक्षिणाभिमुखो भूत्वा'^{१२} रोपयेन्नग्नतस्तथा^{१३} ॥३०॥
 पञ्च पञ्च करे रोप्य पाश्वे^{१४} कुक्षौ च पृष्ठके ।
 कण्टकान् सप्तसंस्थाकान् 'मन्त्रयेत् पूर्ववत् क्रमात्'^{१५} ॥३१॥
 रोपयेत् पादयुग्मे तु प्रत्येकं^{१६} द्वादशं तथा ।
 'मन्त्रपूर्वं च सरोप्य'^{१७} वदरीकण्टकास्तथा ॥३२॥
 पुताली प्रेतवस्त्रेण बद्ध्वा प्रादेशगर्भके^{१८} ।
 ह्मसानाग्नी^{१९} क्षिपेद्^{२०} रात्रौ बलिं दद्याच्च कुक्कुटम्^{२१} ॥३३॥

१. अतः परमममघोऽवलोक्यते य. पुस्तके—

“एकाक्षरीविद्यया च पताक्षर्या च विद्यया” ।

२. सुपणान् । ३. य. पुस्तके निम्नासो दृश्यते
 मन्त्रित जुहुयान्मन्त्रो क्षीरे वापि तथैव च ।
 सप्ताहाच्छान्तिमाप्नोति तमः सूर्योदये तथा ॥

४. य. जाती । ५. ख. कारवेत्य० । य. कारवत्या० । ६. ख. य. षट्पिती निबलीजैश्च ।

७. य. षट्पिती निम्बपत्रैश्च । ८. य. पुस्तके विशेषः पाठः—

कण्टकान्तो (न्ता)पयेदकंनेत्राद्येषु पुनः ।

९. य. ०शेफसी । १०. क. ग. य. पुस्तकेषु नास्ति । १०. य. पुस्तके नास्ति । ११.

य. दक्षिणाभिमुखं स्थित्वा । १२. य. ०ग्नतो रबी । १३. य. रोपयेन्मन्त्रपूर्वकम् ।

१४. य. द्वादश । १५. य. मन्त्रपूर्वान् समारोप्य । १६. य. ०प्रत्येकं । १७. य. ह्मसाने ।

१८. य. निक्षिपेद् । १९. य. कुक्कुटम् ।

अश्मयद' रिपौरञ्जे नाडीगूलं भवेद् ध्रुवंम् ।
 तेनैव दुःखितः शत्रुः पक्षाद् गच्छेद् यमांतयम् ॥ ३४॥
 वक्ष्येऽहं चोपसंहारं जीवस्थोऽपि रिपुं^१ (पुं) यथा^२ ।
 रवौ रात्रौ बलिं दत्वा^३ चानीत्वा^४ साधकोत्तमः ॥ ३५॥
 उत्पाट्य कण्टकान्यादौ^५ क्षीरेण क्षालयेत् सुत ।
 तच्छलाका^६ च^७ संक्षाल्य निःक्षिपेत् कूपमध्यगे ॥ ३६॥
 निःक्षिपेन् मन्त्रपूर्वं च एकैकं चोत्तरामुखः^८ ।
 शत्वकेनैव^९ मन्त्रेण मन्त्रयेत् फलशोदकम् ॥ ३७॥
 सहस्रवारं विधिवन्^{१०} मन्त्रेण^{११} वारिभिः क्रमात् ।
 प्रयोग^{१२} षोडितं^{१३} तेन मार्जयेच्छाम्मवेन^{१४} तु ॥ ३८॥
 स्थापयेत्^{१५} तेन मन्त्रेण मन्त्रसिद्धिस्तु पुत्रक ।
 ताम्रपात्रे नदीतोये^{१६} नदीवेगात्प्रवेष्टितः^{१७} ॥ ३९॥
 क्षस्मिश्च मन्त्रयेत् साध्यं मन्त्रेणैव शतं तथा^{१८} ।
 त्रिकालं प्राशयेत्तोयं भक्ष्याह्ने मार्जनं तथा ॥ ४०॥
 त्रिदिनं चाथवा पञ्च ऋपिसंख्यादिनेषु च^{१९} ।
 एवं कृते षोडितस्य^{२०} षोडां सूर्योदये यथा^{२१} ॥ ४१॥
 'सहरेच्छान्तिमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा'^{२२} ।
 न ज्ञात्वा चोपसंहारं यः करोति नराधमः ॥ ४२॥
 स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः दवानो भविष्यति^{२३} ।
 प्रयोगं चोपसंहारमभ्यसेच्च कुमारक ॥ ४३॥
 इति यद्विद्यागमे सोऽध्यायनतन्त्रे एकोनविंशः^{२४} पटलः ॥ ५॥

१. ख. अश्मयद । घ. अर्चयेत् । २. व. रिपु । ३. व. यदा । ४. घ दद्या ।
 ५. ख. नीत्वा सा । घ. दानीत । ६. घ. कण्टकान् सर्वा । ७-८. घ. तलालट तु । ८.
 घ. चोत्तर मुखम् । ९. ख. घ. क्षामवेनैव । घ. क्षालुवेनेन । ११. विधिना । १२.
 घ. मन्त्रित । १३. ख. घ. प्रयोग । १४. घ. मुदितं । १५. घ. क्षालुवेन । १६.
 घ. तपयेत् । १७. घ. तोय । १८. घ. नदीवेगात्प्रवेष्टितम् । १९. घ. मन्त्रयेत् शत्व-
 मन्त्रेण शतवारं सहस्रकम् । २०. घ. वा । २१. घ. पुस्तके विज्ञेयः पाठः—

देवता शान्तिमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा
 २२. घ. तस्य षोडा । २३. घ. शान्तिमाप्नोति निश्चितम् । २४. घ. पुस्तके नास्ति ।
 २६. घ. भिजामते । २९. घ. एकोनविंशतिथे ।

॥ अथः विंशः पटलः ॥

सर्वावयवशोभाढ्या^१ समपीनपयोधराम् ।

हृदि सभावये^२ देवी वगला सर्वसिद्धिदाम् ॥१॥

स्कन्द^३ उवाच—

नमस्ते पार्वतीनाथ नमः पञ्चगभूषण ।

परविद्याभेदन च वगलायाश्च मे वद ॥२॥

ईश्वर उवाच

मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि मन्त्रसभेदनाविधिम् ।

प्रयोग चोपसंहार शृणु सर्वं कुमारक ॥३॥

उद्धरेत्तारमादौ तु स्तब्धमायां ततः परम् ।

श्रीमाया शक्तिवाराह 'वाग्भवं मन्मथं तथा'^४ ॥४॥

विलिखेत्ताड्यंबीज^५ च वगलामुखी^६ समुच्चरेत् ।^७

परप्रयोगमुच्चार्यं प्रसयुग्म 'ततः परम्'^८ ॥५॥

पूर्ववन्नवबीज च ब्रह्मास्त्रपदमुच्चरेत् ।

रूपिणीपदमुच्चार्यं परविद्यापद^९ वदेत् ॥६॥

प्रसनीति^{१०} पद चोक्त्वा भक्षद्वितीयमुच्चरेत्^{११} ।

पूर्ववन्नवबीज च परप्रज्ञापद वदेत् ॥७॥

हारिणीति पद चोक्त्वा 'प्रज्ञाख्यातियुग वदेत्'^{१२} ।

पूर्ववन्नवबीज च स्तम्भनास्त्रपद वदेत् ॥८॥

रूपिणीपदमुच्चार्यं बुद्धि 'वाचायुग वदेत्'^{१३} ।

पञ्चेन्द्रियपद चोक्त्वा ज्ञान भक्षद्वय वदेत् ॥९॥

पूर्ववन्नवबीज च वगलामुखि उच्चरेत् ।

हुं फट् स्वाहा^{१४}समायुक्त वगलामत्रमुत्तमम्^{१५} ॥१०॥

शतोत्तार मन्त्रबीजमष्टाविंशतिरेव च ।^{१६}

ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽस्य गायत्री समुदाहृता ॥११॥

१. घ. शोभाध्या । २. क. सभावये । ३. घ. कोञ्चभेदन । ४. घ. वाराहं वाग्भवं स्मर । ५. घ. विलिखे । ६. घ. मुखि । ७. घ. उच्चरेत् । ८. घ. उच्चरेत् । ९. घ. पर । १०. घ. प्रसनीति । ११. घ. भक्षद्वयम् । १२. घ. प्रज्ञां प्रसयुग्मकम् । १३. घ. विताड्ययुग्मकम् । १४. घ. स्वातिचद्रवण्डिपं मन्त्रमुत्तमम् । १५. घ. पदद्वयमिदं नास्ति घ. पुस्तके ।

परविद्याभक्षणी च वगला देवता स्वयम् ।
 मन्त्र प्रयोग वक्ष्यामि मन्त्रस्यास्य कुमारक ॥१२॥ ।
 पाशाङ्कुषेनांतरितः शक्तिबीजेन^१ विन्यसेत् ।
 'तत्तद्वागीश्वरोबीजेस्तद्वच्छ्रीबीजतो न्यसेत्'^२ ॥१३॥
 सधुषोढा च विन्यस्य क्रमादेव कुलेश्वरी ।
 ध्यान यत्नात् प्रवक्ष्यामि कौञ्चमेदनकोविद ॥१४॥
 सर्वमन्त्रमयी देवी सर्वाकर्षणकारिणीम् ।
 सर्वविद्याभक्षणी^३ च भजेऽहं विधिपूर्वकम् ॥१५॥
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं सक्षमेक क्षपाशनः ।
 तपयेदासवेनेव तद्दशाक्ष कुमारक ॥१६॥
 ह्यागमासेन जुहुयान् मध्वाज्येन^४ समन्वितम् ।
 सण्डमामलकप्रस्थमयुतं^५ च कुमारक ॥१७॥
 योगिनी वीरपूजां च ह्याचरेच्च समादरात् ।
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तत्र नात्र कार्या विचारणा ॥१८॥
 परप्रयोगकालेषु^६ मन्त्रमेतं^७ कुमारक ।
 'सहस्रवितय जप्त्वा'^८ स सत्ररवशिष्यते ॥१९॥
 क्षत्रवश्च पुरश्चर्या यत्र कुर्वन्ति पुत्रक^९ ।
 तत्रायुतं जप कुर्यात् तत्र विघ्न प्रजायते ॥२०॥
 यत्र कुत्रापि रिपवस्तपः कुर्वन्ति निश्चलात् ।
 तत्रायुत जपेन्मन्त्रं व्रसते^{१०} परविद्या^{११} ॥२१॥
 ध्युत तस्य मन्त्रन्तु^{१२} धमिमन्त्र^{१३} फल भवेत् ।
 द्रव्याभिमानिनो ये च ये च विद्याभिमानिनः ॥२२॥
 रूपाभिमानिनो ये च 'ये च'^{१४} यौवनमानिनः ।
 यत्र कुत्रापि तिष्ठति मन्त्रमेतं कुमारक ॥२३॥

१. च शक्तिबीज च । २. च.

ततो नागीश्वरी तद्वच्छ्रीबीजं च ततो न्यसेत् ।

१. ०. छ. प. भक्षिणी । ४. प. माध्वाज्येन । ५. प. ०. प्रस्थमयुत । ६. प. तु ।
 ७. प. ०. मेन । ८. प. सहस्रवितयान् पुत्र । ९. क. ग. निपुत्रक । १०. च व्रसते ।
 ११. प. रिपुविद्या । १२. च. मन्त्रस्य । १३. ध. धमिमन्त्र । १४. च. नास्ति ।

परविद्याभक्षणारम्भं^१ मन्त्रं चैवायुतं जपेत् ।
 श्वेतवेशान्^२ समायाति दन्तगूढ्यो भवद्विपुः ॥२४॥
 सद्यो यौवनहीनः^३ तु^४ 'तम सूर्योदयं यथा'^५ ।
 रूपवान् व्रणयोगी च भवत्येव न सशयः ॥२५॥
 जात्याभिमानिनो ये च निन्दको भवन्ति ध्रुवम्^६ ।
 'तपोऽभिमानिनो ये च'^७ अङ्गहीनो विजायते^८ ॥२६॥
 वैदिकं च परित्यज्य विपरीतकृतं^९ भवेत् ।
 विद्याभिमानिनः सर्वेऽप्ययुतः^{१०} जपमाचरेत्^{११} ॥२७॥
 भवेद्विद्याविहीनोऽपि मुक्करो^{१२} भवति ध्रुवम् ।
 देहाभिमानो पुरुषो नष्टदेहो भवेद् ध्रुवम् ॥२८॥^{१३}
 दीर्घायनं समायुक्तं^{१४} सर्वं सम्माहृतं भवेत् ।
 एतन्मनस्य माहात्म्यं न जानन्ति ऋषीश्वराः ॥२९॥
 'सर्वं स्व'^{१५} देहजं मह्यं^{१६} स्वप्रभावात्^{१७} प्रकाशिनी ।
 योगाभ्यासो^{१८} योगसिद्धो^{१९} तपस्वी सत्यवादिनः ॥३०॥
 मन्त्रणं^{२०} सिद्धोऽसिद्धोऽपि यत्र प्रत्यति^{२१} पुत्रकः ।
 परविद्याभदनं च मन्त्रोपासनतत्परः ॥३१॥
 यत्र गत्वा समासीन एतन्मन्त्रायुतं जपेत् ।
 योगसिद्धो मनसिद्धस्तपस्वी शतजीविनः^{२२} (तः)^{२३} ॥३२॥
 महाक्रान्तो^{२४} भवेन्नो च निन्दकोऽपि भवेद् ध्रुवम् ।
 ये ये^{२५} तन्मन्त्रराजं च नित्यमष्टोत्तरं जपेत् ॥३३॥
 'एतद्राज्यं स मासेन'^{२६} अम्बासेवापरो^{२७} भवत् ।
 न तत्समधिको^{२८} भूयास्तव द्वयकरो भवत् ॥३४॥

१ घ ०भक्षणारम्भं । २ घ श्वेतकेना । ३ घ ०हीनः । ४ घ च ।
 ५ घ भवत्येव न सशयः । ६ घ पुस्तके नास्ति । ७ घ नास्ति । ८ घ विजायते ।
 ९ घ विपरीतकृतो । १० घ सर्वेऽप्ययुताजः । ११ घ जपमायुतः । १२ ख
 घ मुक्करो । १३ ख घ पुस्तकस्थ पाठोऽयं विशेषः —

द्व्याभिमानो पुरुषो नष्टद्रव्यो भवेद् ध्रुवम् ।

१४ घ समायुक्तः । १५ ख सर्वस्वः । १६ घ मोहः । १७ घ स्वप्रकाशात् ।
 १८ घ योगाभ्यासे । १९ घ योगसिद्धिः । २० घ यत्रेण । २१ ॥ तिष्ठति ।
 २२ घ योगसिद्धस्तपस्वी च यत्रसिद्धो समीपतः । २३ ख न मदाक्रान्तो । घ पापा-
 क्रान्तो । २४ घ ए । २५ घ तद्राज्यं च जना सर्वे । २६ घ वक्ष्या सेवा ।
 २७ घ ०समाधिको ।

नैव निन्दाकरो भूयाद् 'यदीच्छेद्ये च (ज्वेत्स्व)जोवितम्' ॥

॥ इति परविद्याप्रयोगे शास्त्रायमतन्त्रे विंशतिः २ पटलः ॥२०॥

॥ अथैकविंशः पटलः ॥

परप्रज्ञोपसहारी १ परगर्वप्रभेदिनीम् २ । ३

परविद्याकर्षणं १ च प्रयोग वद शङ्कर ॥१॥

ईश्वर उवाच—

विश्वमेतच्छक्तिमय १ 'सा भक्तिर्वगतामया' २ ।

'एतच्च भासमाना' ३ तां वगतां च कुमारक ॥२॥

वाङ्मय चैव वैचित्र्य त्रिषु लोकेषु वर्तते ।

तद्गर्वहरणार्थं च विद्यामेता कुमारक ॥३॥

मनसा 'त जपन्मन्त्र' १ २ मुख तस्यावलोकयेत् ।

भयं च विस्मृतिभ्रान्तिस्तत्क्षणम् ३ भवति ध्रुवम् ॥४॥

पानपात्र वैरिजिह्वां गदा शूलेन सयुताम् ।

पीतवर्णां मदाधूर्णां चिन्तयेदानन रिपो. ॥५॥

स तु भाषापतिः साक्षाद् बृहस्पतिरिव स्वयम् ।

'स तु जात्यतरो,' १ भूत्वा निन्दितो भवति ध्रुवम् ॥६॥

अस्त्रशस्त्रमय मन्त्र यो जानाति कुमारक ।

तत्र गत्वा महामन्त्रं जपेद्देवीमन्यधीः १ २ ॥७॥

त्रिसहस्रं ध्यानयुक्तं तस्य विद्या कुमारक ।

विस्मृतिश्च भवेच्छीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥८॥

अयन्तैश्चर्य्यसमुक्तो १ द्विपता २ वर्तते ३ यदि ।

तस्य गेहे १ २ भौमवारे निशि नग्नेन बुद्धिमान् ॥९॥

१. य. यदीच्छेज्जोवनं भुवि । २. य. परविद्याप्रयोगप्राम विंशति । ३. य. प्रज्ञापहरणो । ४. य. ० प्रभेदिनी । ५. छ. य. य. पुस्तकेषु विम्बांशो विशेषः—

परविद्यामक्षिणी तां वगतां हृदि भावयत् ।

स्कन्द (य. श्रीञ्चभदन) उवाच ॥

नमस्ते योगिससेष्य योगिराज नमो नमः ।

६. य. ० कर्षणी च । ७. य. ० च्छक्तिमय । ८. य. तच्छक्तिर्वगतामया । ९. छ. एतत्प्रभासमाना । य. एकत्र भासमाना । १०. य. य. जपन्मन्त्र । ११. य. सद्यो जायतमो । १२. य. जपेद्भुवि ० । १३. य. ० समुक्त । १४. छ. द्विवितो । य. द्विपतो । १५. य. वर्तते । १६. य. गेहे ।

प्रदक्षिणत्रयं कृत्वा दिक्षि कौचेरदिह्मुखः ।
 सहस्रं सप्तरात्रौ^१ च नष्टद्रव्यो भवेद् ध्रुवम् ॥१०॥
 ग्राम वा नगरं वाथ नित्यं कृत्वा प्रदक्षिणम् ।
 जपेदयुतसख्या तु^२ तद्ग्राम तु^३ कुमारक ॥११॥
 सस्यादिभिर्विनश्यन्ति द्रव्य^४ चोरेण नश्यति ।
 पशुभिर्भ्रियते पुत्र मासाहोर्भाग्यमाप्नुयात् ॥१२॥
 फलित पुष्पित चैव^५ रात्रोराराममाश्रितः ।
 रवौ रात्रौ निशाकाले नग्नो भूत्वा सुनिश्चयः^६ ॥१३॥
 प्रदक्षिणत्रयं कृत्वाप्ययुतं जपमाचरेत् ।
 वृक्षो निर्मूलमाप्नोति शिवस्य वचनं यथा ॥१४॥
 एकाक्षरी च बगला साध्यास्य^७ मध्यदेशतः ।
 चिन्तयेज्जाप्यकालेषु^८ सहस्रं जपमाप्नुयात्^९ ॥१५॥
 लक्षं जप्त्वा मनोरेव मृत्तिका च कुमारक ।
 प्रवाहोपरि निक्षिप्य नद्या उपरि बुद्धिमान् ॥१६॥
 स्तम्भयेत् नदीवेगं महदाश्चर्यकारणम् ।
 महानद्यामेवमेव कुर्यात्^{१०} गुरुत्वाधवान्^{११} ॥१७॥
 व्यालव्याघ्रादयश्चैव ये ये क्रूरमृगादयः ।
 त्रिसप्तमन्त्रित भस्म मूर्द्धनि क्षेपणमात्रतः ॥१८॥
 वाक्पाणिवदनाक्षणा च^{१२} तत्क्षणात् स्तम्भनं भवेत् ।
 मन्त्रयेत् सस्कृतं भस्म मन्त्रेणानेन पुत्रक ॥१९॥
 श्रष्टोत्तरशतं सम्यक् ध्यानमात्रेण^{१३} बुद्धिमान् ।
 सर्वाङ्गाद्भूलनं कुर्यात् तद्भस्मना^{१४} कुमारक ॥२०॥

वनेचरास्ताभसजन्तजराश्च कीराभिन्दुष्कर्मकृदन्त्याह्वानाणि^{१५} ।

प्रेताश्च^{१६} भूताश्च^{१७} पिशाचभूचराः^{१८} सिंहाश्च सस्तमयति ध्रुव च^{१९} ॥२१॥

१. घ. सप्तरात्र । ग. सदा रात्रौ । २. ख. घ. क. ३. घ. च । ४. घ. घन ।
 ५. घ. ०चापि । ६. घ. सु निश्चितम् । ७. ख. ससाध्यं । घ. साध्यास्व । ८. घ.
 ०काल तु । ९. ख. घ. ०जपमाचरेत् । १०. घ. कुर्यात् । ११. घ. ०साधवात् ।
 १२. घ. घि । १३. घ. ध्यानपूर्वमु । १४. ख. तद्भस्मेन । १५. घ. कीरादि-
 दुष्कमकरा नराश्च । १६. घ. प्रेताश्च । १७. भूतानपि । १८. भूचराश्च । १९.
 क. ख. ग. च ध्रुवम् ।

एतन्मन्त्रवर पुत्र मनसा जपमाचरेत् ।
 वादार्थं चाय वाणिज्य सभाया राजसन्निधौ ॥२२॥
 गत्वा तु रिपवः सर्वे जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ।
 'शत्रुमुद्दिश्य मन्त्रं च प्रयुक्तं प्रजपेत्ततः' ॥२३॥
 पक्षमात्राद् भवेच्छत्रोजिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ।
 तेनेव म्रियते शत्रुमण्डलार्थेन ॥ मानवः ॥२४॥
 दक्षिणामूर्तिमन्त्रेण मन्त्रित जलमादरात् ।
 त्रिकालं चैव पीत्वा तु मण्डलाच्छान्तिमाप्नुयात् ॥२५॥
 इति षड्विंशतमोऽध्यायः समाप्तः ॥२६॥

॥ अथ द्वाविंशः पटलः ॥

नमस्ते देवदेवेशीं जिह्वास्तम्भनकारिणीम् ।
 पानपात्रगदायुक्ता भजेऽहं वगलामुखीम् ॥१॥

स्कन्धः उवाच—

त्रिपुरारे त्रिलोकशस्त्रिकालात्मस्थियवक ।
 वगलास्त्रं वदास्माकं 'मयि वात्सल्यगोरवात्' ॥२॥

शिवः उवाच—

वगलास्त्रमिदं पुनः सुरासुरसुपूजितम् ।
 घगस्त्यः प्रोक्तवान् पूर्वं राम दाशरथि प्रति ॥३॥
 तेनोक्तमाञ्जनेयाय तेनोक्तं चाजुनं प्रति ।
 तद्विद्या च प्रवक्ष्यामि वगलाहृदय ॥४॥
 प्रथमं वगलाबीजं वाराहं तदनन्तरम् ॥५॥
 'मम शत्रूस्ततः शक्तिः' ॥६॥ वगलाबीजमुदरेत् ॥७॥
 वगलामुखिपदं चोक्त्वा 'वाचं मुखं' ॥८॥ पदं वदेत् ।
 असद्वयं ॥९॥ च उच्चार्यं साफीयुग्मं ॥१०॥ ततः परम् ॥११॥

१. घ.—'प्राप्नुयाच्छत्रुमुद्दिश्य तन्मन्त्रं प्रजपेत्ततः' ।

२. क. ०मदलार्थेन । ३. घ. परविद्याकर्षणं नाम एकविंशतिः । ४. घ. वगला-
 म्बिकाम् । ५. घ. कौचभेदेन । ६. घ. ०कालज्ञ । ७. घ. मानवात्सल्यगोरवान् ।
 ८. घ. ईश्वर । ९. घ. मन्त्रः । १०. घ. वगलास्त्रमिदं । ११. घ. मनु । १२.
 घ. च ततः परम् । १३. घ. ततश्च घनिष्ठवाराहः । १४. घ. मम शत्रुः । १५. घ.
 ०हयुग्मं । १६. घ. साहियुग्मं ।

मक्षयुग्मं ततोच्चार्य शोणितं पिव-युग्मकम् ।
 वगलामुक्तिं^१ उच्चार्य^२ वगलाबीजमुच्चरेत्^३ ॥७॥
 'शक्तिं वाराहमुच्चार्यं वर्मास्त्रं च समुद्धरेत्'^४ ।
 'त्रिचत्वारिंशद्वर्णयुक्तं'^५ वगलायाः^६ सुपावनम् ॥८॥
 दुर्वासा^७ ऋषिरेवात्र^८ छन्दोजुष्टुप् भवेच्चुभम्^९ ।
 देवता वगलानाम्भो^{१०} जगद्व्यापकरूपिणी ॥९॥
 रत्नो^{११} बीजं ह्रीं च शक्तिश्च फट्कारः कौलकः तथा ।
 'मन्त्रराजेन देव्याश्च'^{१२} न्यासविद्या समाचरेत् ॥१०॥
 ध्यानभेद^{१३} प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रकम् ।
 चतुर्भुजा त्रिनयना पीनोन्नतपयोधराम् ॥११॥
 जिह्वा खड्गं पानपात्रं गदा धारयन्ती पराम्^{१४} ।
 पीताम्बरधरा देवी पीतपुष्पैरलङ्कृताम् ॥१२॥
 बिम्बोष्ठी चारुवदना मदाघूर्णितलोचनाम् ।
 सर्वविद्याकर्षिणी च सर्वप्रज्ञापहारिणीम् ॥१३॥
 भजद्वा चास्त्रवगला सर्वाकर्षणकर्मसु ।
 एव व्यात्वा जपेन्मन्त्रं बाणलक्षं कुमारकम् ॥१४॥
 तत्पर्वयेत्तद्दशाक्षं च जपासंमिश्रवारिणा^{१५} ।
 तद्दशाक्षं हुनेत् पुत्रं तालकं चाज्यसयुतम्^{१६} ॥१५॥
 भगाकारे सुकुण्डेऽस्मिन्^{१७} मुद्रया हस्त^{१८} बुद्धिमान् ।
 वदरीफलमात्रं च माहृतीश्च कुमारकम् ॥१६॥
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् सहस्रं शतमेव च ।
 योगिनीं पूजयेत् पुत्रं द्रव्यशुद्धिसमन्विताम् ॥१७॥
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत् सद्यो^{१९} देवता च प्रसीदति ।
 शिवालये जपेन्मन्त्रमयुतं च सुबुद्धिमान् ॥१८॥

१. घ. वगलामुक्तिः । २. घ. समुच्चार्यं । ३. घ. तद्बीजं च पुनर्वदेत् । ४. 'ततश्च शक्तिंवाराहं वाराहं च समुच्चरेत्' । ५. घ. त्रयश्चत्वारिंशद्वर्णं । ६. घ. वगला-
 स्त्र । ७. घ. दुर्वासा । ८. घ. ऋषेवास्त्र । ९. घ. एव च । १०. घ. चास्त्रवगला
 ११. घ. ह्रीं । १२. मन्त्रराजवदेवात्र । १३. घ. ध्यानं यत्नात् । १४. घ. सिवाम् ।
 १५. घ. हेतुः समिधः । १६. घ. चात्यसयुतम् । १७. घ. सुकुण्डे । १८. घ. स.
 हसोमुद्रेण । १९. घ. सद्यः ।

शत्रुक्षय भवेत् सद्यो नान्यथा शिवभाषितम् ।
 षट्सहस्रं जपेन्मन्त्रं निशाया चण्डिकालये ॥१६॥
 जिह्मास्तम्भनमाप्नोति बृहस्पतिसमोऽपि वा ।
 'जपित्वा च' सहस्रं तु मंत्रवत्य च सन्निधौ ॥२०॥
 बुद्धिभ्रंशो भवेत् सद्यो वाणोपतिसमोऽपि वा ।
 चीरभद्रालये शुभ्र अयुत जपमाचरेत् ॥२१॥
 सिद्धिदो जायते वत्स नान्यथा शिवभाषणम् ।^१
 मातृकासन्निधौ मन्त्रो जपेद् दशसहस्रकम्^२ ॥२२॥
 सद्यः स्तम्भनमाप्नोति बाल्मोक्तिसदृशोऽपि वा ।
 ध्यानपूर्वं^३ जपेन्मन्त्रो^४ अयुत च कुमारक ॥२३॥
 रूपयोवनवाञ्छन्नुर्व्याधिमान्^५ भवति ध्रुवम् ।
 त्रिसहस्रं^६ जपेन्मन्त्रं^७ त्रिसहस्रं दिने दिने ॥२४॥
 मण्डलाञ्छत्रसम्मोहं^८ कुबेरसदृशोऽपि त्र ।
 ऐश्वर्यं नाशमाप्नोति कुबेरसदृशोऽपि वा ॥२५॥
 त्रिकालमयुतं जप्त्वा ध्यानपूर्वं सुबुद्धिमान् ।
 वगलाध्यानतो मन्त्रमयुत जपमाचरेत् ॥२६॥
 सर्वाङ्ग^९ वायुना शत्रुः शीघ्रं गच्छेद् यमासयम्^{१०} ॥
 पार्वतीसन्निधौ मन्त्रो जपेदयुतमादिशन्^{११} ॥२७॥
 रात्रौ पूजासमाप्तौ नग्नो दक्षिणदिङ्मुखः ।
 मन्त्रो भवति तच्छत्रुरवश्यं^{१२} श्रीञ्चभेदन ॥२८॥
 विघ्नराजं समभ्यर्च्यं रवौ^{१३} तु जपमाचरेत् ।
 त्रिसहस्रं जपेन्मन्त्रं कुक्षिरोमी भवेद्विषु ॥२९॥
 मण्डलाभ्राशमायाति मात्र कार्या विचारणा ।
 प्रयोगान्ते च सस्कार पूजाकाले समाचरेत् ॥३०॥

इति श्रोतृद्विंशत्यध्याये तात्पर्यायनतरे द्वाविंशतिः पटलः ॥

१. ख. जपित्वाष्ट । घ. जपेत्तच । २. घ. निर्वीर्यो जायते शत्रुर्नान्यथा शिव-
 भाषितम् । ३. घ. षट्सहस्रकम् । ४. घ. व्यासत् पूर्वं । ५. घ. जपेन्मन्त्र । ६.
 घ. व्याधितो । ७. ख. त्रिसहस्र । घ. त्रिसहस्र च । ८. ख. जपते मन्त्रं । ९. क. ग.
 शत्रुसमूह । १०. ख. घ. सर्वाङ्ग । ११. घ. यमासये । १२. घ. दयुतसंख्या । १३.
 घ. तच्छत्रोर्मण्डला [व] । १४. घ. रात्रौ ।

॥ अथ त्रयोविंशः पटलः ॥

स्त्रर्णसिंहासनासीना सुन्दराङ्गी शुचिस्मिताम् ।

विम्बोष्ठी चारुनयना ध्यायेत् पीनपयोधराम् ॥१॥

स्कन्द^१ उवाच—

नमस्ताण्डवरुद्राय तापत्रयहराय च ।

वगलास्त्रमहामन्त्रैः प्रयोगान् वद शङ्कर ॥२॥

शिव^२ उवाच—

त्रिकाल तु समासीनो ध्यानपूर्वं^३ तु^४ साधकः ।

त्रिसप्त मन्त्रयित्वा तु जप पश्चात् समाचरेत् ॥३॥

नित्यं च त्रिसहस्रं^५ तु यन्मासं विजितेन्द्रियः ।

वाचासिद्धिर्भवेत्तस्य शापानुग्रहकारका^६ ॥४॥

अश्वत्थमूले प्रजपेदयुतं ध्यानपूर्वकम् ।

भक्षणाद् व्याधिनाशं च भवेदेव न संशयः ॥५॥

विभीतकतरोर्मूले अयुतं जपमाचरेत् ।

जिह्वास्तम्भनमाप्नोति साक्षाद्वापीश्वरोऽपि वा ॥६॥

कपित्थवृक्षमूले^७ तु प्रजपेदयुतं तथा ।

श्रोत्रस्तम्भनमाप्नोति सद्यो बधिरतां व्रजेत् ॥७॥

पिचुमदतरोर्मूलेऽप्ययुतं जपमाचरेत् ।

प्राणस्तम्भनमाप्नोति^८ रोगी पीनसवान् भवेत् ॥८॥

कदलीमूलमाश्रित्य अयुतं जपमाचरेत् ।

पादस्तम्भो भवेत् सद्यो वातरोगी भवेद् रिपुः^९ ॥९॥

करञ्जमूलमाश्रित्याप्ययुतं जपमाचरेत् ।

स्तम्भयेज्जठराग्निस्तु अन्नद्वेषो भवेद् ध्रुवम् ॥१०॥

विषतिन्दुकमूलं च समाश्रित्य मनुं जपेत् ।

अयुताच्च^{१०} भवेत् पुत्रं गात्रस्तम्भनमाप्नुयात् ॥११॥

नद्या समुद्रगामिन्या नाभिदघ्नजले^{११} स्थितः^{१२} ।

तत्प्रायेद् वगलास्त्रेण ग्रस्तं कृत्वारिनाम^{१३} च ॥१२॥

१. घ. क्रीञ्चभेदन । २. घ. ईश्वर । ३. घ. तु । ४. घ. त्रिसहस्रे । ५. क. ख. ग. ०कारकम् । ६. घ. कपित्थतण्डु । ७. घ. घ्राणस्तम्भ । ८. घ. नरः । ९. घ. नाभिमात्रे जले । १०. घ. नरः । ११. घ. तद्वारिनाम ।

दिने दिने सहस्र^१कं वगलाध्यानपूर्वकम् ।
 गर्भेस्तावं भवेत्तस्य भार्यायाः^२ शिवभाषितम् ॥१३॥^३
 वस्त्रोपलाशमूले तु जपेदयुतसंख्यया ।
 मन्त्रमध्ये रिपोर्भाषी भ्रस्तं कृत्वा कुमारक ॥१४॥
 संपन्नं च दिवा कृत्वा रात्रौ रात्रौ^४ जपेन्मनुम् ३
 सापि वग्ध्या भवेत् सत्यं नात्र कार्या विचारणा ॥१५॥
 ह्मशाने प्रजपेन्मन्त्रं भ्रस्तं कृत्वा तु पूर्ववत् ।
 सद्यस्तद्भार्यानाम् च भवेदेवं न संशयः ॥१६॥
 गूण्यागारे जपेदेवमयुतं^५ ध्यानपूर्वकम् ।
 सक्षमीर्नाशयते नूनं^६ स शत्रुरवशिष्यते ॥१७॥
 जंबीरतरुमूले तु मयुतं जपमाचरेत् ।
 'ध्रमाकुलकुलं सर्वं मण्डलान्नाशमाप्नुयात् ॥१८॥
 दातवार मन्त्रितं च शर्करोदकमेव च^७ ।
 रिपूणां चैव दातव्यं जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥१९॥
 ।। तं मन्त्रितं चैव नारिकेलफलोदकैः ।
 पाययेद्वात्रि^८ रिपुभिर्जिह्वास्तंभनमाप्नुयात् ॥२०॥
 नागवस्त्रोदलं चैव क्रमुकं चूर्णमेव च ।
 सहस्रं^९ मन्त्रितं पुत्र दातव्यं शत्रु(त्रू)णां निधि ॥२१॥
 ताम्बूलचर्वणाच्छत्रुजिह्वास्तंभनमाप्नुयात् ।
 चन्दनं चैव कस्तूरीर्षयित मन्त्रयेत् सुत ॥२२॥
 पुनश्च मन्त्रयेत्ताम्रपात्रे गुणसहस्रकम् ।
 तच्चचन्दनलेपनेन^{१०} रिपुभ्रान्तो^{११} भविष्यति ॥२३॥
 दन्तधावनकाष्ठं च मन्त्रयेत् त्रिसहस्रकम् ।
 तत्काष्ठेन रिपोः^{१२} पुत्र दन्तधावनमात्रतः ॥२४॥

१. क. य. घ. नार्यायाः । २. घ. पुस्तकेष्य पाठो विशेषः—

उतो(तः) पलाशमूलं तु जपेच्च परे द्वयम् ।

३. घ. रात्रौ तु प्र । ४. घ. जपेन्मन्त्र० । ५. घ. शोघं । ६. घ. घ. पुस्तके नास्ति ।
 ७. घ. प्राशयेद्वादि । ८. घ. विलेपेन । ९. घ. परिभ्रान्तो । १०. घ. रिपुः ।

जिह्वां वाणीं च बुद्धिं च 'मनः पादादिक'¹ तथा ।

स्तम्भनं च भवेच्छीघ्रं शिवस्य वचनं यथा ॥२५॥

प्रेतवस्त्रं रवौ ग्राह्यं चित्तिकाष्ठं च वेष्टयेत् ।²

श्मशाने निखनेद् रात्रौ त्रिसहस्रं जपेत्तदा³ ॥२६॥

शेषभाषापतिः साक्षाद् बृहस्पतिरपि स्वयम् ।

जिह्वास्तम्भनमाप्नोति सद्यो मूकत्वमाप्नुयात् ॥२७॥

इति षड्विद्यायामे सांख्यायनतन्त्रे त्रयोविंशतिः* पटलः ॥२९॥

॥ अथ चतुर्विंशः पटलः ॥

मन्वा पीताम्बराढ्यामरुणकुसुमगन्धानुलेपा त्रिनेत्रा,

गम्भीरा कम्बुकण्ठी कठिनकुचयुगा चारुबिम्बाधरोष्ठीम् ।

रात्रौज्जिह्वासिपत्र⁴ शरधनुसहिता व्यक्तगर्वाधिहृदा⁵,

देवी सस्तम्भरूपा सुविरलरसनामम्बिका⁶ तां भजामि⁷ ॥१॥

स्कन्ध⁸ उवाच—

नमस्ते वृषभारूढ नमः पद्मगकङ्कण⁹ ।

लक्षणं वद मे देव वगलामन्त्रमालिका¹⁰ ॥२॥

ईश्वर उवाच

भृगुवारे च सगृह्य¹¹ 'भारामस्यनिष्ठां तथा'¹² ।

'तां शुष्का'¹³ सप्तरात्र तु 'कृत्वा मेतामनन्तरम्'¹⁴ ॥३॥

भूताविपरित¹⁵ चैव कपिलागोमय तथा ।

पुनरेकाग्रताद्ग्राह्य¹⁶ भाण्डमध्ये तु निक्षिपेत् ॥४॥

सविषं जलसंयुक्तं कुर्यान्मेलनमेव च ।

हरिद्रा तत्र निक्षिप्य पूजयेदाद्यु तत्त्रयात् ॥५॥

शुक्लधोपरि च तद्भाण्डं रवौ रात्रौ च निक्षिपेत् ।

द्विगुणं जलसंयुक्तं¹⁷ कुर्यान्मेलनमेव च ॥६॥

१. घ. धुत्पिपासामल । २. घ. पुस्तकस्थोऽयं पाठो विदेशो हृदयते—

प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा तु पूजा चैव तु कारयेत् ।

३. घ. जपेऽमनुम् । ४. घ. वगलामन्त्रविवरणं नाम त्रयोविंशतिः । ५. घ. ०सिपत्रा ।

६. घ. सुविरलरवादिहृदा । ७. घ. सुविरलरसना० । ८. घ. नमामि । ९. घ.

क्रोञ्चभेदन । १०. ०भूषण । ११. ०जपमालिकाम् । १२. घ. सग्राह्य । १३. घ.

भारामस्वासिष्ठां निधि । १४. ख. छायाशुष्का । घ. छायाशुष्क । १५. घ. कृत्वा तु

तदनन्तरम् । १६. ख. भूमावपतितं । घ. भूमा(मो) तु पतित । १७. ख. पुनरेकां कराद्

ग्राह्यं । घ. पुनरेकाग्रताद्ग्राह्यं । १८. घ. जपसंयुक्तं ।

अक्षतर्पैरिन्धनैरेव ज्वाला 'कृत्वा सुबुद्धिमान्'¹ ।
 तस्या² मृदु भवेत्तावत्पचन सम्यगाचरेत् ॥७॥
 गोमयस्था³ हरिद्रा च क्षालयेद्धारिणा⁴ ततः ।
 छायाशुष्क च कर्त्तव्यं हरिद्रामणिमादरात् ॥८॥
 तेन कुर्यान्मालिका च अष्टोत्तरशत तथा ।
 पुण्यस्त्रीनिमित्त⁵ सूत्र⁶ 'मन्त्रैः सच्छेदयेत्'⁷ पुनः ॥९॥
 तन्मालिकां रवी 'वारेऽप्यमृतेनैव'⁸ मार्जयेत् ।
 अर्चयेन्मूलमन्त्रेण षोडशैरुपचारकैः ॥१०॥
 निवेदयेत् पायस च शर्कराज्यसमन्वितम् ।
 सहस्रं प्रजपेदादौ¹⁰ पञ्चाशद्वर्णमादरात् ॥११॥
 'एकाक्षरीमहामन्त्रैर्वंगलानाम्नि'¹¹ पावनैः ।
 अयुतं प्रजपेत् पुन मालिकासिद्धिमाप्नुयात् ॥१२॥
 एव च मालिका कुर्यान् मन्त्रसिद्धिमपेक्षता¹² ।
 हरिद्रावस्त्रमाच्छाद्य सिद्धार्थं जपमाचरेत् ॥१३॥
 हरिद्रामयपुष्प¹³ च हरिद्रामयचन्दनम्¹⁴ ।
 समर्पयेदलङ्कृत्य¹⁵ जप रात्री समाचरेत् ॥१४॥
 देवी भूत्वा जपेद्देवीमर्चयेद्विधिवद्यथा¹⁶ ।
 प्रसादान् मालिका भूमी पतिता चेत् कुमारक ॥१५॥
 पुनः पूजा प्रकर्त्तव्या पूर्ववज्जपमाचरेत् ।
 अथ वक्ष्ये प्रयोगाश्च मालिकालक्षण तथा ॥१६॥
 पञ्चविंशतिभिर्मोक्ष.¹⁷ 'सर्गं त्रिंशतिरेव च'¹⁸ ।
 वशीकरणसमोहे¹⁹ कलासख्या सुमालिका²⁰ ॥१७॥²¹

१. घ. कृत्वा प्रयत्नतः । २. घ. यावन्तु । ३. घ. गोमय । ४. घ. लक्षोयेद्वा० ।
 ५. घ. पुनः । ६. ख. पुण्यस्त्री० । घ. स्त्रीनिमित्ते । ७. घ. सूत्रे । ८. घ.
 एकैकं ध्रुमयेत् । ९. घ. रात्री मूलेनैव तु । १०. घ. च जपेच्चादौ । ११. घ. एकाक्षर-
 मंहामन्त्रैर्वंगलानाम्नि । १२. घ. अपेक्षिता । १३. घ. हरिद्रावर्णपुष्प । १४. घ.
 हरिद्रावर्णचन्दनम् । १५. घ. समर्प्य पूजनं कृत्वा । १६. घ. ०राया । १७. घ.
 मोक्षार्थी । १८. घ. वनार्थी त्रिंशदेव च । १९. घ. समोह । २०. क. पुस्तके
 अमशो नास्ति । २१. अतः पर निम्नांशो विशेषः घ. घ. पुस्तकद्वये—

'विंशद्विंशः स्तम्भनं विद्याद् विनाये पञ्चमालिका' ।

द्विपञ्चसप्तविंशद्भिः^१ रुच्चाटे चाकंसंख्यया ।
 ज्वरे^२ रोगादिपीडायां पच चैव चतुर्दश ॥१८॥
 पञ्चाशच्छान्तिकर्मस्थे^३ बुद्धि च चतुरस्रे ।
 पञ्चदशाभिचारे^४ च मालिकाक्रममी^५(ई)दशः^६ ॥१९॥
 भृगुवारे च सगृह्य^७ द्रव्याण्येतानि पुत्रक ।
 'हरिद्रापङ्कज वस्तु कर्पूर मृगनाभि च'^८ ॥२०॥
 श्रीखण्डरोचनागरु-कैसर^९ च समं समम् ।
 मद्भयेन्मु^{१०}(दु)पति प्रज्ञ^{११} खल्वेनैव कुमारक ॥२१॥
 तेन कुर्यात् पुत्तली च चतुरङ्गलमानतः ।
 सर्वाङ्गसुन्दरी^{१२} देवी द्विभुजा वगलामुखीम् ॥२२॥
 चित्रपीताम्बरधरा^{१३} पीनोन्नतपयोधराम् ।
 पीतवर्णा मदाघूर्णामद्वैतचन्द्रा च पुत्तलीम् ॥२३॥
 प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु सस्नाप्य^{१४} विधिनाभ्रकम् ।
 मस्रण्डतण्डुलेनैव हरिद्राक्षतमेव च ॥२४॥
 कृत्वा एकाक्षरोमन्त्रैरक्षतान्^{१५} मूर्द्धनि निक्षिपेत् ।
 नित्यं चायुतपूजा च कुर्याच्चैव च पुत्रक ॥२५॥
 देवी सम्पूजयेत्सम्यक् जपं कुर्यात् सुबुद्धिमान्^{१६} ।
 एव कृत्वा तत्त्वलक्ष देवी प्रत्यक्षतामियात्^{१७} ॥२६॥
 यत् परस्मै^{१८} न वक्तव्यं न वक्तव्यं कदाचन ।
 एव पूजाविधिं कृत्वा पुरा 'दुर्वाससेन च'^{१९} ॥२७॥
 तत्त्वलक्षप्रमाणेन प्राप्त 'ग्रन्थोदित फलम्'^{२०} ।

इति षड्विंशतमोऽध्यायः सांख्यायनतन्त्रे चतुर्विंशतिः^{२१} पठतः ॥२४॥

१. क. पुस्तके 'द्विपञ्च' होनः 'सप्तविंशद्भिः' सप्त एव दृश्यते । प. विद्वेषे सप्त-
 विंशद्भिः । २. प. ज्वर । ३. प. कर्मवृत्ति । ४. प. पञ्चदशानि । ५. प.
 मोदुषम् । ६. प. सप्त । ७. ख. प. पुस्तके निम्नोऽत्र पाठो विशेष—

हरिद्रापङ्कज वस्तु^१ चन्दनं कुमुदम् च ।

कस्तूरी चैव कर्पूरं 'कर्पूरं' मृगनाभि च^२ ॥

८. प. गोरोचनमुषोर प केसर । ९. ख. अनुपति प्रज्ञ । प. मद्भये-मदिरामुषत । १०. प.
 सुधा च सुन्दरी । ११. प. वगला वज्रधरा चैव । १२. प. सस्नाप्य । १३. प. एकाक्षरमेव ।
 १४. प. पादद्वय नास्ति । १५. प. प्रत्यक्षमाप्नुयात् । १६. प. यस्मै कस्मै । १७. प.
 दुर्वासमोनिराट् । १८. प. प्रयोक्तृ फलमाप्नुयात् । १९. प. माताप्रकरणं नाम चतुर्विंशति ।

१. प. रत्न । २. प. श्रीखण्ड पागरु तथा ।

॥ अथ पञ्चविंशः पटलः ॥

ममामि वगला देवी शत्रुवाक्स्तम्भरूपिणीम् ।
भजेऽहं विधिपूर्वं च जय देहि रिपून् दह ॥१॥

इति उवाच—

नमः कलाशनायाय^१ नमस्ते भुनिसेवित^२ ।
चतुरक्षरीमहामन्त्र वगलायाश्च मे वद ॥२॥

ईश्वर उवाच—

सप्तकोटिमहामन्त्रै^३ मन्त्रराजमिमं^४ शृणु ।
पट्प्रयोगैः स्तभन च सर्वकर्मोत्तमोत्तमम् ॥३॥

यदा शत्रुभयोत्पन्न^५ तदानीमेव पुत्रक ।
अमुत च जपेन्मन्त्र वगलाचतुरक्षरम्^६ ॥४॥
मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि न्यासध्यानादिकं तथा ।
प्रयोगं चोपसंहारं वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥५॥
वेदादि विलिखेत् पूर्वं पाशबीजं ततः परम् ।
स्तब्धमायां ततोच्चार्यं अकुशं बीजमेव च ॥६॥
चतुरक्षरीं च वगलां सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमाम् ।
न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥७॥

पाशाङ्कुशान्तरितशक्तिरमा च तद्व-

तद्वन्मन्त्रसेवितबीजमयो वराहम् ।

वागोद्वरीं च वगलाख्यसुबीजराजं,

वन्मन्त्रस्यतां करयुगे हृदयादिकेषु ॥८॥

चतुर्वर्णात्मिके^७ मन्त्रे^८ मातृकाबीजपूर्वकम् ।
प्रायेकं च न्यसेत् पुत्र मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात् ॥९॥
अथवा वगलामन्त्रं सर्वैरङ्गुलिभिरन्यसेत्^९ ।
ततो जपेन्मन्त्रराजं वगलाचतुरक्षरम्^{१०} ॥१०॥
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दो न गायत्री समुदाहृतम् ।
देवता वगलानाम्नी ध्यानं वक्ष्ये कुमारक ॥११॥

१. प. श्रीञ्चभेदन । २. प. कलाशनायाय । ३. प. भुनिसेवित । ४. प. चतुरक्षरीमहामन्त्र । ५. प. ०मिद । ६. प. ०मय प्राप्त । ७. प. वगला चतुरक्षरी । ८. प. चतुर्वर्णात्मिक । ९. प. मन्त्र । १०. प. अङ्गुलीषु न्यसेत्तया । ११. प. ०चतुरक्षरीम् ।

कुटिलालकसंयुक्ता^१ मदाघूणितलोचनाम् ।
मदिरामोदवदना प्रवालसदृशाघराम्^२ ॥१२॥

सुवर्णशंसुप्रख्यकठिनस्तनमण्डलाम्^३ ।
दक्षिणावर्त्तसन्नाभिसूक्ष्ममध्यमसयुताम् ॥१३॥

रम्भोरुपादपद्मा तर्षा पीतवस्त्रसमावृताम् ।
एव ध्यात्वा महादेवी कुर्याज्जपमतन्द्रितः ॥१४॥

वेदलक्ष जपं कुर्यात् पर्वताग्रे कुमारक ।
'भिक्षाशिनः फलाशीनो'^४ मीनो भूत्वा समाहितः ॥१५॥

तर्पणं च दिवा कुर्याद् रात्रौ वा प्रजपेन्मनुम् ।
एव कुर्यात् पुरश्चर्यां देवी प्रत्यक्षमाप्नुयात् ॥१६॥

रात्रौ होमं च कर्त्तव्यं दिवा ब्राह्मणभोजनम् ।
हरिद्रावस्त्रसंयुक्तं हरिद्रावर्णचन्दनम् ॥१७॥

'हरिद्रा चाक्षमाला च'^५ द्वावर्णदेवताम् ।
स्मरेच्च जपकाले तु सर्वसिद्धिकरं नृणाम् ॥१८॥

मधूकपुष्पसमिश्रमवितेन जलेन वा ।
तर्पणं तद्दशांशं च देवतामूर्द्धनि निक्षिपेत् ॥१९॥

भ्राज्येन मिश्रितं चैव सर्करापायसं हुनेत् ।
पूर्णाहुत्यन्तमनघ^६ ब्राह्मणान् भोजयेत् ततः ॥ २०॥

योगिनीं पूजयेत् पश्चाद् द्रव्यशुद्धिसमन्वितः ।
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा ॥२१॥

प्रादी भास्वररूपिणी^७ कुरु तदा सद्दशजा^८ योगिनी,
नानालक्षणसयुता कुचमरा प्रोढा नवोढा सदा ।
स्ता (स्ता)ताम्यजनभूषणेश्च सहिता सच्चन्दनं^९ लेपिता,
पूजागारमुपानयेद्ब्रह्मसि सा^{१०} द्रव्येश्च शुद्धया रह^{११} ॥२॥

१. घ. कठिनोलकसंयुक्ता । २. घ. ०पराम् । ३. घ. सुवर्णकलशः । ४. घ. भिक्षाशी च फलाशी च । ५. घ. हरिद्रायां क्षमा माला । ६. ख. मनघ । घ. मनना । ७. ख. भास्करः । घ. भापरः । ८. घ. सञ्जातिवो । ९. ख. सच्चन्दनं । १०. ख. ता । घ. सद् । ११. ख. घ. सह ।

लौकिके^१ चैव गुप्ताय सोमाभ्यार्चा कुमारक^२
 'मन्त्रसिद्धिकरं वक्ष्ये गोपनं कुरु सर्वदा'^३ ॥२३॥
 अङ्गत्रयेण संयुक्तं लौकिकार्चनमेव च ।
 चतुरंगुलसंयुक्ता^४ गुप्तपूजा कुमारक ॥२४॥^५
 सोमाभ्यार्चाविधिश्चैव^६ पञ्चाङ्गोपासनं भुवि ।
 योपिद्भुक्तिद्वययुक्तं^७ लौकिकार्चनमेव च ॥२५॥^८
 योपिच्छुद्धिद्वयपूजा पञ्चमोयुतमादरात् ।
 एतत्सोमाभ्यपूजा च मुनिगुह्यमुपासनम्^९ ॥२६॥
 बिन्दुपात्रयुता पूजा निगुणा योगिनां मतम्^{१०} ।
 एतच्चतुर्विधा धर्मा^{११} देशनामार्चनाविधिः^{१२} ॥२७॥
 वक्ष्येऽहं^{१३} विधिवत्पुत्र न देयं यस्य कस्यचित् ।
 सृष्टिः स्थितिश्च संहारं जीवन्मुक्तिपदं^{१४} तथा ॥२८॥
 एतद्वर्गाविधिर्नामसकेत मुनिभिः^{१५} सह ।
 सृष्टिश्च गौडदेशेषु^{१६} स्थितिः केरलदेशके ॥२९॥
 संहारार्चा कामरूपे 'कुरुपाञ्चालयोः परम्'^{१७} ।
 पीठोपरि समावेश्य गर्भकोलागमक्रमात्^{१८} ॥३०॥
 अर्चनं^{१९} गौडदेशीयं^{२०} सृष्टिपूजाक्रमस्त्वयम् ।
 पूर्वोक्तलक्षणोपेतां मूढुपर्यङ्कके^{२१} तथा ॥३१॥
 शयनीकृत्य कन्या^{२२} च स्थित्यर्चक्रममादरात्^{२३} ।
 केरले तु स्थितिश्चैव सिद्धयसिद्धिकरो^{२४} तथा ॥३२॥
 कौलसारं च तन्नाम सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमम् ।
 पूर्वोक्तलक्षणोपेतास्तिष्ठन्ति कन्यका भुवि ॥३३॥

१. च. लौकिकी । २. अतः परं निम्नाशोऽयं य. पुस्तक एव दृश्यते—

एव त्रिविधपूजां च मुनिगुह्यं सुपावनं ।

एकैकस्य च पूजाया नक्षत्रं कथ्यते सुत ॥

३. पादमुग य. पुस्तके नास्ति । ४. य. चतुरङ्गसमायुक्ता । ५. एलोकोऽयं ग. पुस्तके नास्ति । ६. ख. य. विधि चैव । ७. य. योपित्तुद्धि । ८. अतः परं निम्नाशो य. पुस्तक एवाऽवसोवयते—

योपिच्छुद्धिद्वयपूजा सुगुप्तार्चनमादरात् ।

९. य. मुनिगुप्त सुपावनम् । १०. य. मता । ११. य. चाचर्चा । १२. य. नामार्चनं । १३. य. हे । १४. य. ऽमुवर्त पद । १५. य. योगिभिः । १६. य. देशे तु । १७. य. कौलिकारवो (र्चा, चार) तत्पराम् । १८. य. गर्भकोलागमः । १९. क. अर्चनं । य. अर्चना । २०. य. गौडदेशीय । २१. क. मृदुः । २२. ग. य. शयनीकृतकन्या । २३. य. स्थित्यर्चमर्क्यः । २४. ख. य. सद्यः सिद्धिकरो ।

कामरूपाख्यदेशे तु संहाराह्वयपूजनम् ।
 पूर्वोक्तलक्षणोपेता कृत्वाभ्यञ्जनमादरात् ॥३४॥
 बिन्दुपात्रं^१ गृहीत्वा तु कृत्वा भुक्त्यर्चनं^२ भुवि ।
 कुरुपाञ्चालदेशीयमनिशं^३ पूजनं तथा ॥३५॥
 कोलसारपरं^४ नाम चागमं भुवि^५ दुर्लभम् ।
 सम्यक् पूजाविधिश्चैव उपसहृतमानसः^६ ॥३६॥
 पञ्चमी चैव कर्त्तव्या सौख्याय तस्य पुत्रक ।
 'पानं चैव समासेन'^७ जपध्यानसमन्वितः ॥३७॥
 देवो भूत्वा स्वयं पुत्र पञ्चमी च समाचरेत् ।
 सहाराचनयोरेवमुपसंहृत्य^८ पूजनम् ॥३८॥
 सम्पूजयेत्^९ पञ्चमी चैव सौरयार्थं तस्य साधकः ।
 प्रादौ मध्ये तथा चागते बिन्दुपात्रार्थमेव^{१०} च ॥३९॥
 अर्चयेत् पञ्चमी कुर्याद् ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ।
 कुरुपाञ्चालदेशेऽप्य^{११} निर्गुणाच्चाविधिस्तथा ॥४०॥
 एतदच्चाविधिश्चैव दुर्लभो^{१२} विधिशङ्करैः^{१३} ।
 गोडदेशाचनं पुंसां शान्तिपुष्टिकरं^{१४} सदा ॥४१॥
 एवमेव विधिः पुत्र सर्वैश्वर्यप्रदायकः ।
 कामरूपाचनं पुंसां मारणविप्रयोगदा^{१५} ॥४२॥
 कुरुपाञ्चालदेशाच्चा सर्वसिद्धिप्रदा सदा ।^{१६}
 एतदच्चाविधि चैव यः कराति सुबुद्धिमान् ॥४३॥
 जीवन्मुक्तः स एवान्न स सिद्धो नान्न संशयः ।
 नारीनिन्दा न कर्त्तव्या स्वपादस्तां न^{१७} सस्पृशेत्^{१८} ॥४४॥
 नारी दृष्ट्वा मानसेन वन्दनं च समाचरेत् ।
 स्वप्रियामर्चयेत् पुनः प्रिया पञ्चमिका चरेत् ॥४५॥^{१९}

१. प. बिन्दुपात्र । २. गुप्ताचन । ३. य. ०देशे तु अनिश । ४. प. ०सारपर ।
 ५. प. भुवि । ६. स. उपसहृत० । य. उपसपेद्वत्साधकः । ७. य. ग्यायं न्यस्त्वोमयोदेशे ।
 ८. य. सहाराचनयोग च उप० । ९. पूजयेत् । १०. य. बिन्दुपात्रार्थ० । ११. प.
 सु । १२. य. दुर्लभम् । १३. य. भुवि पन्मुख । १४. य. पुष्टिकरि तथा । १५.
 ख. मारणादिप्रयोगदम् । य. मारणादिप्रयोगदृत् । १६. पदम् य. पुस्तके नास्ति ।
 १७. य. स्वपादो वा च । १८. य. स्पृशेत् । १९. इत्युक्तोय नास्ति य. पुस्तके ।

स्वप्रियाविन्दुपात्र^१ च गृहीत्वा साधकोत्तम^२ ।

असह्यनाचनं कृत्वा विन्दुपात्रं तथैव च ॥४६॥

उन्मादो च भवेत् पुत्र मृतं श्वानो भविष्यति ।

॥ इति षड्विंशोऽध्यायः साहस्यपनतन्त्र षष्ठविंशति^३ पटल ॥ २५॥

॥ अथ षड्विंश पटलः ॥

जातवेदमये^४ देवि^५ जगज्जननकारिणि^६ ।

जय पीताम्बरधरे^७ 'बगलार्थं नमो नमः'^८ ॥१॥

स्कन्दि^९ उवाच—

नमस्ते सिद्धससेव्यं सिद्धविद्याधराक्षित ।

बगलाचतुरक्षर्या प्रयोगं वद शङ्कर ॥२॥

शिव^{१०} उवाच—

'प्रयोगं तर्पणं चैव'^{११} वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ।

तर्पणं देवतावासं तर्पणं यत्रसिद्धिदम्^{१२} ॥३॥

तर्पणं मन्त्रसंस्कारं सर्वं तत्तपणादं भवेत्

तपणं द्रव्ययोगं च ततः^{१३} सिद्धिर्न संशयः ॥४॥

भूर्ध्वं कलशे चैव काशमण्डलवर्जितम्^{१४} ।

गृहीत्वा क्षालयेत् सम्यक् पूजयन्मूलमन्त्रतः^{१५} ॥५॥

तज्जलं च समानीय पूजयेत् सुसमाहित ।

आपो वा इति मन्त्रेण मन्त्रयेत्तज्जलं पुनः ॥६॥

उपचारं षोडशभिः पूजयेत् कुम्भमादरात् ।

तत्पवित्रं समुक्तं तर्पणस्यायुतेन च ॥७॥

तेनोक्तविधिना सम्यक् पूजनं तदुदाहृतम् ।

काकोलूकच्छदेनैव^{१६} पवित्रं ग्रन्थिमादरात् ॥८॥

तत्पवित्रं समुक्तं तपणस्यायुतेन^{१७} च ।

नेत्ररोमो भवेच्छत्रुर्दिवा-घो जायते द्रुवम् ॥९॥

१. घ स्वप्रिया० । २. ख साधकोत्तमं । ३. घ. पूजाप्रकरणं नाम० । ४. १. ६ ७ घ पुस्तके द्वितीया त पाठ । ५ घ. बगलाम्बो नमाम्यहम् । ॥ श्रीचमदन १० घ ईश्वर । ११ घ तपणाख्य प्रयोग च । १२ घ. भवसिद्धिद । १३ घ तत्त्व । १४ घ काशमण्डल० । १५ घ मूलविजया । १६ घ. काकोलूकच्छदाम्बो च । १७ घ तपणनायुतेन च ।

काकपत्रेण सयुक्तं^१ पवित्रग्रन्थिमादरात् ।
 तेनैव सह सन्तप्यं ग्रन्थुत साधकोत्तमः ॥१०॥
 काकवद् भ्रमते क्षत्रुमंहोमामरणान्तिकम्^२ ।
 काकोलूकस्य पक्षाभ्यामेकोकृत्वा^३ सूबुद्धिमान् ॥११॥
 कृत्वा पवित्रग्रन्थि च तेन सन्तप्यं चादरात्^४ ।
 ग्रन्थुत वगलामन्त्रैः क्षत्रुविद्वेषणं भवेत् ॥१२॥
 विड्वराहमजारोमः^५ पवित्रग्रन्थिमादरात् ।
 तर्पयेद्युत तेन^६ वगलाक्षतुरक्षरैः ॥१३॥
 अन्नद्वेषो^७ जायते च स क्षत्रुवशिष्यते ।
 केश च कलशस्थ च पवित्रग्रन्थिमादरात्^८ ॥१४॥
 ग्रन्थुत तर्पणेनैव 'स क्षत्रोर्नाशन'^९ भवेत् ।
 उष्ट्रोमेण कृत्वा तु पवित्रग्रन्थिरेव च ॥१५॥
 तेनायुत तर्पणेन भूको भवति पण्डितः ।
 पूर्ववद्वाजिरोमेण तर्पणं च कुमारक ॥१६॥
 हिव्वारोगो भवेत्तस्य^{१०} क्षीघ्र^{११} भ्रान्तो भविष्यति ।
 क्षरवतेन समिधमर्चित जलतर्पणात्^{१२} ॥१७॥
 जिह्वास्तभो भवत्येव वाणीपतिसमोऽपि वा ।
 श्वानरवतेन समिधमर्चित शुभवारिणा ॥१८॥^{१३}
 ग्रन्थुत^{१४} तर्पणात्पुत्र^{१५} उन्मादी जायते रिपुः ।
 काकरवतेन समिधमर्चित शुद्धवारिणा ॥१९॥
 ग्रन्थुत तर्पणात्पुत्र काकवद् भ्रमते महीम् ।
 उलूकरक्षसमिधमर्चित शुभवारिणा ॥२०॥
 रिपुस्त्वो भवेत् पुत्र ग्रन्थुताञ्च न सशयः ।
 मार्जारबालरवतेन मिश्रिताञ्जलतर्पणात्^{१६} ॥२१॥

१. घ. कृत्वा तु । २. घ. ०मातर्पणान्तिकम् । ३. घ. एकोकृत्य तु । ४. घ.
 बुद्धिमान् । ५. घ. गृध्रवाराहजैलोमः । ६. घ. चैव । ७. घ. घ-मद्वेषो । घ.
 अन्नद्वेषो । ८. घ. ०माचरेत् । ९. घ. स्वद्यवत्या० । १०. घ. भवेच्छीघ्र । ११.
 घ. रिपुर् । १२. घ. शुद्धवारिणा । १३. घ. पुस्तकेऽत्र दलोको नास्ति । १४. घ.
 ग्रन्थुतात् । १५. घ. तर्पयेत् पुत्र । १६. घ. मिश्रित जलतर्पणम् ।

भ्रान्तचित्तो भवेच्छत्रुरयुताच्च न सशयः ।
 विड्वराहस्य^१ रक्तेन मिश्रितजलतर्पणम् ॥२२॥
 उन्मादो च भवेच्छत्रुरयुतादेव^२ पुत्रक ।
 तुलायरक्तसम्मिश्रजलेनैव तु तर्पणम् ॥२३॥
 'अयुतादरिगर्वं तु'^३ मूकत्वं कुरुते नृणाम् ।
 भुजङ्गरक्तसमिश्रजलेनैव तु तर्पणम्^४ ॥२४॥
 क्षत्रूणां मारणं पुत्र अयुताच्च न सशयः ।
 छागरक्तेन समिश्रमचितेन जलेन च ॥२५॥
 तर्पणेनायुतेनैव घणरोगी भवेद्विपुः ।
 दाहाकस्य तु रक्तेन 'मिश्रितेन जलेन च'^५ ॥२६॥
 क्षयरोगो 'भवेन्मर्त्योऽप्ययुताच्च'^६ न सशयः ।
 मत्कुणस्य च 'रक्तेन मिश्रितेन जलेन च'^७ ॥२७॥
 'अयुतात्तस्य क्षत्राश्च भवेन्मरणमुत्तमम् ।
 मेघस्य पुच्छरक्तेन 'मिश्रितेन जलेन च'^८ ॥२८॥
 अयुताज्ज्वररोगी^९ च जायते तत्क्षणाद्विपुः ।
 द्रव्येणैव च समिश्रमचितं जलतर्पणम्^{१०} ॥२९॥
 अयुताच्चिन्तितं कार्यं भवत्येव न सशयः ।
 एतत्तर्पणयोगं च सिद्धात् सिद्धतरं सुत ॥३०॥
 न वक्तव्यं न वक्तव्यं न वक्तव्यं कदाचन ॥

इति षड्विंशायमे साध्यायनतन्त्रे षट्विंशः^{११} पटलः ॥२६॥

॥ अथ सप्तविंशः पटलः ॥

नानालङ्कारधोभाढ्या नरनारायणप्रियाम् ।
 वन्देऽहं बगला देवीं परब्रह्माधिदेवताम् ॥१॥

स्कन्द^{१२} उवाच—

वन्दे पाशुपताध्यक्ष परमानन्दविग्रह ।

वद होमप्रयोगं च बगलाचतुरक्षरः ॥२॥

१. घ. विड्वराहेण । २. घ. अयुताच्चैव । ३. घ. अयुदक्षिणा पञ्च । ४. घ. तर्पणात् । ५. घ. मिश्रित जलतर्पणम् । ६. घ. भवेच्छत्रुरयुतात् । ७. घ. मिश्रित जलतर्पणम् । ८. घ. मिश्रित जलतर्पणम् । ९. घ. अयुताच्चमरोगी । १०. घ. पुस्तके पाठोऽयं विशेषः—
 नररक्तेन समिश्रमचितं जलतर्पणम् ।
 ११. घ. चतुरक्षरीतर्पणं प्रयोगं नाम षड्विंशति । १२. घ. कौञ्चभेदेन ।

शिव उवाच^१—

वक्ष्ये होमविधिं सम्यक् सावधानेन श्रूयताम् ।
 अयुत पुत्र होम^२ च पिचुमदफलं हुनेत् ॥६॥
 अयुताच्छत्रुसंहारो भ्रान्तभीतो^३ भवेद् ध्रुवम् ।
 'करवीराणि रक्तानि'^४ अयुत चाज्यसयुतम् ॥७॥
 हुनेत् त्रिकोणकुण्डे तु अयुताद्^५ रिपुमारणम् ।
 विपतिन्दुकबीजं च सीवीरद्रवसयुतम् ॥८॥
 ग्राममध्ये हुनेन् मन्त्रो भगाकारे च कुण्डके ।
 तद्ग्रामे वेदशास्त्राणि सर्वं विस्मृतिमाप्नुयात् ॥९॥
 दोषभाषापतिप्रस्थः^६ 'स एव जडतामियात्'^७ ।
 वटमूलं समाश्रित्य कृत्वा कुण्डं त्रिकोणकम् ॥१०॥
 तत्फलेन हुनेद् रात्रौ अयुतं चाज्यमिश्रितं ।
 भाषापतिसमो विद्रास्तत्क्षणाद् भ्रान्तिमाप्नुयात् ॥११॥
 अश्वत्थमूलमाश्रित्य पट्कोणाकृतिकुण्डके ।
 तत्फलं च हुनेद् रात्रौ^८ अयुतं चाज्यमिश्रितम् ॥१२॥
 स्फोटकव्रणसमायुक्तो 'म्रियते यमदासनात्'^९ ।
 उदुम्बरस्य^{१०} मूले तु पट्कोणाकृतिकुण्डके ॥१३॥
 क्षीमलं तत्फलं सम्यगयुतं चाज्यमिश्रितम् ।
 जुहुयाद्रजकस्याग्नी जुहुयादक्षिणामुखं^{११} ॥१४॥
 ग्रामं वा नगरं वाथ रणे राजकुलं 'तु वा'^{१२} ।
 नाडीव्रणसमायुक्तो नानादुःखेन पुत्रक ॥१५॥
 म्रियते 'न च'^{१३} सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ।
 राजवृक्षं समाश्रित्य तन्मूले च कुमारक ॥१६॥

१. घ. ईश्वर । २. घ. होमाच् । ३. घ. भ्रान्तचित्तो । ४. घ. हयारिरक्त-
 कुसुमः । ५. घ. तत्क्षणाद् । ६. ख घ. पुस्तकद्वये विशेषोऽयं पाठ —

अयुतं जुहुयात्-मन्त्रो तत्क्षणाद्रिपुमारणम् ।

पलाशबीजमयुतं तिलतलेन समुतम् ॥

७ घ. प्रस्था । ८. घ. सर्वं विस्मृतिमाप्नुयात् । ९ घ. पुत्र । १० घ. मारक
 भवति ध्रुवम् । ११. घ. उदुम्बरस्य । १२ घ. नग्नो दक्षिणदिग्मुख । १३ घ.
 तथा । १४ घ. नात्र ।

हस्तमात्रं भगाकारं कुण्डं कुर्याद् विचक्षणः ।
 तत्फलं निम्बतैलेन मिश्रितं त्रिंशं बुद्धिमान् ॥१४॥
 नेत्रायुतं हुनेद् धीमान् श्यामं वा नगरं तथा ।
 स्फोटकग्रणसंयुक्तो हस्तपादादिभ्रमन्तः ॥१५॥
 पर्यापान् भ्रियते चैव^१ नात्र कार्या विचारणा ।
 सयंपं लवणं चैव तिलतैलेन मिश्रितम् ॥१६॥
 अयुतं जुहुयाद्भ्रमन्त्री ज्वररोगी भवेद्विपुः ।
 पिचुमदस्य^२ तैलेन मिश्रितं लवणं तथा ॥१७॥
 हुनेच्च^३ पूर्ववत् कुण्डे अयुतं प्रेतपावके ।
 कुष्ठरोगी भवेच्छत्रुभ्रियते तेन निश्चितम् ॥१८॥
 शमीमूले हुनेत्पुत्रं शृणु वक्ष्यामि तत्फलम्^४ ।
 तिलतैलेन समिश्रं^५ तत्फलं त्रिंशं पुत्रक ॥१९॥
 जुहुयात्तत्क्षणात् पुत्रं शृणु वक्ष्यामि^६ तत्फलम् ।
 वातरोगी भवेच्छत्रुभ्रियते नात्र सशयः ॥२०॥
 अपामार्गस्य बीजं तु तिलतैलेन मिश्रितम् ।
 शमीमूले हुनेत्पुत्रं अयुतं ध्यानपूर्वकम् ॥२१॥
 तत्रस्थाः शत्रुभार्याश्च तद्गृहे तत्र शोषितः ।
 बन्ध्याः स्त्रियो भवेयुश्च सत्यमेव^७ शिवोदितम् ॥२२॥
 शमीमूलं समाश्रित्य शलाटुं^८ च समासतः^९ ।
 तिलतैलेन समिश्रं जुहुयादयुतं तथा ॥२३॥
 प्रेताग्नी रजकाग्नी वा पूर्वोक्ते चैव कुण्डके ।
 वैरिस्त्रीणां भवेत् सद्यः^{१०} खवद्रक्त^{११} निरुत्तरम्^{१२} ॥२४॥
 तिलतैलेन समिश्रं शलाटुं^{१३} शास्त्रमालोभवम्^{१४} ।
 पूर्ववच्च हुनेत् पुत्रं मेहरोगी^{१५} भवेद्विपुः ॥२५॥

१. घ. शत्रुः । २. घ. पिचुमदेन । ३. घ. हुनेत् । ४. घ. ग. घ. भगाकारे
 तु कुण्डके । ५. घ. सम्यक्तं । ६. घ. वक्ष्यामि शृणु । ७. घ. सत्यमेतत् । ८. घ.
 शलाटुं सत्यं च मासतः । ९. घ. सद्यो । १०. घ. वा यद्रक्तं । ११. घ. सुनिश्चितम् ।
 १२. घ. धौल्य । १३. घ. भवेत् । १४. घ. महद्विपुः ।

एव होमप्रयोग च रात्रौ कुर्यात् कुमारक ।

‘प्रयोग चोपसहार सत्पुत्रायापि नो वदेत्’ ॥२६॥^१

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे सप्तविंशति २ पटल ॥२७॥

॥ अथाष्टाविंशतिः पटल ॥

बालभानुप्रतीकाशा^१ नीलकोमलकुन्तलाम्^२ ।

वन्देऽहं वगला देवी स्तम्भनास्त्रस्वरूपिणीम् ॥१॥

स्कन्द उवाच—^३

विश्वनाथ नमस्तेऽस्तु विरूपाक्ष नमो नमः ।

सुगम^४ स्तम्भविद्याया प्रयोग वद शङ्कर ॥२॥

शिव^५ उवाच—

वगलाहृदय मत्र गुणगुप्ततर^६ तथा ।

एतच्छ्रवणमात्रेण मत्रसिद्धिमवाप्नुयात् ॥३॥

न ध्यान न च होम च न जप न चतर्पणम् ।

सकृदुच्चारणान् मन्त्राच्चिन्तित^७ भवति ध्रुवम् ॥४॥

न चाभिषेक न च मन्त्रदोषा,

न चात्र^८ दिक्काल ऋतुश्च^९ देवता^{१०} ।

न चापि पञ्चेन्द्रियनिग्रह च,

सकृत् स्मरन्वै वगलाख्यहंमनुम्^{११} ॥५॥

वगलाहृदय मत्र ब्रह्मादीना च दुर्लभम् ।

सकृत् स्मरणमात्रेण वाञ्छित फलमाप्नुयात् ॥६॥^{१२}

१. य पुस्तकेऽयमसौ विशेष—प्रयोगादी प्रयोगान्ते पूजा कुर्यात् प्रयत्नत ।

२ य पुस्तके एतौकोऽय विद्याषो लभ्यते—

एव य कुरुते पुत्र प्रयोग सिद्धिमाप्नुयात् ।

पूजा विना कृत कर्म प्रयोग निष्फल भवेत् ॥२७॥

३ य चतुरसरीहोमकथन नाम सप्तविंशति । ४ य. बालभावः । ५ य. कुण्डलाम् ।

६ य. क्रीञ्चमदन । ७ य. सुभग । ८ य. ईश्वर । ९ य. गुप्तातः ।

१० य. तस्मिन् चिन्तित । ११ य. न चापि । १२ य. दिक्कालक्रमश्च । य. दिव्या-
लक्ष । १३ य. देवताश्च । १४ य. हंमनुम् । १५ पद्यादभेद स ग. पुस्त

कद्रव्यधिक दृश्यते—

सचारयान् भवेत् पञ्च वादी मूकस्वमाप्नुयात् ।

दरिद्रोऽपि भवेच्छ्रीमान् स्तब्धीभवति^१ पण्डितः ।
चतुरो मुष्करश्चैव^२ कीर्त्तिमान् निन्दको भवेत् ॥७॥
कवीश्वरोऽपि चोन्मादी^३ भोयासक्तोऽपि रोगवान् ।
रोगवान्^४ क्षयरोगी स्यात्^५ कुलजो^६ निन्दको भवेत् ॥८॥
मानो लघुतरश्चैव^७ नैष्ठिको भ्रष्टता व्रजेत् ।
एतद्विना कसौ पुत्र सुकृतकीर्त्तिकारणम्^८ ॥९॥
गुणश्च वसन्ते पुंसां तस्योत्पन्नकारणम्^९ ।
वगलाहृदय मत्र^{१०} सकृदावर्त्तयेत्तु यः ॥१०॥
तस्योत्पन्नमात्रेण नष्टः स्यात्पण्यजोऽपि वा ।
वगलाहृदय मत्रमुपासनपरस्य च ॥११॥
करोति यस्य^{११} सन्तोष तस्य सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।
येन केनाप्युपायेन ह्यमत्र येन^{१२} जायते ॥१२॥
सन्तोष जनयेत् तस्य^{१३} चिन्तित फलमाप्नुयात् ।
तन्मन्त्रोद्धारमतुल तत्त्वतः स्वविधानतः^{१४} ॥१३॥
वक्ष्येह तव सर्वञ्च^{१५} क्रीञ्चभेदेन तच्छृणु ।
पाशबीज ततोच्चार्यं^{१६} स्तब्धमाया ततोच्चरेत्^{१७} ॥१४॥
मकुश बीजमुच्चार्यं भूव(वा)राह तयोच्चरेत् ।
वाराहं वाग्भव चैव कामराज तत परम् ॥१५॥
श्रीबीज भुवनेशी च 'वगलामुखिपद वदेत्'^{१८} ।
मावेशमद्वय चोक्त्वा पाशबीजमतोच्चरेत् ॥१६॥
स्तब्धमाया ततोच्चार्यं^{१९} मङ्कुश बीजमुच्चरेत् ।
ब्रह्मास्त्ररूपिणी चोक्त्वा एहियुगं ततोच्चरेत् ॥१७॥
पाशबीजमतोच्चार्यं^{२०} स्तब्धमाया ततोच्चरेत् ।
मङ्कुश बीजमुच्चार्यं मम शब्द ततोच्चरेत् ॥१८॥

१. क. स्तली० । ख घ. स्तब्धी भवति । २. घ. मुष्कर० । ३. घ. उन्मादी ।
४. ग. रोगवान् । घ. सत्ववान् । ५. घ. च । ६. घ. कुलवान् । ७. घ. लज्जा-
विहीनस्तु । ८. ख घ. सुकृत कीर्त्ति० । ९. ख. य. तस्योत्पन्न० । घ. तस्य नाशन०
१०. घ. तस्य । ११. घ. यस्य । १२. घ. सवः । १३. घ. तदाराधनलक्षणम् ।
१४. घ. सर्वत्र । १५. घ. समुच्चार्यं । १६. घ. समुच्चरेत् । १७. घ. वगलामुखि
उच्चरेत् । १८. घ. समुच्चार्यं । १९. घ. पाशबीज समुच्चार्यं ।

हृदये 'तु समुच्चार्य'¹ आवाहययुग वदेत् ।
 सान्निध्य कुरुयुग्म च पुनर्वीजत्रय वदेत् ॥१६॥
 ममेव हृदयेत्युक्त्वा चिर तिष्ठद्वय वदेत् ।²
 'पुनर्वीजत्रय चोक्तत्वा'³ ह्र फट् स्वाहासमन्वितः ॥२०॥
 अशीतिवर्णसमुक्तो⁴ 'वगलाहृदय मनुः'⁵ ।⁶
 वन्ध्यामुन्मार्जयेदङ्ग⁷ वगलाहृदयेन च ॥२१॥
 वन्ध्या पुत्रवती चैव पण्मासाद् भवति ध्रुवम् ।
 वगलाहृदयेनैव त्रिसप्तमभिमान्त्रितम् ॥२२॥
 'पयः पिबति वा सा स्त्री'⁸ वन्ध्या'⁹ पुत्रवती भवेत् ।
 कृत्रिमेपु च रोगेषु नानाभयसमुद्भवे'¹⁰ ॥२३॥
 त्रिसप्तमन्त्रित तोय सद्यो नैर्मल्यमातनोत् ।
 नित्यमष्टोत्तरशत'¹¹ वगलाहृदय मनुम् ॥२४॥
 चिन्तित च भवेत् पुत्र नात्र कार्या विचारणा ।
 इति षड्विध्याग्ने साव्यायनतन्त्रेऽष्टाविंशति ¹² पटल ॥२८॥

॥ अथोर्नात्रिशः पटलः ॥

नमस्ते देवदेवेति नमः स्वर्णविभूषणे ।
 पानपात्रयुते देवि वगले त्वा नतोऽस्म्यहम् ॥१॥

इदम्¹³ उवाच—

अष्टमूर्त्ते नमस्तुभ्य आनन्दगणसागर'¹⁴ ।
 वगलाहृदय मन्त्र'¹⁵ प्रयोग वद शङ्कर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

विन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्तत्रयविभूषितम् ।
 षट्कोण चैव वृत्त च भूपुरद्वयसयुतम् ॥३॥

१. पदमुच्चार्य । २. निम्नांशोऽयं य पुस्तक एव दृश्यते विपद्य —

पापबीज ततोच्चाय स्तन्यमाया ततोच्चरेत् ।

३. य अङ्गुलीबीजमुच्चार्य । ४. य. स्वाहेति उच्यते । ५. य. मन्त्रोऽय । ६. य. मुनिगुह्य सुपावनम् । ७. य. पुस्तक एवायमशो विरोध —

पुत्र देव चिरो देव न देव हृदय मनु ।

८. य. वन्ध्याया भार्जयेदेव । ९. य. पिबेदुदयकाल तु । १०. य. सापि । ११. य. समुच्चय । १२. य. अष्टोत्तर उच्यते । १३. य. हृदयप्रयोग नाम अष्टाविंशतिः । १४. य. श्रीऋषभेदेन । १५. आनन्दगुह्यसागर । १६. य. मन्त्र ।

मध्य लिखेन्महामन्त्र वगलाहृदय तथा ।
 त्रिकोणेषु लिखेद् बीज वगलाख्य सृपावनम् ॥४॥
 पट्कोणे वा लिखेन्मन्त्र पट्त्रिंशद्वर्णकारकम् ।
 शताक्षरीमहामन्त्रमाद्यनुत्त लिखेत् क्रमात् ॥५॥
 'तस्योपरि च सवेष्टय वगलाबीजमादरात्' ।
 तस्योपरि^१ विलिखेद्यन्त्र 'स्वर्णे वा रौप्यपत्रके'^२ ॥६॥^३
 लिखित्वा शुभलग्ने तु स्पष्टरेखाश्च^४ सलिखेत् ।
 स्पष्टबीजानि सलित्य पूजयेदकंवासरे ॥७॥
 'सहस्र प्रजपेन्मन्त्र दुर्गाहृदयमादरात्'^५ ।
 योगिनी पूजयेत्तत्र धूपदीपार्चनादिभि ॥८॥
 कौलार्चनविधानेन मन्त्रसिद्धिर्भवेद्^६ ध्रुवम् ।
 सुरर्क्ष^७ पूजयेद्यन्त्र 'ह्यारिकुसुमे' शुभे'^८ ॥९॥
 दृष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य अयुत जपमादरात् ।
 मल्लिकाकुसुमेनैव^९ दृष्टोत्तरशत जपेत् ॥१०॥
 वगलाहृदयनैव ह्यर्चयेज्ज्वरशान्तये ।
 'मल्लिकाकुसुमेनैव दृष्टोत्तरशत जपेत्'^{१०} ॥११॥
 वगलाहृदयनैव दृष्टादशशत तथा ।
 अत्र न्त'^{११} वेदशास्त्राणां व्याख्याता भवति ध्रुवम् ॥१२॥

१ ख घ पुस्तकद्वय पादद्वयस्थाने निम्नांशो सम्पत्ते —

तदुपरि च सवेष्टय पञ्चाक्षदणुमादरात् ।
 तस्योपरि च सवेष्टय वगलाबीजमादरात् ॥
 तस्योपरि च पट्कोणे वगला चतुरक्षरी ।
 कोणे कोणे लिखेन्मन्त्र प्रत्येक च कुमारक ॥

२ ख घ एव च । ३ घ स्वर्णरौप्यादिताम्रके । ४ अस्याग्रे निम्नांशो दृश्यते-
 श्विक ख घ पुस्तकयुग्मे —

'महाम्नां च'^१ चतुदश्यां नवम्यां श्रीमवासरे^२
 उत्तराभिमुखो भूत्वा लेखिष्या स्वखुजातया^३ ॥

५ घ स्पष्टरेखासु । ६ घ —

प्रजपेद् वगलायाश्च सहस्र हृदय मनु ।

७ घ सिद्धमन्त्रो भवेद् । ८ घ ह्यारैश्च सुबुद्धिमान् । ९ ख ० कुसुमेश्च । घ
 ० कुसुमेदिम्यः । १० ख घ — स्यम तकुसुमेनैव ह्यर्चयेज्ज्वरमादरात् । ११ घ मयुतान् ।

१. घ कृष्णाष्टम्या । २ घ मयवा पौलिमादिने । ३ हेमवतारयो ।

वकुलः पूजयेद्यत्र पुत्रवान् जायते नरः ।
 'पलाशकुसुमैरर्चयेन्नराज'¹ कुमारक ॥१३॥
 विद्यासिद्धिर्भवेत् पुत्र पूर्वसख्याक्रमात्सुत² ।
 पद्मपत्रेण सम्पूज्य पूर्ववद्यत्रमादरात्³ ॥१४॥
 कुबेरसदृशो भूत्वा 'लभते भुवि सपदः'⁴ ।
 नन्दावर्त्तयन्त्रराज पूजयेत् पूर्ववत् सुत ॥१५॥
 त्रैलोक्य 'वशमाप्नोति पूजायाश्च प्रभावतः'⁵ ।
 चम्पकेनैव सम्पूज्य पूर्ववद्विजितेन्द्रियः ॥१६॥
 तस्य दर्शनमात्रेण वादिना स्तम्भन भवेत् ।
 विल्वपत्रेण सम्पूज्य पूर्वसख्यासु बुद्धिमान् ॥१७॥
 द्रव्यलाभ⁶ भवेत्तस्य तत्क्षणादेव पुत्रक ।⁷
 प्रशोकपुष्पैः सम्पूज्य पूर्ववद्विजितेन्द्रियः ॥१८॥
 श्रेष्ठराज्य भवेत्पुन धनायासेन साधकः ।
 केतकीकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेत्सुत ॥१९॥
 निधान⁸ लभते तस्य शिवस्य वचन यथा ।
 पीतवर्णेन पुष्पेण 'निर्गन्धेन सुगन्धिना'⁹ ॥२०॥
 अर्चयेद्युत मन्त्री षोडशरूपचारकैः ।
 वाचा¹⁰ सिद्धिर्भवेत्तस्य देवीरूपो न संशयः ॥२१॥
 तस्य दर्शनमात्रेण सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ।
 यजेत्तद्वगलायन्त्र¹¹ मुनिगुह्य सुपावनम् ॥२२॥
 प्रकाशयेन्त्र¹² कस्यापि देवताशापमाप्नुयात् ।
 इति षड्विंशतमे साध्यायनतन्त्रे एकोनविंशः¹³ पटलः ॥२९॥

१. घ. पलाशपुष्पसंपूज्य. भद्रराज । २. पूर्वसख्या पुत्रक । ३. घ. पूर्ववत् कौच-
 भेदन । ४. घ. मोदितो भुवि सपदः । ५. घ. वशमायाति यावज्जीव न संशयः ।
 ६. घ. द्रव्यलाभो । ७. घ. पुस्तक एव निम्नः श्लोको हृष्यते विशेषः—

सुलसीमजरीभिस्तु पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।

राजलाभो भवेत् सद्य भयत्नादेव पुत्रक ॥

८. ख. विधान । ९- घ. निर्गन्धैर्वा सुगन्धिभिः । १०. घ. वाञ्छा । ११. घ. य-
 एतद्वगलायन्त्र । १२. घ. न देय यस्य । १३. घ. बगपायत्रप्रकाशन नाम एकोनविंशः ।

• अथ त्रिशः पटल ॥

नमस्ते देवदेवेशि पुत्रपीत्रप्रवर्द्धिनी(नि) ।

स्तम्भनार्थं भजेऽहं त्वा पीतमात्मानुलेपनाम् ॥१॥

स्कन्ध* उवाच—

नमस्ते सर्वसर्वेश पुराणपुरुषोत्तम ।

वगलाष्टाक्षरमत्र* वद मे कष्टनाकर ॥२॥

शिव* उवाच—

वेदादि 'विलिखेत् पूर्वं'* पाक्षबीजमनन्तरम् ।

स्तम्भमाया* ततोच्चार्यं यक्षुः श बोजमेव च* ॥३॥

'हुं फट् स्वाहा'*-समायुक्त मन्त्रमष्टाक्षर* तथा ।

ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽस्य** गायत्री समुदाहृता ॥४॥

'देवता वगलानाम्नी चिन्मयी विश्वरूपिणी'*** ।

ॐ बीज ह्रूँ शक्तिश्च क्रौ कीलकमुदाहृतम् ॥५॥

न्यासविद्या च वगलामन्त्रराजवदाचरेत्**** ।

ध्यानं चैव प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥६॥

युवती च मदोद्विक्ता*१ पीताम्बरधरा शिवाम् ।

पीतभूषणभूषांगी समपीनपयोधराम् ॥७॥

मदिरामोदवदना प्रवाससहस्राक्षराम् ।

'पानपात्र च शुद्धिच'*२ विभ्रती वगला स्मरेत् ॥८॥

एव ध्यात्वा जपेत् पुत्र*३ वगलाष्टाक्षरीमनुम् ।

ध्यानेनैव*४ जप कुर्याद् ध्यायेदाद्यन्तयोस्तथा*५ ॥९॥

'मशोकमूले निवसन् मधुरारससमुत्तम'*६ ।

हरिद्रामालिकामिश्रवर्णलक्ष जपेन्मनुम् ॥१०॥

१ य पीतमात्मानुलेपनाम् । २ य रा क्रौञ्चप्रदन् । ३ छ य रा वगलाष्टाक्षरी-
मत्र । ४ छ. य रा, ईश्वर । ५ छ शक्तिराशौ तु । ६ छ. य रा. स्तम्भमाया । ७.
रा बीजमुपचरेत् । ८ छ. वगला च । ९ य मन्त्रमष्टाक्षरी । १०. रा छन्दोऽत्र ।
११. '-' प्रथमश्च छ. पुस्तके नास्ति । १२. ०बीजरूपिणी । १३ छ य वगला० । १४.
छ. य. ०मदो-मत्ता । रा योवती च मदो-मत्ता । १५ य. रा वैरिचिह्ना पानपात्र । १६.
य रा. मत्र । १७ रा ध्यायन्नेव । १७. छ ०पराम् । १८. य रा मशोकमूलमाधित्य
हरिद्राम्बरसमुत्तमम् ।

अष्टायुत तपेण च हेतुसम्मिश्रवारिणा ।

तदशाश हुनेत् पुत्र अग्नेन^१ 'च सम मधु'^२ ॥११॥

योगिनी पूजयेत् पश्चाद् गर्भकौलागमरूपात् (मं:) ।

ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाच्छत^३ 'वाष्टशत तु वा'^४ ॥१२॥५

एतन्मन्त्रस्य माहात्म्यं शिवो जानाति नान्यथा ।

वित्त्वमूले जपेन्मन्त्रमयुतं ध्यानपूर्वकम् ॥१३॥

तक्ष्मीवान् जायते पुत्र दरिद्रस्तु^६ न सशयः ।

अश्वत्थमूले प्रजपेदयुतं पूर्ववन्नरः^७ ॥१४॥

अश्रुतानां^८ च शास्त्राणां^९ व्याख्याता भवति ध्रुवम् ।

शमीमूले जपेन्मन्त्रमयुतं पूर्ववन्नरः^{१०} ॥१५॥

अष्टराज्यं लभेत्पुनः^{११} घनायासेन निश्चितम्^{१२} ।

वदरीमूलमाश्रित्य अयुतं पूर्ववज्जपेत्^{१३} ॥१६॥^{१४}

वशीकरणसम्मोहो 'जाय (ये)ते नात्र सशयः'^{१५} ।

उदम्बरतरिमूलैः^{१६} पूर्ववज्जपमाचरेत् ॥१७॥^{१७}

कुचेरसदृशं श्रीमान् जायते नात्र सशयः ।

कदलीमूलमाश्रित्य पूर्ववज्जपमाचरेत्^{१८} ॥१८॥^{१९}

१. स घाग्नेन । रा. उत्कल । २. रा. कुमुप मधु । ३. प. रा. पुत्र शत । ४. रा. वा तु तद्वर्कम् । ५. स प. रा. पुस्तकेषु विशेषः पाठो दृश्यते—

प. रा. ध्यानोक्तां बभूवा देवो चमदुर्धर्शनो भवेत् ।

ख. ईमदर्शने भवे देवि नान्यथा शिवभाषितम् ।

६. स. प. दरिद्रोऽपि । ७. प. ध्यानपूर्वकम् । ८. स. प. अश्रुतानि । रा. अश्रुत ।

९. स. प. शास्त्राणि । रा. वेदशास्त्राणां । १०. स. प्रजपेन्नरः । ११. स. भवेत् सद्यो । १२. स. रा. पुत्रक । १३. रा. नन्नरः । १४. इत्येकोऽयं नास्ति घ. पुस्तके ।

१५. रा. स्वभावेनैव जायते । १६. प. शोडुम्बरः । १७. प. पुस्तके इत्येकोऽयं नास्ति

१८. प. रा. अयुतं पूर्ववत् जपेत् । १९. प. पुस्तके पद्यमदो नास्ति ।

‘प्रयोगादीनि सर्वाणि सर्वसिद्धिर्भवेत्सुत’ ॥१६॥

॥ इति षड्विंशोऽध्याये साख्यायनतन्त्रे त्रिंशत्पटलः ॥३०॥

॥ अथ एकत्रिंशः पटलः ॥

विराट्स्वरूपिणी देवी विविधानन्ददायिनीम् ।

भजेऽहं बगला देवी भक्तचिन्तामणि शुभाम् ॥१॥

कोऽप्यभेदत उवाच—

चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रादिसनुतः^१ सर्वमङ्गला(ल) ।

बगलाष्टाक्षरीमन्त्र(न्त्र) प्रयोगान्^२ यद शङ्कर ॥२॥

१. ल. पुस्तके एतदशस्त्वानेऽयमशः समुपलभ्यते—

‘प्रयोगादीनि सर्वाणि पूर्ववत्कारयेत् सुधीः ।

पुस्तकमेतुं पुत्र बगलाष्टाक्षरीविधिः ।

सक्षेपेन मया प्रोक्तं किमप्यच्छेत्तुमिच्छसि ॥

अस्याग्रे निम्नालो षपुस्तक एव हस्यते—

अमुतास्तमते भोग काञ्चित् शिवता इव ।

पुगीवन समाश्रित्य अमृत पूर्ववज्रपेत् ॥१६॥

निक्षेप तमते पुत्र अमुताम्मासमागतः ।

जंबीरतस्माश्रित्य अमृत पूर्ववज्रपेत् ॥२०॥

राजा चैव यथो भूत्वा सर्वैस्व दीयते ध्रुवम् ।

अद्यानवनमाश्रित्य अमृत पूर्ववज्रपेत् ॥२१॥

य य वापि स्मरेत् पुत्र त तं प्राप्नोति निश्चितम् ।

पुष्पवाटया जपेन्मन्त्रममृत पूर्ववत् सुत ॥२२॥

राजलाभो भवेषस्य नात्र कार्या विचारणा ।

नदीतीरे जपेन्मन्त्रममृत पूर्ववत्पुनः ॥२३॥

पुत्रवान् जायते लोके धनधान्यादिसमुत्तः ।

एतन्मयी जपेन्मन्त्र ततत्फलमवाप्नुयात् ॥२४॥

एतदष्टाक्षरीमन्त्र सर्वमत्रोत्तमोत्तमम् ।

प्रयोगादीनि सर्वाणि सर्वसिद्धिर्भवेत्सुत ॥२५॥

२. अष्टाक्षरीप्रयोगं नाम त्रिंशत्पटलः ।

३. रा० नमस्ते लोकजननी(नि) व्यासवाल्मीकिवन्दिते ।

स्तम्भ(म्भ)नाम्नस्वरूपिण्यं बगले तौ नमाम्यहम् ॥

४. रा० इन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रादिसन्तुष्ट । ५. रा. प्रयोग ।

ईश्वर उवाच—

सपंप सवण चैव चिताभस्म सम समम् ।
 अकंक्षोरेण सत्त्वेन मह्येत्^१ सूक्ष्मतोजघ^२ ॥३॥
 अङ्गुष्ठमात्रा^३ कृत्वा तु पुत्तली पूर्ववत् सुत ।
 वदरीकण्टक^४ चैव सर्वाङ्गे तस्य लेपयेत्^५ ॥४॥
 आरनालस्य भाण्डे तु अघोमुखी^६ विनिक्षिपेत् ।
 'अङ्गारवासरे पूज्या'^७ पुनस्तत्रैव निक्षिपेत् ॥५॥
 एव मासनय कृत्वा 'जिह्वास्तम्भ भवेद् रिपोः'^८ ।
 रवी रात्रौ च सगृह्य^९ चिताभस्म समादरात् ॥६॥
 वगलाष्टाक्षरोमन 'अयुत मन्त्रयेत्'^{१०} सुत ।
 खाने पाने च तद्भस्म दातव्य वैरिणस्तथा^{११} ॥७॥
 जिह्वा मुख^{१२} च कर्णाक्षिपादादिस्तम्भ^{१३} भवेत् ।
 तेनैव म्रियते शत्रुर्मांसान्मण्डलमाश्रतः^{१४} ॥८॥
 आरनालेन^{१५} तद्भस्म रहस्येन विनिक्षिपेत्^{१६} ।
 तदन्नभक्षणेनैव बुद्धिभ्रंशोऽपि^{१७} जायते ॥९॥
 तद्भस्म तिलतलेन क्षिरोभ्यङ्ग समाचरेत् ।
 तेनैव तत्क्षणात् पुनः^{१८} चित्तचाञ्चल्यवान्^{१९} भवेत् ॥१०॥
 तद्भस्म चूर्णमिश्र^{२०} 'कृत्वा चूल च वर्णकम्'^{२१} ।
 'तेन शत्रुस्तत्क्षणाच्च'^{२२} बुद्धिजाड्यो भवेद् ध्रुवम् ॥११॥
 विप्रचाण्डालयोः दाय^{२३} (सत्य) प्रेतवस्त्रेण वेष्टयेत् ।
 वगलाष्टाक्षरोमन^{२४} मन्त्रयित्वा सहस्रकम्^{२५} ॥१२॥

१. रा. मह्येत् । २. रा. सूक्ष्मतो मुखम् । ३. घ. मात्र । ४. रा. ० कण्टकान् ।
 ५. रा. निक्षिपेत् । ६. रा. अघोभागे । ७. '—' रा. अङ्गारवासरे सम्पूज्य । ८. रा.
 क्षत्रुस्तम्भो भवेद् ध्रुवम् । ९. रा. सगृह्य । १०. रा. मन्त्रयेत्सुत । ११. वैरिणा
 तथा । १२. रा. मुखे । १३. रा. कर्णादि० । १४. रा. शत्रुमण्डलं नात्र सदायः ।
 १५. रा. आरनाले च । १६. रा. च निक्षिपेत् । १७. रा. बुद्धिभ्रष्टोऽपि । १८. रा.
 शत्रु । १९. रा. चित्त चाञ्चल्यवान् । २०. रा. मिश्र तु । २१. रा. कृत्वा ताम्बूल-
 चूर्णम् । २२. रा. कृत्वा तत्क्षणाच्च । २३. रा. दाय । २४. रा. वगलाष्टाक्षर-
 मन्त्रः । २५. रा. महस्रकम् ।

रवौ रात्रौ शत्रुगेहे^१ ईशान्ये नव(चंव) निक्षिपेत् ।
 मण्डलातद्गु(तर्गु)हस्तोऽपि^२ म्रियते नात्र सशयः ॥१३॥
 कटक^३ पुरपक्षस्य^४ त्रिसहस्रं तु मन्त्रयेत् ।
 निक्षिपेच्छत्रुसदने नित्यं क[ल]हमाप्नुयात् ॥१४॥
 काकोत्कदल चंव भोमे वा रविवासरे^५ ।
 सप्रहेत् प्रेतवस्त्रेण वेष्टयेद् रविवासरे ॥१५॥
 निक्षिपेद् रविवारे तु रिपु(पो)गेहे तु^६ बुद्धिमान् ।
 ग्र(गु)हचिह्नेषु^७ सद्यो जायते नात्र सशयः ॥१६॥
 सर्व(पं) मण्डकयोः शल्यं प्रेतरज्वा तु वेष्टयेत् ।
 निक्षिपेच्छत्रुसदने स श[त्रु]रवशिष्यति ॥१७॥
 मारजारवालरोमाञ्च(णि)^८ रवौ रात्रौ च सप्रहेत् ।
 प्रेतवस्त्रे रवौ ग्राह्यं शिवनिर्माल्यमेव च ॥१८॥
 रवौ रात्रौ च सग्राह्यं नरास्मि च सम समम् ।
 चूर्णं(णीं) कृत^९ सु तत्सर्वं मन्त्रयेदयुतं तथा ॥१९॥
 धूपयेच्छत्रुसदने तस्य सचारयो(ण)-स्थले ।
 'तद्धूपवासने शत्रुमूर्को'^{१०} भवति तत्क्षणात् ॥२०॥
 तच्चूर्णं^{११} देवतागारे भृगुवारे च धूपयेत् ।
 'पलायते च तन्मन्त्री'^{१२} शिवस्य वचनं यथा ॥२१॥
 गजाश्वद्वयभोलूकमहिषोरगकुक्कुटम्^{१३} ।
 तच्चूर्णं धूपयोगेन सर्वं तूणजलादिकम् ॥२२॥
 म्रियते सप्तरात्रेण स्वेदजाण्डजपिज(ड)जा^{१४} ।
 एतच्चूर्णं वृक्षमूले धूपयेच्च^{१५} कुमारकः ॥२३॥
 फलितं पुष्पितं वाथ स्थूलवृक्षमथापि वा ।
 'सप्ताहात् शुष्कता'^{१६} याति सिद्धियोगः कुमारकः ॥२४॥

१. रा. गृहे । २. रा. मण्डलं तु ग्रहस्तोऽपि । ३. रा. कटक । ४. रा. पर-
 पुष्टिश्च । ५. रा. भोमवारस्य वासरे । ६. रा. सु । ७. रा. गृह । ८. रा. मारजारो-
 रोमवालं च । ९. रा. चूर्णं कृत्वा । १०. रा. धूपवासने शत्रुश्च मूर्को । ११. रा.
 पलायती वनं मुक्ति । १२. रा. कुक्कुटः । १३. रा. श्वेतग्रीवाज्जापि च । १४.
 रा. ०त्तु । १५. रा. समाहाञ्ज्युक्ताति ।

भृगाणा^१ चैव शत्रूणां खाने पाने प्रयत्नत ।
 बुद्धिनाशो भवेच्छत्रु(त्रो)स्त्रिदिन भक्षणात्^२ सुत ॥२५॥
 प्रजा^३ बुद्धि श्रिय चैव ऐश्वर्यं हरते^४ नृणाम् ।
 एतच्चूर्णप्रयोग^५ च ऋषीणामपि दुर्लभम्^६ ॥२६॥
 चिताभस्म रवौ रात्रौ सग्रहेच्च^७ तदर्भक ।
 अयुत मन्त्रयित्वा तु रिपुमूर्ध्नि विनिक्षिपेत् ॥२७॥
 काकषद् भ्रमते शत्रुर्महि(हो)मामरणान्तिकम् ।
 'शिलामामलक प्रस्थ'^८ सहस्र सग्रहेद् बुध. ॥२८॥
 'अर्कवारे तु सध्याया'^९ मन्त्रेणैकेन मन्त्रय[त्]^{१०} ।
 मजित 'निक्षिपेद् द्वारे(द्वारे)^{११} दक्षिणाभिमुखेन च ॥२९॥
 नित्यं चैव सहस्रं तु निक्षिपेद् दशवासरे^{१२} ।
 उच्चाटन भवेच्छत्रोर्नाशयथा शिवभाषणम् ॥३०॥
 धतूरपत्रमादाय सहस्र मन्त्रयन्निदि ।
 प्रेतवस्त्रेण सवेष्ट्य भीमे दधुनिकेतने ॥३१॥
 निक्षिपेद् द्वारदेशे तु मूकी भवति तद्विपु ।
 तन्मार्गे सचरेद् यस्तु तत्सर्वेऽप्यरिमन्दिरे^{१३} ॥३२॥
 'खरबाल च रोम च'^{१४} प्रतरज्जुस्तथैव च ।
 मन्त्रयद्युत^{१५} मन्त्र^{१६} निक्षिपेच्छत्रुमन्दिरे ॥३३॥
 पक्षाद वा मासयोगेन् 'स शत्रुर्वाधर्व सदा'^{१७} ।
 म्रियते नात्र^{१८} सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ॥३४॥
 एतच्च दगलामन्त्रप्रयोग^{१९} भुवि दुर्लभम्^{२०} ।
 गुरुपुत्राय दातव्य^{२१} न दद्याद्^{२२} यस्य कस्यचित् ॥३५॥
 इति श्री^{२३} सांख्यायनतन्त्रे ध्याताक्षरीप्रयोग नाम ^{२४} पृथ्विस्तोत्रस्य ।

१ रा पितृणां । २ रा भक्षयत् । ३ रा प्रजा । ४ रा हनते । ५ रा. प्रयोग । ६ दुर्लभः । ७ रा सग्रहेत् । ८ रा घटानूपूनकेप्रस्थ । ९ रा घन-
 कायपितृस्थायी । १० रा स वदेत् । ११ रा. विनिक्षिपे । १२ रा. वासरम् ।
 १३ रा. अप्यस्ति दधौ । १४ रा. खरबालकरोमाणि । १५ १६ रा. दयुतेर्मन्त्रे ।
 १७ रा बुद्धिनाशनपुत्रकम् । १८ रा. न च । १९ रा. प्रयोग । २० रा.
 दुर्लभः । २१ रा दातव्यो । २२ रा देयो । २३ रा धीवद्विद्यागमे । २४
 रा नास्ति ।

॥ अथ द्वात्रिंशत्पटलः ॥

मन्त्रादौ तव बीजपूर्वकमप्यस्मी ब्रह्मं मूलं^१ सौ^२ ग्लौ^३ अप[न]^४,
ताव[द्]ध्यानपराय[णः]^५ प्रतिदिनं पीत्ता(ता)क्षमालाधरः ।
साध्याकर्येणवश्यमाशु बगले साध्यस्य शोधनं भवेत्,
प्रेतादिपासनपूर्विके^६ विवसने तत्प्रेमभूमौ निशि ॥१॥

श्रीऋषभेदेन उवाच—

नमः पापविद्वराय नमस्ते चन्द्रशेखर ।
बगला^७ चोपसहारविद्या वद सुपावनी[म्]^८ ॥२॥

ईश्वर उवाच—

ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनो कालो विद्या चास्त्रसुपावनी^९ ।
तस्यास्त्रस्मरणादेव^{१०} बगला शान्तिमाप्नुयात् ॥३॥
तद्विद्या च प्रवक्ष्यामि शान्तौ^{११} तच्छृणु^{१२} पशुमुख ।
उच्चरेच्छक्तिवाराह वाराह^{१३} तदनन्तरम् ॥४॥
पाग्वीज च ततो(यो)च्चार्यं भुवनेशो^{१४} ततः परम् ।
महामाया^{१५} ततो(यो)च्चार्यं धीवीज तदनन्तरम् ॥५॥
कालीशब्दद्वय^{१६} चोक्त्वा (क्त्वा) महाकालीपद^{१७} वदेत् ।
एहि शब्दद्वयं चोक्त्वा कालरात्रो(त्रि)पदं वदेत् ॥६॥
स्फुरद्वयं समुच्चार्यं प्रस्फुरद्वितय^{१८} लिखेत्^{१९} ॥७॥
स्तम्भनास्त्रपदं चोक्त्वा शमनीपदमुच्चरेत् ।
हुं फट् स्वाहा-समायुक्तं मन्त्रमेव समुदरेत्^{२०} ॥८॥
पचाशद्दुधं मन्त्रस्य^{२१} वर्णत्रयविभूषितम्^{२२} ।
ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनो कालीमन्त्रमेतन्न सदायः ॥९॥
पलाशमूलमाश्रित्य लक्षमेकं जपेत्[त्]स्मयः^{२३} ।
तत्पयेत्तद्दशाशेन^{२४} कर्पूरमिश्रितं जले^{२५} ॥१०॥

१. रा. नास्ति । २. रा. सौ । ३. रा. जपे । ४. रा. परायण । ५. रा. प्रेताध्यासनः । ६. रा. बगला । ७. रा. चास्त्रे सु । ८. तस्य स्मरणमात्रेण ।
९. क. शान्तौ । १०. रा. च शृणु । ११. रा. हुन्धार । १२. रा. भुवनेश । १३. रा. मम माया । १४. रा. कालि । १५. रा. महाकालि । १६. रा. महाशोहद्वय ।
१७. रा. वदेत् । १८. रा. समुच्चरेत् । १९. रा. मन्त्रसु । २०. रा. भवनेन विभूषितः । २१. रा. जपेद्वरः । २२. शब्दाशयः च । २३. रा. जलम् ।

पलाशपुष्पैर्जुहुयाच्चतुरस्रे च कुण्डले (के) ।
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पुत्र^१ सहस्र शतमेव वा ॥११॥
 मन्त्रसिद्धिमवाप्नोति देवता च प्रसीदति ।
 ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽथ (स्य) गायत्री समुदाहृतम्^२ ॥१२॥
 देवता कालिका नाम^३ स्तम्भनास्त्रविभेदिनी^४ ।
 ध्यानं यस्मात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥१३॥
 काली करालवदना कलाघरघरा^५ शिवाम् ।
 स्तम्भनास्त्रैकसंहारी ज्ञानमुद्रासमन्विताम्^६ ॥१४॥
 वीणापुस्तकसयुक्ता कालरात्रि नमाम्यहम् ।
 बगलास्त्रोपसंहारीदेवता^७ विश्वतोमुखीम्^८ ॥१५॥
 भजेऽहं कालिका देवी जगद्वशकरा^९ शिवाम् ।
 एव ध्यात्वा तु मन्त्रज्ञः प्रजपेच्छुद्धि (द्व)^{१०} मानसा ॥१६॥
 वक्ष्येऽहं घोषसंहारकर्म लोकोपकारकम्^{११} ।
 जम्बीरफलमादाय मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥१७॥
 भक्षयेत् प्रातरुत्थाय निद्रान्ते च कुमारक ।
 एव चार्कदिनं कृत्वा जिह्वास्तम्भादिकृत्त्रिमम् ॥१७॥
 सद्यो नर्मा (र्म) ल्यमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
 रवी द्येतवचा^{१२} ग्राह्य मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥१८॥
 प्रातःकाले भक्षयित्वा त्रिसहस्रं मनं जपेत् ।
 वाच^{१३} मुखं पदं चैव 'जिह्वा बुद्धीन्द्रियाणि च'^{१४} ॥२०॥
 स्तम्भित मन्त्रयोगेन तत्सर्वं क्षान्तिमाप्नुयात् ।
 तान्नपात्रे समादाय नदीजलमकल्मषम्^{१५} ॥२१॥
 द्वातवारं मन्त्रयित्वा प्राशयेच्छान्तिमाप्नुयात्^{१६} ।
 गोमूत्रं चैव सगृह्य मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥२२॥

१. रा. पश्चात् । २. रा. समुदाहृतः । ३. रा. नाम्नी । ४. रा. स्तम्भना-
 स्त्रविभेदिनी । ५. रा. कलाघरघरी ।

६. रा. स्तम्भनास्त्रैकसंहारि वंदेहं भद्रकालिकाम् ॥१४॥

स्तम्भनास्त्रोपसंहारि ज्ञानमुद्रासमन्विताम् (ताम्) ।

७. रा. बगलास्त्रोपसंहारि विद्वतो । ८. रा. देवतामुखी । ९. रा. जाद्वयवशकरी ।
 १०. रा. ऋषिद्वि । ११. रा. लोकोपकारकम् । १२. रा. द्येतवचा । १३. रा. वाचा ।
 १४. रा. जिह्वाबुद्ध्यादिकाम्यपि । १५. रा. दलोवाङ्मिद नास्ति । १६. रा. तु पश्चात् ।

एवं कृत्वा जपेन्मन्त्रं^१ उन्माद^२ शान्तिमाप्नुयात् ।

मन्त्रयेदारनालं च प्रातः प्रातः पिबेन्नरः ॥२३॥

मण्डलज्वररोगं च नाशमाप्नोति निश्चितम् ।

‘ग्रष्टोत्तरं मन्त्रयित्वा घारोलंब’^३ पिबेन्नरः ॥२४॥

गर्भस्तभनदोषं च मण्डलाच्छान्तिमाप्नुयात्^४ ।

मस्म च मन्त्रयेत्^५ प्रातः त्रिसप्त त्रिशतेन^६ वा ॥२५॥

तन्नेण^७ सहितं पीत्वा त्रिसहस्रं दिने दिने ।

वगलामन्त्रयोगेन एतत्प्राणसमुद्भवः^८ ॥२६॥

नाशयेदाशु तत्सर्वं तुलराशिमिवानलः ।

यक्षघ्न^९ समानीता^{१०} मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥२७॥

धूपयेत्तेन सर्वाङ्गं दक्षराज कुमारक ।

यक्षघ्नोद्भवः^{११} चैव प्रयोग चैव^{१२} कृत्विमम् ॥२८॥

तत्क्षपान्नाशमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।

रवौ ब्राह्मी समादाय छायाशुष्क समाचरेत्^{१३} ॥२९॥

मन्त्रयेत् त्रिसहस्रं तु मक्षयेत् प्रातरेव च ।

एतद्विद्या जपेन्नित्यं त्रिसहस्रं कुमारक ॥३०॥

वगलास्त्रकृत^{१४} यद्यत् प्रयोग दुर्लभम् भुवि ।

तत्सर्वं नाशमाप्नोति मास मण्डलमात्रतः ॥३१॥

ब्राह्मीरस समादाय मन्त्रयेच्छतधा पुनः ।

शर्करासहित पीत्वा सहस्रं जपमाचरेत् ॥३२॥

नानाकृत्विमदोषं च वगलामन्त्रतः^{१५} कृतम् ।

अमङ्गल्यो [८] भव नाय^{१६} भूतसे यदि^{१७} दुर्लभम् ॥३३॥

१. रा. तु पन्नालं । २. रा. उन्मादः । ३. ता. ग्रष्टोत्तरयत् मन्त्र घारोप्य च ।
४. रा. मण्डलान्नाशमा० । ५. रा. मन्त्रयन् । ६. रा. सप्तमेव । ७. रा. मन्त्रेण ।
८. रा. यद्यद्वैद्यसमुद्भवम् । ९. रा. यक्षघ्नं । १०. रा. समानीय । ११. रा. यक्षघ्न-
पीद्भव । १२. रा. नाय । १३. रा. समाहरेत् । १४. रा. वगलाविकृत । १५.
रा. गर्भं वा मन्त्रित । १६. रा. बाध । १७. रा. यत् ।

मण्डलान्नाशमाप्नोति तम सूर्योदये यथा ।
 एतद्विद्या साम्प्रदाय^१ गुरुस्तान्^२ लब्धमन्त्रवान् ॥३४॥
 लक्षमेक जपेन्मन्त्री^३ प्रयोग नाशमाप्नुयात् ।
 यशस्तश्च स्वय पुत्र 'कुर्वते ब्राह्मणानपि'^४ ॥३५॥
 द्विगुणा जपमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
 एतद्विद्या सम्प्रदाय वद्वये ब्राह्मणानपि ॥३६॥^५
 द्विगुण जपमानेन सर्वशान्तिमवाप्नुयात् ।
 एतद्विद्या विना पुत्र कलौ च बगलामुखि (खी) ॥३७॥
 प्रयोगशान्तिन^६ भवे[न्] मन्त्रयन्त्रोपधादिभि ।
 सप्तकोटिमहामन्त्रप्रयोगेषु च पुत्रक ॥३८॥
 एतद्विद्यापुरश्चर्या नाशयेदाशु^७ निश्चयम्^८ ॥
 नम श्रीकृतिकार्द्व्यं कालरा ये नमो नम ॥३९॥^९
 उपसहाररूपिण्यै देव्यं नित्य नमो नम^{१०} ॥४०॥

इति श्रीपट्टविद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'प्रयोगसहार नाम'^{११} द्वाविंशत्पटल ॥

॥ अथ त्रयस्त्रिंशत्पटल ॥

पीनोत्तुङ्गजटाकलापविलसद्गुलेन्दुसंछेखराम्,^{१२}
 विभ्राणा शितशास्तकुम्भमुकुटा^{१३} (ट) नेत्रत्रयालङ्कृताम् ।
 सन्द्वह्यमयी त्रिलोकजननीं शक्तिं परा साम्भवोम,
 देवीश्रीबगला सुरासुरवरैरभ्यर्चिता भावयेत्^{१४} ॥१॥

कौञ्चभेदन उवाच—

नम शिवाय साम्भाय ब्रह्मणेऽनन्तमृतये ।
 वद मे चोपसहार यत्र लोकोपकारकम् ॥२॥

१. रा समादाय । २. रा गुप्तो । ३. रा मन्त्र । ४. रा प्राययेद्ब्राह्मणानपि । ५. रा पद्यमिद नास्ति । ६. घंछार्ति न । ७. घ नागयेदण । ८. घ निश्चय । ९. रा पद्याद्व मिद नास्ति । १०. रा पद्याद्व मिद नास्ति । ११. रा नास्त्ययमशः । १२. रा बन्धुबालेन्दुः । १३. रा सितः । १४. ऋ श्रीबगला ब्रह्मास्त्रवीसुरनरैरभ्यर्चितामाश्रये ।

ईश्वर उवाच—

कपिलानवनीतं च कदलीपत्रमध्यतः^१ ।

लिप्त्वा^२ मंत्रं^३ लिखेत्तत्र 'कृत्वा पूजा'^४ च सायकः ॥३॥

A पट्कोणं चाष्टकोणं च वृत्तं भूपुरमेव च ।

पट्कोणकर्णिकायां व(च)पट् बीजानि मनोर्लिखेत् ॥४॥

शिष्टाक्षराणि कोणेषु ब्रह्मास्त्रस्तम्भनीमनुः ।

अष्टपत्रे लिखेन्मंत्रं ताक्ष्यंमालामनुस्तथा ॥५॥A

कोऽयंस्ताक्ष्यमनुचेति वक्ष्येऽहं मन्त्रनायकम् ।

B आद्यवर्णं समुच्चार्य ताक्ष्यंबीजं ततः परम् ॥६॥

ॐ नमो पदमुच्चार्य पश्चाद् भगवते पदम् ।

ताक्ष्यंबीजं पक्षिराजायोक्त्वा ताक्ष्यं ततः परम् ॥७॥

सर्वशब्दं ततो (थो) च्चार्यं अभिचारपदं वदेत् ।

ध्वसकाय पदं क्षीमो ह्ये फट् स्वाहा-समन्वितम् ॥८॥ B

ताक्ष्यस्य मालामन्त्रश्च द्वात्रिंशद्वर्णसंयुतम् ।

अष्टपत्रे वेदवेदवर्णान् पूर्वादितो लिखेत् ॥९॥^५

१. रा. कदलीपत्रंके तथा । २-३. घ. लिप्य मत्र । ४. रा. यत्रमध्ये ।

A-A विहृताभ्यर्ततांशस्याने रा० पुस्तके निम्नांश एवोपलभ्यते—

पट्कोणमध्ये बिलिखेद्ब्रह्मास्त्रस्तम्भनीमनुः ।

अष्टपत्रे लिखेन्मन्त्रं ताक्ष्यंमालामनुस्तथा ॥

B-B विहृताभ्यर्ततांशस्याने रा० पुस्तके निम्नाद्धृतः पाठभेदो दृश्यते—

आद्यवर्णं समुच्चार्य चतुर्थंस्वरपूर्वकम् ॥४॥

विन्दुना भूविष पुत्र ताक्ष्यं एकाक्षरी तथा ॥

ॐकारबीजमुच्चार्य ताक्ष्यंबीजं ततः परम् ॥

ॐ नमो पदमुच्चार्य ततो भगवते पदम् ।

पक्षिराजा च्चार्यं अभिचारपदं वदेत् ॥

ध्वसकाय पदं चोत्था ह्ये फट् स्वाहासमन्वितम् ॥६॥

मनः—ॐ शी नमो भगवते पक्षिराजाय अभिचारादिसकलकृत्रिमध्वसकाय ह्ये फट् स्वाहा ॥

५. दलोकस्यास्य रा० पुस्तके निम्नोऽप्य पाठभेदः—

मालामत्र ताक्ष्यंविद्या पदंविद्यार्णसंयुता ॥

अष्टपत्रे लिखेत्तत्र प्रादक्षिण्यक्रमेण तु ॥७॥

प्राणप्रतिष्ठा यत्रस्य^१ आद्यवृत्ते लिखेत् सुत ।
 तदुपरि लिखेद् वर्णान्^२ पञ्चाशत्सिपिसयुतान्^३ ॥१०॥
 पाशाङ्कुशं च विलिखेद् भूपुरेषु यथाक्रमम् ।
 घट्टकोणे लिखेद् वर्णान्^४ वज्रान्ते वर्मं फट् तथा ॥११॥
 एवं लिखित्वा यत्र च पूजयेन्मानसेन तु ।
 एव कृत्वा तु तत्सर्वं नवनीत कुमारक ॥१२॥^५
 भक्षयेद् बदरीमात्रं सायं प्रातस्तु बुद्धिमान् ।
 देवतावेशमतुलं मन्त्रयन्त्रादिकृत्त्रिमं^६ ॥१३॥
 शाल्यदारुमयं 'तत्र प्रयोगं वगलाश्च यत्'^७ ।
 नाशयेन्मण्डलादेव शि [व] स्य वचनं यथा ॥१४॥
 एतच्च त्रिं हृदि ध्यायेद् दुःखकाले सुबुद्धिमान् ।
 दशरात्राद् व्यपोहत् (ति) दारुणं रपि^८ कृत्त्रिमं^९ ॥१५॥
 रौप्ये वा स्वर्णपट्टे वा लिखेद् यत्रमिमं बुधः^{१०} ।
 पूजयेद् रक्तपुष्पेण^{११} षोडशं रूपाचारकं ॥१६॥
 कण्ठे वा बाहुमूले वा शिखाया वा कुमारक ।
 बधयित्वा चार्वाभचारं नाशमाप्नोति निश्चयम्^{१२} ॥१७॥
 नागवल्लीदलेनैव^{१३} एतच्चत्रं कुमारक ।
 चूर्णेन विलिखेत् सम्यक् पूर्वं ताम्बूलचर्वणम् ॥१८॥
 एव कुर्यात् प्रातरेव तद्वत् सायं समाचरेत् ।
 मासत्रयं^{१४} चरेदेव कृत्त्रिमं हरते नृणाम् ॥१९॥^{१५}
 कुर्यात् कृत्त्रिमरोगेण पीडिताय कुमारक ।
 तत्कार्पण्यं गौरव चैव लाघव चावलोकयेत् ॥२०॥^{१६}
 पक्षं वायं त्रिसप्ताहं^{१७} मासं वा मण्डलं तथा ।
 यथा 'याधित्रियुक्तं'^{१८} च तावत्कालं कुमारक ॥२१॥

१. रा. मन्त्र तु । २. रा. ० वर्णं । ३. रा. ० दण्डयुतम् । ४. रा. वज्र । ५. इलोकोय रा. पुस्तके नास्ति । ६. रा. कृत्त्रिमं । ७. '—' रा. यत्र च वगलापोष-
 मात्रतः । ८. रा. दारुणानपि । ९. रा. कृत्त्रिमान् । १०. रा. बुधः । ११. रा. रक्तपुष्पस्तु । १२. रा. निश्चयात् । १३. रा. ० चैव । १४. रा. मासमात्रं ।
 १५. रा. पुस्तकेऽतः परं विद्योपोऽयं श्लोको हृष्यते—
 स्तम्भनास्त्रोपसंहार मन्त्रेण च कुमारक ।
 भार्जनं बिल्वपत्रेण घारोहादवरोहकम् ॥१७॥

१६. रा. ० लोहयन् । १७. रा. त्रिसप्ताह । १८. रा. ध्याधिविमुक्त ।

अनेन(नया)विद्यया पुत्र मार्जेन मुनिसमतम्^१ ।
 मथवा मन्त्रित तोय^२ सद्यः कृत्स्नमनाशनम् ॥२२॥
 भूपुर वृत्तयुग्म च तन्मध्ये च कुमारक ।
 पञ्चकोण लिखेत् सम्यक् तन्मध्ये चन्द्रमण्डलम् ॥२३॥
 इन्द्रमध्ये^३ लिखेद् विद्या कृत्स्नमघ्नी^४ च कालिकाम् ।
 मनुरेव लिखेत् सम्यक् स्पष्टवर्णेन^५ समुत्तम् ॥२४॥
 पञ्चकोणे^६ लिखेन्मन्त्र^७ पञ्च ब्रह्माख्यमेव च ।
 द्वाद्यपत्रे लिखेन्मन्त्र^८ प्राणस्यापनक तथा ॥२५॥
 द्वितीये विलिखेत् सम्यक् पञ्चाशद्वर्णमादरात् ।
 पाशाङ्कुशवि लिखेद् भूपुरेषु चयथाक्रमम् ॥२६॥
 एतद्यन्त्र लिखेद् भूयै कसूयी(स्तूयी) क्रीञ्चभेदन ।
 यन्त्रे^९ प्राणान्^{१०} प्रतिष्ठाप्य पञ्च ब्रह्ममनुं जपेत् ॥२७॥
 त्रिसहस्रं सहस्रं वा त्रिसप्त शतमेव च ।
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाद् विद्याशाठ्य न कारयेत् ॥२८॥
 तद्यन्त्रधारणादेव कृत्स्नमादिरनेकशः^{११} ।
 तत्क्षणाग्न्याशमाप्नोति जीवेद्^{१२} वर्षशत तथा ॥२९॥
 एतद्यन्त्र^{१३} हृदि ध्यात्वा मानसेनैव पूजयेत् ।
 त्रिसप्तदिनमात्रेण नानाकृत्स्नमनाशनम् ॥३०॥
 ताम्रपान्ने जल ग्राह्य श्रीसूक्तेनैव मन्त्रयेत् ।
 शत वाद्यैश्च वाय त्रिसप्तमय पुत्रक ॥३१॥
 तुलसीमञ्जरीभिश्च नार्जयेद् रोगपीडितः^{१४} ।
 भारोहादवरोहेण ऋचान्ते मार्जेन तथा ॥३२॥
 त्रिकालभेककाल वा मार्जयेद् ध्यानपूर्वकम् ।
 त्रिमोघ^{१५} च यद्भोग नाशमाप्नोति निश्चितम् ॥३३॥
 श्रीसूक्तेनैव जिह्वायां मार्जयेत् तुलसीदलः ।
 त्रिसप्त^{१६} प्रातरुत्थाय जिह्वास्त[भ]नशान्तिकृत् ॥३४॥

१. रा. मुनिसदृशम् । २. रा. तोय- । ३. रा. चन्द्रमध्ये । ४. रा. कृत्स्नमध्ये ।
 ५. रा. स्पष्टवर्णे । ६. रा. पञ्चकोणे । ७-८. रा. मन्त्रः । ९. रा. यन्त्रेण ।
 १०. प्राण । ११. अनेकशः । १२. य. जपेद् । १३. रा. एवं यन्त्रं । १४. रा. रोग-
 पीडिते । १५. कृत्स्नमोघ (य) । १६. रा. त्रिसहस्रं ।

गोक्षीरं प्रातरुत्थाय श्रीसूक्तनैव मन्त्रयत् ।
 दशवारं^१ ध्यानपूर्वं तत्क्षीरं प्राशयन्तरं^२ ॥३५॥
 कोटित्यस्थापनं चैव माज्यन्मूसविद्यया ।
 पुत्तल्यादिप्रयोगं च नाशमाप्नोति निश्चितम् ॥३६॥
 ताम्रपात्रं जलं शुद्धं मन्त्रयदकसूर्यया ।
 तज्जलप्राशनादेव बुद्धिश्च^३ द्यो^४ विनश्यति ॥३७॥
 उष्णोदकं ताम्रपात्रं त्रिसप्तमभिमन्त्रयत् ।
 नानागूलं च हृद्रोगं नाशमाप्नोति पुनरकं ॥३८॥
 इति धीषड्विद्यागमे^५ स्तभनास्त्रोपसंहारः^६ नाम धर्माह्निरास्पदलः ।

॥ अथ चतुस्त्रिंशः पटलः ॥

विश्वेश्वरी विश्ववन्द्या विश्वानन्दस्वरूपिणी ।
 पोतवस्त्रादिसन्तुष्टा^७ पोतद्रुमनिवासिनी ॥१॥^८
 क्रीडभेदन उवाच
 विश्वाराध्य भवानोश विश्वोत्पत्तिविधायकः^९ ।
 ब्रूहि मे कृपया तात सकलागमकोविदः^{१०} ॥२॥
 ईश्वर उवाच—

समस्तकम्मणा^{११} ध्वसे सर्वोपद्रवनाशने ।
 जातिस्तम्भे मनस्तम्भे क्रूरकमनिवारणे^{१२} ॥३॥
 झष्टदेतालशमने सवनरवनाशने^{१३} ।
 मातृणां क्षान्तिजनकस्तम्भनजलरक्षसाम् ॥४॥
 देवदानवदत्यारोन्(रि)शमने भ्रमनाशने^{१४} ।
 समस्तोपद्रवध्वसे पूतनादिविनाशने^{१५} ॥५॥

१ रा पूर्ववत्क्षीरं प्राशयन्तरं तत्परः । २ रा बुद्धिश्च द्यो । ३ रा पुस्तके
 'सांख्यायनतन्त्र' इत्यधिकं पाठः । ४ रा उपसंहारप्रयोगः । ५ रा पोतवस्त्राप० ।
 ६ रा पुस्तके—

ईश्वरी विश्ववन्द्या च विश्वानन्दरूपिणी ।
 पोतवस्तुदयं तुष्टा पोतद्रुमनिवासिनी ॥

७ रा ० गुणाकरः । रा ० कुमारः । ८ रा रा यथाहं मिदं नास्ति । ९ रा समस्तो ।
 १० रा परकृत्यानिवारणे । ११ रा सवभगविनाशिनी । १२ रा देवदानवदत्या-
 दिशमनोऽत्र विनाशने । १३ रा पूजनादिविचारणे ।

कपटादिविनाशार्थे^१ प्राप्ते प्राणस्य सञ्छुटे ।
 विश्वमनुविनाशार्थे^२ यद्विद्यद्रोगनाशने^३ ॥६॥
 सूचिप्रयोगविध्वसे महाशस्त्रास्त्रपातने ।
 गतिस्तम्भे^४ मतिस्तम्भे^५ सूर्याग्निस्तम्भनेषु^६ च ॥७॥
 नानारोगविनाशार्थं नानावलेपनिवारणे ।
 रणे राजकुले शान्ती^७ प्रयोगनाशनेऽपि च ॥८॥
 परप्रयोगविध्वसे परकृत्यानिवारणे ।
 कृत्यावेशरतम्भनोऽप्य^८ प्रयोग पशुमुखाचरे^९ ॥९॥
 अनेन योगव्ययेन सर्वदोषनिवारणम् ।
 शृणु पशुमुख तद्योग सर्वयोगोत्तमोत्तमम् ॥१०॥
 'पीताचरणभूषी च पीतवस्त्रद्वयाभिवृतः'^{१०} ।
 पीतयज्ञोपवीतरत्न महापीताश (स)ने^{११} स्थितः^{१२} ॥११॥
 'ज्वालामुख्यभिध बाण त्रिशतं प्रजपेत् सुत'^{१३} ।
 'हरिद्राक्षमणि पीत'^{१४} सर्वकार्यं जपादिकम् ॥१२॥
 ज्वालानलनामानं बाणमादौ जपेच्छतम् ।
 उत्कामुख्यभिध^{१५} बाणं त्रिशतं प्रजपेत् सुत ॥१३॥
 ज्वालामुख्यभिधं बाणं त्रिशतं प्रजपेत् नरः^{१६} ।
 जातवेदमुखीबाणं वेदसत्याशत'^{१७} सुत ॥१४॥
 बृहद्भानुमुखीबाणं जपेत् पञ्चशतं सुत ।
 'य एकादि'^{१८} महाविद्या कुल्लुकादिसमन्विताम्^{१९} ॥१५॥
 नेत्रलक्ष जपेन्मन्त्र क्रूरकर्मादिनाशने^{२०} ।
 हरिद्राया^{२१} चरेद्भो (दो)म काम्य गौरवमिच्छति ॥१६॥

- १ छ. कूरप्रहविनाशार्थे । २. छ. विश्वनष्टि विनाशार्थे । ३. छ. यद्विद्यद्रोगनाशने ।
 ४. छ. मतिस्तम्भे । ५. छ. रतिस्तम्भे । ६. छ. ०स्तम्भनेऽपि । ७. छ. शान्ती ।
 ८. छ. कृत्याविध्वसे । ९. छ. पशुमुखाचरे । १०. छ. पीताचरणभूषणं तथा पीतवस्त्रद्वयाभिवृतः ।
 ११. छ. महापीताशुनि । १२. छ. सुत । १३. '—' मयमद्यो य. रा. पुस्तकयो नास्ति ।
 १४. छ. हरिद्राक्षेण मणिना । १५. य. उत्कामुख्यभिधः । १६. छ. सुत । १७. छ. ततः ।
 १८. छ. पशुवेदसत्याशतम् । १९. छ. एकादशो । २०. य. कुमादिभिः । २१. छ. क्रूरकर्मेण ।
 २२. छ. क्रूरकर्मादि । २३. छ. हरिद्राया ।

उत्कामुखीद्वितीयास्त्रं 'स्तम्भनं भुवनत्रये' ^१ ।
 ज्वालामुखीतृतीयास्त्रं स्तम्भनं ऋषिदेवतं ॥२८॥
 जातवेदमुखीवाणो ब्रह्मविष्णवादिरक्षणे ^२ ।
 'सर्वकर्मस्तम्भने च' ^३ चतुर्थं प्रजपेत् सुत ॥२९॥
 बृहद्भानुमुखीवाणं ^४ पञ्चमं ^५ परिकीर्तितम् ^६ ।
 पटपञ्चकोटिचामुष्ठा कालीकोटिद्यतं सुत ॥३०॥
 सपादकोटिप्रपुरा पञ्चाशत्कोटिभैरवाः ।
 नारसिंहा यातुधानाः पूतनाः कोटिचेटकाः ^७ ॥३१॥
 समस्तस्तम्भनं पुत्र पञ्चमेन प्रजायते ।
 हस्ते सम्पाद्य ^८ 'पञ्चाश्रं शासनास्त्र' ^९ स्मरेन्मुखे ॥३२॥
 स कल्पमुखभागी ^{१०} स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।
 त्रैलोक्यविजयाख्यं च स्मरेदस्येन्द्रमुत्तमम् ॥३३॥
 यथोक्तकुण्डेषु हुनेद् वेदिकायां विशेषतः ।
 चुल्कायां शकटया प्रेताग्नी पञ्चस्थाने हुनेदपि ॥३४॥
 चत्वरं सर्वकार्याय होमयेदुक्तमार्गतः ।
 'सकृच्चै स्रक्सुचौ चैव तद्वशिव (वि)श्च इति क्रमात्' ^{११} ॥३५॥
 प्रणि (णी)ता प्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थाली च पण्मुख ^{१२} ।
 सकलं ^{१३} पूर्णपात्र च 'ब्रह्मचर्येण योगतः' ^{१४} ॥३६॥
 क्रमात् सर्वं तु सम्पाद्य होमं कुर्यात् प्रयत्नतः ^{१५} ।
 'क्रूरकर्माणि नश्यन्ति' ^{१६} तालकेन हुनेत् सुत ॥३७॥
 पीतपुष्पंश्च जुहुयात् क्रूरकर्मविनाशने ^{१७} ।
 'क्रूरतर्पणयोगेन क्रूरविघ्ननिवारणम्' ^{१८} ॥३८॥

१. '—' छ. त्रिलोकीस्तम्भने जपेत् । २. ब्रह्मविष्णोः । ३. छ. सर्वकर्मणस्तम्भने ।
 रा. सर्वकर्माणि स्तम्भने च । ४. छ. वाणः । ५. छ. पञ्चमः । ६. छ. परि-
 कीर्तितः । ७. छ. षट्पूतनाः । रा. पूतनाः । ८. छ. संपाद्य । ९. '—' छ. चापास्त्रं
 प्रसिंशास्त्रं । १०. छ. कल्पमुखभागी । रा. संकल्पमुखिभोगः । ११. '—' छ. —
 समिस्कुपा स्रक्सुचौ च त्विष्मावर्हीति च क्रमात् । १२. छ. सम्मुखः । १३. छ. कलशं ।
 १४. छ. ब्रह्मचर्यं तु जापकः । रा. ब्रह्मचर्येण योगकः । १५. छ. प्रयत्नवित् । १६. छ. रा.
 क्रूरकर्माणिनिर्नाशि । १७. छ. क्रूरकृतिनमनाशने । १८. '—' छ. —कोत्तेन तर्पयेदेव क्रूर-
 ग्रहनिवारणम् । रा. क्रूरे तर्पणया देवी० ।

इति सक्षेपतः पूर्वं^१ किमन्य^२ श्रातुमिच्छसि ।

इति श्रीपद्मविद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे चतुस्त्रिंशत्पटलः ^३ ॥३४॥

॥ अथ पञ्चत्रिंशः पटलः ॥

योविदाकर्षणासक्ता^४ फुल्लचम्पकसन्निभाम्^५ ।

दुष्टस्नग्धनमासक्ता^६ वगला स्तम्भिनी भजे ॥१॥

क्रोञ्चभेदन उवाच—

नमस्ते सर्वसर्वेश कर्पूरद्युतिसन्निभ^७ ।

योगिन्^८ सर्वादिसर्वज्ञ बीजभेद वद प्रभो ॥२॥

ईश्वर उवाच—

अथात सम्प्रवक्ष्यामि वगलामन्त्रनिर्णयम् ।

पट्त्रिंशदक्षरी विद्या त्रिपुरे चैव तिष्ठति^९ ॥३॥

सारयायनमते देव्या^{१०} नारायण^{११} ऋषि स्मृतः^{१२} ।

‘गायत्रीछन्द उद्दिष्ट देवता वगलाह्वया^{१३} ॥४॥

सांख्यायनमते देवि वामाचारविधिमेत ।

ब्रह्मयामनसम्मत्या ब्रह्मा चास्य ऋषि स्मृतः ॥५॥^{१४}

‘गायत्री छन्द आदिष्ट देवता सर्व कीर्तिता^{१५} ।

‘जयद्रथास्त्रयामले तु^{१६} ऋषिर्नारद एव हि ॥६॥

छन्दादिषु पूनवत् स्यादिति सक्षेपतो मतम् ।

हारिद्रसहिताया तु ऋषिर्नारायणो मतः ॥७॥

अनुष्टुपछन्द आरयात्^{१७} देवता वगलामुक्ता ।

सांख्यायनमत देवी(वि)कली जागति^{१८} केवलम् ॥८॥

मृत्युञ्जयजप कृत्वा ततो विद्या जपेत् सुत^{१९} ।

मृत्युञ्जय विना देवी ‘वगला नहि सिद्ध्यति^{२०} ॥९॥

१ छ. प्रोक्त । २ छ विमयच् । ३ छ द्वात्रिंशति(एकत्रिंशत्)पटल ॥३२॥

४ प ०सक्ता । ५ छ लम्बचम्पकः । ६ छ ०स्तम्भनासक्ता । ७ रा कर्पूर-
सन्निभ । ८ छ योगी । ९ ‘—’ छ त्रिषा च परित्यजिता । रा ०पेव तिष्ठति ।

१० छ देवी । ११ छ नारदोऽप्य । १२ छ मतः । १३ ‘—’ छ —अनुष्टुपछन्द
आख्यात देवता वगलाह्वया । रा ०देवता सर्व कीर्तिता । १४ प यमिद प पुस्तके नास्ति ।

१५ प पुस्तके नास्ति पद्याद्विनिश्चयः । १६ छ जयद्रथास्त्रयामले । रा जयद्रथयामने
तु । १७ छ त्रिष्टुप् छन्द समाख्यात । १८ छ जागति । १९ छ सुतो । २०

‘—’ प पुस्तके नास्ति ।

'ऋषिच्छन्दत्रितयक मतभेदात् प्रदर्शितम् ।
 बीजसज्ञा प्रवक्ष्यामि'¹ साख्यायनमुखोद्भवाम्² ॥१०॥
 शिवबीज³ वह्नियुक्तं रतिबिन्दुसमन्वितम् ।
 'वह्निशिवांतराले तु'⁴ भूबीज योजयेत्(पेत्) सुत⁵ ॥११॥
 स्थिरमाया इति⁶ श्रोक्ता विद्या त्वेकाक्षरी शुभा ।
 मनया विद्यया देवि किञ्च सिद्धयति भूतले ॥१२॥
 पीतवासामते पुन⁷ स्थिरमाया शृणु प्रिये ।
 'स्थिरमायासमायुक्तं स्थिर बीजमितोरितम्'⁸ ॥१३॥
 तदुद्धार शृणु प्राज्ञ⁹ गगनादं¹⁰ समुद्धरेत् ।
 स्थिरबीज समुद्धृत्य रतिबिन्दुसमन्वितम्¹¹ ॥१४॥
 स्थिरमाया 'द्वितीया तु इन्द्रस्त चन्द्रभूषितम्'¹² ।
 'इयं शप्ता'¹³ महाविद्या कीर्तिता¹⁴ स्तम्भिता शिवे¹⁵ ॥१५॥
 रेफयोगान्महेशानि¹⁶ निदशप्ता¹⁷ फलदायिनो ।
 रेफयुक्ता जपेद्विद्या 'फलसिद्धिर्न सशयः'¹⁸ ॥१६॥
 रेफहीना जपेद्विद्या कोटिजाप्य¹⁹ न सिद्धयति ।
 'तस्माद्भेकेण समुक्त'²⁰ स्थिरदा²¹ परमेश्वरि ॥१७॥
 सजपेच्च 'व ततः पुन'²² तस्य सिद्धिर्भविष्यति ।
 लघुपोढा महापोढा पञ्जर न्यासमेव हि ॥१८॥
 वगलामातृकान्यास²³ 'कुत्सुका च विचिन्त्य वे'²⁴ ।
 सेत्वादिकाभराजान्त²⁵ न्यासमृग्युञ्जय²⁶ जपेत् ॥१९॥

१. '—' चिह्नस्योऽर्थो य. पुस्तके नास्ति । २. य. रा समुद्भवात् । ३. छ. जीव-
 बीज । ४. छ. वह्निर्न संवा० । रा. वह्नि नः शि० । ५. छ. शिवे । ६. छ. त्विद । ७.
 छ. देवि । ८. छ.—स्थिररूपा तु या माया स्थिरमाया तु सा मता ।

रा. स्थिररूपा तु भाभाया स्थिरमाया समायतु ।

९. छ. प्राज्ञे । १०. छ. रा. गगनात् । ११. छ. ०विभूषितम् । १२. छ. त्विदं
 देवि बिम्बं चन्द्रभूषिता । १३. य. रा. इमं सप्त । १४. य. रा. कीर्तिता । १५. य.
 रा. सुत । १६. य. रा. महा संव । १७. य. रा. निदशमाक् । १८. य. रेफहीना
 न सजपेत् । १९. छ. ०जाप्ये । २०. छ. तस्माद्भेके तु संयोग्य । रा. तस्माद्भेकेस्तु
 समुक्ते । २१. छ. स्थिराया । २२. छ. प्रयतो देवि । रा. स जपे शतदः पुन । २३.
 छ. ०मातृका न्यास । २४. य. रा. सज्जदाचरितं तदा । २५. य. सत्कादि० । २६.
 य. रा. न्यस्य ।

ततो वै प्रजपेद्विद्या सदा जाग्रत्स्वरूपिणीम् ।
 पीतवासामते देवि^३ पञ्चप्रेतगता^४ स्मरेत् ॥२०॥
 चतुर्भुजा वा द्विभुजा पीतार्णवनिवासिनीम् ।
 सुधाणवसमासीना मणिमण्डपमध्यगाम् ॥२१॥
 साध्यायनमते देवि^५ संस्मरेद् यत्नतः शिवे^६ ।
 सुन्दर्याः पश्चिमान्नाये वगला परितिष्ठति^७ ॥२२॥
 श्रीकात्यायु(उ)त्तराम्नाये वगला पूज्यता सुत ।

इति षड्विद्यायमे साध्यायनतन्त्रे पञ्चत्रिंशत्पटल * ॥३५॥

॥ अथ षट् त्रयः पटलः ॥

योगिनीकोटिसहिता पीताहारोपचञ्चलाम्^८ ।
 वगला परमा वन्दे^९ परब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥३॥

श्रीवभेदन उवाच-

चिदानन्दघनावास^{१०} 'वरमन्य च मा वद'^{११} ।
 सम्प्रतीत परेशान 'सर्वभूतहिते रत'^{१२} ॥२॥

ईश्वर उवाच-

अथ 'स्कन्द प्रवक्ष्यामि'^{१३} 'सर्वकर्मणि नाशनम्'^{१४} ।
 किं केन 'तामस प्राप्त'^{१५} किं केन शान्तिकारणम्^{१६} ॥३॥
 कारण तत्र केन स्यात् तत्सर्वं कथ्यते शृणु ।
 प्रादौ मन्त्र जपेत् पुन त्रिसहस्रमतिद्वितः ॥४॥
 ततः कवचमालम्ब्य^{१७} पुनर्मन्त्र जपेत् तथा^{१८} ।
 षट्त्रिंशद्द्वारमावर्त्य^{१९} पुरश्चरणमुच्यते ॥५॥
 सर्वकर्मणि निनशि^{२०} योगोऽथ परिकीर्तितः ।
 अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥६॥

१. घ. रा. पुत्र । २. घ. मती । ३. घ. रा. वचरेत् । ४. घ. रा. पुत्र । ५. घ. रा. सुत । ६. ख. परिनिष्ठिता । रा. परितिष्ठताम् । ७. ख. त्रिंश (द्वात्रिंश) पटलः । ८. घ. पीताहारोपि० । रा. पीतहारो० । ९. घ. रा. देवी । १०. ख. वनस्वामिन् । ११. ख. सारमन्य-महेश्वर । रा. सारमन्य च मा वद । १२. ख. सर्वभूतहितेश्वर । १३. ख. वनमुख मन्त्रमि । १४. ख. सर्वकर्मणनाशनम् । १५. घ. रा. नाम सम्प्राप्तं । १६. ख. कारकम् । १७. घ. रा. मारम्य । १८. घ. रा. तत । १९. घ. रा. षड्विंशद्वारमावृत्या । २०. ख. सर्वकर्मणनिनाशि ।

त्रिशतं च शतं चापि अष्टोत्तरसहस्रकम् ।
अष्टोत्तरशतं वापि कवचं पूर्ववद् भवेत् ॥७॥
धुद्रकर्मणि^१ निनशि योगोऽयं परिकीर्तितः ।
अनुलोमविलोमेन योगो वसुविधः स्मृतः ॥८॥
पट्विंशद्धारमावर्त्यं 'भवेदेवं विधिः सुत'^२ ।
कवचं प्रपठेदादौ मध्ये स्तोत्रं 'तु उच्चरेत्'^३ ॥९॥
शतावर्त्तनमात्रेण 'कूरकर्मणनाशनम्'^४ ।
अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥१०॥
गायत्रौ कवचं पुन मन्त्रं स्तोत्रं पुनश्च सा ।
पट्विंशद्धारमावर्त्यं पट्विंशावर्त्तनं चरेत् ॥११॥
धनेन क्रमयोगेन सर्वकर्मविनाशनम्^५ ।
तारायां कालिकायां च 'छिन्नायामेवमेव तु'^६ ॥१२॥
मनुक्रमेण^७ सर्वत्र कुर्यादावर्त्तनं बुधः ।
मन्त्रमात्रकार्यमेतत्^८ सर्वदोषनिवारणम्^९ ॥१३॥
कवचं प्रथमं^{१०} बाणः कवचं च द्वितीयकम्^{११} ।
कवचं च तृतीयं^{१२} स्यात् कवचं च चतुर्थकम्^{१३} ॥१४॥
कवचं पञ्चमं^{१४} बाणः कवचं प्रपठेत् कुतौ^{१५} ।
अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥१५॥
रणस्तम्भे 'सर्वकर्माशाने मृत्युस्तम्भने'^{१६} ।
'प्राणरक्षादिभ्यरक्षादेभ्यो रक्षणकर्मणि'^{१७} ॥१६॥
योगोऽयं कथितः पुन वगलामन्त्र ईरितः^{१८} ।
शताक्षरीं जपेदादौ कवचं हृदयं तथा ॥१७॥

१. घ. रा. भवेत् । २. घ. रा. धुद्रकर्मणि । ३. ख. भवेदेकं पुनस्तथा । रा. भवेदेकं ।
४. ख. पुनश्च उत् । ५. घ. रा. कूरकर्मणि० । ६. ख. सर्वकर्मणनाशनम् । ७.
घ. रा. चिन्मयमेव एव च । ८. ख. मनुक्रमेण । ९. ख. मन्त्रयात्रे० । १०. ख.
विनाशनम् । ११. ख. पञ्चमो । १२. ख. द्वितीयकः । १३. ख. तृतीयः । १४.
ख. चतुर्थकः । १५. ख. रा. पञ्चमो । १६. घ. रा. उतः । १७. ख. मनस्तम्भे
सर्वकर्मणनाशने । १८. 'ख.—

मृत्युस्तम्भे प्राणरक्षादिभ्यरक्षणकर्मणि ।

१९. ख. कल्प्यादौ मन्त्रबोपतः । रा. कल्प्यादौ० ।

कवच वेदवर्णं च कवच चन्द्रवर्णकम्^१ ।
 अनेन क्रमयोगेन योग कमणनाशन^२ ॥१८॥
 'एकाक्षरी जपदादो'^३ कवच प्रपठद् यतः^४ ।
 वेदाक्षरी जपदादो कवच प्रपठेत्तथा ॥१९॥
 वेदाक्षरी^५ ततो जाप्य कवच तदनन्तरम् ।
 षट्त्रिंशदक्षरी जाप्य कवच तदनन्तरम् ॥२०॥
 वेदाक्षरीमनुपुर^६ कवच प्रथम तथा ।
 'कवच च द्वितीय स्यात् कवच च तृतीयक'^७ ॥२१॥
 'कवच च चतुर्थं स्यात् कवच पञ्चमस्तथा'^८ ।
 कवच हृदय^९ वाच कवच शतवर्णकम् ॥२२॥
 'कवचात् कीलन योग त्रिलोच्यरक्षणाकर'^{१०} ।
 अनेन क्रमयोगेन त्रिलोक्यस्तम्भन भवेत्^{११} ॥२३॥
 इन्द्रादिपदसस्तम्भ समुद्रस्तम्भनेऽपि^{१२} च ।
 'महाविद्यास्तम्भन च सत्य ब्रह्मास्त्रस्तम्भनम्'^{१३} ॥२४॥
 'महापाशुपतादीनां स्तम्भने'^{१४} मृत्युपातने ।
 महाब्रह्मास्त्रयोगो हि^{१५} गोपनीय प्रयत्नतः ॥२५॥

इति षड्विंशतमे सांख्यायनतन्त्रे ईश्वरपञ्चसुखसत्वादे महाविध्यप्रयोग
 कथनं नाम^{१६} षट्त्रिंशत्पटल^{१७} ।

॥ अथ पञ्चत्रिंश पटलः ॥

पीतवर्णसमासीना पीतगन्धानुलेपनाम् ।
 पीतोपहाररसिका भजे पीताम्बरा पराम् ॥१॥

पञ्चभजन उवाच-

स्वामिन् सिद्धगु(ग)णाध्यक्ष समस्तगणपारग ।
 रहस्य सूचित पूर्वं किञ्च मह्यं प्रदर्शितम् ॥२॥

१ ख षड्वर्णक । २ घ रा योगकर्माणि नाशिन । ३ घ जपेदादो कवच
 ४ ख तथा । ५ घ वेदाक्षरी । ६ ख पञ्चचत्वारिंशन्मनु । रा चत्वारिंश मनुपुर
 ७ घ '—' चिह्न नस्त्वोच्छ्रयी घ. पुस्तके नास्ति । ८ ख हृदया । ९ ख —

कवचात्कीलनं मनु प्राणत्रिलोक्यरक्षणम् ।

११ ख क्षणात् १२ घ स्तम्भनेति । १३ अथमशो नास्ति ख पुस्तके । १४
 ख महापाशुपतास्त्रादिपातने । १५ घ रा पि । १६ घ रा नास्तिपथमश । १७
 ख चतुस्त्रिंशत् (त्रिंशत्) पटल

ईश्वर उवाच—

तत्त्व वद महादेव यदि पुत्रोऽस्मि ते वद ।
 रहस्यातिरहस्यं च कथ्यते शृणु पुनरु ॥३॥
 अमात्यानां च दुष्टानां दूषकानां दुरात्मनाम् ।
 क्षुद्रग्रहादिजालीनां संन्यानामपि पुनरु ॥४॥
 क्रूरप्रह्विनाशाय सर्वशान्त्यर्थमेव च ।
 पराभिचारशान्त्यर्थं रक्षार्थं च विशेषतः ॥५॥
 अघमृशुविनाशाय रोगशान्त्यर्थमेव च ।
 परसेनाविनाशाय स्वसेनारक्षणाय च ॥६॥
 मातार्थं च परार्थं च विजयार्थं च पण्डित ।
 वेतालाश्च विनाशार्थं भैरवादिप्रशान्तये ॥७॥
 सप्तस्तविषनिर्नाशे मुष्टिकुक्षिविषावपि ।
 शस्त्रास्त्रबाणसंघाने सहारास्त्रादिनाशने ॥८॥
 शस्त्रास्त्रस्तम्भने पुत्र तद्वच्छवि (व) विषावपि ।
 स्तब्धीकरणनिर्नाशे (पाशे) मूलकोत्थापनेऽपि च ॥९॥
 देशोपद्रवनाशार्थं राष्ट्रमङ्गलं समागते ।
 कोटिकुत्पाविनाशार्थं स्वेष्टरक्षणकर्मणि ॥१०॥
 हृतनष्टप्रणष्टादिवारुगान्धेयजालेषु ।
 पत्रपुष्पफलं शाखाजटाश्वक्षीरनीरके ॥११॥
 महाविषे तैजसे तु विष्णुविजयकृते ।
 उद्भ्रान्तधूलिनाशार्थं घटकुत्पाविनाशने ॥१२॥
 जलकुत्पाविनाशार्थं स्पलकुत्पाविनाशने ।
 वृक्षकुत्पायनाशार्थं गन्धकुत्पाविषावपी (पि) ॥१३॥
 महोद्वपदनिर्नाशे विरूढानाशनेऽपि च
 भेरुडनाशार्थं च रिक्तधावेणभरवे ॥१४॥
 सप्तस्तम्भे दाहनाशे मन्त्रमण्डलरोगहृत् ।
 सप्तग्रहास्त्रयोगोऽयं सर्वथा चलति ध्रुवम् ॥१५॥
 अघोघमृशूनां च समश्चयैकमाय (प) दि ।
 त प्रयोगमहायोग शृणु सावहितो भव ॥१६॥

कुण्डे वा स्थण्डिले वेद्या चत्वरं पितृकानने ।
 चुल्या सकटया(शकट्या)वा देवि होतव्य सर्वकर्मणि ॥१७॥
 शुभऋक्षादियोगे तु प्रयोगमादरेत् सुत ।
 स्वस्तिवाचनमासाद्य द्विजाना वरण चरेत् ॥१८॥
 वगलास्त्रं मध्यमागे करे निष्ठुरवधनम् ।
 पञ्चास्त्रं दक्ष(क्षि)णाशे च मूलास्त्रं होमकर्मणि ॥१९॥
 त्रैलोक्यविजयास्त्रं च स्मरेदस्त्रेण्यमुत्तमम् ।
 निष्ठुराश्चालयेदेव दीपकास्त्रं प्रयोजयेत् ॥२०॥
 पूर्वभागे तु पञ्चास्त्रमुत्तरे मुण्डमुत्तमम् ।
 महोग्रविजय दक्षे विजयास्त्रं प्रयोजितम् ॥२१॥
 हेलारका चदला तूर्या तथा पञ्चाङ्गुली प्रिया ।
 पश्चिमे कीर्तिता विद्या वधद्वयपुरस्सरम् ॥२२॥
 आदौ गणपतिं पूज्य द्वारपूजादिसयुतम् ।
 विप्राणा वरणं कृत्वा वगलादीपमाचरेत् ॥२३॥
 मण्डले वगलादीपो(प) कवचे मूलदीपकः ।
 पीताशा(शी) पीतवस्त्राढ्या(ढ्यः) पीतयज्ञोपवीतवान् ॥२४॥
 पीताक्षनी पीतभक्षी पीतशय्यापरायणः ।
 हरिद्राक्षेण मणिना सर्वं कार्यं जपादिकम् ॥२५॥
 हरिद्राभिः सुरक्षाभिः रोचनापूतमिश्रितैः ।
 बिल्वप्रसूनैर्जुं हुयात् सर्वोत्पातनिवारणम् ॥२६॥
 अथवा पीतपुष्पैस्तु हरिद्रामधुयोजनम् ।
 हरिद्रया हरिद्राणि नश्यन्त्येव न शयः ॥२७॥
 अनेन योगच(व)र्गेण सर्वोत्पातनिवारणम् ।
 पीताभरणभूषाढ्य (ढ्य) पीतशालानिवासकृत् ॥२८॥
 क्षतमटोत्तरक्षत त्रिषत च सहस्रकम् ।
 त्रिसहस्रं पञ्च तथा दिग्विषत्यादिरेव च ॥२९॥
 पञ्चत्रिंशच्च पञ्चाशत् सहस्रं लक्षमानकम् ।
 लक्षोपरि महेशानि न होमोर्गस्त महोत्तले ॥३०॥
 सुन्दर्या कालिकाया च वैदिके कोटिमात्रकम् ।
 होमस्य तु दशांशेन तर्पणं भाज्जनं तथा ॥३१॥

सुरया तर्पणं पुत्र तेन मार्ज्जनमाचरेत् ।
 अभिषेको विप्रभोज्य साङ्गयोग प्रसिद्धयति ॥३२॥
 नात. परतरो योगो विद्यते भुवि मण्डले ।
 सर्वकर्मविनाशार्थं विपनाशार्थमदमुतम् ॥३३॥
 गोपनीय गोपनीय गोपनीय प्रयत्नतः ।
 रहस्यातिरहस्य च रहस्यातिरहस्यकम् ॥३४॥
 इति संक्षेपतः प्रोक्तं तोषयेद्दक्षिणादिना ।
 प्रयोगस्योपसंहार (र) कर्त्तव्यं सिद्धिमिच्छता ॥३५॥

इति पञ्चविंशतपटले साव्यायनतन्त्रे
 पञ्चविंशतः (चतुस्त्रिंशत्) पटलः ॥३५॥

ॐ

परिशिष्टम्—(क)

ऋष्यादि-पातध्यानादियुताः

॥ सांख्यायनतन्त्रगता मन्त्राः ॥

१. एकाक्षरीवगलामन्त्रः— ह्रीः ।

ॐ अस्य श्रीवगलामुर्येकाक्षरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दः श्रीवगलामुखी देवता लं बीज, ह्रीं शक्ति, ईं^१ कीलक श्रीवगलामुखीदेवताम्बा-प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः— ब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीवगलामुखीदेवतायै नमो हृदि लं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, रं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

परन्यासः—ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट् ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वीपट्, ॐ ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयान्यासः—ॐ ह्रीं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रीं शिखायै वषट्, ॐ ह्रीं कवचाय हुम्, ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वीपट्, ॐ ह्रीं भ्रूवाय फट् ।

ध्यानम्—यादी भूकति रज्जुति क्षितिपतिर्येदग्नरः नीतति,
क्रोधी शान्तति दुर्जनं सुवनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ।
गरीं खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रिणा यन्त्रितः,
श्रीनित्ये वगलामुरि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्य नमः ॥
[पञ्चमः पटल — पृष्ठ—१२, १३]

२. श्रीवगलाष्टत्रिंशदक्षरीविद्यामन्त्रः—ॐ ह्रीं वगलामुरि सर्वदुष्टनाशाय मुरा पद स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं चिनाय ह्रीं ॐ स्वाहा ।

ॐ अस्य श्रीवगलामुरिष्टत्रिंशदक्षरीविद्यामहामन्त्रस्य श्रीनारदऋषिः, बृहतीछन्दः^२, श्रीवगलामुखीदेवता, लं बीज, ह्रीं शक्ति, ईं^३ कीलक, श्रीवगलामुखीदेवताप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

१. 'रं' इत्यभ्यस्य । २. 'बृहतीछन्दः' इत्यभ्यस्य इत्यन्ते । ३. 'ईं' इत्यभ्यस्य ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीनारदपंचमे नमः शिरसि, वृहतीछन्दसे नमो मुखे,
श्रीवगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, लँ बीजाय नमो गुह्ये, हँ शक्तये नमः पादयोः,
इं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्रीं शङ्खगुणाम्यां नमः, ॐ ह्रीं वगलामुखि तर्जनीभ्यां
स्वाहा, ॐ ह्रीं सर्वदुष्टना मध्यमाम्यां वषट्, ॐ ह्रीं वाच मुख पद स्तम्भये
अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्रीं जिह्वा कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वीषट्, ॐ ह्रीं बुद्धि
विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्रीं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं वगलामुखि शिरसे
स्वाहा, ॐ ह्रीं सर्वदुष्टना शिखायै वषट्, ॐ ह्रीं वाच मुख पदं स्तम्भय
कवचाय हुँ, ॐ ह्रीं जिह्वा कीलय नेत्रत्रयाय वीषट्, ॐ ह्रीं बुद्धि विनाशय
ह्रीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—चतुर्भुजा त्रिनयना कमलासनसंस्थिताम् ।

त्रिशूल पानपात्र च गदा जिह्वा च विभ्रतीम् ॥

विम्बोष्ठौ कम्बुकण्ठी च समपीनपयोधराम् ।

पीताम्बरा मदधूणी ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम् ॥

[सप्तमः पटलः—पृष्ठ-१६-१७]

३. श्रीवगलामुखीगायत्रीमन्त्रः—ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भन-
वाणाय धीमहि तन्नो वगला प्रचोदयात् ।

ॐ अस्य श्रीवगलागायत्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, ब्रह्मास्त्र-
वगलादेवता, ॐ बीज, ह्रीं^१ शक्तिः, विद्महे कीलक, श्रीवगलामुखीदेवताप्रसाद-
सिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मपंचमे नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे,
श्रीब्रह्मास्त्रवगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः
पादयोः, विद्महे कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे शङ्खगुणाम्यां नमः, स्तम्भनवाणाय
धीमहि तर्जनीभ्यां स्वाहा, तन्नो वगला प्रचोदयात् मध्यमाम्यां वषट्, ॐ ह्रीं
ब्रह्मास्त्राय विद्महे अनामिकाभ्यां हुम्, स्तम्भनवाणाय धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां वीषट्,
तन्नो वगला प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे हृदयाय नमः, स्तम्भनवाणाय धीमहि शिरसे स्वाहा, तन्नो वगला प्रचोदयात् शिखायै वषट्, ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे कवचाय हुम्, स्तम्भनवाणाय धीमहि नेत्रत्रयाय वीषट्, तन्नो वगला प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ।

ध्यान पूर्ववत् ।

[द्वादश. पटल.—पृष्ठ-२६]

४ पञ्चपञ्चाशदक्षरो वगलामुखोपञ्चास्रमन्त्र.—ॐ ह्रीं हूँ ग्लौ वगला-मुखि ह्रीं ह्रीं हल् सर्वदुष्टानां हलं ह्रीं ह्रः वाच मुख पद स्तम्भय स्तम्भय ह्रः ह्रीं हलं जिह्वा कीलय ह्रूं ह्रीं ह्रीं बुद्धि विनाशाय ग्लौ हूँ ह्रीं ॐ स्वाहा ।^१

ॐ अस्य श्रीवगलामुखोपञ्चास्रमहामन्त्रस्य वसिष्ठऋषिः, पङ्क्तिरुद्धन्द, रणस्तम्भनकारिणी वगलामुखीदेवता, लं बीज, ह्रीं शक्ति, रवीलक श्रीवगला-मुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्धार्थं जपे विनियोग ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीनारदऋषये नमः शिरसि श्रीवगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, लं बीजाय नमो गुह्ये, हं शक्तये नम पादयो ईं कीलकाय नम सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठान्या नम, ॐ ह्रीं वगलामुखि तर्जनीन्या स्वाहा, ॐ ह्रीं सर्वदुष्टानां मध्यमान्या वषट्, ॐ ह्रीं वाच मुख पद स्तम्भय अनामिकान्या हुम्, ॐ ह्रीं जिह्वा कीलय वनिष्ठिरान्या वीषट्, ॐ ह्रीं बुद्धि विनाशाय ह्रीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठान्या फट् । एव हृदयादिन्यासः ।

ध्यानम्—पीताम्बरधरा देवी द्विसहस्रभुजान्विताम् ।

सान्द्रजिह्वा गदा चास्य धारयन्ती शिवा भजेत् ॥

[पञ्चदश पटल.—पृष्ठ ३८-३९]

५ अष्टपञ्चाशदक्षर उत्कामुख्यमन्त्र —ॐ ह्रीं ग्लौ वगलामुखि ॐ ह्रीं ग्लौ सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ग्लौ वाच मुख पद ॐ ह्रीं ग्लौ स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं ग्लौ जिह्वा कीलय ॐ ह्रीं ग्लौ बुद्धि विनाशाय ॐ ह्रीं ग्लौ ह्रीं ॐ स्वाहा ।^१

१. "ॐ ह्रीं हूँ ग्लौ वगलामुखि ह्रीं ह्रीं ह्रः सर्वदुष्टानां ह्रं ह्रीं ह्रः वाच मुख पद स्तम्भय ह्र ह्रं ह्रं जिह्वा कीलय ह्रीं ह्रीं ह्रीं बुद्धि विनाशाय ह्रीं ह्रीं ह्रः ग्लौ हूँ ह्रीं ॐ स्वाहा" इत्येकविधो मन्त्रोऽप्यस्यैव दृश्यते ।

२ "ॐ ह्रीं ग्लौ वगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ग्लौ वाच मुख पद ॐ ह्रीं ग्लौ स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं ग्लौ जिह्वा कीलय कीलय ॐ ह्रीं ग्लौ बुद्धि नाशाय नाशाय ॐ ह्रीं ग्लौ स्वाहा" इत्यपि मन्त्रेदो दृश्यन्तेऽप्यत्र ।

ॐ अस्य श्रीउत्कामुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीअग्निवराह^१ ऋषिः, ककुप्^२ छन्दः,
श्रीउत्कामुखी देवता, ह्रीं बीज, स्वाहा शक्तिः, स्त्रीं कीलक, जगत्स्तम्भनकारिणी
श्रीउत्कामुखीदेवताम्वाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीवराहर्षये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे,
श्रीउत्कामुखीदेवतायै नमो हृदि, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहाशक्तये नमः
पादयोः, स्त्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवत्करपङ्क्त्यन्यासाः ।

ध्यानम्—विलयाभलसकाशा वीरा वेदसमन्विताम् ।

विराग्मयी महादेवी स्तम्भनार्थं भजाम्यहम् ॥

[पञ्चदश. पटलः—पृष्ठ-३६]

६. पट्टिबर्णात्मक. श्रीजातवेदमुख्यस्त्रमन्त्र.—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ वगला-
मुक्तिं सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ॐ जिह्वां कीलक ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ बुद्धिं नाशय नाशय ॐ ह्रीं ह्रीं
ॐ स्वाहा ।^३

ॐ अस्य श्रीजातवेदमुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीकालाग्निरुद्र ऋषिः, पक्तिद्वन्द्वः,
श्रीजातवेदमुखी देवता, ॐ बीज, ह्रीं^४ शक्ति, ह्रीं कीलकम्, मम श्रीजातवेद-
मुखीदेवताम्वाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीकालाग्निरुद्रर्षये नमः शिरसि, पक्तिद्वन्द्वसे नमो
मुखे, श्रीजातवेदमुखीदेवतायै नमो हृदये, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये
नमः पादयोः, ह्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवत्करपङ्क्त्यन्यासाः—

ध्यानम्—जातवेदमुखी देवी देवता प्राणरूपिणीम् ।

भजेऽहं स्तम्भनार्थं च स्तम्भनीं^५ विद्वरूपिणीम् ॥

[षोडशः पटलः—पृष्ठ-४०-४१]

१. 'यश्ववाराह' इत्यपि पाठः । २. 'अनुष्टुप्' इत्यप्यत्र ।

३. मन्त्रोऽयं सूत्रानुसारेण तु द्वापट्टिबर्णात्मको जायते किमस्म्यत्र त्रिम्बोदूतरीत्या इत्यप्ये
पट्टिबर्णः—

“ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं वगलामुक्तिं सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय
स्तम्भय ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ जिह्वां कीलक ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ बुद्धिं नाशय नाशय ॐ ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ॐ स्वाहा ॥

४. 'ह्रीं' इत्यपि पाठः । ५. चिन्मयोमिति पाठः ऋषिः ।

ॐ अस्य श्रीवृहद्भानुमुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीसविता ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीवृहद्भानुमुखी देवता, ह्रीं बीज, ह्रीं शक्तिः, ॐ कोलक, श्रीवृहद्भानुमुखी-देवताम्बाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ध्याप्यादिन्यासः—श्री सवित्यूपये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीवृहद्भानुमुखीदेवतायै नमो हृदये, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, ॐ कोलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवरकरपङ्क्त्यासाः ।

ध्यानम्—कालानलनिभा देवी ज्वलत्पुञ्जशिरोरुहाम् ।

कोटिबाहुसमायुक्ता वैरिजिह्वासमन्विताम् ॥१॥

स्तम्भनास्त्रमयी देवी दृढपीनपयोधराम् ।

मदिरामदसयुक्ता बृहद्भानुमुखी भजे ॥२॥

[सप्तदशः पटलः— पृष्ठ-४२-४३]

६ श्रीवगलामुखीशताक्षरोमहामन्त्रः—ह्रीं ऐं ह्रीं बली श्री ग्लौं ह्रीं वगलामुखि स्फुर स्फुर सर्वदुष्टानां वाच मुख पद स्तम्भय स्तम्भय प्रस्फुर प्रस्फुर विकटाङ्गि घोररूपि जिह्वा कीलय महाभ्रमकरि बुद्धि नाशय विराण्मयि^१ सर्वप्रज्ञामयि प्रज्ञा नाशय उन्मादीकुह^२ कुह मनोपहारिणि ह्रीं ग्लौं श्रीं बली ह्रीं ऐं ह्रीं स्वाहा ॥

ॐ अस्य श्रीवगलामुखीशताक्षरीमहामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीवगलामुखी देवता, ह्रीं बीज, ह्रीं शक्तिः, ऐं कोलक, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीवगलामुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

मूलमन्त्रवरकरपङ्क्त्यासाः ।

ध्यानम्—पीताम्बरधरा सीम्या पीतभूषणभूषिताम् ।

स्वर्णसिंहासनस्था च मूले कल्पतरोरधः ॥१॥

वैरिजिह्वाभेदनार्थं छुरिकां^३ विभ्रती शिवाम् ।

पानपात्र गदा पाश धारयन्ती भजाम्यहम् ॥२॥

(सप्तदशः पटलः— पृष्ठ-४४-४५)

१. 'विराण्मय' इत्यपि पाठः
इति पाठोऽभ्यस्तः ।

२. 'उन्मादं कुह' इति पाठोऽपि दृश्यते ।

३. 'छुरिका'

१० अष्टाविंशत्युत्तरं कक्षताक्षर श्रीवगलामुखीपरिच्छाभेदनमन्त्रः^१—ॐ ह्री श्री ह्री 'ग्लो' ऐं क्ली ह्रौ क्षी^२ वगलामुखि परप्रयोग ग्रस ग्रम ॐ ह्री श्री ह्री ग्लो ऐं क्ली ह्रौ क्षी ब्रह्मास्त्ररूपिणि परविद्याप्रसिद्धिं भक्षय भक्षय ॐ ह्री श्री ह्री ग्लो ऐं क्ली ह्रौ क्षी परप्रजाहारिणि प्रजा भ्रगय भ्रगय ॐ ह्री श्री ह्री ग्लो ऐं क्ली ह्रौ क्षी म्बनाखरूपिणि बुद्धि नाशय नाशय पञ्चेन्द्रियज्ञान भक्ष भक्ष ॐ ह्री श्री ह्री ग्लो ऐं क्ली ह्रौ क्षी वगलामुखि ह्रौ फट् स्वाहा ।^३

ॐ अस्य श्रीपञ्चविद्याभेदिनीवगलामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषि गायत्रीछन्दः, परविद्याभक्षिणी श्रीवगलामुखी देवता श्री बीज, ह्रा शक्ति त्रा कीलक, श्रीवगलादेवीप्रसादसिद्धिद्वारा परविद्याभेदनार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास — श्रीवह्मण्यं नमः शिरसि, गायत्रीछन्दमे नमो मुखे, परविद्याभक्षिणीश्रीवगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, श्री बीजाय नमो गुह्ये, ह्री शक्तये नमः पादयोः, को कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास — श्री ह्री को अङ्गुष्ठाम्या नमः, वद वद तजनीम्या स्वाहा, वाग्वदिनि मध्यमाम्या वपद्, स्वाहा अनामिकाभ्यां ह्रौ, ए क्ली सौ कनिष्ठिकाभ्यां वीपद्, ह्री करतलकरपृष्ठाम्या फट् ।

हृदयादिन्यास — श्री ह्री को हृदयाय नमः, वद वद शिरसे स्वाहा, वाग्वदिनि शिखायै वपद् स्वाहा कवचाय ह्रौ, ए क्ली मौ ननत्रयाय वीपद्, ह्री मूलाय फट् ।

ध्यानम् — सप्तमन्त्रमयी देवी सर्वाकर्षणकारिणीम् ।

सर्वविद्याभक्षिणी च भजऽहं विधिपूर्वकम् ॥

[विद्य पटल — पृष्ठ-५४-५५]

११ त्रिंशत्वाविंशदक्षरौ वगलास्त्रमन्त्रः—ॐ^३ ह्री ह्रौ ग्लौ ह्री वगलामुखि मम शत्रून् ग्रस ग्रस खाहि खाहि भक्ष भक्ष मोक्षित पिव पिव वगलामुखि ह्री ग्लौ ह्रौ 'फट् स्वाहा'^४ ।

१ सूत्रानुसारेण वर्णैश्चारादयः सप्त त्रिंशदक्षरस्यैव भवन्ति । २ 'ग्लौ' ह्रौ ऐं क्ली क्षी' तथा 'ग्लो ऐं क्ली ह्रौ क्षी' इति पाठनयोः क्वचिद्विपर्ययेते ।

३ यद्यपि पुस्तके तु 'ॐ' शब्दस्योपयोगो नावलोक्यते, न च तदाहस एव स्वाहा शब्दस्य व्यवहारस्तथापि शब्दद्वयी प्रत्यावश्यकौ सभाष्या वगलास्त्रानुपुरक्तत्वात् ४ रा. कु. पुस्तके 'फट्-स्वाहा' स्थाने 'ह्रौ स्वाहा' इति दृश्यते । यत्र पुस्तकेऽप्ययं मन्त्रो द्विचत्वारिंशदक्षरात्मक एव गृहीतः किन्त्वसौ ऋष्यादिन्यासे 'फट् कीलक' इति ग्रहणवस्तुधुरेव प्रतीयते ।

ॐ अस्य श्रीवगलास्त्रमन्त्रस्य श्रीदुर्वासा ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, अस्त्र-
रूपिणीश्रीवगलामुखी देवता, ह्रीं बीज, ह्रीं शक्ति, फट् कीलक श्रीप्रस्त्र-
रूपिणीवगलाम्बाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग ।

ऋष्यादिन्यास.—श्रीदुर्वाससे ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे,
अस्त्ररूपिण्यै श्रीवगलादेवतायै नमो हृदये, ह्रीं बीजाय नमो गुह्य, ह्रीं
शक्तये नमः पादयो, फट् कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास — ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाम्बा नमः, वगलामुखि तर्जनीम्बा स्वाहा,
सर्वदुष्टानां मध्यमांम्बा वपट्, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकांम्बा ह्रै, जिह्वा
कीलय कनिष्ठिकांम्बा वोपट्, बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठांम्बा
फट् ।

हृदयादिन्यास — ॐ ह्रीं हृदयाय नमः, वगलामुखि शिरसे स्वाहा,
सर्वदुष्टानां शिखायै वपट् वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय ह्रै, जिह्वा कीलय
नेत्रत्रयाय वोपट्, बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—चतुर्भुजा त्रिनयना पीनोत्तपयोधराम् ।

जिह्वा सङ्गं पानपान 'यदा धारयन्ती पराम्' ॥१॥

पीताम्बरधरा देवी पीतपुष्पैरलङ्कितान् ।

विम्बोष्ठी चारुवदना मदाधूषितलोचनाम् ॥२॥

सर्वविद्याकर्षिणी च सर्वप्रज्ञापहारिणीम् ।

भजेऽहं चास्त्रवगला सर्वाकर्षणवर्भसु ॥३॥

[द्वाविंश पटल — १४-५९-६०]

१२. श्रीवगलाचतुरक्षरीमन्त्र — ॐ श्रीं ह्रीं क्रो । ॐ अस्य श्रीवगला-
चतुरक्षरीमन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषि, गायत्रीछन्द, श्रीवगला देवता, ह्रीं बीज,
श्रीं शक्ति, क्रो कीलक श्रीवगलामुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग ।

ऋष्यादिन्यास — श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे,
श्रीवगलादेवतायै नमो हृदये, ह्रीं बीजाय नमो गुह्य या शक्तये नमः पादयो,
श्री कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास — ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाम्बा नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीम्बा स्वाहा,
ॐ ह्रै मध्यमांम्बा वपट्, ॐ ह्रै अनामिकांम्बा ह्रै ॐ ह्रै कनिष्ठिकांम्बा
वोपट्, ॐ ह्रै अस्त्राय फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ हला हृदयाय नम, ॐ ह्ली शिरसे स्वाहा, ॐ हलू शिखायै वषट्, ॐ हलं कवचाय हुँ, ॐ ह्लौ नेत्रत्रयाय वोषट्, ॐ ह्लः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—कुटिलाकसयुक्ता मदाधूर्णितलोचनाम् ।

मदिरामोदवदना प्रवालसदृशाधराम् ॥१॥

सुवर्णशैलसुप्रसूयकठिनस्तनमण्डलाम्^१ ।

दक्षिणावर्त्तसन्नाभिसूक्ष्ममध्यमसयुताम् ॥२॥

रम्भोरपादपद्मा ता पीतवस्त्रसमावृतानाम् ।

[पञ्चविंशः पटलः—पृष्ठ-६७-६८]

१३. अशौत्यक्षरात्मकः श्रीवगलाहृदयमन्त्र — ॐ^२ आ ह्ली को ग्ली^३ हुँ ऐ वली श्री ह्ली वगलामुखि आवेशय आवेशय आ ह्ली को ब्रह्मास्त्ररूपिणि एहि एहि आ ह्ली को मम हृदये आवाहय आवाहय सन्निधि^४ कुरु कुरु आ ह्ली को मम हृदये चिर तिष्ठ तिष्ठ आ ह्ली को हुँ फट् स्वाहा ।

अस्य मन्त्रस्य ऋष्यादिन्यास-ध्यानादयो नैबोल्लिखिताः पुस्तके ।

[अष्टाविंशः पटलः—पृष्ठ-७७-७८]

१४. श्रीवगलाष्टाक्षरात्मको मन्त्रः—ॐ आ ह्ली को हुँ फट् स्वाहा ।

ॐ अस्य श्रीवगलाष्टाक्षरात्मकमन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीवगलामुखी देवता, ॐ बीज, ह्ली^५ शक्ति, को^६ बोलक श्रीवगलादेवता-भ्याप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मर्षये नम शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीवगलामुखीदेवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्ली शक्तये नमः पादयोः, को^७ कीलकाय नम सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ हला अङ्गुष्ठान्म्या नम, ॐ हली तर्जनीन्म्या स्वाहा, ॐ हलू मध्यमाभ्या वषट्, ॐ हलं अनामिकाभ्या हुँ, ॐ हलो कनिष्ठिनाभ्या वोषट्, ॐ ह्ल करतलकरपृष्ठाभ्या फट् ।

हृदयादिन्यास — ॐ हला हृदयाय नम, ॐ हला शिरसे स्वाहा, ॐ हलू शिखायै वषट्, ॐ हलं कवचाय हुँ, ॐ ह्लौ नेत्रत्रयाय वोषट्, ॐ हलः अस्त्राय फट् ।

१. सुवर्णशैलवितसत्^० इत्यपि स्वचित् । २. यद्यपीदं सूत्रे नैव सूत्रितं किन्तुनेन विनाश्यं मन्त्र एतेनाशौत्यक्षरात्मकं स्यादत एवात्र स्वं कृतम् ३ 'ग्ली' इति शक्तिवाराहवी-
अस्याने रा० पुराणे ब्रह्मराहोत्रे 'ह्लौ' इति वृत्तने । ४. 'सन्निधि'व्योति पाठोऽप्यत्र ।

ध्यानम्—युवती^१ च मदोद्विक्ता^२ पीताम्बरधरा शिवाम् ।

पीतभूषणभूषाङ्गी समपीनपयोधराम् ॥१॥

मदिरामोदवदना प्रवालसदृशाधराम् ।

‘पानपात्र च शुद्धि च’^३ विभ्रती वगला स्मरेत् ॥२॥

[त्रिशः पटलः—पृष्ठ-८१]

१५. एकोनषष्टिदर्शकः श्रीवगलोपसहारविद्यामन्त्रः—‘तौ हूँ ऐं ह्रीं’ श्री कालि कालि महाकालि एहि एहि कालरात्रि आवेशय आवेशय महामोहे महामोहे स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर स्तम्भनास्त्रशमनि हूँ फट् स्वाहा ।^४

ॐ अस्य श्रीवगलास्त्रोपसहारविद्यामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, स्तम्भनास्त्रविभेदिनी श्रीकालिका देवता, ‘श्री बीजं’, फट् शक्ति, स्वाहा कीलक श्रीवगलाप्रसादसिद्धिद्वारा ब्रह्मास्त्रोपसहारार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, स्तम्भनास्त्रविभेदिनीश्रीकालिकादेवतायै नमो हृदये, श्री बीजाय नमो गुह्ये, फट्शक्तये नमः पादयोः, स्वाहा कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ नौ अङ्गुष्ठान्या नमः, ॐ क्री तर्जनीन्या स्वाहा, ॐ कूं मध्यमाभ्यां वपट्, ॐ कं अनामिकाभ्यां हूँ, ॐ कौ कनिष्ठिकाभ्यां वोपट्, ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ क्री हृदयाय नमः, ॐ क्री शिख्ये स्वाहा, ॐ कू शिखायै वपट्, ॐ कं कवचाय हूँ, ॐ क्री नेत्रत्रयाय वोपट्, ॐ क्रः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—काली करालवदना कलाधरधरा शिवाम् ।

स्तम्भनास्त्रैकसहारी ज्ञानमुद्रासमन्विताम् ॥१॥

बीणापुस्तकसयुक्ता कालरात्रि नमाम्यहम् ।

वगलास्त्रोपसहारीदेवता विश्वतोमुखीम् ॥२॥

भजेऽहं कालिका देवी जगद्रक्षकरा शिवाम् ।

[द्वानिशः पटलः—पृष्ठ—८७-८८]

१. ‘श्रीरत्ना’ अित्यन्यत्र । २. ‘मदोद्विक्ता’ अित्यपि पाठः । ३. ‘वैतित्रिह्यां पानपात्र’ इति पाठोऽपि दृश्यते । ४. ‘श्रीं’ इत्यन्यत्र । ५. एष मन्त्रस्तु रा० पुस्तकपुस्तकशोधार्थ-स्वरूपः । पुस्तकस्यपूजान्तु निषध्यातादृष्टात्मक एष मन्त्रो जायते ‘कालरात्रि’ पदार्थे आवेशय आवेशय इति पदद्वयविरहात् ।

पीताम्बरा सहस्राक्षी ललाटे कामितार्थदा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु पीताम्बरसुधारिणी ॥५॥

करुण्योश्चैव युगपदतिरत्नप्रपूजिता ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु वगला नासिकां मे गुणाकरा ॥६॥

पीतपुष्पैः पीतवस्त्रैः पूजिता वेददायिनी ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु वगला ब्रह्मविष्ण्वादिदेविता ॥७॥

पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युगपद्भ्रुवोः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु वगला बलदा पीतवस्त्रभृक् ॥८॥

अधरोष्ठौ तथा दन्तान् जिह्वा च मुखगा मम ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु वगला पीताम्बरसुधारिणी ॥९॥

गले हस्ते तथा बाहौ युगपद्द्विदा सताम् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु वगला पीतवस्त्रावृता घना ॥१०॥

जङ्घाया च तथा चोरो गुल्फयोश्चातिवेगिनी ।

अनुक्तमपि यत्स्थानं त्वक्केशनससोम मे ॥११॥

असृग्मास तथास्त्रीनि सन्धयश्चाति मे परा ।

श्रीशिव उवाच—

इत्येतद्वरद गोप्यं कलावपि विशेषतः ॥१२॥

पञ्जरं वगलादेव्या दीर्घदारिद्र्यचाननम् ।

पञ्जरं यं पठेद्भक्त्या स विभर्त्ताभिभूयते ॥१३॥

अव्याहतगतिश्चापि ब्रह्मविष्ण्वादिसत्पुरे ।

स्वर्गे मर्त्ये च पाताले नारयस्त कदाचन ॥१४॥

प्रवाधन्ते नर व्याघ्राः पञ्जरस्य कदाचन ।

अतो भक्तैः कौलिकैश्च स्वरक्षार्थं सदैव हि ॥१५॥

पठनीयं प्रयत्नेन सर्वानर्यविनाशनम् ।

महादारिद्र्यशमनं सर्वमाङ्गल्यवर्द्धनम् ॥१६॥

विद्याविनयसत्सौख्यं महासिद्धिकरं परम् ।

इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पञ्जरं साधु गोपितम् ॥१७॥

पठेत् स्मरेद् ध्यानसन्धः स जीयान्मरुत् नरः ।

यं पञ्जरं प्रविश्यैव मन्त्रं जपति वै भुवि ॥१८॥

कीलिको वा कीशिको वा व्यासच३ विचरेद् भुवि ।
चन्द्रसूर्यप्रभुभूँत्त्रा वसेत् कल्पायुत दिवि ॥१६॥

सूत उवाच—

इति वयितमक्षेप श्रेयसामादिनीज,
भयसतदुरितघ्नं ध्वस्तमोहान्धकारम् ।
स्मरणमतिशयेन प्रातरैवात्र मर्त्यो,
यदि विद्यति सदा यः पञ्जर पण्डित स्यात् ॥२०॥
इति श्रीपरमरहस्यातिरहस्ये श्रीबीताम्बरायः
वज्जरं सम्पूर्णम् ॥

घोप्रसन्नास्तु ॥ श्रीवगलामुखी प्रीयता मिति पोष सुदि १३,
संवत् १६२३ लिखित काश्या दुर्गाबाई इव पुस्तकम् ॥



परिशिष्टम् (ग)

॥ अथ वगलामुखीत्रैलोक्यविजय नाम कवचम् ॥

श्रीभैरव उवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्वरहस्यं च कामदम् ।
श्रुत्वा गुप्ततम गोप्यं कुरु गुप्त सुरेश्वरि ॥१॥
कवचं वगलामुख्या सकलेष्टप्रदं कलौ ।
यत्सर्वं च परं गुह्यं गुप्तं च शरजन्मन ॥२॥
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचेश मनोरमम् ।
मन्त्रगर्भं मन्त्ररूपं सर्वमिद्विबिनायकम् ॥३॥
रहस्यं परमं ज्ञाय साक्षादमृतरूपिणम् ।
ब्रह्मविद्यामयं वरं दुर्लभं प्राणिना कलौ ॥४॥
पूर्णमेकोनपञ्चाशद्वर्णमन्त्रमयैर्युतम् ।
त्वद्भक्त्या वच्मि देवेशि गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥५॥

श्रीदेव्युवाच—

भगवन् कुरुणासागर विश्वनाथ सुरेश्वर ।
कर्मणा मनसा वाच्यं न वच्म्यग्निभुवोऽपि च ॥६॥

भरव उवाच—

पेलोवयविजयास्यस्य कवचस्यास्य पार्वति ।

मन्त्रगर्भस्य मु(सू?) तस्य ऋषिदेवस्तु भरव ॥७॥

उरिणक् छन्द समाख्यात दवी क्ली (च?) वगलामुखी ।

बीज क्ली शो च शक्तिः स्यात् स्वाहा कीलकमुच्यते ॥८॥

विनियोगः समाख्यातस्त्रिवर्गफलसाधने ।

देवी ध्यात्वा पठेद्गर्भं मन्त्रगर्भं सुरेश्वरि ॥९॥

विना ध्यानेन नो सिद्धिः सत्य जानीहि पार्वति ।

चन्द्रोद्भासितमूर्द्धंजा त्रिपुरसा मुण्डाक्षमालाकरा,

बाला पीतस्रगुज्जला मधुमदारक्ता जटाजूटिनीम् ।

गङ्गस्तम्भनकारिणी क्षसिमुखी पीताम्बरोद्भासिता,

प्रेतस्या वगलामुखी भगवती कारुण्यरूपा भजे ॥१०॥

ॐ क्लीं मम गिरसि पातु देवी हलो वगलामुखी ।

ॐ क्ली पातु मे भाले देवी स्तम्भनकारिणी ॥११॥

ॐ भो ईं ह भ्रुजी पातु वगला क्लेशहारिणी ।

ॐ ह क्ष पातु मे नेत्रे नारसिंही शुभङ्करी ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री पातु मे जङ्घे श्र भ्रा इ भुवनेश्वरी ।

ॐ क्लीं स मे श्रुती पातु ईं उ ऊ ऋ मुखेश्वरी ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्री ह्रीं सदाव्याम्भे नासा ऋ लृ सरस्वती ।

ॐ ह्रीं ह्रीं मे मुख पातु ए ए छिग्रमस्तका ॥१४॥

ॐ श्री मे दधरी पातु ओ श्री दक्षिणकांतिका ।

ॐ ह्रीं ह्रूं मे द तान् पातु अ अ मे चद्रकांतिका ॥१५॥

ॐ श्री श्री रसना पातु क स म ष चरात्मिका ।

ॐ ऐं सौ मे हनौ पातु ङ च छ ज ष जानकी ॥१६॥

ॐ श्री श्री (क्ली) मे गल पातु ऋ अ ट ठ गणेश्वरी ।

ॐ ह्रीं स्कंधी सदाव्या मे ङ ङ ण चंव तोतला ॥१७॥

ॐ ह्रीं मे भुजी पातु त थ द वरवर्णिनी ।

ॐ क्लीं सौ मे रत्नो पातु ध न प परमेश्वरी ॥१८॥

- ॐ जू क्रो मे रक्ष वक्ष फ व भ भगवासिनी ।
 ॐ क्रां हा पातु मे कुक्षि म य र चन्द्रवल्लभा ॥१६॥
 ॐ श्री ह्रू पातु मे पार्श्वो न व लम्प्रोदरप्रसू ।
 ॐ क्रो ह्रू पातु म नाभि श ग पम्पुखपालिनी ॥२०॥
 ॐ ऐ सौ पातु मे पृष्ठ स ह हाटकस्त्रिणी ।
 ॐ बली ए पातु मे शिश्न ङ क्ष ह तत्त्वरूपिणी ॥२१॥
 ॐ बली ह्रू मे कटि पातु पञ्चाशद्वर्णमातृका ।
 ॐ ए बली पातु मे गुह्य अ आ क गुह्यकेश्वरी ॥२२॥
 ॐ श्री ऊरु सदाव्यान्मे इ ई ख रगगामिनी ।
 ॐ जू स पातु मे जानू उ ऊ ग गणवल्लभा ॥२३॥
 ॐ श्री ह्री पातु मे जङ्घ ऋ ॠ ष च महारिणी ।
 ॐ श्री स पातु मे गुल्फी लृ लृ ङ च च कालिका ॥२४॥
 ॐ ए ह्री पातु मे सन्धी ए ए छ ज जगत्प्रिया ।
 ॐ श्री बली पातु मे पादौ ओ औ भू ज भगादरी ॥२५॥
 ॐ ह्री मे सववपु पातु अ अ ह्री त्रिपुरेश्वरी ।
 ॐ श्री पूर्वे सदाव्या मा अ आ ट ठ शिखामुखी ॥२६॥
 ॐ ह्री याम्या सदाव्यामा इ ङ ङ ए च तारिणी ।
 ॐ ह्री मा पातु वारण्या ई त थ द च क्षेत्रवरी ॥२७॥
 ॐ य मा पातु वीवेर्या उ ध न प पित्रपिता ।
 ॐ श्री पातु चैशान्या ऊ फ व वैन्दवेश्वरी ॥२८॥
 ॐ श्री मा पातु चाग्नेय्या ऋ भ म य च योगिनी ।
 ॐ ऐ मा पातु नंश्रु त्या ऋ र राजेश्वरी सदा ॥२९॥
 ॐ त्या मा पातु वायव्या नृ ल लम्बितकेशिनी ।
 ॐ प्रभाते च मा पातु लृ व वागीश्वरी सदा ॥३०॥
 ॐ मध्याह्ने च मा पातु ए श शङ्करवत्सला ।
 ॐ ह्री बली श्री पातु मा साय ऐ प शादरी सदा ॥३१॥
 ॐ ह्री निशादौ च मा पातु ओ स सागरसायिनी ।
 ॐ बली निशीथ च मा पातु औ ह हरिहरेश्वरी ॥३२॥

वली ब्राह्मे मा मृहूर्त्तञ्ज्याद लं त्रिपुरसुन्दरी ।
 विस्मारितं च यत्स्थानं वज्रितं कवचेन तु ॥३३॥
 ह्रीं तन्मे सकलं पातु मम क्षीं वगलामुखी ।
 इतीदं कवचं गुह्यं मन्त्राक्षरमयं परम् ॥३४॥
 त्रैलोक्यविजयं नाम सर्ववर्णमयं स्मृतम् ।
 मन्त्रप्रकाश्यमदातव्यं न श्योतव्यमवाचकम् ॥३५॥
 दुर्जनायाकुलीनाय दीक्षाहीनाय पार्वति ।
 न दातव्यं न दातव्यमित्याशा परमेश्वरि ॥३६॥
 दीक्षित उपाध्यायविहीनं शक्तिभक्तिमान् ।
 कवचस्यास्य पठनात् साधको दीक्षितो भवेत् ॥३७॥
 कवचेनमिदं गोप्यं सिद्धविद्यामयं परम् ।
 ब्रह्मविद्यामयमिदं यथाभीष्टफलप्रदम् ॥३८॥
 न कस्य कथितं चैतत् त्रैलोक्यविजयेन्द्वरी ।
 यस्य स्मरणमात्रेण देवी सद्यो वशीभवेत् ॥३९॥
 पठनाद्वारणाञ्चास्य कवचेनस्य साधकः ।
 कलौ विचरते वीरो यथा ह्रीं वगलामुखी ॥४०॥
 इमं मन्त्रं स्मरन्मन्त्री सन्नामं प्रविशद् यथा ।
 त्रि. पठेत् कवचेनान्तु मुमुक्षुः साधकोत्तमः ॥४१॥
 शत्रून् कालसमानान् तु जित्वा स्वगृहमेप्स्यति ।
 भूमिं धृत्वा तु कवचं मन्त्रगर्भं तु साधकः ॥४२॥
 ब्रह्माद्यानमरान् सर्वान् सहसा वशमानयेत् ।
 धृत्वा गले तु कवचं साधकस्य महेश्वरि ॥४३॥
 वशमाप्नोति सहसा रम्भाद्यप्सरसां गणा ।
 उत्पातेषु च घोरेषु भयेषु विविधेषु च ॥४४॥
 रोगेषु कवचेन च मन्त्रगर्भं पठेन्नरः ।
 कर्मणा मनसा वाचा तद्भयं शान्तिमेप्स्यति ॥४५॥
 श्रोदेव्या वगलामुख्याः कवचेन यथा स्मृतम् ।
 त्रैलोक्यविजयं नाम पुत्रपौत्रपनप्रदम् ॥४६॥
 ऋणहर्तारमेतत्स्यात्तत्क्षमीभोगविवर्द्धनम् ।
 घन्ध्यां धारयते कुक्षौ पुत्रं पश्यति नान्यथा ॥४७॥

मृतवत्सा च विभूत्याथ कवच वगले सदा ।
 दोर्घायुर्व्याधिहीनस्तु तत्पुत्रस्तु भविष्यति ॥४८॥
 इतीदं वगलामुस्याः कवचेश मुदुर्लभम् ।
 प्रेलोक्त्रयविजय नाम न देय यस्य कस्यचित् ॥४९॥
 प्रकुलीनाय मूढाय भक्तिहीनाय देहिने ।
 लोभयुक्ताय देवेशि न दातव्य कदाचन ॥५०॥
 शिष्याय भक्तियुक्ताय गुरुभक्तिपराय च ।
 लोभदन्तविहीनाय कवचेश प्रदीयताम् ॥५१॥
 अभक्तेभ्यो विपुत्रेभ्यो दत्त्वा कुष्ठो भवेन्नरः ।
 फल गृह न चाप्नोति पर च नरक व्रजेत् ॥५२॥
 दीपमुज्ज्वात्य मूलेन पठेद्वर्मदमुत्तमम् ।
 प्राप्ते कन्याकंवारे च राजा तद्गृहमेप्यति ॥५३॥
 मण्डलेशो महेशानि सत्य सत्य न सशयः ।
 इदं तु कवचेश तु मया दिव्यं नगात्मने ॥५४॥
 पूजनात् पठनाच्चास्य चतुर्वर्गफलप्रदम् ।
 गोप्य गुप्ततर देवि गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥५५॥

इति वदयामले उमामहेश्वरसहादे वगलामुखीप्रलोक्त्रयविजय नाम कवचं सम्पूर्णं
 श्रीवगदम्भापंशमस्तु । मिति माघकृष्ण ५ सवत् १६२२ ईव दुर्गायाः ।

परिशिष्टम् (घ)

॥ अथ, श्रीपीताम्बरारत्नावलीस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीपीताम्बरार्यं नमः ॥

श्रीङ्कारद्वयसम्पुटान्तरपुटं मायास्थिराद्वन्दितं,
 तन्मध्ये वगलामुखीति विमलं सम्बोधनं सर्वं च ।
 दुष्टानामयं वाचमाशु च मुख^१ सस्तम्भयेत्यक्षरं,
 जिह्वा कीलय कीलयेति च^२ लिखेद् बुद्धिं तथा नाशय ॥१॥
 ब्रह्मास्य सकलार्थसिद्धिजनकं पटत्रिंशदण्डात्मक-
 म्प्रोक्तं पद्मभुवा हिताय जगता यन्नामदायै पुरा ।

जीयन्मुक्तपदे विभान्ति सुधियो येषां मुखे भासते,
 निर्द्वन्द्वामृतसागरेन्दुकिरणाहाराश्चकोरास्तु ते ॥२॥
 प्रोमित्यादिस्वरूप^१ जपति तव शिवे द्वाब्दतन्मात्रगर्भा-^२
 वाचो यस्मात् परार्थप्रकटितपटवो वर्णरूपा निरीयुः ।
 ब्रह्माद्यैः पञ्चतत्त्वं; परिवृतमनघ चित्प्रबोधाधिमस्य,
 दुर्ज्ञेयं योगयुक्तं. कथमपि मनसा^३ योगिभिर्गृह्यमाणम् ॥३॥
 ह्यो^४ बीज 'हृदि यस्य'^५ भाति विमल लक्ष्मीः स्थिरा तद्गृहे,
 धैर्यं तस्य कलेबरेऽपि विशते^६ दीर्घायुषो भूतले ।
 कल्पान्तेऽपि वृद्धिमेति विमला तद्वद्यवली परा,^७
 शौर्यं स्वयंमुपैति तस्य पुरतस्त्वस्यन्ति वादीश्वराः ॥४॥
 धृष्टं^८ वारिधिमुद्यतो जनकजानापोऽपि पीताम्बरे ।
 त्वा ध्यात्वाऽर्णवसोपणे कृतमतिः सेतुं प्रचक्रे द्रुतम् ।
 जित्वा राक्षसमुग्रशत्रुमबलान् बन्दीन् विमुच्योऽमरान्,
 कीर्त्तिं लोकसुखोदया व्यरचयत् कल्पस्थिरामन्त्रिके ॥५॥
 गर्वो हवंति रद्धुं क्षितिपतिमूँकायते वाक्पति-
 र्बह्नि क्षीयति दुर्जनः. सुजनते पुण्यायते वासुकि ।
 श्रीनित्ये बलले तवाक्षरपदैर्यन्त्रीकृता^९ यन्त्रिताः,
 के के नो निपतन्ति 'सस्तमुकुटाभ्रन्द्राकंतुल्या अपि ॥६॥
 सावण्यामृतपूरिते तव कृपापाङ्गे निमग्ना नरा
 'ब्रह्मेशादिदिगीशवृन्दमपि ते जानन्ति गुञ्जोपमम् ।
 येषां चेतसि सत्पिताऽसि बगले । ते विश्वरक्षाक्षमाः,
 प्रारब्धं दृढयन्ति सत्वरतरं विम्वरविम्रीकृताः ॥७॥
 'मुह्यस्व समुपैति ससदि तवाऽपाङ्गावलोके नर',
 किं तच्चित्रमहो स्वयं प्रभवते सृष्टिस्थितिध्वसने ।
 यश्चित्ते सव 'भाति मामक इति'^{१०} त्वदर्शनं यस्य वा,
 त सर्वं हाणिमादयोऽप्यतितरामाराधयन्ते ध्रुवम् ॥८॥
 क्षीणानां^{११} बलदायिनी जलनिधौ 'पोतस्थितौ नाविका',^{१२}
 तत्प्राण^{१३} धनकुञ्जगह्वरगिरिन्माघ्रादिभीतेष्वपि^{१४} ।

१. स. प्रोमित्याद्य । २. गर्भा । ३. तपसा । ४. ह्यो । ५. हृदये वि । ६. भजते ।
 ७. ततिः । ८. • ये नित्यतो । ९. भद्रयुः । १०. ब्रह्मेशादिदिगीशपोतमृतमपि ।
 ११. स. भक्तिमायु कुण्डले । १२. विमानां । १३. पोतस्थितानां यत्रिः । १४. स. प्रार्थ ।
 १५. • सत्वेत्यपि ।

त्वा पीताम्बरधारिणी 'परशिव चन्द्राद्वंचूढा गदा-'^१

हस्ता वामकरे^२ प्रतीपरसनामुन्मीलयन्ती^३ भजे ॥६॥

स्वेच्छ^४ ये प्रणमन्ति पादयुगल पीताम्बरे ! तावक,

ते वाञ्छाधिकमर्थमाप्य सकला सिद्धि भजन्ते पुन ।

यद्यत्कतुं मुरीकरोति वगसे^५ त्वत्साधकोऽत्राधुना,

तत्सञ्ज्ञातमिवेक्षते तव कृपाऽभाङ्गावल्लोके क्षणात् ॥१०॥

वाणी^६ सूक्तिसुधारसद्रवमयी सालङ्कृतिस्तन्मुखे,

घापानुग्रहकारिणी कविजनानन्दैकसर्वादिनी ।

ध्याकतुं क्षमते विशालमतिमास्त्वत्सेवको वाङ्मय,^७

किं चिन् यदि सृष्टिमाणु रचते ब्रह्माण्डकोटधायते^८ ॥११॥

देवि ! त्वद्भक्तदृष्ट्या तुहिनगिरिमुखा पर्वता पासुतुल्या

ज्वालामालाश्च चन्द्रामृतकरसदृशा पुष्पना यान्ति नागा ।

मूकत्वे वावपतीन्द्रा सरसि समतुलामाश्रयन्ते समुद्रा

राजानो रङ्गभाव रणभुवि रिपवो विद्रवन्ते विशखाः ॥१२॥

लेह्य^९ तावकमन्त्रवीजममल दुष्टौघसस्तम्भन,

वश्याकर्पणमारणप्रमथनप्रक्षोभणोच्चाटने ।

ध्यक्त वज्रमिवापर यदि मुखे जागर्ति तस्याग्रत,

पादान्त परिसञ्चरन्ति रिपवो ये सप्तद्वीपेश्वरा ॥१३॥

नानारत्नविभूषितामलमणिद्वीपे सुधासागरे,

कल्पानोकहकाननान्तरगता या रत्नवेदी परा ।

तत्राकारितपञ्चप्रेतकमये सिंहासने सस्थिता,

ध्यायेऽहं करुणाकरा हरिहराराध्यामशेषार्थदाम् ॥१४॥

वाग्देवी यदने वसत्यविरत नेत्र च लक्ष्मी करे

दान दीनकृपालुता च हृदये वीरत्वमाजौ सदा ।

त्वद्भक्तस्य भवाधिपारतरणे तत्त्वोदयो जायते,

तेनेद नलिनीदलोपरि जलाकार जगद् भासते ॥१५॥

अञ्जत्काञ्चनतुल्यपीतवसना चन्द्रावतरोज्ज्वला,

केयूराङ्गदहारकुण्डलधरा भक्तोदयायोद्यताम् ।

१. परचमूविद्रावणोद्यद्गदा । २. वामकरेण । ३. सञ्चरसना० । ४. स्पृष्ट ।

५. मुक्ति० । ६. स्वाधुना । ७. षोडशालये । ८. दृष्टा ।

त्वा ध्यायामि चतुर्भुजा त्रिनयनामुधारिजिह्वां करे,

कर्पन्तीमहमम्ब पाहि वगले ! त्राण त्वमेवासि मे ॥१६॥

मातस्ते महिमानमुग्रमधिक प्रोक्त स्वय मानवं—

वैक्य सन्निवृत्ते^१ श्रमेण यदि वा शक्त्या गुणाम्भोनिधेः ।
नो निश्शेषतया सुरैरविदितप्रान्तस्य पद्यालये,

* तस्मात् सर्वगता त्वमेव सदसद्रूपा सदा गीयते ॥१७॥

खञ्ज ताभ्यंसमोद्यम^२ प्रकुस्ते ताभ्यं च खञ्जाधिकं,

वान्त^३ स्तम्भयते जलान्निधमने याऽव्यक्तशक्तिः शिवे ।

तद्वोज वगलेति मेऽस्तु रसनालग्न सदैवामल,

यद्ब्रह्मादिमुदुलंभ भुवि नरैः सत्प्राक्तनैर्लभ्यते^४ ॥१८॥

स्तम्भत्व पवनोऽपि^५ याति भवती^६ भक्तस्य पीताम्बरे ।

किं चित्र यदि वारिधि स्थलपद मेऽस्तु मापोपमाम् ।

कल्पानोकहकामधेनुप्रमुखं रत्नैरलिन्दस्थितं^७—

वञ्छार्थाधिकदानमाशु कृस्ते दीनेष्वदीनेष्वपि ॥१९॥

भाग्याद्यस्य मुखे विभाति विमला विद्या विशेषाधिका,

पद्त्रिंशद्विरयोदिता बहुगुणैर्वीजैस्तु सर्वार्थदा ।

त सर्वे प्रणमन्ति मानवममी^८ सेन्द्रा सुरा भूसुराः,

* कान्ताशेषमहोदय स्वकलनाक्कातत्रिलोकालयम्^९ ॥२०॥

यत्किञ्चिदुभवे विभाति विमल रत्न महानन्दन.^{१०}

या या वृत्तिरुदारता जनयते यद्यत्पर सुन्दरम् ।

यत्किञ्चिदुभवेऽप्यवा नु^{११} महता शब्देन वा कीर्त्यते,^{१२}

तत्सर्वं तव रूपमेव वगले ! ससारपारप्रदे ॥२१॥

जाग्रत्पूर्णकृपामृतीषभरिते श्रीमत्कटाक्षेक्षणो,

सर्वार्थप्रतिपादकव्रतधरे ये ये निमग्ना नरा ।

तेषा भाग्यमतीन्द्रिय निगदितु ब्रह्मादयो न क्षया

ये सङ्कल्पयिकल्पमात्ररचना प्राणात्यये हेतवः ॥२२॥

हस्ते सगृह्य चाप^{१३} शरघरनिकरैर्यत्किरात्र महाजो,

पार्श्वे ब्रह्मास्त्रविद्याभ्यसनपटुमतिर्द्वन्द्वयुद्धे तुतोष ।

१. ख. 'सन्निवृत्ते' (स्थिति पाठः) । २. 'ताभ्यंसमोद्यत' इति पाठः । ३. 'वान्त' क्वचित् ।

४. 'सत्प्राक्तनैर्लभ्यते' इति पाठः । ५. पवनोऽपि । ६. पवनो । ७. रत्नैरनेकं, स्थितं ।

८. मम । ९. कान्ताशेषः । १०. स्वकलनाक्षमयाः । ११. महानन्दनम् । १२. इत्यु ।

१३. कीर्तिते । १४. गितशरः ।

तत्सर्वं देववृन्दैरथ रिपुनिवहैर्वीक्षित सिद्धलोकै-

र्धेयं^१ शीघ्रं च सर्वं^२ तव वरजनित भाति पीताम्बरेऽन ॥२३॥

पीता पीतजटाधरा त्रिनयना पीताशुकोत्सासिनी,

हेमाभाङ्गरुचि सदाङ्कमुकुटा सञ्चम्पकसम्पुताम् ।

हस्तैर्मुद्गरवज्रवैरिरसना सविभ्रतीमादरात्,

दीप्ताङ्गी वगसामुखी त्रिजगता मस्तम्भिनीं चिन्तये ॥२४॥

कर्णालम्बितलोलकुण्डलयुगा श्वेतेन्दुमौलिं^३ करं,

केयूराङ्गदपाशमुद्गरगदावज्रादिकान् विभ्रतीम् ।

देवी पीतविभूषणामरिबुलध्वसोद्यता ये नरा

ध्यायन्त्याशु लभन्ति सिद्धिमतुला ते वालिशा ऽयु कथम् ॥२५॥

लब्ध्वा मातरशेषकान्तिभरितानन्दं^४ कृपावीक्षण,

वर्षीयानपि मोहितु प्रभवति स्त्रीवृन्दमुन्मूलितुम् ।

किं तच्चित्रमनेकधा भ्रमयते दृष्ट्या त्रिलाकीमिमा,

सूर्येन्दुस्तनधारिणीमपि बलात् कन्दर्पदर्पाधिकं^५ ॥२६॥

यन्त्र जन्मनकदु खसामन पीताम्बरे^६ तावक-

मोङ्कारद्वयसम्पुटेन पुटित शिष्टैस्तथावेष्टितम् ।

तद्वाह्ये स्थिरमाययाष्टपुटित पाशाङ्कुशाद्यावत्,

येषा चेतसि 'भाग्यतो निवसत ते विश्वसर्गक्षमा'^७ ॥२७॥

कर्पूरागुरुचन्दनैर्मृगमदैर्गोरोचनाकेशरै-

स्त्वत्पादाम्बुजमर्चयन्ति वगले^८ ये प्रत्यह् मानवा ।

ते लब्ध्वा श्रियमभुतामपि चिर भोगाश्च भुक्त्वाऽवनो,

सामुज्यालपमाविशन्ति परमानन्दोऽस्ति यत्राधिक ॥२८॥

लब्ध्वा पादयुगे रति तव शिवे धुद्रोऽपि देवेन्द्रता-

मासाद्यामरसुन्दरीभिरमलैर्भोगैर्दिवि ऋडति ।

ये हित्वा तव भक्तिमन्त्रभजनानन्दादिचर ते नरा

अष्टा धर्मपराङ्मुखा अमघियो भार वहन्ते भुवि ॥२९॥

यामाराध्य हरो हरत्वमभजद् विष्णुस्तु विश्वात्मता,

चक्रे सृष्टिमजोऽप्यवोचदक्षित वेदादिसद्वाङ्मयम् ।

ध्यात्वा ध्वान्तमशेषमाशु हरते सूर्योऽपि पीताम्बरे ।

तौत्र तारमपाकरोति रजनीनायोऽपि चूडाश्रितः ॥३०॥

१. ल. स्वयं । २. समस्त । ३. पीतेन्दुः । ४. भरित दिव्य । ५. सर्पाधिकम् ।
६. '—' सस्यिताऽक्षि वगले ते विश्वरक्षाक्षमा । ७. सतत ।

बुद्धिनाशाय कीलयाशु^१ रसनामङ्घ्र्योर्गतिस्तम्भय,
 दुष्टान् द्रावय भारयारिनिवहान् दासाश्चिरपालय ।
 इत्थं ये वगलामुखी पदगतिं लब्ध्वा पठिष्यन्ति ते,
 यन्नारूढमिवारिवृन्दमखिल कर्तुं समर्था सदा ॥३१॥
 ध्यात्वा त्वा वगले^२ पुरा गिरिसुता चक्रे शिव स्व वर,
 प्रोक्तं नार्पयितुं शिवेन गदिता सकल्पनाम्नी तदा ।
 'त्यक्ताग्निर्गलिताचलि गिरिसुतात् त्यक्त्वा गलस्तन्मुक्तात्,
 तस्मात् त्व वगलामुखी निगदिता नित्या परा योगिनी ॥३२॥
 'नागेन्द्रदेवसिद्धेर्मुनिवरनिबहृद्दर्शनं राक्षसेन्द्र-
 दिक्पालं दिक्करोन्द्रं दिनकरप्रमुखं सद्ग्रहेस्तारकाद्यं ।
 ब्रह्माद्यं स्थूलसूक्ष्मरविदितमुदिता त्व परा चोन्मनी त्व,
 नित्या पीताम्बरा त्व रिपुभयशमनी भक्तिचित्तासनस्या^३ ॥३३॥
 'शम्भुर्यद्गुणगानतोद्यतमतिनटिद्योत्सर्वस्ताण्डवे,
 चक्रे चन्द्रमयूलकम्पनकरा^४ नीराजना^५ पादयो ।
 'हेमाम्भोजदलैर्जटाजलभरैरानन्दितैर्मौलिभि^६,
 पूजा प्रत्यहमातनोति नटयन् स्वं हस्ततालादिभि ॥३४॥
 या दध्रे चतुराननोऽपि बद्धे चित्तारविन्दस्थिता,
 या वक्ष स्थलसस्थिता हरिरजामालिङ्ग्य पीताम्बराम् ।
 पद्मेहार्यमुरीचकार पुरजित्^७ सौन्दर्यसाराधिका,
 पट्चक्राक्षररूपिणी भज सखे^८ देवी जगत्पालिकाम्^९ ॥३५॥
 हस्ते भाति गदा सदात्तिशमनी रत्नावली त्वद्भुजे,
 पादे नूपुरमीशमौलिमणिभिर्नीराजित^{१०} राजते ।
 ताटङ्क श्रवणे कुचोपरि सदा^{११} कस्तूरिकालेपन,
 काश्मीरद्रवमङ्गलरागसधिका पीतच्छर्वि^{१२} तन्वते ॥३६॥
 अकारद्वयसम्पुटन पुटिता 'विद्यागमे सस्थिता,^{१३}
 पट्चक्राक्षरबीजसाररचिता पट्त्रिजदण्डात्मिकाम्^{१४} ।

१. ल. कोलयाशु । २. त्यक्तवः । ३. नागेन्द्रदेवसंघर्षं वि० । ४. भक्त० ।
 ५. ० गुणगानतापरमतिर्निश्वोत्सवे । ६. ० कम्पनचक्रः । नीराजनः । ७. हेमाम्भोजजलं० ।
 ८. नन्दिता मौलिभिः । ९. पुत्रिजित् । १०. जगद्व्यापिका । ११. ० नीराजनः ।
 १२. लसत् । १३. पीतां शुचिः । १४. विद्यामन्त्रास्ये स्थिता । १५. सत्तत्रवर्णात्मिकाम् ।

'ये-जानन्ति जपन्ति सन्ततमभिध्यायन्ति गायन्ति वा,
ते वन्द्या विबुधैश्चरन्ति भुवने सिद्धाचिता. सिद्धये'^१ ॥३७॥

स्वाहाशक्तिरपासने तव ऋपिः श्रीनारदो देवता,
नित्या श्रोत्रगलामुखी निगदिता छन्दो भवेत् त्रिष्टुभम् ।
बीजं तु स्थिरमायया विरचितं नानाविधस्तम्भने,^२
प्रोक्तं पद्मभुवाऽखिलाप्तिविनियोगोऽप्यच्युताकारता^३ ॥३८॥

हृद्यं सर्वसुरेश्वरैश्च ऋपिभिर्दुष्प्राप्यमेवादभुत,
स्तोत्रं गोप्यतमं स्वभाग्यवशतः प्राप्य^४ पठिष्यन्ति ये ।
सूक्त्या^५ देवगुरु 'धनेन धनद'^६ जित्वा चिरञ्जीविता,
पण्मासात् सुखसागरे शिवसमाक्रीडां करिष्यन्ति ते ॥३९॥

देवी स्वप्नगता स्वयं व लिखितं मह्यं ददाद्भुत,
दिव्यास्त्रं पुरतः पठस्व विमलं सिन्दूरवर्णं करैः ।
रोमाञ्चाङ्घ्रितर्हर्षमाप्य लुलितैरङ्गैः^७ पठन्त नर-
प्राप्तोऽहं परमोदयप्रदमिदं ज्ञानं कवीन्द्रादिदम्^८ ॥४०॥

प्राप्ता श्रोत्रगलामुखीवदनतः स्वप्ने सुविद्या मया,
पट्त्रिंशद्भिरिमैः सुवर्णनिचयैः सद्बीजैश्चरत्नावली ।
येषां कण्ठगता विभाति जगतीपीठे प्रयोगक्षमा,
वक्ष्याकर्पणमोहमारणविधौ स्तम्भे तथोच्चाटने ॥४१॥

चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलाम्,
लसत्कनकचम्पकद्युतिविराजिचन्द्राननाम् ।
गदाहतविपक्षका कलितलोलजिह्वाञ्चला,
स्मरामि वगलामुखी विभुश्चवाङ्मुखस्तम्भिनीम्^९ ॥४२॥

॥ श्रीपीताम्बरारत्नावलीस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥^{१०}

संवत् १८६० शके १७२५ आषाढमासे शुक्लपक्षे ५ मङ्गलावसरे लिखितं ब्रह्मचारि-
काशिनार्येन ॥ श्रीगङ्गाविश्वेश्वरारम्या नमः ॥

ॐ ॐ ॐ

१. ख पाठइय एकचत्वारिंशच्छ्लोकावनन्तरं विद्यते । २. नानाविधिः । ३. ०प्यसत्कारकः ।
४. निरयः । ५. शक्त्या । ६. धनेर्धनपतिः । ७. ललितैः । ८. कवीन्द्रादितम् ।
९. ख. श्लोकोऽप्यस्ति । १०. इति श्रीनारदोक्तं पीताम्बरादेवीस्तोत्रं समाप्तम् ।

पद्यानामनुक्रमः

पञ्चाङ्ग पद्याङ्ग

प्र

प्रणिबीजादिपायनी ३०-२०
प्रहृष्टोर्नैव मुद्राया ६-७
प्रहृष्ट कोवमुच्यते ७७-१५
प्रहृष्टयेण समुत्त ६६-२४
प्रहृष्टमात्रो हृत्वा ८४-४
प्रहोराश्च पाशुपती ६६-२६
प्रत्यर्तव्यसमुत्तो ५७-६
प्रथमा पीतपुष्पस्तु १०४-२७
प्रथमा पीतमास्या वा ३६-१७
प्रथमा वननामन्त्र ६७-१०
प्रथमः प्रवक्ष्यामि १००-६
प्रपातः सम्प्रवक्ष्यामि ६८-३
प्रथम च शिलापूजा ३३-१६
प्रथुना स्तम्भमप्यस्त ४१-१४
प्रनायक्य चित्ती राज्ञी १६-६
प्रनुव्रमेण सञ्चन १०१-१३
प्रनुष्टुपद्य द प्राश्नात् ६८-८
प्रनेन नमयोगेन १०१-१२
प्रनेन (नया) विद्याया पुन ६३-२२
प्रनेन योगवर्धेण १०४-२८
प्रनेन योगवर्धेण ६५-१०
प्रमयपत्रे चाष्टवर्णान् १०-१२
प्रमयवर्णं समुच्यते ६१-६
प्रमद्वेपो जायते च ७२-१४
प्रनेन अन्वही हृत्वा ४८-२०
प्रमययोगसमारम्भ ६६-२३
प्रमयमुविनाशार्थं १०३-६
प्रमामागस्य बीजं तु ७५-२१
प्रमात्यानां च कुटानां १०३-४
प्रमोघमृत्युनाशाय १०३-१६
प्रमो पीताम्बरादधी वक्ष्ये ६४-१

प्रमुताच्चिन्तित कार्यं ७३-३०
प्रमुतान्धसुहारी ७४-४
प्रमुताञ्जवररोणी च ७३-२६
प्रमुतासाध्य शत्रोदय ७३-२८
प्रमुतादरिगर्वं तु ७३-२४
प्रमुतास्तमते मोग ८३-१६
प्रमुत च दिवारात्री ५१-६
प्रमुत जुहुया-मन्त्री ७४-६
प्रमुत जुहुया-मन्त्री ७५-१७
प्रमुत तर्पणात्पुन ७२-१६, २०
प्रमुत तर्पणेनैव ७२-१५
प्रमुत तस्य मन्त्रस्तु ५३-२२
प्रमुत मन्त्रमिच्छा तु ८६-२७
प्ररात्नहस्तमार्गं च १५-१४
प्रकंपयचकवर्णं ४०-८
प्रकंपयचकवर्णं ४६-२८
प्रकंपने सिते-नाम ५१-६
प्रकंपने तु सध्याया ८६-२६
प्रचन कलते चैव ७१-५
प्रचन मोहदेशीयं ६६-३१
प्रचन मोहदेशे च ३४-४
प्रचयेत् पञ्चवर्षी कुर्वाद्य ७५-४०
प्रचयेत्पुर्ववस्तुत्र ७-१७
प्रचयेत्पुर्ववस्तुत्र २२-१४
प्रचयेत् पद्मोपेता ३६-२७
प्रचयेदपुन मन्त्री ८०-२१
प्रचयेद् विधिमार्गेण ३०-२६
प्रहृष्टिह्ना मदी वाङ् ३८-१६
प्रलोकेन युद्धमति ४७-१४
प्रलोतिवर्णसमुत्तो ७८-२१
प्रलोकमुत्ते निवसन् ८१-१०
प्रमयं द्द विपोरङ्गे ३२-३४

मथुतानी च शास्त्राणां ८२-१५
 मश्वत्यमूनमाथित्य ७४-६
 मश्वत्यमून प्रजपेद् ६२-५
 मश्वत्यरि घनरेव ६५-७
 मष्टकोत्तेषु वित्तिखेद २१-६
 मष्टदिवपात्रकोशाष्ट १-३
 मष्टपत्रे ऽयसेत्पुत्र ७-१२
 मष्टपाणसमायुक्त ५-१६
 मष्टमूर्ते नमस्तुभ्य ७८-२
 मष्टमूर्ते महामूर्ते २३-१
 मष्टम कठवल्ग्या च ८-२३
 मष्टम्या च चतुर्दशौ ७६-टि०
 मष्टवेतालशमने ६४-४
 मष्टायुत तपण च ८२-११
 मष्टोत्तरशत सम्यक् ५८-२०
 मष्टशशत्रमय म न ५७-७

भा

भाकपण भवच्छीघ्र ४८-२५
 भागच्छेत्पाज्ञया तस्य ४०-३३
 भाग्येन मिश्रित च ६८-२०
 भातमार्ग च पराध च १०३-७
 भादौ गणपति पूज्य १०४-२३
 भादौ भास्वरकपिणी कुरु तदा ६८-२२
 भाद्यबीज पुनश्चोक्तत्वा ४१-२६
 भाद्यबीज मनी सप्त्या ४२-८८
 भाद्यास्त बगलानाम्नी ३७-१
 भारनालस्य भाण्डे तु ८४-५
 भारनालन तद्भूम ८४-६
 भावाहिनी स्य पनी च ६-८
 भावधमद महाम न ४२-२५
 भाविवने कार्तिके च ६-३

इ

इच्छया वसते सर्वे ४०-३२
 इति संक्षेपत प्रोक्त १०५-३५
 इ द्रमस्य सिद्धे विद्या ६३-२४

इ द्वादिपदसस्तम्भ १०२-२४
 इष्टमिष्टिमवेत्तस्य ७६-१०

उ

उच्चाटनार्थ जपत्पुन ३०-टि०
 उत्तम कुण्डहोमत्र १४-३
 उत्ताटघ कण्टका दादौ ५३-३६
 उदरत्तारमानी तु ५४-४
 उमादौ च भवेच्छनु ७३-१३
 उपधार पो०यामि ७१-७
 उपस्थान चंवेतत ११-टि०
 उपस्थान त्रिजालस्य १०-१७
 उत्तुककाकयो पत्र १६-७५
 उत्कामुखी द्वितीयास्त ६-२८
 उत्तम्य बगलामन ३३-टि०
 उत्प्लोदक साम्रपाने ६४-३८

ऊ

ऊर्ध्वं रक्षामहादेवी १३-१४

श्रु

श्रुपिच्छ दक्षिणयक ६६-१०
 श्रुपिश्चाप्यग्निवाराह ३६-२५
 श्रुपिष्टामरदर्व ३-२७

ए

एकाक्षरोमहाम नै ६५-१२
 एकाक्षरीविद्यया च ५२-टि०
 एकाक्षरी च बगली ५८-१५
 एकाक्षरी जपेदादौ १०२-१६
 एकाक्षरी बगली देवी ५०-४
 एतन्नूयप्रयोग च ८६-१६
 एतन्पूजा विना पुन ३६-१८
 एतदर्चाविवर्तिम ६६-२६
 एतदर्चाविविदर्व ७०-४१
 एतदष्टाक्षरीमन ८३ टि०-२५
 एतद्यत्र नितेद भूय ६३-२७

एतद्यन्त्रं हृदि व्याख्या ६३-३०
 एतद्यन्त्रं हृदि व्याख्येद् ६२-१५
 एतद्वाक्यं ॥ मासेन ५६-३४
 एतद्विद्यापुरश्चर्या ६०-३६
 एतन्मन्त्रवर पुत्र ५६-२२
 एतन्मन्त्रस्य माहात्म्यं ८२-३
 एता मुद्राश्च ततो ६-६
 एरण्डतैलन जुहुयाद् ४८-२४
 एवमेव विधिः पुत्र ७०-४२
 एव कुर्यात् प्रातरेव ६२-१६
 एवं कृत्वा जपेन्मन्त्रं ८६-२३
 एव कृते सत्पराय ५२-२४
 एवं च पूजयेद्यन्त्रं २३-२७
 एव च पूजयेत् सम्यक् ३३-१७
 एव च मार्जनं कृत्वा १०-१५
 एवं च मार्जनं कृत्वा ८-२४
 एव च मालिकां कुर्यात् ६५-१३
 एव त्रिविधपूजा च ६६-६
 एव व्याख्या जपेत् पुत्र ८१-६
 एवं व्याख्या जपेन्मन्त्रं ५५-१६
 एव व्याख्या जपेन्मन्त्रं १३-२०
 एव व्याख्या जपेन्मन्त्रं ४३-३६
 एवं व्याख्या जपेन्मन्त्रं ४५-१६
 एव व्याख्या तु देवर्षी १०-२१
 एवं व्यासविधि कृत्वा १३-१५
 एव भूतसहस्रं च २२-१२
 एव मन्त्रदिनोपास्थि ११-२३
 एव मन्त्राभिषेकजप ८-२८
 एवं मासत्रयं कृत्वा ८४-६
 एवं मासप्रयोगेण २४-१४
 एव यः कुरुते पुत्र ७६-६
 एवं रोगसमायुक्तो २०-२७
 एवं लिखित्वा यत्र च ६२-१२
 एव द्वाकृदिने सम्यक् ६-६
 एव होमप्रयोग च ७६-२६
 एहि-शब्दद्वयं चोक्त्वा ८७-६

श्री

ॐ नमो पदमुच्चार्य ६१-७, टि०

क

कण्टक पुरपदास्य ८५-१४
 कण्टकास्तोपयेदकं ५२-६
 कण्ठे वा बाहुमूले वा ६२-१७
 कदलीमूलमाश्रित्य ६२-६
 कण्ठकां चाधवा पुत्र ३३-१५
 कण्ठा चैव ग्यसेदेव ३५-१४
 कपटादिविनाशार्थे ६५-६
 कपिस्थवृक्षमूले तु ३२-७
 कपित्थानवनीतं च ६१-३
 कर्पूरमिश्रितं तोयं २७-१२
 कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी २३-१
 करञ्जमूलमाश्रित्या ६२-१०
 करोति यस्य सप्तोप ७७-१२
 कर्पासपत्रवद्भावीः ४६-६
 कल्पते चित्तसंशोभ ३६-६
 कञ्चवात् कीलनं घोषः १०२-२३
 कवचं च चतुर्थः स्यात् १०२-२२
 कवचं पञ्चमं बाणः १०१-१५
 कवचं प्रथमं बाणः १०१-१४
 कवचं वैरवर्णं च १०२-१८
 कवीश्वरोऽपि चो-मादी ७६-८
 कस्तूरीमिश्रितं तोयं २७-१४
 कस्तूरीलेपनं कुर्यात् २४-५
 काकपत्रेण सपुष्पं ७२-१०
 काकवद्भ्रमते शत्रुः ७२-११
 काकवद्भ्रमते शत्रुः ८६-२८
 काकोलूकदनं चैव ८५-१५
 कामराजं च हृत्लेखा ४४-१०
 कामरूपारूपदेयं तु ७०-३४
 कामुकं काञ्चनासवर्तं ५-६
 कारणं तत्र केन स्यात् १००-४
 कालानवनिर्भा देवी ४३-३४

कालीतन्दय चोक्त्वा ८७-६
 कालीं करासवदनां ८८-१४
 किं तस्य जपयुक्तानां ४० टि०
 कुटिलालकस्युक्ता ६८-१२
 कुण्डे वा स्थण्डिले वेद्यां १०४-१७
 कुवेरसदृशः श्रीमान् २०-२०
 कुवेरसदृशः श्रीमान् ८२-१८
 कुवेरसदृशः श्रीमान् २७-१५
 कुवेरसदृशो नृत्वा ८०-१५
 कुमारक प्रवर्तिते ३६-३१
 कुक्षपाञ्चालदेशाब्धौ ७०-४३
 कुर्वात कृत्विमशोकेण ६२-२०
 कुर्वात् सौभाग्यसम्पूजा १६-१४
 कुलाचारसमायुक्त ३-२४
 कुपेन जुहुयात्तस्य ४६-८
 कुसुमेक्ष्वरकैरुच्य २१-२५
 कुरप्रह्विनाद्याम् १०३-५
 कृत्वा एकाग्रचित्तम् ६६-२५
 कृत्वा धमण्डल ध्वज २४-१२
 कृत्वा पवित्रस्थि च ७८-१२
 कृष्णाष्टमः चतुर्दश ३५-८
 केतकीदलहोमन ४७-११
 केलादासिस्त्रासोन १-२
 कोऽप्यत दयमनुवर्ति ६१-६
 कामल तापत्र सम्पद ७४-११
 कोटिचरदापन ध्वज ६४-३६
 कोलसारपर नाम ७०-३६
 कोलसार च १ नाम ६६-३३
 क्रमात् सर्वं तु सम्पाद ६७-३७
 कोलागमकसदृश १६-१६
 कोलाचनविधानन ७६-६
 दायादुश्चाटन कुर्वाद् ४-२७
 दायरावी भवकपट २८-२७
 दायरोपो भव मर्या ७३-२७
 क्षोरेण भमनाद्व ४८-२६
 शुद्धकमलि विनाय १०१-८

सुदप्रयोजनः पुत्र २०-१८

ल

लरस्य रत्नमादाय १६-७
 लरवात च रोम च ८६-३३
 लज्जूरजेन द्रव्येण ४८-२३
 लाने पाने च तज्जसम् १६-१६

ग

गङ्गाधर नमस्तेऽस्तु ६-२
 गङ्गाधरवपभोक्तृ ८५-२२
 गतिगर्भं च वाययानि २९-७
 गत्वा तु रिपव सर्व ५६-२३
 गम्भीरां च मदोपमतां १०-१८
 गर च तिलतैलं च ४६-३०
 गभकीलागमासक ४-८
 गर्भस्तभनदोष च ८६-२५
 गायत्री छ द द्यादिष्ट ६८-६
 गायत्री बलसानाम्नी २६-६
 गायत्री बलसानाम्नी ११-२६
 गायत्री बलवं पुन १०१-११
 गुहोदकैस्तर्पणं च २६-४
 गुणद्वय वशी पुष्ट ७७-१०
 गुणद्वय चोदितोमे १५-१३
 गुप्त बीजागम नाम १४-५
 गुहतिष्ठातुभी मोहाद ५-२२
 गुहगुह्यया विद्या ५-१२
 घटत कृत्वा येरिनाम २०-१६
 गोक्षीर प्रातररथाय ६४-३५
 गोपनीय गोपनीय १०२-३४
 गोपयत् सर्वदा पुत्र ४१-४०
 गोमयस्था हरिदां च ६५-८
 गोमये उवन दाया २६-१७
 गोमुखण हृन्नेमात्रो ४८-२२
 गोक्षीरस्यैवपुणेन १७ टि०
 गोक्षीरस्येण तृष्ट्या ४७-१७

गोडी माध्वी च पेंटी च ३३-१८
प्रसनीति पदं चोक्ता ५४-७
ग्राममध्ये हुनेमन्त्री ७४-६
ग्रामं वा नगरं वा ५८-११
ग्राम वा नगर वा ७४-१२
गर्लौ बीजं ह्रीं च पवित्रम् ६०-१०

च

चक्रपूजासमायुक्त (वतो) ४-११
चतुरक्षरी च बगला ६७-७
चतुर्दशकोणे सम्पूज्य १२-६
चतुर्भुजा च द्विभुजा १२-४
चतुर्भुजा त्रिनयना १७-११
चतुर्भुजा त्रिनयना ४६-१
चतुर्भुजा वा द्विभुजा १००-२१
चतुर्लक्ष पुरश्चर्या २६-८
चतुर्ध्वंशारिणके मन्त्रे ६७-६
चरवरे सर्वकार्या ६७-३४
चाद्रवृद्ध नमस्तेऽस्तु ४३-२
चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रादि ८३-२
चमङ्गवसनी भूत्वा ४१-१२
चलश्चनककुण्डलोत्पलित ६-१
चापचर्यामुनिपुण्य १-३
चिताभस्म चिताङ्गार ५१-१६
चिताभस्म रवी रात्री ८६-२७
चितिवस्त्र रवी प्राज्ञ २०-२१
चित्रपीताम्बरधरा ६६-२३
चिदानन्दधनावास १००-२
चिन्मयी स्तम्भनी देवी ४२-२२
चुहूचोपरि च तद्गण्ड ६४-६

छ

छन्दादिक पूर्ववत् स्यात् ६८-७
छापमासेन जुहुयान् ३५-१७

ज

जपसख्या यत्र नोक्ता ३१-२५

जपेच्च वायुबीजादि ३०-१६
जपेत्तत्र सहस्रं कं ५०-१०
जपेदमृतबीजानि ३०-१८
जम्बीरतरुमूले तु ६३-१८
जलकृत्याविनाशार्थे १०३-१३
जातवेदमये देवि ७१-१
जातवेदमुखीबाणो ६७-२६
जातवेदमुखी मन्त्र ४१-६
जातिपञ्चसमिध ४१-१७
जातिघ्नष्टो भवेच्छत्रः २८-२४
जास्याभिमानिनो ये च ५६-२६
जिह्वाप्रमादाय करेण देवी ३-१
जिह्वाप्रमादाय करेण देवी ४३-१
जिह्वा मुख च कर्णाक्षि ८६-८
जिह्वास्तम्भनमाप्नोति ६१-२०
जिह्वास्तम्भ भवेच्छत्रो ५०-८
जिह्वा कीलय उच्चार्य ३८-११
जिह्वा कीलय उच्चार्य ३६-२३
जिह्वा कीलय उच्चार्य ४०-६
जिह्वा कीलय उच्चार्य ४४-७
जिह्वो खञ्ज पानपान ६०-१२
जिह्वो वाणी च कुडि च ६४-२५
जीवन्मुक्तः ॥ एवाव ७०-४४
जुहुयात्तत्क्षणात् पुन ७५-२०
जुहुयात् पूजयच्छत्र ४१-३२
जुहुयात् पदसहस्रं तु ४६-२६
जुहुयाद्दत्ता व्यास्ता ४६-२८
ज्वालामुखी तृतीयास्त्र ३७-४
ज्वालामुखी देवता च ४१-२०
ज्वालामुख्यभिध बाण ६५-१४

त

तन्त्रेण तपेण चैव २-१७
तन्त्रेण सहित पीत्वा ८६-२६
तच्चूर्णं देवतागारे ८५-२१

तज्जल च समानीय ७१-६
 तज्जल वामचुलुके ६-१०
 ततो नागोद्वरी हृद्वच् ५५-टि०
 ततोपरि लिखेत्सम्पक् २१-५
 ततो पलाशमूलं तु ६३-टि०
 ततो वै प्रजपेद्विद्या १००-२०
 ततः कवचमालम्ब्य १००-५
 ततः शिष्य समानीय ६-७
 तत्कारिपञ्चजज्ञावै ४६-टि०
 तत्क्षणाऽनाशमाप्नोति ८६-२६
 तदादेकाधारीबीज १२-३
 तद्विप्रेण समुक्त ७१-६
 तत्प्रयोग तत्र उक्त्वा ८ टि०
 तत्फलैर्न हुनद रात्रौ ७४-८
 तत्रहयाः सन्तुभायदिच ७५-२२
 तत्तल्लक्षणमारोह ६६-२८
 तद्वद बह महादव १०३-३
 तदुद्धारं शृणु प्राज्ञ ६६-१४
 तदुपरि च सवेष्टप ७६ टि०
 तदुपरि समम्बध ३२-१९, १३, टि०
 तदूर्ध्व पूर्णमिध ८४-११
 तदूर्ध्व तिलतलेन ८४-१०
 तद्वोजोद्धारमनघ १२-३
 तदप्रधारणादेव ६३-२६
 तद्वक्ष गुलिशीटाव ३०-५
 तद्विद्या च प्रवक्ष्यामि २-८
 तद्विद्या च प्रवक्ष्यामि ८७-४
 तन्मात्रतन्मा बक्ष्यामि ६-४
 तन्मालिका एवौ वादे ६५-१०
 तपेत्तापुनर्न ७३-२६
 तपेत्तु च यथा शीरे ४२-२६
 तपेत्तु च दिवा कुर्वाद् ६८-१६
 तपेत्तु च दिवा हृत्वा ६३-१५
 तपेत्तु मन्त्रसंकारं ७१-४
 तपेदेहादनाम च ६०-१५
 तपेदेहादनाम च १७-१६

तलतलेन समुक्त १८-२५
 तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ४-६
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेना ३७-३१
 तस्मिन्च मन्त्रेण सध्यं ५३-४०
 तस्य दशनमात्रेण ८०-१७, २२
 तस्य प्रज्ञा पलाशीय ३३-२०
 तस्योपरि च पट्कोले ७६-टि०
 तस्योपरि च सवेष्टप ७६-६
 तस्योपरि ततस्तीर्थं ३५-१०
 तस्योपाय च तद्विद्या १-६
 तस्योत्पन्नमात्रेण ७७-११
 ताडयेद हृदये मन्त्रो १६-११
 तम्बूलचवणाव्यञ्ज ६२-२२
 ताम्रवात्रे जल घास्ते ६३-३१
 ताम्रवात्रे जल गुडं ६४-३७
 तार च यवलाशीज १६-४
 तारञ्च मातृवारणं १३-१७
 तार च विलिधेत् पूर्वं ३८-८
 तार च रत्नमयायां च ४०-३
 तारावि प्रवक्षे.मन्त्र ३०-१०
 तारवर्जोद्धादिमन्त्रं ३०-१६
 तारवर्ज्य मालामन्त्रद्वय ६१-६
 तालकेन हुनेत्तस्य ४३-३७
 तालकं हुनेत्तु ४५-२२
 तालकं हुनेद्वात्रो १६-६
 तालकं हुनेत्तस्य ३८-१७
 तानमध्ये विधेयमन्त्र ५०-६
 तान्तिलसमानुक्त १६-२६
 तान्त्रिक मन्त्रमिध ७५-२५
 तान्त्रिक मन्त्र २५-१८
 गुह्यमिध्वरामिध्व २३-२३
 गुह्यमिध्वरामिध्व ६३-३२
 गुह्यमिध्वरामिध्व ८० टि०
 गुह्यमन्त्रमन्त्र ६७ २८-८०
 गुह्यमन्त्रेण मन्त्र १२-८
 गुह्यमन्त्रेण मन्त्र १६-२२

तेन कुर्यान्मालिका च ६५-६
 तेन देवीकटाक्षेण २-१६
 तेन पूजा प्रकसंभ्या २२-१५
 तेन मूलेन सम्भाष्य १०-१३
 तेन शत्रुस्तस्याणाञ्च ८४-११
 तेनायुत तपणेन ७२-१६
 तेनोक्तमाह्वयनेयाय ५६-४
 तेनोक्तविधिना सम्यक् ७१-८
 स्वस्वता पञ्चवेन्द्रियासक्ति ३६-२०
 स्वस्वता सामन्त्र्यापत्री ३१-२४
 त्रिकाल तु समासीनो ६२-३
 त्रिकाल पूजयेद्देवी ३३-१६
 त्रिकालं लेपनं कुर्यात् २५-१६, २४, २५, २६
 त्रिकालमयुत जपस्वा ६१-२६
 त्रिकालमाचरेत्संभ्या ११-२७
 त्रिकालमेककालं वा ६३-३३
 त्रिकोणकुण्डे जुहुयात् १३-२१
 त्रिकोणे पूजयेत् पुन ३२-५
 त्रिदिन चापवा पञ्च ५३-४१
 त्रिषा मूर्ध्नि द्विषा बाह्वो १०-१४
 त्रिपुरारे त्रिलोकजः ५६-२
 त्रिमन्त्रवत् पायसेन ४५-१८
 त्रिमन्त्रवत् श्वेतपूजा ४६-५
 त्रिशत च शत चापि १०१-७
 त्रिसप्तमन्त्रित त्रिय ७८-२४
 त्रिसहस्रं ध्यानयुक्त ५७-८
 त्रिसहस्रं सहस्रं वा ६३-२८
 त्रिलोक्य वशमाप्नोति ८०-१६
 त्रिलोक्यविजय नाम ८६-२१
 त्रिलोक्यविजयाक्ष च १०४-२०

द

दक्षिणामूर्तिमन्त्रेण ५६-२५
 दक्षिमिधं गुह्यधीभिः ४६-६
 दशधावनकाष्ठं च ६३-२४
 दशद्विंशति भवेच्छ्रीमान् ७६-७

दशेन्द्रियस्तंभने तु १४-७
 दहयुग्मं लिखेद् बाह्वो १६-१०
 दिने दिने सहस्रं कं ६३-१३
 दीक्षामार्गं विना मन्त्रं ४-४
 दीक्षाविधिं विना मन्त्रं ४-५
 दुरालापसमायुक्तं ५-१८
 दुर्वासा श्रुतिरेवान् ६०-६
 दुष्टस्तस्मिन्मनुष्यविघ्नशमनं ११-२२
 दुष्टानां पदमुच्चार्य १६-५
 दूर्वाक्षोभं त्रिमन्त्रवत् १५-२१
 देवता कानिका नाम ८८-१३
 देवता वगलानाम्नी २६-७
 देवता वगलानाम्नी ८१-५
 देवता वगलानाम्नी ४४-१२
 देवता धामितमाप्नोति ५३-६
 देवदानवदैत्यादीन् ६४-५
 देवस्यैवानभये तु ६-८
 देवी भूत्वा जपेद्देवीं ६५-१५
 देवीं सम्पूजयेत्सम्यक् ६६-२६
 देवो भूत्वा स्वयं पुन ७०-१८
 देशोपद्रवनाशार्थं १०३-१०
 दीर्घाग्रेण समायुक्तः ५६-२६
 द्रवेण तर्पणं कुर्यात् २६-५
 द्रव्याभिमानी पृथ्वी ५६-६
 द्रव्यलाभ भवेत्सम्यक् ८०-१८
 द्विगुणो जपमात्रेण ६०-३७
 द्विगुणं जपमाप्नोति ६०-३६
 द्वितीयकोणं संपूज्य ३२-७
 द्वितीये विसिखेत् सम्यक् ६३-२६
 द्विपञ्चसप्तविंशति ६६-१८
 द्विशत मन्त्रितं च ६३-२०

घ

घनजयपुरं चैव ३५-६
 धीमहोति पदं चोक्त्वा २६-५
 धूपयेच्छत्रुघने ८५-२०

धूपयेत्तोन सर्वाङ्ग ८६-२८
 धौतवस्त्रपरोषाद्य ६-६
 घत्तूरकुमुमेनैव २२-१८
 घत्तूरक च तन्मूर्ध्नि ५२-२७
 घत्तूरद्रवसयुक्त २५-२२
 घत्तूरपत्रमादाय ८६-३६
 घत्तूर तिष्ठुक बीज २४-१३
 ध्यानभेद प्रवक्ष्यामि ६०-११
 ध्यानेन म त्रिसिद्धिः स्याद १३-१८
 ध्यान यत्नात्प्रवक्ष्यामि १७-१०
 ध्यान यत्नात् प्रवक्ष्यामि ३८-१५
 ध्यान यत्नात् प्रवक्ष्यामि ३६-२७
 ध्यान विना भवेन्मूक ४३-२१
 ध्रुवाद्यैरिति मन्त्रेण ३५-१२

न

न कर्त्तव्यं सुमुखैश्च २१-२६
 नगरे वायु ग्रामे वा ४६ टि०
 नान प्रतमुले भीमे १६-२७
 न चाभिपेक न च मन्त्रदीक्षा ७६-५
 नद्या समुद्रगामिन्या ६२-१२
 न ध्यान न च होम च ७६-४
 नद्यावर्त्तन सम्पूज्य २३-२४
 नमः कैलाशनाथाय ६७-२
 नमः कौलागमावाय १८-२
 नमः पापविह्वलाय ८३-२
 नमः शिवाय साम्बाय ६०-२
 नमस्ते गिरिजानाथ ४०-२
 नमस्ते जगतां देवी ४६-१
 नमस्ताण्डवरुद्राय ६२-२
 नमस्ते देवदेवेशि ७८-१
 नमस्ते देवदेवेशि ८१-१
 नमस्ते देवदेवेशी ५६-१
 नमस्ते पावतीनाथ ५४-२
 नमस्ते पावतीनाथ ४-२
 नमस्ते मोलिनृषेभ्य २६-२

नमस्ते योगिससेभ्य ५७-टि०
 नमस्ते योगिससभ्य १४-२
 नमस्ते योगिससेभ्य ५०-२
 नमस्ते सौकजननी ८३-टि०
 नमस्ते वगसादेवी २६-१
 नमस्ते वृषभारूढ ६४-२
 नमस्ते सर्वसर्वेश २६-२
 नमस्ते सर्वसर्वेश ८१-२
 नमस्ते सर्वसर्वेश ६८-२
 नमस्ते सिद्धससेभ्य ७१-२
 नमस्तेऽस्तु जगन्नाथ ११-२
 नमामि वगतां देवी ६७-१
 नमोऽस्तु मन्त्रागमकोषिदाय २१-२
 नागवह्नीदलेनैव ६२-१८
 नागवह्नीदल चैव ६३-२१
 नात परतरो योगी १०५-३३
 नानाकृत्रिमदोष च ८६-३३
 नानादेहजरोगादय ४५-१६
 नानामन्त्रेषु मन्त्र वा १२-३
 नानारोगविनाशार्थ ६५-८
 नानारोगहर चैव १६-४
 नानारोगे कृत्रिमैश्च १५-१७
 नानालक्ष्म्यारघोभाडप्रा ७३-१
 नारदो ऋषिरेवात्र १७-१३
 नारी दृष्टवा मानसेन ७०-४५
 नाशयदामु तत्सर्वं ८६-२७
 नि क्षिपेत्सप्तरात्र तु १६-१४
 नि क्षिपेन्नवमाषष्ठे ७-१४
 नि क्षिपे मन्त्रपूर्वं च ५६-३७
 निक्षिपेद् द्वारदेशे तु ८६-३२
 निक्षिपेद् रविवारे तु ८५-१६
 निक्षेप लभते पुत्र ८३-टि०-२०
 नित्य च शिगद्वय तु ६२-४
 नित्य चैव सहस्र तु ८६-१०
 निधान लभते तस्य ८०-२०
 निधाय पाद हृदि वामपाणिना ३१-१

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

पाशाङकुशांतरितशक्ति०	६७	८
पाशाङकुशानांतरित	५५	१३
पिचुमदतरोमूल	६२	८
पित्तयोगी भवेच्छत्र	२६	२८
पीतपुष्पश्च जुहुयात्	६७	२८
पीतयज्ञोपवीतस्तु	६५	११
पीतवर्णसमासोनी	१०२	१
पीतवर्णा महाघूर्णा	३७	१
पीतवर्णा महाघूर्णा	११	१
पीतवासामते पुत्र	६६	१३
पीताम्बरधरा देवी	१६	१
पीताम्बरधरा सौम्या	४४	१४
पीताम्बरी दक्षिणे च	१२	१२
पीताम्बरालङ्कृतपीतवर्णा	२१	१
पीतावरणभूषी च	६५	११
पीतावानी पीतभक्षी	१०४	२५
पीताघी पीतवाणी च	६६	२२
पीनोत्प्लुजटाकलापविलसद्०	६०	१
पीयूषोदधिमण्ड्यवाहविलसद्०	६	१
पुलर्षी प्रतवस्प्रण	५२	३३
पुत्रवान् जायते मर्त्यो	१७	१६
पुत्रवान् जायते लोके	८३	२४
पुत्रो देय दारो देय	७८	८०
पुन पूजा प्रवर्तय्या	६	१६
पुनर्धोमनिशाका ले	१६	१२
पुनश्च मन्त्रप्रताप०	६३	२३
पुरश्चरणक स तु	३१	२३
पुरश्चरणकृत्तिद्ध०	४	६
पुरश्चर्या विना मन्त्र	१७	१६
पुराणुत्तरमन्त्र	२७	१३
पुलिङ्गकन्याकी चव	३७	२८
पुष्पवाटयो जपेन्मन्त्र	८३	८०-२२
पुस्तके लिङ्गिता मन्त्र नृ	४	३
पुजयेद्यन्मन्त्राज च	२६	३
पूजा त्रैकालिकी नित्यं	१७	१८

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

पूजाधारण्य-व्रत	६	२
पूजायन्त्र त्रमेखं च	२३	१४
पूजायन्त्रमिदं पुत्र	२२	६
पूति चाङ्गपल नित्य	२४	७
पूर्वभागे तु पचाश्च	१०४	२१
पूर्वपूर्वयन्त्र	२३	२२
पूर्वयन्त्रबीज च	५४	६ १०
पूर्ववन्त्यासविद्या च	४३	३३.
पूर्व-यासविद्या च	४१	१०
पूर्ववत्सेपन चं च	२५	२१
पूर्वोक्तविधिवत्सेव्या	१७	२८
पूर्वोक्त यन्त्रमालिङ्ग	२३	३
पूर्वोक्ता-यासविद्या च	४४	१३
पैष्टोद्व्येण जुहुयान्	४८	१६
पोष्येखं सूक्तेन	८	२१
प्रजपेद् वयसायाश्च	७६	८०
प्रजा बुद्धि श्रिय चं च	८६	२६
प्रणव वङ्गत्रायां च	१६	२४
प्रणीता प्रोक्षणीयान्	६७	३६
प्रतिवादि भवेत्तस्मिन्	३३	२२
प्रत्येक त्रिसहस्र च	४५	२४
प्रथम वयसाबीज	५६	५
प्रदिक्षुण्णय कृत्वा	५८	१०.१४
प्रपञ्चस्तम्भन कृत्वा	२६	२६
प्रयोगदार्ढ्यं भवेन	६०	३८
प्रयोगादीनि सर्वाणि	८३	१६८०
प्रयोग चं च भवेद्	३४	२६
प्रयोग चोपसहार	२	१७
प्रयोग तपण चं च	७१	३
प्रत्य चं चतुर्विध	७	११
प्रस्थानज्ञानपारीक्ष	४	१०
प्रस्फुरद्विषय चं च	४१	१५
प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु	५१	२३
प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु	६४	८०
प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु	६६	२४

पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
प्राणप्रतिष्ठा यत्रस्य	६२ १०
प्राणिनां प्राणहरण	१५ २०
प्रातः काले भक्षयिष्या	८८ २०
प्रादेश घटहोमे च	१५ १२
प्राप्नुवाच्छत्रमुद्दिश्य	५६ टि०
प्रियङ्गुशालिगोधूम	७ १०
प्रेतभस्म रवौ ग्राह्य	१६ १५
प्रेतभ षष्ठे लिखेन्नाम	५० ११
प्रत्यवस्थ रवौ ग्राह्य	६४ २६
प्रेतरां प्रतकाष्ठे	५१ १६
प्रताग्नौ प्रेतकाष्ठं तु	५० १२
प्रताग्नौ प्रतकाष्ठं च	१६ ८
प्रताग्नौ रजकार्णी च	७५ २४
प्रताङ्गारमयीं (यीं) कुर्या	५० ३
प्रताम प्रतभस्म च	१७ १०
प्रताम प्रतभस्म च	२४ १५
फ	
फलित पुष्पित चैव	५८ १३
फलित पुष्पित्वाय	८५ २४
ब	
बगलाबीजमध्यस्थ	५१ २२
बगलामत्रविद्धिस्तु	३४ २४
बगलामुक्षिपद चोक्त्वा	५९ ६
बगलामुक्षिपद चोक्त्वा	४० ४
बगलामुक्षिपद चोक्त्वा	३६ २१
बगलाया विना मन्त्र	१४ १७
बदरीकण्टक चैव	८४ ४
बदरीमूलतो गत्वा	३२ २८
बन्धन त्रिपुरस्चैव	६६ २०
बन्धुककुमुभाभासां	४० १
बाणायुत जपेद्भीमान्	२४ ४
बातमानुषतोकाया	७६ १
बिन्दु त्रिकोणं वृत्तं च	२१ ४

पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
बिन्दुत्रिकोणवृत्तकोण	७८ ३
बिन्दुना भूषितं पुत्र	६१ टि०
बिन्दुपात्रयुता पूजा	६६ २७
बिन्दुमध्ये च सम्पूज्य	३२ ३
बिन्दुमध्ये लिखेदशीज	२१ टि०
बिन्दुपात्र गृहीत्वा तु	७० ३५
बिम्बितकलमिद्धिर्वा	१५ २३
बिम्बितकोद्भव पुष्प	२२ १६
बिम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठीं च	१७ १२
बिम्बोष्ठीं चारुवदनां	१८ १
बिम्बोष्ठीं चारुवदनां	६० ११
बीजं च वयसाबीज	३६ २६
बीजं च वयसाबीज	४३ १२
बीजरञ्जकमुक्त्वाय	४० ५
बुद्धिं धो भवेत् सद्यो	६१ २१
बुद्धिश्च ततोक्त्वाय	१६ ९
बुद्धिं विनाशयोक्त्वाय	४२ ३०
बुद्धिं विनाशय चोक्त्वा	४१ १८
बृहद्भानुमुखीबाण	६५ १५
बृहद्भानुमुखीबाण	६७ ३०
ब्रह्मविष्णुमहेशानां	३७ ५
ब्रह्मस्थाने तानुदेश	५२ ३०
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय(न्दोऽस्य)	१२ ७
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय	६७ ११
ब्रह्माश्चस्तम्भिनो क ली	८७ ३
ब्रह्माश्चस्तम्भिनो विद्या	२ ६
ब्रह्माश्चायपद चोक्त्वा	२६ ४
ब्रह्मस्थानं भोजयेत्तच्च त	६० १७
ब्रह्मस्थानं भोजयेत्तच्च त	१३ २२
ब्रह्मस्थानं भोजयेत्तच्च त	१७ १७
ब्रह्मरस समादाय	८६ ३२
भ	
भक्षयितुं ततोक्त्वाय	६० ७
भक्षयेत् प्रातस्तथाय	८८ १८

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
मानो लघुतरश्चैव	७७	६
मायादि प्रजयेत् पुत्र	३१	२१
मारये चाष्टकोये तु	१४	६
मारण भ्रात्रिरुद्वेग	२	१३
मारण मण्डसाच्छत्रो	४६	३४
मारण स्तम्भार्णं च	४२	२६
मार्जारहासरोमाञ्च	८५	१८
मालामन्त्र ताक्षयैविद्या	६१	टि०
मासा-मृत्युवसो भूत्वा	५१	१४
मासेन दात्रुमरण	२६	२८
मास सप्तदशयुवतं	४७	१५
मुदगर दक्षिणे पाश	१०	१६
मूढाश्च कुर्वते प्राज्ञान्	२८	२२
मूलमन्त्रेण चाभ्यर्च्यं	१५	१५
मूलमन्त्रेण सम्पूज्य	२२	१०
मूलेन मन्त्रित सोय	१०	१६
मुगाणां चैव दात्रूणां	८६	२५
मृगयुञ्जयजप कृत्वा	६८	६
मैत्रेय कलहोत्पत्ति	१५	१६
मोक्षार्थो च गुरु यज्ञात्	५	१६
मोहिनीद्रवसमिधं	२६	६
म्रियते न च सम्येहो	७४	१३
म्रियते नात्र सम्येहः	४६	टि०
म्रियते सत्तरात्रण	८५	२३
य		
यत् परस्मै न वचतश्च	६६	२७
यत्र कुत्रापि रिपव	५५	२१
यत्र गत्वा समासीनः	५६	३२
यद्योक्तकुण्डपु हुनेद्	६७	३४
येदा दात्रुमयोत्पन्नं	६७	४
यन्मन्त्रार्थं यमशस्त्रे कलो	२१	३
युवतो च मदीन्द्रिक्तो	८१	७
ये (य इ) च्छ-स्याकर्मशान्त्यादि	३	२२
ये वा विजयमिच्छन्ति	३	११

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
योगिनीकोटिमहिता	१००	१
योगिनीं पूजयेत् पश्चात्	६८	२१
योगिनीं पूजयेत् पश्चाद्	८२	१२
योगिनी वीरपूजां च	५५	१८
योगोऽय कवितः पुत्र	१०१	१७
योगिच्छुद्धिर्द्व्यपूजा	६६	२६, टि०
योगिदाकर्मसाधकता	६८	१
यः करोत्यर्चनं चैव	१६	२६
र		
रजते स्वर्णं गृहे वा	२२	८
रणक्षेत्रे सवकर्मा	१०१	१६
रत्नसिंहासनां वन्दे	१०	टि०
रत्नायुत संख्येन	२७	१६
रश्मोरुपासपश्चात् तां	६८	१४
रवौ गुरो भूगवन्व	३	४
रवौ रात्रौ च नि क्षिप्य	२०	२५
रवौ रात्रौ च स्रष्टाह	८५	१६
रवौ रात्रौ च सलिवश्च	२०	२२
रवौ रात्रौ दात्रुमेहे	८५	१३
राजराजः स र्वं श्रीमान्	३७	२
राजलाभो भवेत्तस्य	८३	टि० २३
राजस चैव तद्विद्यां	५	१५
राजा चैव ययो भूत्वा	८३	टि० २१
राजा वा राजपुत्रो वा	३१	टि०
राजोत्पत्त्यमादाय	१८	३
राजोत्पत्त्यसमुत्त	१८	२४
रात्रौ पूजासमायुक्तो	६१	२८
रात्रौ होमं च कर्त्तव्यं	६८	१७
रिपु-भ्यो भवेन् पुत्र	७२	२१
रूपमोवनवाञ्छनु०	६१	२४
रूपाभिमानिनो ये च	५५	२३
रूपिणीपदमुज्ज्वलं	५४	६
रेफयोमान्महेसानि	६६	१६
रेफहीना जपेद्विद्यां	६६	१७

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

रोगी च जायते भासाच्
रोपयेत् पादपुरमे तु
रोहिणीश्रवणं चैव
रोप्ये वा स्वर्णपट्टे वा

४८ २६
५२ ३२
६ ५
६२ १६

ल

सर्धं जप्त्वा मनोरेवं
सक्षमेक जपे-मन्त्रो
सक्षमोवाञ् जायते पुत्र
सक्षमीः शान्तिस्तथा पुष्टिः
सप्तपौडा च विन्यस्य
साटार्चनं चावलम्ब्य
लिङ्गित्वा शुभलग्ने तु
सौकिके चैव गुप्ताग्र
लं बीजं चैव हं क्षितिः
लं बीजं ह्रीं च क्षितिदध

५८ १६
६० ३५
८२ १४
१४ ५
५५ १४
३५ ६
७६ ७
६६ २३
१७ १४
१२ ८

व

वकुलैः पूजयेद्यन्त्रं
वक्ष्ये होमविधिं सम्पक्
वक्ष्येऽहं चोपसहार
वक्ष्येऽहं चोपसहारं
वक्ष्येह तत्र सवञ्च
वक्ष्येह पञ्चर म्यार्तं
वक्ष्येऽहं विधिवत्पुत्र
वक्ष्येऽहं स्पण्डितहोम
वगलामातृका-यास
वगलाष्टाक्षरीमन्त्र
वगलास्त्रवृत्त यद्यत्
वगलास्त्र मध्यमाने
वगलास्त्रमिदं पुत्र
वगलाहृदयेनैव
वगलाहृदय मन्त्र
वज्राक्षीरमिध च
वज्रीक्षीरं त्रिकालं तु

८० १३
७४ ३
५३ ३५
८८ १७
७७ १४
१२ ११
६६ २८
१४ २०
६६ १६
८४ ७
८६ ३१
१०४ १६
५६ ३
७६ ११, १२
७६ ३, ६
२७ ६
२५ २०

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

वडवानसनामानं
वनेचरास्तामसजन्तवश्च
वन्दे पापुपताप्यस
वन्द्या पुत्रवती चैव
वन्द्यैश्च मस्तिकापुष्पं
वस्त्रोपलासमूले तु
वशीकर तु सम्मोह
वशीकरणकार्येषु
वशीकरणसम्मोहे
वशीकरणसम्मोहो
वश्य जनानां सर्वेषां
वह्निजायासमायुक्त
वह्निजायां समुच्चार्य
वह्निबीजेन सवेष्ट्य
वह्नी यद्वत् प्रविद्यति
वाक्पाणिद्वयनाक्षणां च
वाग्बीजं च सती
वाग्मवादि जपे-मन्त्र
वाङ्मय चैव वैविध्य
वाच मुख पद चोक्त्वा
वाग्नी चैव रमा श्रीरी
वादी मूकति रज्जुति क्षितिपतिः
वाममार्गं नमेर्येव
वामोरुपरि विन्यस्य
वायव्ये च मदो-मत्ता
वाराहं क्षितिवाराह
वाराहं वगलाबीज
वाराहोबीजमध्यस्था
विट्कराहमजारोमः
विघ्नराजं समन्वयं
विदार विवदो भावाद
विद्यामाक्षपरायं च
विद्यारूपे भवेत् पुत्र
विद्यासिद्धिर्भवेत् पुत्र
विद्वेषणे च जूहुया०

६५ १३
५८ २१
७३ २
७८ २२
२३ २६
६३ १४
२४ ८
१७ २१
१४ ६
८२ १७
१५ १८
४० ७
१७ ७
२० २३
३३ २१
५८ १६
८७ ५
३० १३
५७ १
१६ २२
७ १६
१३ १६
१३ २३
८ २५
१२ १३
३० १२
३८ १२
३० १४
७२ १३
६१ २६
४८ ८०
३३ २३
८ ८०
८० १४
१८ २३

पृष्ठाङ्क	पञ्चाङ्क	
विद्वेषणे तु जुहुयाद्	१४	८
विद्वेषणे स्तम्भने च	१४	११
विना च स्तम्भनीविद्या	२	१४
विप्रचाण्डालयोः शरणं	८४	१२
विभीतकतरोर्मूले	६२	६
विराट्स्वरूपिणीं देवी	८३	१
विरामय पदं बोद्धवा	४४	८
विलिखेताश्चर्चवीजं च	५४	५
विशदभिः स्तम्भन च	६५	१०
विश्वनाथ नमस्तेऽस्तु	७६	२
विश्वमेतद्भूतितमय	५७	२
विश्वाशब्द भवानीय	१४	२
विश्वेश्वरी विश्वदग्धा	६४	१
विपतिन्मुक्पुष्पेण	२२	१६
विपतिन्मुकमूलं च	६२	११
वीणापुस्तकस्तपुवर्ता	८८	१५
वीर विद्रूप विश्वेश	३४	२
वीरान्नायमहादेव	३६	२८
वृक्षमूले जपेऽम्भान्न	५०	६
वृक्षेषु विलिखेत्पुत्र	२१	७
वेतालडाकिनीप्रेत	४१	१३
वेदलक्ष जप कुर्यात्	६८	१५
वेदवेदाङ्गपारल	४	७
वेदवेदागवारीणः	७	१६
वेदाक्षरी ततो जाप्यः	१०२	२०
वेदाक्षरीमनुपुर	१०२	२१
वेदादि विलिखेत् पूर्वं	८१	३
वेदादि विलिखेत् पूर्वं	६७	६
वेदायुत तर्पणेन	२८	२३
वैदिक च परित्यज्य	५६	२७
वैरिजिह्वाभेदानार्थं	४५	१५
व्यालव्याघ्रादमर्चयेत्	५८	१८
व्रणने म्रियते शत्रु	२८	२५
वृद्ध		
वृद्धि वराहपुत्रव्यं	६०	८

पृष्ठाङ्क	पञ्चाङ्क	
शतमष्टोत्तर चं व	५१	१५
शतमष्टोत्तरशत	१०४	२६
शतवार मन्त्रवित्वा	८८	२२
शतवार मन्त्रित च	६३	१६
शताक्षरीमहामन्त्र	४४	११
शतावर्त्तनमात्रेण	१०१	१०
शतोत्तर मवेद्विद्वाद्	४१	१६
शतोत्तर मन्त्रबीज	५४	११
शत त्रिसप्तक पुत्र	६६	१७
शत वाऽथ सहस्रं वा	३५	१६
शत सहस्रमयुत	२०	२८
शतचरच पुरश्चर्चा	५५	२०
शत्रुघ्नय भवेत् सद्यो	६१	१६
शत्रुघ्ना मारण पुत्र	७३	२५
शमस्तुमुर्धनैव	२३	२०
शमोमूलं हृन्नेऽपुत्र	७५	१६
शमोमूल समाधित्य	७५	२३
शयनीकृत्य कम्पां च	६६	३२
शत्यदात्मय तत्र	६२	१४
शस्त्रास्त्रस्तम्भने पुत्र	१०३	६
शक्रुनादिषु मन्त्रेषु	७	२०
शान्तिवश्यस्तम्भनानि	१५	१६
शान्ताद्य (स्यर्षं) जुहुयाच्छ्रुति	१७	२०
शान्तिसकृत् पृतोपेत	४७	६
शिवबीज वह् निमुक्त	६६	११
शिष्टाक्षराणि कोणेषु	६१	५
शिव्यस्य हृदय चं व	८	२७
शीतोष्णे समता कृत्वा	३६	११
शुभश्लाघादियोगे तु	१०४	१८
शुश्रूषया गुरु सम्यक्	५	१३
शुश्रूषागारे जपेदेव	६३	१७
शेषभाषापतिप्रत्यः	७४	७
शेषभाषापतिः साक्षाद्	६४	२७
शमसाधे प्रजपेऽमन्त्र	६३	१६
श्रद्धामन्त्रिसमोपेत	५	२१

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

श्रीकण्ठ श्रीगराधार
श्रीकण्ठरोचनागर
श्रीबीज भुवनेश्वरी च
श्रीबीजादि जपेत् पुत्र
श्रीमायामातृका चैव
श्रीसूक्तनेत्रं जिह्वायां
श्रेष्ठराज्य भवेत्पुत्र
श्रीनालीमण्डभ्रूमध्ये
स्वानवज्ज्वलते सानु

३१ २
६६ २१
७७ १६
३० १५
१७ ६
६३ ३४
८० १६
५२ २६
२८ २६

प

पट्कोणकुण्डे जुहुयान्
पट्कोणमध्ये विलिखेद्
पट्कोण चाष्टकोणञ्च
पट्कोण चाष्टकोण च
पट्कोणे वा लिखेत्पुत्र
पट्त्रिंशद्धारमावर्त्यं
पट्पञ्चकोटिचामुण्डा
पट्प्रयोगास्त्रयो विद्या
पट्सहस्र देवकुसुम
पट्सहस्र हुनेत् पुत्र
पट्सहस्र हुनेत् पुत्र
पट्सहस्र हुनेत्पुत्र
षोडशाङ्गुलमानं तु
षोडशैरुपचारंश्च

४५ २६
६१ ८०
१४ ४
६१ ४
७६ ५
१०१ ६
३७ ६
२ ११
४७ १३
४५ २१
४६ ३
४७ ८
७ ६
७ १३

स

स कल्पमुखभागी स्यात्
सङ्कल्पपूर्वक मन्त्र
सप्रहेक्ष लभत सम्यक्
स जीवमेव चाण्डालः
सचारवान् भवत पञ्च
स तु मायापतिः साक्षाद्
ससम्प्रदायविधिना
सद्यो नादानमायाभिः

६७ ३३
१७ १५
२२ ११
५३ ४३
७६ ८०
५७ ६
३ २३
४५ २०

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

सद्यो नैर्मात्यमाप्नोति
सद्यो यौवनहीन तु
सद्यः स्तम्भनमाप्नोति
सन्तयेद्दीपयिष्यया
सतपेद् पतिष्यया
सतोष जनयेत्तस्य
सध्यामन्त्रेण सर्वेषु
स पतितो भवत पुसा
सपर्णा दालयेत् क्षीरं
सपादकोटिप्रियुरा
सप्तकोटिमहामन्त्रं
सम सम रिपून्निहति
समस्तकर्मणा ध्वसे
समस्तविपनिर्नाशि
समस्तस्तम्भन पुत्र
सम्पूजयेत् पञ्चमी चैव
सम्भोहनार्थं प्रजपेत्
सम्यग्ज्ञानं महेश्वरान्
सर्वमण्डलानि सत्य
सर्वकर्मणि निर्नाशि
सर्वत्रैवोन्नत पुत्र
सर्वं व्यासविधिं कृत्वा
सर्वमन्त्रमयी दवी
सर्वशत्रु ततोन्नायं
सर्वशत्रु ततोन्नायं
सर्वशत्रु ततोन्नायं
सर्वाङ्गमुद्दरी द्यामा
सर्वाङ्गं वायुना सानु
सर्वाङ्गे लेपनं कुर्यात्
सर्वावयवशोभादयः
सर्वे स्व देहेज मह्यं
सर्पास्त्रिदूर्वेश्च
सप प लवणं चैव
सर्वं लवणोपेत
सविता च ऋषिः स्यातो

८८ १६
५६ २५
६१ २३
२५ १६
५१ ८०
७७ १३
११ २६
३६ २२
५२ २६
६७ ११
५१ ३
६४ ३
१०३ ८
६७ १२
७० ३६
३० ११
४६ २
८५ १७
१०० ६
१५ १५
१३ १६
५५ १५
६१ ८
४१ १६
४२ २८
३५ ७
६१ २७
५५ ११
५४ १
५६ १०
२४ ११
८४ ३
४७ ७
४२ ३१

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

सविषं जलसंयुतं	६४	५
स शत्रुः सप्तराशेण	१८	१३
सस्यस्तमे दाहनाद्ये	१०३	१५
सस्यादिमिविनश्यन्ति	५८	१२
सहस्रं ध्यानपूर्वं तु	५१	१३
सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं	७८	८
सहस्रं द्विवच्यं चैव	४२	२४
सहस्रवारं विधिवन्	५३	३८
सहिरण्योदके पूर्वं	८	२६
साध्याधनमते देवि	६८	५
साध्याधनमते देवि	१००	२२
साध्याधनमते देव्या	६८	४
साधयेत्कुलमार्गेण	३	२५
साधु साधु महाप्राज्ञ	१	७
साधु रान्तसमायुक्त	१२	६
साधुमीवासिष्ठ कर्तव्य	११	२५
सिद्धिदो जायते तस्य	६१	२३
सुखापेक्षेण यत् क्रुषाद्	३६	२५
सुगन्धधनपुष्पादीन	७	१८
सुगन्धो रत्नपर्यङ्क	३४	१
सुन्दर्या कालिकाया च	१०४	३१
सुमन्तकुसुमैराज्य	१५	२२
सुरया तर्पणं पुन	१२५	४२
सुवर्णशैलसुवर्ण	६८	१३
सुवासिन च तैलेन	२५	८
सुवासिनी ब्राह्मणाश्च	६६	१८
सूचिप्रयोगविश्वसे	६५	७
सृष्टि र्मिति च सहार	३४	३
सौभाग्यचर्यासमायुत	३	२६
सौभाग्यार्चनकृत्	३६	२३
सौभाग्यार्चाविधिद्वय	६६	२५
सौभाग्यार्चा विना पुन	३६	१८
संक्षेपेन मया श्रोतु	८३	टि०
सजपेच् च ततः पुन	६६	१८
संस्कारेण विना मन्त्र	३८	१८

सहरेच्छ मिमाप्नोति	५३	४२
सहाराचा कामरूपे	६८	३०
स्तब्धमाया च वारबीज	४४	४
स्तब्धमाया ततोच्चार्य	७७	१७
स्तब्धमाया तारक च	४२	टि०
स्तब्धीकरणनिर्वाद्ये	१०३	८
स्तम्भद्वयमुच्चार्य	४४	६
स्तम्भद्वितय चोक्त्वा	४१	१७
स्तम्भनार्थं जपोपुन	३०	टि०
स्तम्भनास्थपद चोक्त्वा	८७	८
स्तम्भनास्त्रमयीं दवीं	४३	३५
स्तम्भनेन विना शाश्वि	९	१२
स्तम्भनेषु हुनेडीमान्	१७	२२
स्तम्भन च भवेत् पुन	४५	३३
स्तम्भन च भवेच्छीघ्रं	१६	१७
स्तम्भयेत् नदीवग	५८	१७
स्तम्भित मन्त्रयोगेन	८८	२१
स्थापयेच्च कपाल तु	२०	२४
स्थापयेच्चुहूपबीभागे	५१	२१
स्थापयेत् तेन मन्त्रेण	५३	३८
स्थिरमाया इति प्रोक्ता	६६	१२
स्थिरमाया द्वितीया तु	६६	१५
स्तुत्या क्षीरेण समुक्त	५१	२०
स्तुरद्वय तया चोक्त्वा	४४	५
स्तुरद्वय सप्तुच्चार्य	८७	७
स्फोटकजलसमुत्पत्तो	७४	१०
स्फोटवशाद्यश्च जायते	४६	३१
स्वप्रिया विष्णुपात्र च	७१	४६
स्वमन्त्राक्षरणी विद्या	२	१८
स्वर्णसिद्धासनासीना	६२	१
स्वरूप वा बहुल चाथ	५	१५
स्वामिन् सिद्धयुगाध्यक्ष	१०२	२
ह		
हरिद्रावज्जुन वस्तु	६६	टि०

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क		पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
हरिद्रामयपुष्पं च	६५	१४	तुनेच पृथ्वत् कुण्डे	७५	१८
हरिद्रो पाशमालां च	६८	१८	तुनत् त्रिकोणकुण्डे तु	७४	५
हरिद्राधमणि पीत	६५	१२	तुनद्वयानसमायुक्तः	४५	२५
हरिद्रासहोम तु	४७	१०	'तु पट् स्वाहा' समायुक्त	८१	४
हरिद्रासहोमेन	१६	५	तुननष्टप्रणष्टादि	१०१	११
हरिद्रातालका चैव	२४	६	तुनये तु समुच्चार्य	७८	१६
हरिद्राभिः मुखताभिः	१०४	२६	तुदि तन्नाम चातिष्ठ्य	५१	१८
हरिद्राधनस्तपणेन	६७	१८	तुमकुण्डलभूय दुर्गा	१०	२०
हरिद्राहोममाथेण	६६	१८	तुलाकर्त्ता चदला तूर्पा	१०४	२२
हरीतकीश्च ह्रीमेन	४६	१०	तुस्तथाप्युच्चरेत् पुन	४२	२७
हस्तमात्रं भगवार्	७५	१४	तुं ही लू च ततोच्चार्य	१८	६
हारिणोति पदं चोत्पया	५४	८	तुं लो लूश्च ततस्त्वं	२८	१०
हिकवारोगी भवेत्तस्य	७२	१७			

